श्रीजिनदत्तसूरिप्राचीनपुस्तकोद्धारफण्ड (सुरत) ग्रन्थाङ्क- ४१ ·

॥ अर्हम् ॥

श्रीखरतरगच्छगगनावभासक-यवनसम्राट्सुलतानमहम्मदप्रतिबोधक-
महाप्रभावक-श्रीमज्जिनप्रभसूरिकृता

वि धि मा र्ग प्र पा

नाम

सुविहित सामाचारी ।

श्री'सिंघीजैनग्रन्थमाला'-'जैनसाहित्यसंशोधकग्रन्थमाला'-'पुरातत्त्वमन्दिरग्रन्थावलि'-'भारतीयविद्याग्रन्था-
वलि'-इत्यादिनानाग्रन्थश्रेण्यन्तर्गत-प्राकृत-संस्कृत-पाली-अपभ्रंश-हिन्दी-गुजरातीभाषाभूषितानेकानेक-
ग्रन्थसमूहसंशोधन-संपादनकार्यनिष्ठेन तथैव भाण्डारकरप्राच्यविद्यासंशोधनमन्दिर-(पूना)-
गुजरातसाहित्यसभा (अमदाबाद)-संप्राप्तसम्मान्यसदस्यपद-द्वादशगुजरातीसाहित्य-
सम्मेलनायोजित-इतिहास-पुरातत्त्वविभागप्राप्ताध्यक्षस्थान-प्रथमराजस्थानहिन्दी-
साहित्यसम्मेलन (उदयपुर) समधिष्ठितप्रधानसभापतित्वादिनाना-
विधवाङ्मयप्रवृत्त्या विद्वन्मण्डलसुप्रतिष्ठेन

मुनिजनविनेयेन

श्री जि न वि ज ये न

विविधपाठान्तर-परिशिष्टादिभिः समलङ्कृत्य

संपादिता

सा च

खरतरगच्छाचार्य्यवर्य्यश्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरीश्वरशिष्यरत्न-उपाध्यायपदालङ्कृत-
श्रीमत्-सुखसागरजीमुनिवरकृतोपदेशात्
श्रेष्ठिवर्य्य-रायबहादुर-केशरिसिंह-बुद्धिसिंह,-जेठाभाई-कसलचन्द,-हरजीवन-गोपालजी
इत्यादिश्राद्धवर्यैर्विहितेन द्रव्यसाहाय्येन
भगतोपाह्व-जहेरी-मूलचन्द्र-हीराचन्द्रेण
मुम्बय्यां निर्णसागराख्यमुद्रणयन्त्रालये मुद्रापयित्वा प्रकाशिता ।

विक्रमसंवत् १९९७ [प्रतयः ५०० वितीर्णीकृताः] ई. सन् १९४१

विधिप्रपाके द्रव्यसाहाय्यक महाशयोंकी शुभ नामावली–

३५१) रायबहादुर, दिवानबहादुर, केशरीसिंहजी-बुद्धिसिंहजी, रतलाम.
२५१) सेठ जेठाभाई कसलचन्द, जामनगर. (काठियावाड)
२०१) सेठ हरजीवन गोपालजी, जामनगर. (काठियावाड)
१००) सेठ लघुरामजी आसकरण, लोहावट. (मारवाड)
६१) सेठ हजारीमल कँवरलाल, लोहावट. (मारवाड)
६१) सेठ जीवराज अगरचन्द, फलोधी („)
५१) सेठ लक्ष्मीचंद संखलेचा, जावद. (मालवा)

*

Published by Jaweri Mulchand Hirachand Bhagat,
Mahavir Swami's Temple, Pydhuni Bombay.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya-sagar Press, 26-28 Kolbhat street, Bombay.

*

पुस्तक मिलनेका पता–

श्रीजिनदत्तसूरिज्ञानभण्डार

ठि० ओसवाल मोहल्ला, गोपीपुरा

सुरत (द० गुजरात)

निवेदन

भारतीय साहित्य क्षेत्र में जैन साहित्य का स्थान सर्वोपरि है। जैन साहित्य में विविधता है, मधुरता है और अनेक दृष्टियों से महत्त्व पूर्ण है। अपूर्णता इस बात की है कि जैन साहित्य चाहिए वैसे अच्छे ढंगसे बहुत ही कम प्रकाशित हुआ है। आज के इस परिवर्त्तन-शील युग में यह बात बताने की आवश्यता नहीं है कि मानव जीवन में साहित्य का स्थान कितना ऊंचा है। धार्मिक इत्यादि उन्नति एक मात्र साहित्य पर निर्भर है। साहित्य मानव जीवन के महत्त्वपूर्ण अंगों में से है।

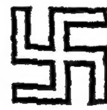
जैनधर्म के विधि-विधान के प्राचीन ग्रंथों में विधि-मार्ग प्रपा का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह जान कर बड़ी प्रसन्नता होगी कि श्रीखरतरगच्छालंकार अनेक ग्रंथ निर्माताश्री जिनप्रभ सूरि जी जैसे अद्वितीय विद्वान् महापुरुष की प्रस्तुत कृति पुज्यगुरुवर्य्य उ० सुखसागरजी मा० की शुभेच्छानुसार भारतीय इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान्, विविधवाङ्मयोपासक एवं विविध ग्रंथमालाओं के सम्पादक, साक्षरवर्य श्रीमान् जिनविजयजी द्वारा सुसम्पादित हो कर प्रकाशित हो रही है जो सचमुच प्रत्येक साहित्यप्रेमि के लिये हर्षका विषय है। साथ ही में बीकानेर निवासी श्रीयुत अगरचंदजी और भंवरलालजी नाहटा लिखित प्रस्तुत कृति के निर्माता का जीवनवृत्त संयोजित होनेसे ग्रंथ की महत्ता और भी बढ़ गई है। उक्त तीनों महाशयों को हृदय पूर्वक धन्यवाद देते हैं और इस कृति के प्रकाशन में जिनजिन महानुभावोंने द्रव्य विषयक सहायता पंहुचा कर जो प्रशंसनीय कार्य किया है वह आदरणीय नहीं अनुकरणीय है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में से हंसक्षीर न्यायानुसार सार ग्रहण कर सम्पादक महाशय के महान् परिश्रम को सफल करेंगे यही शुभेच्छा।

वि. सं. १९९८, अक्षय तृतीया
सिवनी (सी. पी.)

शुभेच्छक,
मुनि मंगल सागर.

विधिप्रपागतविषयानुक्रमणिका ।





खरतरगच्छालङ्कार स्व० आ० श्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरि



श्रीमज्जिनप्रभसूरिमूर्तिप्रतिकृति

संपादकीय प्रस्तावना ।

सिंघी जैन ग्रन्थ मालामें प्रकाशित श्रीजिनप्रभसूरिकृत विविधतीर्थकल्प नामक अद्वितीय ग्रन्थका संपादन करते समय ही हमारे मनमें इनके बनाये हुए ऐसे ही महत्त्वके इस विधिप्रपा नामक ग्रन्थका संपादन करनेका भी संकल्प हुआ था और इसके लिये हमने इस ग्रन्थकी हस्तलिखित प्रतियां भी इकट्ठी करनेका प्रयत्न करना प्रारंभ किया था। इतनेमें, संवत् १९९५ में, बंबईके महावीर स्वामीके मन्दिरमें चातुर्मासार्थ रहे हुए सौम्यमूर्ति उपाध्यायवर्य श्रीसुखसागरजी महाराज व उनके साहित्यप्रकाशनप्रेमी शिष्यवर श्रीमुनि मंगलसागरजीसे साक्षात्कार हुआ, और प्रासङ्गिक वार्तालाप करते हुए हमने इनके पास विधिप्रपाकी कोई अच्छी प्रतिके होनेकी पृच्छा की। इस पर उपाध्यायजी महाराजने इच्छा प्रकट की कि-"इस ग्रन्थको प्रकाशित करनेकी तो हमारी भी बहुत समयसे प्रबल इच्छा हो रही है और यदि आप इस कामको हाथमें लें तो हमारे लिये बहुत ही आनन्द और अभिमानकी बात होगी; और हम श्रीजिनदत्तसूरि-प्राचीन-पुस्तकोद्धार फण्ड की ओरसे इसके प्रकाशित करनेका बड़े प्रमोदसे प्रबन्ध करेंगे"-इत्यादि। चूं कि यह ग्रन्थ खरतर गच्छके एक बहुत बड़े प्रभाविक आचार्यकी प्रमाणभूत कृति है और इसमें खास करके इस गच्छकी सामाचारीके सम्मत विधि-विधानोंका ही गुम्फन किया हुआ है इसलिये यदि यह श्रीजिनदत्तसूरि-प्राचीन-पुस्तकोद्धार-ग्रन्थावलिमें गुम्फित हो कर प्रकाशित हो तो और भी विशेष उचित और प्रशस्त होगा-ऐसा सोच कर हमने उपाध्यायजी महाराजकी आदरणीय इच्छाका सहर्ष स्वीकार कर लिया और इनके सौजन्यपूर्ण सौहार्दभावके वशीभूत हो कर हमने, इस ग्रन्थका यह प्रस्तुत संपादन कर, इनकी स्नेहाङ्कित आज्ञाका, इस प्रकार यथाशक्ति सादर पालन किया।

उपाध्यायजीकी यह प्रबल उत्कंठा थी कि इनके बंबईके वर्षानिवास दरम्यान ही इस ग्रन्थका प्रकाशन हो जाय तो बहुत ही अच्छा हो, पर हम इसको इतना शीघ्र पूरा न कर सके। क्यों कि हमारे हाथमें सिंघी जैन ग्रन्थमालाके अनेकानेक ग्रन्थोंका समकालीन संपादनकार्य भरपूर होनेके अतिरिक्त, बम्बईमें नवीन प्रस्थापित भारतीय विद्याभवनकी ग्रन्थावलि और 'भारतीय विद्या' नामक संशोधन विषयक प्रतिष्ठित त्रैमासिक पत्रिकाका विशिष्ट संपादनकार्य भी हमारे ऊपर निर्भर है, इसलिये प्रस्तुत ग्रन्थके संपादनमें कुछ विलंब होना अनिवार्य था।

*

ग्रन्थका नामाभिधान।

इस ग्रन्थका संपूर्ण नाम, जैसा कि ग्रन्थकी सबसे अन्तकी गाथामें सूचित किया गया है, विधिमार्गप्रपा नाम सामाचारी (विहिमग्गपवा नामं सामायारी, देखो पृ० १२०, गाथा १६) ऐसा है। पर इसकी पुरानी सब प्रतियोंमें तथा अन्यान्य उल्लेखोंमें भी संक्षेपमें इसका नाम 'विधिप्रपा' ऐसा ही प्रायः लिखा हुआ मिलता है; इसलिये हमने भी मूल ग्रन्थमें इसका यही नाम सर्वत्र मुद्रित किया है; पर वास्तवमें ग्रन्थकारका निजका किया हुआ पूर्ण नामाभिधान अधिक अन्वर्थक और संगत मालूम देता है, इसलिये पुस्तकके मुखपृष्ठ पर यह नाम मुद्रित करना अधिक उचित समझा है। इस 'विधिमार्ग' शब्दसे ग्रन्थकारका खास विशिष्ट अभिप्राय उद्दिष्ट है। सामान्य अर्थमें तो 'विधिमार्ग' का 'क्रियामार्ग' ऐसा ही अर्थ विवक्षित होता है, पर यहांपर विशेष अर्थमें खरतरगच्छीय विधि-क्रिया-मार्ग ऐसा भी अर्थ अभिप्रेत है। क्यों कि खरतर गच्छका दूसरा नाम विधिमार्ग है और इस सामाचारीमें जो विधि-विधान प्रतिपादित किये गये हैं वे प्रधानतया खरतर गच्छके पूर्व आचार्यों द्वारा स्वीकृत और सम्मत हैं। इन विधि-विधानोंकी प्रक्रियामें और और गच्छके आचार्योंका कहीं कुछ मतभेद हो सकता है और है भी सही। अतएव ग्रन्थकारने स्पष्ट रूपसे इसके नाममें किसीको कुछ भ्रान्ति न हो इसलिये इसका 'विधिमार्गप्रपा' ऐसा अन्वर्थक नामकरण किया है। तदुपरान्त, ग्रन्थकारने, ग्रन्थकी प्रशस्तिकी प्रथम गाथामें, यह भी सूचित किया है कि-'भिन्न भिन्न गच्छोंमें प्रवर्तित अनेकविध सामाचारियोंको देख कर शिष्योंको किसी प्रकारका मतिभ्रम न हो इसलिये अपने गच्छकी प्रतिबद्ध ऐसी यह सामाचारी हमने लिखी है।' इसलिये इसका यह 'विधिमार्ग प्रपा' नाम सर्वथा सुन्दर, सुसंगत और वस्तुसूचक है ऐसा कहनेमें कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

इस ग्रन्थकी विशिष्टता।

यों तो श्रीजिनप्रभ सूरिकी – जैसा कि इसके साथमें दिये हुए उनके चरित्रात्मक निबन्धसे ज्ञात होता है – साहित्यिक कृतियां बहुत अधिक संख्यामें उपलब्ध होती हैं; पर उन सबमें, इनकी ये दो कृतियां सबसे अधिक महत्त्वकी और मौलिक हैं – एक तो 'विविध तीर्थ कल्प'; और दूसरी यह 'विधिमार्गप्रपा सामाचारी'। 'विविधतीर्थ कल्प' नामक ग्रन्थके महत्त्वके विषयमें, संक्षेपमें पर सारभूत रूपसे, हमने अपनी संपादित आवृत्तिकी प्रस्तावनामें लिखा है, इसलिये उसकी यहांपर पुनरुक्ति करनेकी कोई आवश्यकता नहीं। यह विधिप्रपा ग्रन्थ कैसा महत्त्वका शास्त्र है इसका परिचय तो जो इस विषयके जिज्ञासु और मर्मज्ञ हैं उनको इसका अवलोकन और अध्ययन करनेहीसे ठीक ज्ञात हो सकता है। स्व० जर्मन विद्वान् प्रो० वेबरने जो 'सेक्रेड बुकस् ऑफ दी जैनस्' इस नामका सुप्रसिद्ध और सुपठित ऐसा जैनागमोंका परिचायक मौलिक निबन्ध लिखा है उसमें मुख्य आधार इसी ग्रन्थका लिया है।

*

ग्रन्थका रचना-समय।

जिनप्रभ सूरिने इस ग्रन्थकी रचना समाप्ति वि. सं. १३६३ के विजयादशमीके दिन, कोशला अर्थात् अयोध्या नगरीमें की है। इसकी प्रथम प्रति उनके प्रधान शिष्य वाचनाचार्य उदयाकर गणिने अपने हाथसे लिखी थी।

यह कृति उनकी प्रौढावस्थामें बनी हुई प्रतीत होती है। जैसा कि उनके जीवनचरित्रविषयक उल्लेखोंसे ज्ञात होता है, उन्होंने वि. सं. १३२६ में दीक्षा ली थी; अतः इस ग्रन्थके बनानेके समय उनका दीक्षापर्याय प्रायः ३७ वर्ष जितना हो चुका था। इस दीर्घ दीक्षाकालमें उन्होंने अनेक प्रकारके विधि – विधान स्वयं अनुष्ठित किये होंगे और सैंकडों ही साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविकाओंको कराये होंगे, इसलिये उनका यह ग्रन्थसन्दर्भ, स्वयं अनुभूत एवं शास्त्र और संप्रदायगत विशिष्ट परंपरासे परिज्ञात ऐसे विधानोंका एक प्रमाणभूत प्रणयन है। इसमें उन्होंने जगह जगह पर कई पूर्वाचार्योंके कथनोंको उल्लिखित किया है और प्रसङ्गवश कुछ तो पूरे के पूरे पूर्वरचित प्रकरण ही उद्धृत कर दिये हैं। उदाहरणके लिये – उपधानविधिमें, मानदेवसूरिकृत पूरा 'उवहाणविही' नामक प्रकरण, जिसकी ५४ गाथायें हैं, उद्धृत किया गया है। उपधानप्रतिष्ठा प्रकरणमें, किसी पूर्वाचार्यका बनाया हुआ 'उवहाणपइट्ठापंचासय' नामक प्रकरण अवतारित है, जिसकी ५१ गाथायें हैं। पौषधविधि प्रकरणमें, जिनवल्लभसूरिकृत विस्तृत 'पोसहविहिपयरण'का, १५ गाथाओंमें पूरा सार दे दिया है। नन्दिरचनाविधिमें, ३६ गाथाका 'अरिहाणादिथुत्त' उद्धृत किया है। योगविधिमें, उत्तराध्ययनसूत्रका 'असंखयं' नाम १३ पद्योंवाला ४ था अध्ययन उद्धृत कर दिया है। प्रतिष्ठाविधिमें, चन्द्रसूरिकृत ७ प्रतिष्ठा संग्रहकाव्य, तथा कथारत्नकोश नामक ग्रन्थमेंसे ५० गाथावाला 'ध्वजारोपणविधि' नामक प्रकरण उद्धृत किया गया है। और ग्रन्थके अन्तमें जो अंगविद्यासिद्धिविधि नामक प्रकरण है वह सैद्धान्तिक विनयचन्द्रसूरिके उपदेशसे लिखा गया है। इस प्रकार, इस ग्रन्थमें जो विधि-विधान प्रतिपादित किये गये हैं वे पूर्वाचार्योंके संप्रदायानुसार ही लिखे गये हैं, न कि केवल स्वमतिकल्पनानुसार – ऐसा ग्रन्थकारका इसमें स्पष्ट सूचन है। जिनको जैन संप्रदायगत गण – गच्छादिके भेदोपभेदोंके इतिहासका अच्छा ज्ञान है उनको ज्ञात है कि, जैन मतमें जो इतने गच्छ और संप्रदाय उत्पन्न हुए हैं और जिनमें परस्पर बडा तीव्र विरोधभाव व्याप्त हुआ ज्ञात होता है, उसमें मुख्य कारण ऐसे विधि-विधानोंकी प्रक्रियामें मतभेद का होना ही है। केवल सैद्धान्तिक या तात्त्विक मतभेदके कारण वैसा बहुत ही कम हुआ है।

*

ग्रन्थगत विषयोंका संक्षिप्त परिचय।

जैसा कि इसके नामसे ही सूचित होता है – यह ग्रन्थ, साधु और श्रावक जीवनमें कर्तव्य ऐसी नित्य और नैमित्तिक दोनों ही प्रकारकी क्रिया-विधियोंके मार्गमें संचरण करनेवाले मोक्षार्थी जनोंकी जिज्ञासारूप तृष्णाकी तृप्तिके लिये एक सुन्दर 'प्रपा' समान है। इसमें सब मिला कर मुख्य ४१ द्वार यानि प्रकरण हैं। इन द्वारोंके नाम, ग्रन्थके अन्तमें, स्वयं शास्त्रकारने १ से ६ तककी गाथाओंमें सूचित किये हैं। इन मुख्य द्वारोंमें कहीं कहीं कितनेक अवान्तर द्वार भी सम्मिलित हैं जो यथास्थान उल्लिखित किये गये हैं। इन अवान्तर द्वारोंका नामनिर्देश, हमने विषयानुक्रमणिकामें कर दिया है। उदाहरणके तौर पर, २४ वें 'जोगविही' नामक प्रकरणमें, दशवैकालिक आदि सब सूत्रोंकी योगोद्वहन-

क्रियाका वर्णन करनेवाले भिन्न भिन्न विधान-प्रकरण हैं; और ३४ वें 'आलोयणविही' संज्ञक प्रकरणमें ज्ञानातिचार, दर्शनातिचार आदि आलोचना विषयक अनेक भिन्न भिन्न अन्तर्गत प्रकरण हैं। इसी तरह ३५ वें 'पइट्ठाविही' नामक प्रकरणमें जलानयनविधि, कलशारोपणविधि, ध्वजारोपणविधि–आदि कई एक आनुषंगिक विधियोंके स्वतंत्र प्रकरण सन्निविष्ट हैं।

इन ४१ द्वारों–प्रकरणोंमेंसे प्रथमके १२ द्वारोंका विषय, मुख्य करके श्रावक जीवनके साथ संबंध रखनेवाली क्रिया-विधियोंका विधायक है; १३ वें द्वारसे ले कर २९ वें द्वार तकमें विहित क्रिया-विधियां प्रायः करके साधु जीवनके साथ संबंध रखती हैं और आगेके ३० वें द्वारसे लेकर अन्तके ४१ वें द्वार तकमें वर्णित क्रिया-विधान, साधु और श्रावक दोनोंके जीवनके साथ संबंध रखनेवाली कर्तव्यरूप विधियोंके संग्राहक हैं।

यहां पर संक्षेपमें इन ४१ ही द्वारोंका कुछ परिचय देना उपयुक्त होगा।

१ पहले द्वारमें, सबसे प्रथम, श्रावकको किस तरह सम्यक्त्वव्रत ग्रहण करना चाहिये–इसकी विधि बतलाई गई है। इस सम्यक्त्वव्रतग्रहणके समय श्रावकके लिये जीवनमें किन किन नित्य और नैमित्तिक धर्मकृत्योंका करना आवश्यक हैं और किन किन धर्मप्रतिकूल कृत्योंका निषेध करना उचित है, यह संक्षेपमें अच्छी तरह बतलाया गया है।

२ दूसरे द्वारमें, सम्यक्त्वव्रतका ग्रहण किये बाद, जब श्रावकको देशविरति व्रतके अर्थात् श्रावकधर्मके परिचायक ऐसे १२ व्रतोंके ग्रहण करनेकी इच्छा हो, तब उनका ग्रहण कैसे किया जाय–इसकी क्रिया-विधि बतलाई है। इसका नाम 'परिग्रहपरिमाणविधि' है–क्यों कि इसमें मुख्य करके श्रावकको अपने परिग्रह यानि स्थावर और जंगम ऐसी संपत्तिकी मर्यादाका विशेषरूपसे नियम लेना आवश्यक होता है और इसीलिये इसका दूसरा प्रधान नाम परिग्रहपरिमाणविधि रखा गया है। इसमें यह भी कहा गया है कि इस प्रकारका परिग्रहपरिमाणव्रत लेनेवाले श्रावक या श्राविकाको अपने नियमकी सूचिवाली एक टिप्पणी (याद़ी–सूचि) बना लेनी चाहिये और उसमें नियमोंकी सूचिके साथ यह लिखा रहना चाहिये कि यह व्रत मैंने अमुक आचार्यके पास अमुक संवत्के अमुक मास और तिथिके दिन ग्रहण किया है–इत्यादि।

३ तीसरे द्वारमें, इस प्रकार देशविरति यानि श्रावकधर्मव्रत लेनेके बाद श्रावकको कमी छ महिनेका सामायिक व्रत भी लेना चाहिये, यह कहा गया है और इसकी ग्रहणविधि बतलाई गई है।

४ चौथे द्वारमें, सामायिकव्रतके ग्रहण और पारणकी विधि कही गई है। यह विधि प्रायः सबको सुज्ञात ही है।

५ पांचवें द्वारमें, उपधान विषयक क्रियाका विस्तृत वर्णन और विधान है। इसके प्रारंभमें कहा गया है कि–कोई कोई आचार्य इस प्रसंगमें, श्रावककी जो १२ प्रतिमायें शास्त्रोंमें प्रतिपादित की हुई हैं, उनमेंसे प्रथमकी ४ प्रतिमाओंका ग्रहण करना भी विधान करते हैं; परंतु, वह हमारे गुरुओंको सम्मत नहीं है। क्यों कि शास्त्रकारोंने ऐसा कहा है कि वर्तमान कालमें प्रतिमाग्रहणरूप श्रावकधर्म व्युच्छिन्नप्राय हो गया है, इसलिये इसका विधान करना उचित नहीं है।

६ उक्त उपधान विधिमें, मुख्य रूपसे पंचमंगलका उपधान वर्णित किया गया है, इसलिये ६ ठे द्वारमें उसकी सामाचारी बतलाई गई है।

७ उपधान तपकी समाप्तिके उद्यापनरूपमें मालारोपणकी क्रिया होनी चाहिये, इसलिये ७ वें द्वारमें, विस्तारके साथ मालारोपणकी विधि बतलाई गई है। इस विधिमें मानदेवसूरिरचित ५४ गाथाका 'उवहाणविही' नामका पूरा प्राकृत प्रकरण, जो महानिशीथ नामक आगमभूत सिद्धान्तके आधार परसे रचा गया है, उद्धृत किया गया है।

८ इस महानिशीथ सिद्धान्तकी प्रामाणिकताके विषयमें प्राचीन कालसे कुछ आचार्योंका विशिष्ट मतभेद चला आ रहा है, और वे इस उपधानविधिको अनागमिक कहा करते हैं, इसलिये ८ वें द्वारमें, इस विधिके समर्थनरूप 'उवहाणपइट्ठापंचासय' (उपधानप्रतिष्ठापंचाशक) नामका ५१ गाथाका एक संपूर्ण प्रकरण, जो किसी पूर्वाचार्यका बनाया हुआ है, उद्धृत कर दिया है। इस प्रकरणमें महानिशीथ सूत्रकी प्रामाणिकताका यथेष्ट प्रतिपादन किया गया है।

९ वें द्वारमें, श्रावकको पर्वादिके दिन पौषध व्रत लेना चाहिये, इसका विधान है और इस व्रतके ग्रहण-पारणकी विधि बतलाई गई है। इसके अन्तकी गाथामें कहा है कि श्रीजिनवल्लभसूरिने जो पौषधविधि-प्रकरण बनाया है उसीके आधार पर यहांपर यह विधि लिखी गई है। जिनको विशेष कुछ जाननेकी इच्छा हो वे उक्त प्रकरण देखें।

१० वें प्रकरणमें, प्रतिक्रमणसामाचारीका वर्णन दिया गया है, जिसमें दैवसिक, रात्रिक और पाक्षिक (इसीमें चातुर्मासिक और सांवत्सरिक भी सम्मिलित हैं) इन तीनों प्रतिक्रमणोंकी विधियोंका यथाक्रम वर्णन ग्रथित है।

११ वें द्वारमें, तपोविधिका विधान है। इसमें कल्याणक तप, सर्वांगसुन्दर तप, परमभूषण, आयतिजनक, सौभाग्यकल्पवृक्ष, इन्द्रियजय, कषायमथन, योगशुद्धि, अष्टकर्मसूदन, रोहिणी, अंबा, ज्ञानपंचमी, नन्दीश्वर, सत्यसुखसंपत्ति, पुण्डरीक, मातृ, समवसरण, अक्षयनिधि, वर्द्धमान, दवदन्ती, चन्द्रायण, भद्र, महाभद्र, भद्रोत्तर, सर्वतोभद्र, एकादशांग-द्वादशांग आराधन, अष्टापद, वीशस्थानक, सांवत्सरिक, अष्टमासिक, षाण्मासिक-इत्यादि अनेक प्रकारके तपोंकी विधिका विस्तृत वर्णन दिया गया है। इसके अन्तमें कहा गया है कि इन तपोंके अतिरिक्त कई लोक, माणिक्यप्रस्तारिका, मुकुटसप्तमी, अमृताष्टमी, अविधवादशमी, गोयमपडिग्गह, मोक्षदण्डक, अदुक्ख-दिक्खिया, अखण्डदशमी-इत्यादि नामके तपोंका भी आचरण करते दिखाई देते हैं; परंतु वे तप आगमविहित न होनेसे हमने उनका यहांपर वर्णन नहीं दिया है। इसी तरह एकावली, कनकावली, रत्नावली, मुक्तावली, गुणरत्न-संवत्सर, खुड्डमहल्ल सिंहनिक्रीडित आदि जो तप हैं उनका आचरण करना, अभी इस कालमें, दुष्कर होनेसे उनका भी कोई वर्णन नहीं किया गया है।

१२ तप आदिकी उक्त सब क्रियायें नन्दीरचनापूर्वक की जातीं हैं, इसलिये १२ वें द्वारमें, बहुत विस्तारके साथ नन्दीरचनाविधि वर्णित की गई है। इसमें अनेक स्तुति स्तोत्र आदि भी दिये गये हैं।

१३ वें द्वारमें, प्रव्रज्याविधि अर्थात् साधुधर्मकी दीक्षाविधिका विशिष्ट विधान बताया गया है।

१४ प्रव्रज्या लिये बाद साधुको यथासमय लोच (केशोत्पाटन) करना चाहिये, इसलिये १४ वें द्वारमें, लोचक-रणकी विधि बतलाई गई है।

१५ प्रव्रजितको 'उपयोगविधि' पूर्वक ही शास्त्रोंमें भक्त-पानका ग्रहण करना विहित है, इसलिये १५ वें द्वारमें यह 'उपयोगविधि' बतलाई गई है।

१६ इस तरह उपयोगविधि करनेके बाद, नवदीक्षित साधुको, सबसे प्रथम भिक्षा ग्रहण करनेके लिये जाना हो, तब कैसे और किस शुभ दिनको जाना चाहिये इसकी विधिके लिये, १६ वें द्वारमें, 'आदिम-अटन-विधि'का वर्णन दिया गया है।

१७-१८ नवदीक्षित साधुको आवश्यक तप और दशवैकालिक तप करा कर फिर उसे उपस्थापना (बडी दीक्षा) दी जाती है, और उसे मण्डलीमें स्थान दिया जाता है, इसलिये, इसके बादके दो प्रकरणोंमें, इस मंडली तप और उपस्थापना विधिका विधान बतलाया गया है।

१९ उपस्थापना होनेके बाद, साधुको सूत्रोंका अध्ययन करना चाहिये; और यह सूत्राध्ययन विना योगोद्वहनके नहीं किया जाता, इसलिये १९ वें द्वारमें, योगोद्वहन विधिका सविस्तर वर्णन दिया गया है। यह योगविधि द्वार बहुत बडा है। इसमें पहले स्वाध्याय करनेकी विधि बतलाई गई है; और यह स्वाध्याय कालग्रहणपूर्वक करना विहित है, अतः उसके साथ कालग्रहण करनेकी विधि भी कही गई है। इसके बाद, आवश्यकादि प्रत्येक सूत्रका पृथक् पृथक् तपोविधान बतलाया गया है। इस विधानमें प्रायः सब ही सूत्रोंका संक्षेपमें अध्ययनादिका निर्देश कर दिया गया है। इसके अन्तमें, इस समग्र योगविधिका सूत्ररूपसे विवेचन करनेवाला ६८ गाथाका पूरा 'जोगविहाण' नामका प्रकरण दिया गया है, जो शायद ग्रन्थकारकी निजकी ही एक स्वतंत्र रचना है।

२० यह योगोद्वहन 'कप्पतिप्प' सामाचारीकी क्रियापूर्वक किया जाता है, इसलिये २० वें द्वारमें, यह 'कप्पतिप्प' सामाचारी बतलाई गई है।

२१ इस प्रकार कप्पतिप्पविधिपूर्वक योगोद्वहन किये बाद, साधुको मूल ग्रन्थ, नन्दी, अनुयोगद्वार, उत्तराध्ययन, ऋषिभाषित, अंग, उपांग, प्रकीर्णक और छेद ग्रन्थ आदि आगम शास्त्रोंकी वाचना करनी चाहिये, इसलिये २१ वें द्वारमें, इस आगमवाचनाकी विधि बतलाई गई है।

२२-२६ इस तरह आगमादिका पूर्ण ज्ञाता हो कर शिष्य जब यथायोग्य गुणवान् बन जाता है, तो उसे फिर वाचनाचार्य, उपाध्याय एवं आचार्य आदिकी योग्य पदवी प्रदान करनी चाहिये, और साध्वीको प्रवर्तिनी अथवा महत्तराकी पदवी देनी चाहिये। इसलिये अनन्तरके द्वारोंमेंसे क्रमशः—२२वें द्वारमें वाचनाचार्य, २३ वेंमें उपाध्याय, २४ वेंमें आचार्य, २५ वेंमें महत्तरा और २६ वेंमें प्रवर्तिनी पदके देनेकी क्रियाविधि बतलाई गई है। इस विधिके प्रारंभमें यह भी स्पष्ट रूपसे कह दिया गया है कि किस योग्यतावाले साधुको वाचनाचार्य अथवा उपाध्याय एवं आचार्य आदिका पद देना उचित है। वाचनाचार्य अथवा उपाध्याय उसीको बनाना चाहिये, जो समग्र सूत्रार्थके ग्रहण, धारण और व्याख्यान करनेमें समर्थ हो; सूत्रवाचनामें जो पूरा परिश्रमी हो; प्रशान्त हो और आचार्य स्थानके योग्य हो। इस पदके धारकको, एक मात्र आचार्यके सिवाय अन्य सब साधु साध्वी—चाहे वे दीक्षापर्यायमें छोटे हों या बड़े—वन्दन करें।

इस आचार्य पदके योग्य व्यक्तिका विधान करते हुए कहा है कि—जो साधु आचार, श्रुत, शरीर, वचन, वाचना, मतिप्रयोग, मतिसंग्रह और परिज्ञा रूप इन आठ गणिपदसे युक्त हो; देश, कुल, जाति और रूप आदि गुणोंसे अलंकृत हो; बारह वर्षतक जिसने सूत्रोंका अध्ययन किया हो; बारह वर्षतक जिसने शास्त्रोंके अर्थका सार प्राप्त किया हो और बारह वर्षतक अपनी शक्तिकी परीक्षाके निमित्त जिसने देशपर्यटन किया हो—वह आचार्य बनने योग्य है और ऐसे योग्य व्यक्तिको आचार्यपद देना चाहिये। नन्दीरचना आदि विहित क्रियाविधिके साथ, निर्णीत लग्नमें, मूलाचार्य इस नव्य आचार्यको सूरिमन्त्र प्रदान करें। यह सूरिमन्त्र मूलमें भगवान् महावीर स्वामीने २१०० अक्षरप्रमाण ऐसा गौतमस्वामीको दिया था और उन्होंने उसे ३२ श्लोकके परिमाणमें गुम्फित किया था। इसका कालक्रमके प्रभावसे ह्रास हो रहा है और अन्तिम आचार्य दुःप्रसहके समयमें यह २॥ श्लोक परिमित रह जायगा। यह गुरुमुखसे ही पढ़ा जाता है—पुस्तकमें नहीं लिखा जाता। ग्रन्थकार कहते हैं कि इस सूरिमन्त्रकी साधनाविधि देखना हो उसे हमारा बनाया हुआ 'सूरिमन्त्रकल्प' नामक प्रकरण देखना चाहिये।

यह आचार्यपद-प्रदानविधि बड़ा भावपूर्ण है। इसमें कहा गया है, कि जब इस प्रकार शिष्यको आचार्य पद देनेकी विधि समाप्त होती है तब खुद मूल आचार्य अपने आसन परसे उठ कर शिष्यकी जगह बैठें और शिष्य—नवीन पद धारक आचार्य—अपने गुरुके आसन पर जा कर बैठे। फिर गुरु अपने शिष्य—आचार्यको, द्वादशावर्तविधिसे वन्दन करें—यह बतलानेके लिये कि तुम भी मेरे ही समान आचार्यपदके धारक हो गये हो और इसलिये अन्य सभीके साथ मेरे भी तुम वन्दनीय हो। ऐसा कह कर गुरु उससे कहे कि, कुछ व्याख्यान करो—जिसके उत्तरमें नवीन आचार्य परिषद्के योग्य कुछ व्याख्यान करे और उसकी समाप्तिमें फिर सब साधु उसे वन्दन करें। फिर वह शिष्य उस गुरुके आसन परसे उठ कर अपने आसन पर जा कर बैठे, और गुरु अपने मूल आसन पर। बादमें गुरु, नवीन आचार्यको शिक्षारूप कुछ उपदेशवचन सुनाये जिसको 'अनुशिष्टि' कहते हैं। इस अनुशिष्टिमें, गुरु नवीन आचार्यको किन किन बातोंकी शिक्षा देता है, इसका प्रतिपादन करनेके लिये जिनप्रभ सूरिने ५५ गाथाका एक स्वतंत्र प्रकरण दिया है जो बहुत ही भाववाही और सारगर्भित है। आचार्यको अपने समुदायके साथ कैसा व्यवहार रखना चाहिये और किस तरह गच्छकी प्रतिपालना करनी चाहिये—इसका बड़ा मार्मिक उपदेश इसमें दिया गया है। आचार्यको अपने चारित्रमें सदैव सावधान रहना चाहिये और अपने अनुवर्तियोंकी चारित्ररक्षाका भी पूरा खयाल रखना चाहिये। सब को समदृष्टिसे देखना चाहिये। किसी पर किसी प्रकारका पक्षपात न करना चाहिये। अपने और दूसरेके पक्षमें किसी प्रकारका विरोधभाव पैदा करे वैसा वचन कभी न बोलना चाहिये। असमाधिकारक कोई व्यवहार नहीं करना चाहिये। स्वयं कषायोंसे मुक्त होनेके लिये सतत प्रयत्नवान् रहना चाहिये—इत्यादि प्रकारके बहुत ही सुन्दर उपदेश-वचन कहे गये हैं जो वर्तमानके नामधारी आचार्योंके मनन करने योग्य हैं।

इसी तरहका सुन्दर शिक्षावचनपूर्ण उपदेश महत्तरा और प्रवर्तिनी पद प्राप्त करनेवाली साध्वीके लिये भी कहा गया है। प्रवर्तिनीको अनुशिष्टि देते हुए आचार्य कहते हैं कि – तुमने जो यह महत्तर पद ग्रहण किया है इसकी सार्थकता तभी होगी जब तुम अपनी शिष्याओंको और अनुगामिनी साध्वियोंको ज्ञानादि सद्गुणोंमें प्रवर्तन करा कर, उनके कल्याण पथकी मार्गदर्शिका बनोगी। तुम्हें न केवल उन्हीं साध्वियोंके हितकी प्रवृत्ति करनेमें प्रवर्तित होना चाहिये जो विदुषियां हैं, जिनका बडा खानदान है, जिनका बहुत बडा स्वजनवर्ग है, एवं जो सेठ, साहुकार आदि धनिकोंकी पुत्रियां हैं; पर तुम्हें उन साध्वियोंकी हित-प्रवृत्तिमें भी वैसे ही प्रवर्तित होना कर्तव्य है जो दीन और दुःस्थित दशामें हों, जो अज्ञान हों, शक्तिहीन हों, शरीरसे विकल हों, निःसहाय हों, बन्धुवर्गरहित हों, वृद्धावस्थासे जर्जरित हों और दुरवस्थामें पड जानेके कारण भ्रष्ट और पतित भी हों। इन सबकी तुम्हें गुरुकी तरह, अंगप्रतिचारिकाकी तरह, धायकी तरह, प्रियसखीकी तरह, भगिनी–जननी–मातामही एवं पितामही आदिकी तरह, वत्सलभाव हो कर प्रतिपालना करनी होगी।

२७ इसके बाद, २७ वें द्वारमें, गणानुज्ञाविधि बतलाई गई है। गणानुज्ञाका अर्थ है गणको अर्थात् समुदायको अनुज्ञा यानि निजकी आज्ञामें प्रवर्तन करानेका संपूर्ण अधिकार प्राप्त करना। यह अधिकार, मुख्याचार्यके कालप्राप्त होने पर अथवा अन्य किसी तरह असमर्थ हो जाने पर प्राप्त किया जाता है। इस विधिमें भी प्रायः वैसा ही भाव और उपदेशादि गर्भित है। इस गणानुज्ञापदकी प्राप्ति होने पर, फीर वही नवीन आचार्य गच्छका संपूर्ण अधिनायक बनता है और उसीकी आज्ञामें सारे संघको विचरण करना पडता है।

२८ इसके बादके २८ वें द्वारमें, वृद्ध होने पर और जीवितका अन्त समीप दिखाई देने पर, साधुको पर्यन्ताराधना कैसे करनी चाहिये और अन्तमें कैसे अनशन व्रत लेना चाहिये, इसका विधान बतलाया गया है। इसी विधिके अन्तमें, श्रावकको भी यह अन्तिम आराधना करनी बतलाई गई है।

२९ इस प्रकारकी अन्तिम आराधनाके बाद, जब साधु कालधर्म प्राप्त हो जाय तब फिर उसके शरीरका अन्तिम संस्कार कैसे किया जाय, इसकी विधिका वर्णन २९ वें **महापारिट्ठावणिया** नामक प्रकरणमें दिया गया है।

३० तदनन्तर, ३० वें द्वारमें, साधु और श्रावक दोनोंके व्रतोंमें लगनेवाले प्रायश्चित्तोंका बहुत विस्तृत वर्णन दिया गया है। इस प्रायश्चित्तविधानमें एक तरहसे प्रायः यति और श्राद्ध दोनों प्रकारके जीतकल्प ग्रन्थोंका पूरा सार आ गया है। इसमें श्रावकके सम्यक्त्व-मूल १२ व्रतोंका प्रायश्चित्त-विधान पूर्ण रूपसे दिया गया है और इसी तरह साधुके मूल गुण और उत्तर गुण आदि आचारोंमें लगनेवाले छोटे बडे सभी प्रायश्चित्तोंका यथेष्ट वर्णन किया गया है। साधुके भिक्षाविषयक दोषोंका विधान करनेवाला '**पिंडालोयणविहाण**' नामक ७३ गाथाका एक बडा स्वतंत्र प्रकरण भी, नया बना कर, ग्रन्थकारने इसमें सन्निविष्ट कर दिया है; और इसी तरह एक दूसरा ६४ गाथाका '**आलोयणविही**' नामका भी स्वतंत्र प्रकरण इस द्वारके अन्तभागमें ग्रथित किया है।

३१–३६ इसके बाद '**प्रतिष्ठाविधि**' नामक बडा प्रकरण आता है जिसमें जिनबिम्बप्रतिष्ठा, कलशप्रतिष्ठा, ध्वजारोप, कूर्मप्रतिष्ठा, यन्त्रप्रतिष्ठा और स्थापनाचार्यप्रतिष्ठा – इस प्रकार ३१ से ले कर ३६ तकके ६ द्वारोंका समावेश होता है। इसीके अन्तर्गत अधिवासना अधिकार, नन्द्यावर्तस्थापना, जलानयनविधि – आदि भी प्रसंगोचित कई विधि-विधानोंका समावेश किया गया है। इसमें प्रतिष्ठोपयोगी सामग्रीका भी प्रमाणभूत निर्देश है और मन्त्र तथा स्तुति आदि वचनोंका भी उत्तम संग्रह है। प्रतिष्ठाविधिके लिये यह प्रकरण बहुत ही आधारभूत और सुविहित समझा जाने योग्य है।

३७ प्रतिष्ठा और अन्य बहुतसी क्रियाओंमें 'मुद्राकरण आवश्यक' होता है, इसलिये ३७ वें द्वारमें, भिन्न भिन्न प्रकारकी मुद्राओंका वर्णन लिखा गया है।

३८ नन्दीरचना और प्रतिष्ठाविषयक क्रियाओंमें ६४ योगिनियोंके यन्त्रादिका आलेखन किया जाता है, इसलिये ३८ वें द्वारमें, इन योगिनियोंके नाम बतलाये गये हैं।

३९ वें द्वारमें, 'तीर्थयात्रा' करने वालेको किस तरह यात्राविधि करना चाहिये और जो यात्रानिमित्त संघ नीकालना चाहे उसे किस विधिसे प्रस्थानादि कृत्य करने चाहिये – इस विषयका उपयुक्त विधान किया गया है। इसमें संघ नीकालने वालेको किस किस प्रकारकी सामग्रीका संग्रह करना चाहिये और यात्रार्थियोंको किस किस प्रकारकी सहायता पहुंचाना चाहिये – इत्यादि बातोंका भी संक्षेपमें पर सारभूत रूपमें ज्ञातव्य उल्लेख किया गया है।

४० वें द्वारमें, पर्वादि तिथियोंका पालन किस नियमसे करना चाहिये, इसका विधान, ग्रन्थकारने अपनी सामाचारीके अनुसार, प्रतिपादित किया है। इस तिथिव्यवहारके विषयमें, जुदा जुदा गच्छके अनुयायियोंकी जुदी जुदी मान्यता है। कोई उदय तिथिको प्रमाण मानता है, तो कोई बहुभुक्त तिथिको ग्राह्य कहता है। पाक्षिक, चातुर्मासिक और सांवत्सरिक पर्वके पालनके विषयमें भी इसी तरहका गच्छवासियोंका पारस्परिक बडा मतभेद है। इस मतभेदको ले कर प्राचीन कालसे जैन संप्रदायोंमें परस्पर कितनाक विरोधभावपूर्ण व्यवहार चला आता दिखाई देता है। श्रीजिनप्रभ सूरिने अपने इस ग्रन्थमें, उसी सामाचारीका प्रतिपादन किया है जो खरतर गच्छमें सामान्यतया मान्य है।

४१ वें द्वारमें, अंगविद्यासिद्धिकी विधि कही गई है। यह 'अंगविद्या' नामक एक शास्त्र है जो आगममें नहीं गिना जाता, पर इसका स्थान आगमके जितना ही प्रधान माना जाता है। इसलिये इसकी साधनाविधि यहांपर स्वतंत्र रूपसे बतलाई गई है। यह विधि ग्रन्थकारने, सैद्धान्तिक विनयचन्द्रसूरिके उपदेशसे ग्रथित की है, ऐसा इसके अंतिम उल्लेखमें कहा है।

इस प्रकार, विधिप्रपामें प्रतिपादित मुख्य ४१ द्वारोंका, यह संक्षिप्त विषयनिर्देश है। इस निर्देशके वाचनसे, जिज्ञासु जनोंको कुछ कल्पना आ सकेगी कि यह ग्रन्थ कितने महत्त्वका और अलभ्य सामग्रीपूर्ण है। इस प्रकारके अन्य अन्य आचार्योंके बनाये हुए और भी कितनेक विधि-विधानके ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं, पर वे इस ग्रन्थके जैसे क्रमबद्ध और विशद रूपसे बनाये हुए नहीं ज्ञात होते। इस प्रकारके ग्रन्थोंमें यह 'शिरोमणि' जैसा है ऐसा कहनेमें कोई अत्युक्ति नहीं होती।

*

ग्रन्थकार जिनप्रभ सूरि कैसे बडे भारी विद्वान् और अपने समयमें एक अद्वितीय प्रभावशाली पुरुष हो गये हैं इसका पूरा परिचय तो इसके साथ दिये हुए उनके जीवनचरित्रके पढनेसे होगा, जो हमारे स्नेहास्पद धर्मबन्धु बीकानेरनिवासी इतिहासप्रेमी श्रीयुत अगरचन्दजी और भंवरलालजी नाहटाका लिखा हुआ है। इसलिये इस विषयमें और कुछ अधिक लिखनेकी आवश्यकता नहीं है।

*

संपादनमें उपयुक्त प्रतियोंका परिचय।

इस ग्रन्थका संपादन करनेमें हमें तीन हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त हुई थीं – जिनमें मुख्य प्रति पूनाके भाण्डारकर प्राच्यविद्यासंशोधन मन्दिरमें संरक्षित राजकीय ग्रन्थसंग्रहकी थी। यह प्रति बहुत प्राचीन और शुद्धप्राय है। इसके अन्तमें लिखनेवालेका नामनिर्देश और संवतादि नहीं दिया गया, इसलिये यह ठीक ठीक तो नहीं कहा जा सकता कि यह कबकी लिखी हुई है; पर पत्रादिकी स्थिति देखते हुए प्रायः संवत् १५०० के आसपासकी यह लिखी हुई होगी ऐसा संभवित अनुमान किया जा सकता है। इस प्रतिका पीछेसे किसी यज्ञ विद्वान् यतिजनने खूब अच्छी तरह संशोधन भी किया है और इसलिये यह प्रति शुद्धप्रायः है, ऐसा कहना चाहिये।

दूसरी प्रति श्रीमान् उपाध्यायवर्य श्रीसुखसागरजी महाराजके निजी संग्रहकी मिली थी। पर यह नई ही लिखी हुई है और शुद्धिकी दृष्टिसे कुछ विशेष उल्लेखयोग्य नहीं है।

तीसरी प्रति बीकानेरके भंडारकी थी जो श्रीयुत अगरचंदजी नाहटा द्वारा प्राप्त हुई थी। यह प्रति भी नई ही लिखी हुई है पर कुछ शुद्ध है*। इसके अन्त भागमें, जिनप्रभसूरिकृत 'देवपूजाविधि' नामक स्वतंत्र प्रकरण लिखा हुआ मिला,जिसे उपयोगी समझ कर हमने इस ग्रन्थके परिशिष्टके रूपमें मुद्रित कर दिया है। असलमें यह पूजाविधि भी इसी ग्रन्थका एक अवान्तर प्रकरण होना चाहिये। परंतु न मालूम क्यों ग्रन्थकारने इसको इस ग्रन्थमें सन्निविष्ट न कर जुदा ही प्रकरण रूपसे ग्रथित किया है। संभव है कि यह देवपूजाविधि प्रत्येक गृहस्थ जैनके लिये अवश्य और नित्य कर्तव्य होनेसे इसकी रचना स्वतंत्र रूपसे करना आवश्यक प्रतीत हुआ हो, ता कि सब कोई इसका अध्ययन और लेखन आदि सुलभताके साथ कर सके। इस देवपूजाविधिमें गृहप्रतिमापूजाविधि, चैत्यवन्दनविधि, स्नपनविधि, छत्रभ्रमणविधि, पञ्चामृतस्नात्रविधि और शान्तिपर्वविधि आदि और भी आनुषङ्गिक कई विधियोंका समावेश कर इस विषयको संपूर्णतया प्रतिपादित किया गया है।

*

उक्त प्रकारसे, प्रस्तुत ग्रन्थके संपादनकी प्रेरणा कर, उपाध्याय श्रीसुखसागरजी महाराजने इस प्रकार क्रिया-विधिके अमूल्य निधिरूप प्रस्तुत ग्रन्थराजके विशिष्ट स्वाध्यायका जो प्रशस्त प्रसंग हमारे लिये उपस्थित किया, तदर्थ हम, अन्तमें, आपके प्रति अपना कृतज्ञभाव प्रदर्शित कर; और जो कोई जिज्ञासु जन, इस ग्रन्थके पठन-पाठनसे अपनी ज्ञानवृद्धि करके विधिमार्गके प्रवासमें प्रगतिगामी बनेंगे, तो हम अपना यह परिश्रम सफल समझेंगे-ऐसी आशा प्रकट कर, इस प्रस्तावनाकी यहांपर पूर्णता की जाती है। इत्यलम्।

फाल्गुन पूर्णिमा
विक्रम संवत् १९९७
बंबई

जिनविजय

---

* यह प्रति बीकानेरके श्रीपूज्यजीके भंडारकी है और इसके अन्तमें लिपिकर्ताने अपना समय और नामादि बतलानेवाली इस प्रकारकी पुष्पिका लिखी है-

"संवत् १८९२ वर्षे मिती ज्येष्ठ शुक्ल ५ तिथ्यां कुमुदवारे श्रीहमीरगढ नयरे चतुर्मासी स्थिता पं० विधविलास लिखितं। श्रीमद्बृहत् खरतर गच्छे श्रीकीर्तिरत्नसूरि संतानीया। श्रीफलवर्द्धीनयरे लिखितं ॥"

शासनप्रभावक श्रीजिनप्रभसूरि।

[संक्षिप्त जीवन चरित्र]

लेखक—श्रीयुत अगरचन्दजी और भँवरलालजी नाहटा, बीकानेर।

जैनशासनमें प्रभावक आचार्योंका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्यों कि धर्मकी व्यावहारिक उन्नति उन्हीं पर निर्भर है। आत्मार्थी साधु केवल स्व-कल्याण ही कर सकता है; किन्तु प्रभावक आचार्य स्व-कल्याणके साथ साथ पर-कल्याण भी विशेष रूपसे करते हैं, इसी दृष्टिसे उनका महत्त्व बढ़ जाना स्वाभाविक है। प्रभावक आचार्य प्रधानतया आठ प्रकारके बतलाये हैं यथा—

पावयणी धम्मकही वाई नेमित्तिओ तवस्सी य।
विज्जासिद्धा य कवी अट्ठ य पभावगा भणिया॥

अर्थात्—प्रावचनिक, धर्मकथाप्ररूपक, वादी, नैमित्तिक, तपस्वी, विद्याधारक, सिद्ध और कवि ये आठ प्रकार के प्रभावक होते हैं।

समय समय पर ऐसे अनेक प्रभावकोंने जैन शासनकी सुरक्षा की है, उसे लाञ्छित और अपमानित होनेसे बचाया है, अपने असाधारण प्रभावद्वारा लोकमानस एवं राजा, बादशाह,, मंत्री, सेनापति आदि प्रधान पुरुषोंको प्रभावित किया है। उन सब आचार्योंके प्रति बहुत आदरभाव व्यक्त किया गया है और उनकी जीवनियां अनेक विद्वानोंने लिख कर उनके यशको अमर बनाया है। प्रभावक चरित्रादि ग्रन्थोंमें ऐसे ही आचार्योंका जीवन वर्णन किया गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ—

इस विधिप्रपाके कर्ता श्रीजिनप्रभ सूरि अपने समयके एक बडे भारी प्रभावक आचार्य थे। उन्होंने दिल्लीके सुलतान महमद बादशाह पर जो प्रभाव डाला वह अद्वितीय और असाधारण है। उसके कारण मुसलमानोंसे होने वाले उपद्रवोंसे संघ एवं तीर्थोंकी विशेष रक्षा हुई और जैन शासनका प्रभाव बढ़ा। उन्होंने विद्वत्तापूर्ण और विविध दृष्टियोंसे अत्यन्त उपयोगी, अनेक कृतियां रच कर साहित्य भंडारको समृद्ध बनाया। पं० लालचंद भगवानदास गांधीने उनके सम्बन्धमें "जिनप्रभसूरि अने सुलतान महमद" नामक गुजराती भाषामें एक अच्छी पुस्तक लिखी है। पर उसमें ज्यों ज्यों सामग्री उपलब्ध होती रही त्यों त्यों वे जोडते गये अतः शृंखला नहीं रही! हम उस पुस्तकके मुख्य आधारसे, पर स्वतंत्र शैलीसे, नवीन अन्वेषणमें उपलब्ध ग्रन्थोंके साथ सूरिजीका जीवन चरित्र इस निबन्ध में संकलित करते हैं।

जिनप्रभ सूरिकी गुरु परम्परा—

खरतर गच्छके सुप्रसिद्ध वादी-प्रभावक श्रीजिनपति सूरिजीके शिष्य श्रीजिनेश्वर सूरिजीके शिष्य श्रीजिनप्रबोध सूरि हुए। इनके गुरुभ्राता श्रीमालगोत्रीय श्रीजिनसिंह सूरिजीसे खरतरगच्छकी लघु शाखा प्रसिद्ध हुई। इसका मुख्य कारण प्राकृत प्रबन्धावलीमें' यह बतलाया गया है कि—एक बार श्रीजिनेश्वर सूरि जी पल्हपुर (पालणपुर) के उपाश्रयमें विराजते थे, उस समय उनके दण्डके अकस्मात् तडतड शब्द करते हुए दो टुकडे हो गए। सूरिजीने शिष्योंसे पूछा कि—'यह तडतडाट कैसे हुआ?' शिष्योंने कहा—'भगवन्! आपके दण्डेके दो टुकडे हो गए'। यह सुन कर सूरिजीने उसके फलका विचार करते हुए निश्चय किया कि मेरे पश्चात् मेरी शिष्य-सन्ततिमेंसे दो शाखाएं निकलेंगी। अतः अच्छा हो, यदि मैं

स्वयं ही ऐसी व्यवस्था कर दूं ताकि भविष्यमें संघमें किसी प्रकारका कलह न हो और धर्म-प्रचारका कार्य सुचारु रूपसे चलता रहे ।

इसी अवसर पर (दिल्लीकी ओरके) श्रीमाल संघने आ कर आचार्यश्रीसे विज्ञप्ति की—'भगवन्! हमारी तरफ आजकल मुनियोंका विहार बहुत कम हो रहा है, अतः हमारे धर्मसाधनके लिये आप किसी योग्य मुनिको भेजें' । सूरिजीने पूर्वोक्त निमित्तका विचार कर श्रीमाल कुलोत्पन्न जिनसिंह गणिको सं० १२८० में (?) आचार्य पद और पद्मावती मंत्र दे कर कहा—'यह श्रीमाल संघ तुम्हारे सुपुर्द है; संघके साथ जाओ और उनके प्रान्तोंमें विहार कर अधिकाधिक धर्मप्रचार करो' । गुरुदेवकी आज्ञाको शिरोधार्य कर श्रीजिनसिंह सूरि श्रावकोंके साथ श्रीमाल ज्ञातीय लोगोंके निवास स्थलोंमें विहार करने लगे। उपकारीके नाते समस्त श्रीमाल संघने श्रीजिनसिंह सूरिजीको अपने प्रमुख धर्माचार्य रूपमें माना ।

जिनप्रभ सूरिकी दीक्षा—

श्रीजिनसिंह सूरिजीने गुरुप्रदत्त पद्मावती मंत्रकी, छः मासके आयंबिल तप द्वारा साधना प्रारम्भ की। तत्परताके साथ नित्य ध्यान करने लगे। देवीने प्रगट हो कर कहा—'आपकी अब आयु बहुत थोड़ी रही है, अतः विशेष लाभकी संभावना कम है' । आचार्यश्रीने कहा—'अच्छा, यदि ऐसा है तो मेरे पट्टयोग्य शिष्य कौन होगा सो वतलावें, और उसे ही शासनप्रभावनामें प्रत्यक्ष व परोक्ष रूपसे सहायता दें' । पद्मावती देवीने कहा—'सोहिलवाड़ी नगरीमें श्रीमाल जातिके तांबी गोत्रीय महर्द्धिक श्रावक महाधर रहता है। उसके पुत्र रत्नपालकी भार्या खेतलदेवीकी कुक्षिसे उत्पन्न सुभटपाल नामक सर्वलक्षणसम्पन्न पुत्र है, वही आपके पट्टका प्रभावक सूरि[२] होगा' । देवीके इन वचनोंको सुन कर आचार्यश्री सोहिलवाड़ी नगरीमें पधारे। श्रावकोंने समारोह पूर्वक उनका स्वागत किया। एक वार आचार्यश्री श्रेष्ठिवर्य्य महाधरके यहां पधारे। श्रेष्ठिवर्य्यने भक्ति-गद्‌-गद्‌ हो कर कहा—'भगवन्! आपने मुझ पर वड़ी कृपा की, आपके शुभागमनसे मैं और मेरा गृह पावन हो गया, मेरे योग्य सेवा फरमावें!' आचार्यश्रीने कहा—'महानुभाव! तुम्हारा धर्मप्रेम प्रशंसनीय है, भावी शासन-प्रभावनाके निमित्त तुम्हारे वालकोंमेंसे सुभटपालकी भिक्षा चाहता हूं। संसारमें अनेक प्राणी अनेक वार मनुष्य जन्म धारण करते हैं लेकिन साधनाभावसे अपनी प्रतिभाको विकशित करनेके पूर्व ही परलोकवासी हो जाते हैं। मानव जन्मकी सफलताके लिये त्याग ही सर्वोत्तम साधन है जिसके द्वारा धर्मका अधिकाधिक प्रचार और आत्माका कल्याण हो सकता है। आशा है तुम्हें मेरी याचना स्वीकृत होगी। इससे तुम्हारा यह वालक केवल तुम्हारे वंशको ही नहीं वल्कि सारे देश और धर्मको दीपाने वाला उज्ज्वल रत्न होगा।

---

१ इस प्रवन्धावलीकी एक पुरानी प्रति श्रीजिनविजयजीके पास है, उससे नकल करके जिनप्रभसूरि प्रबंधको हमने 'जैन सत्यप्रकाश' मासिकमें प्रकाशित किया। जिसका गुजराती अनुवाद पं० लालचंद भगवानदासने अपने **'जिनप्रभसूरि अने सुलतान महमद'** नामक पुस्तकमें प्रकाशित किया है। प्रवन्धावलीकी एक और प्रति श्रीहरिसागरसूरिजीके पास भी देखी थी। वह प्रति सं० १६२२ आश्विन सुदि १५ को लिखी हुई थी। श्रीजिनविजयजी वाली प्रति भी लगभग इसके समकालीन लिखित प्रतीत होती है।

२ 'खरतर गच्छ पट्टावली संग्रह'में प्रकाशित १७ वीं शताव्दीकी पट्टावली नं० ३ में लिखा है कि—इनका जन्म झुंझनूके तांबी श्रीमालके यहां हुआ था। ये उनके पांच पुत्रोंमेंसे तृतीय पुत्र थे। वीकानेरके जयचंदजीके भंडारकी पट्टावलीमें लिखा है कि वागड़ देशके वड़ौदा ग्रामके किसी श्रावकके छोटे पुत्र थे। इन्हें ११ वर्षकी छोटी उम्रमें आचार्य पद मिला।

श्रीजिनप्रभ सूरिजीके जन्म संवतका उल्लेख कहीं देखने में नहीं आया; पर सं० १३५२ में इन्होंने कातन्त्र विभ्रमवृत्तिकी रचना की थी। उस समय इनकी आयु २०–२५ वर्षकी आवश्य होगी, अतः जन्म सं० १३२५ के लगभग होना संभव है। प्रबन्धावलीमें दीक्षा का समय सं० १३२६ लिखा है पर वह शंकित मालूम देता है।

महाधर सेठने आचार्यश्रीकी आज्ञाको सहर्ष स्वीकार की और अच्छे मुहूर्त्तमें सुभटपालको समारोह पूर्वक सं० १३२६ (?) में दीक्षा दिलाई। आचार्यश्रीने नवदीक्षित मुनिको खूब तत्परतासे शास्त्रोंका अध्ययन कराया एवं साम्नाय पद्मावती मंत्र समर्पित किया-जिससे थोडे समयमें मुनिवर्य प्रतिभाशाली गीतार्थ हो गये। सं० १३४१ में किढिवाणा नगरमें श्रीजिनसिंह सूरिजीने उन्हें सर्वथा योग्य जान कर अपने पट्टपर स्थापित कर **श्रीजिनप्रभसूरि** नामसे प्रसिद्ध किया। इसके कुछ समय पश्चात् श्रीजिनसिंह सूरिजी स्वर्गवासी हुए।

श्रीजिनप्रभ सूरिजीके पुण्यप्रभाव और गुरुकृपासे पद्मावती देवी प्रत्यक्ष हुई। एक वार इन्होंने देवीसे पूछा कि-'हमारी किस नगरमें उन्नति होगी?' पद्मावतीने कहा-'आप योगिनी-पीठ दिल्लीकी ओर विहार कीजिये। उधर आपको पूर्ण सफलता मिलेगी'। सूरिजी देवीके सङ्केतानुसार दिल्ली प्रान्तमें विचरने लगे[1]।

ग्रन्थ रचना-

सं० १३५२ में योगिनीपुर (दिल्ली) में माथुरवंशीय ठक्कुर खेतल कायस्थकी अभ्यर्थनासे 'कातन्त्र विभ्रम' पर २६१ श्लोक प्रमाणकी वृत्ति बनाई। सूरिजी के उपलब्ध ग्रन्थोंमें यह सर्वप्रथम कृति है।

सं० १३५६ में श्रेणिकचरित्र-द्व्याश्रय काव्यकी रचना की।

सं० १३६३ का चातुर्मास अयोध्यामें किया। वहां साधु और श्रावकोंके आचारोंका विशदसंग्रह रूप इसी **विधिप्रपा ग्रन्थ**को विजयादशमीके दिन रच कर पूर्ण किया। सं० १३६४ में वैभारगिरिकी यात्रा करके वैभारगिरिकल्प निर्माण किया और कल्पसूत्र पर 'सन्देह विषौषधि' नामक वृत्ति बनाई।

सं० १३६५ के पौषमें अयोध्यामें (१) अजितशान्तिकी बोधदीपिका वृत्ति, (२) पौष कृष्णा ९ को उपसर्गहरकी अर्थकल्पलता वृत्ति, (३) पोष सुदि ९ के दिन भयहर स्तोत्रकी अभिप्रायचन्द्रिका वृत्ति बनाई। इन कुछ वर्षोंमें सूरिजीने पूर्व देशके प्रायः समस्त तीर्थोंकी यात्रा कर, कई कल्प, स्तोत्र इत्यादि रचे।

संवत् १३६९ में मारवाड देशकी ओर विचरते हुए फलौधी तीर्थकी यात्रा कर वहांका स्तोत्र बनाया। कहा जाता है कि सूरिमहाराज प्रतिदिन एकाध नवीन स्तोत्रकी रचना करनेके पश्चात् आहार ग्रहण करते थे। इसके फल स्वरूप आपने ७०० स्तोत्र[2] जितने विशाल स्तोत्र-साहित्यकी रचना कर जैन मुनियोंके सामने एक उत्तम आदर्श उपस्थित किया। आपके निर्माण किये हुए स्तोत्रोंकी सूची पीछे दी गई है।

इस विशाल स्तोत्र-साहित्यमेंसे अब केवल ७५ के लगभग ही उपलब्ध हैं। इनमें कई यमकमय, चित्रकाव्य, आदि अनेक वैशिष्ट्यको लिये हुए हैं, जिससे सूरिजीके असाधारण पाण्डित्यका परिचय मिलता है।

सूरिजीने संस्कृत, प्राकृत और देश्य भाषामें इस प्रकार सेंकडों ही स्तोत्रोंकी रचना की, और उसके साथ फारशी भाषामें भी उन्होंने कई स्तोत्र बनाये जो जैन साहित्यमें एकदम नवीन और अपूर्व वस्तु है।

---

१ यहां तकका यह वृत्तान्त 'प्राकृत प्रबन्धावली' अन्तर्गत श्रीजिनप्रभसूरि प्रबन्धसे लिखा गया है।

२ उपदेशसप्तति (सं० १५०३ सोमधर्मगणिकृत) एवं सिद्धान्तस्तवावचूरि। अवचूरिकारने इन स्तोत्रोंको, तपागच्छीय सोमतिलकसूरिको, श्रीजिनप्रभसूरिने पद्मावतीके सङ्केतसे तपागच्छका भावी उदय ज्ञात कर, भेंट करना लिखा है।

शायद ये ही सबसे पहले जैनाचार्य थे जिन्होंने यावनी भाषाका अध्ययन किया और उसमें स्तोत्र जैसी कृतियां भी कीं। दिल्लीमें अधिक रहने और मुसलमान बादशाहोंके दरबारमें आने-जानेके विशेष प्रसंगोंके कारण इनको उस भाषाके अध्ययनकी परम आवश्यकता मालूम दी होगी। शायद बादशाहको, जैन देवकी स्तुति कैसे की जाती है इसका परिचय करानेके निमित्त ही इन्होंने उस भाषामें इन स्तोत्रोंकी रचना की हो।

सं० १३७६ में दिल्लीके सा० देवराजने शत्रुंजय, गिरनार आदि तीर्थोंका संघ निकाला। उस संघमें सूरिजी भी साथ थे। मिती ज्येष्ठ कृष्ण १ को शत्रुंजय तीर्थकी यात्रा की और मिती ज्येष्ठ शुक्ल ५ को श्री गिरनार तीर्थकी यात्रा की। देवराजके संघ एवं इन तीर्थद्वयकी यात्राका उल्लेख सूरजीने स्वयं अपने तीर्थयात्रा स्तवन एवं त्रोटकमें किया है।

सं० १३८० में पादलिप्तसूरि कृत वीरस्तोत्रकी वृत्ति और सं० १३८१ में राजादिरुचादिगणवृत्ति, साधुप्रतिक्रमण-वृत्ति, सूरिमंत्राम्नाय आदि ग्रन्थोंकी रचना की।

सं० १३८२ के वैशाख शुद्ध १० को श्रीफलवर्द्धि तीर्थकी यात्रा कर स्तोत्र बनाया।

सुलतान कुतुबुद्दीन मिलन—

हमारी ओरसे प्रकाशित ऐतिहासिक जैन काव्यसंग्रहके 'जिनप्रभसूरि गीत' में लिखा है कि सूरिजीने सुलतान कुतुबुद्दीनको रञ्जित किया था। अठाही, आठम, चौथको सम्राट् कुतुबुद्दीन उन्हें अपनी सभामें बुलाता था और एकान्तमें बैठ कर उनसे अपना संशय निवारण किया करता था। सुप्रसन्न हो कर सुलतानने गांव, हाथी आदि सूरिजीको लेनेके लिये कहा पर निस्पृह गुरुजीने उनमेंसे कुछ भी ग्रहण नहीं किया।

सं० १३९३ में रचित 'नाभिनन्दनोद्धार प्रबन्ध[1]' में लिखा है कि—शत्रुञ्जयोद्धारक समरसिंहने शाही फरमान ले कर संघ और श्रीजिनप्रभ सूरिजीके साथ मथुरा और हस्तिनापुरकी यात्रा की थी।

महमद तुगलक प्रतिबोध[2]।

बादशाहका आमन्त्रण—

सूरिजीके अद्भुत पाण्डित्यकी ख्याति सर्वत्र फैल चुकी थी। एक वार सं० १३८५ में जब आप दिल्लीके शाहपुरामें विराजमान थे तब दिल्लीपति सम्राट् महमद तुगलकने अपनी सभामें विद्वद्गोष्ठी

---

१ यह ग्रन्थ गुजराती अनुवाद सहित अहमदाबादसे छप चुका है।

२ डॉ. ईश्वरीप्रसादके भारतवर्षके इतिहास (पृ० २२३-३२) में सुलतान महमद तुगलकके संबन्धमें अच्छा प्रकाश डाला गया है। उस ग्रन्थसे कुछ आवश्यक अंश नीचे दिया जाता है, इससे उसके स्वभाव चरित्रादिके विषयमें पाठकोंको अच्छी जाकानरी हो सकेगी। "**महम्मद तुगलक**—(सन् १३२५-१३५१ ई.)—अपने पिता गयासुद्दीनकी मृत्युके वाद शाहजादा जूना महम्मद तुगलकके नामसे दिल्लीकी गद्दी पर बैठा। दिल्लीके सुलतानोंमें वह सबसे अधिक विद्वान और योग्य पुरुष था। उसकी स्मरण शक्ति और बुद्धि अलौकिक थी और मस्तिष्क बड़ा परिष्कृत था। अपने समयकी कला तथा विज्ञानका वह ज्ञाता था, और बडी आसानी तथा खूबीके साथ फारसी भाषा बोल और लिख सकता था। उसकी मौलिकता, वक्तृत्व और विद्वत्ता देख कर लोग दंग रह जाते थे और उसे सृष्टिकी एक अद्भुत चीज समझते थे। तर्कशास्त्रका वह बडा पंडित था और उस विषयके प्रकाण्ड विद्वान भी उससे शास्त्रार्थ करनेका साहस नहीं करते थे।

वह अपने धर्मका पाबन्द था परंतु विधर्मियों पर अत्याचार नहीं करता था। वह मुल्लाओं और मौलवियोंकी रायकी परवाह नहीं करता था और प्राचीन सिद्धान्तों और परिपाटियोंको आंख बंध कर नहीं मानता था। उसने हिन्दुओंके साथ धार्मिक अत्याचार नहीं किया; और सती प्रथाको रोकनेका प्रयत्न किया। वह न्याय करनेमें किसीकी रियायत नहीं करता था और छोटे बडे सबके साथ एकसा वर्त्ताव करता था। विदेशियोंके प्रति वह बडा औदार्य्य दिखलाता था ...... उसमें ठीक निश्चय तक पहुंचनेकी शक्तिकी कमी थी। उसे क्रोध जल्दी आता था और जरासी देरमें वह आपेसे

करते हुए पण्डितोंसे पूछा कि–'इस समय सर्वोत्तम विद्वान कौन है?' इसके उत्तरमें ज्योतिषी धाराधरने श्रीजिनप्रभ सूरिजीके गुणोंकी प्रशंसा करते हुए उन्हें सर्वश्रेष्ठ विद्वान् बतलाया। बादशाह एक विद्याव्यसनी सम्राट् था, वह विद्वानोंका खूब आदर करता था। उसकी सभामें सदैव बहुतसे चुने हुए पण्डित विद्वद्गोष्ठी किया करते थे, जिसमें सम्राट् स्वयं रस लिया करता था। अतः पं० धाराधरसे श्रीजिनप्रभ सूरिजीका नाम श्रवण कर उन्हींके द्वारा आचार्य श्रीको अपनी राजसभामें बहुमान पूर्वक बुलाया।

बादशाहसे मिलन व सत्कार–

सम्राट्का आमन्त्रण पा कर मिती पोषशुक्ला २ को संध्याके समय सूरिजी उससे मिले। सम्राट्ने अपने अत्यन्त निकट सूरिजीको बैठा कर भक्तिके साथ उनसे कुशलप्रश्न पूछा। सूरिजीने प्रत्युत्तर देते हुए नवीन काव्य रच कर आशीर्वाद दिया जिसे सुन कर सम्राट् अत्यन्त प्रमुदित हुआ। लगभग अर्धरात्रि तक सूरिजीके साथ सम्राट्की एकान्त गोष्ठी होती रही। रात्रि अधिक हो जानेके कारण सूरिजी वहीं रहे। प्रातःकाल पुनः सम्राट्ने सूरिजीको अपने पास बुलाया; और सन्तुष्ट हो कर १००० गाय, द्रव्यसमूह, श्रेष्ठ उद्यान, १०० वस्त्र, १०० कम्बल, एवं अगर, चंदन, कर्पूरादि सुगन्धित द्रव्य उन्हें अर्पण करने लगा। परन्तु–'जैन साधुओंको यह सब अकल्पनीय हैं'–इत्यादि समझाते हुए सूरिजीने उन सबका लेना अस्वीकार किया। किन्तु सम्राट्को अप्रीति न हो इसलिये राजाभियोग वश उनमेंसे केवल कम्बल वस्त्रादि अल्प वस्तुयें कुछ ग्रहण कीं।

सम्राट्ने विविध देशान्तरोंसे आये हुए पण्डितोंके साथ सूरिजीकी वाद-गोष्ठी करवा कर दो श्रेष्ठ हाथी मंगवाये। उनमेंसे एक पर श्रीजिनप्रभ सूरिजीको और दूसरे पर उनके शिष्य श्रीजिनदेव सूरिजीको चढ़ा[1] कर, अनेक प्रकारके शाही वाजित्रोंके समारोह पूर्वक, पौषध शालामें पहुंचाया। उस समय भट्टादि लोग विरुदावली गा रहे थे, राज्यधिकारी प्रधान-वर्ग भी, चारों वर्णकी प्रजाके सहित, उनके साथ थे। संघमें अपार आनंद छा रहा था; आचार्य महाराजकी जयध्वनिसे आकाश गूंज रहा था। श्रावकोंने इस सुअवसर पर आडंबरके साथ प्रवेश-महोत्सव किया और याचकोंको प्रचुर दान दे कर सन्तुष्ट किया।

संघरक्षा और तीर्थरक्षाके फरमान–

सम्राट्का सूरिजीसे परिचय दिनों-दिन बढने लगा जिससे उनके विद्वत्तादि गुणोंकी उसके चित्त पर जबरदस्त छाप पडी। उस समय जैनों पर आये दिन नाना प्रकारके उपद्रव हुआ करते थे।

बादर हो जाता था। वह चाहता था कि लोग उसके सुधारोंको शीघ्र स्वीकार कर लें। जब उसकी आज्ञाके पालनमें आनाकानी होती अथवा विलम्ब होता था तो वह निर्दय हो कर कठोर-से-कठोर दण्ड देता था। विद्वान् होनेके साथ ही साथ महम्मद एक वीर सिपाही और कुशल सेनापति भी था। सुदूर प्रान्तोंमें कई बार उसने युद्धमें महत्त्वपूर्ण विजय प्राप्त की थी। ...... वह कठोर हृदय होते हुए भी उदार था। अपने धर्मका पाबन्द होते हुए भी कट्टरता और पक्षपातसे दूर रहता था। और अभिमानी होते हुए भी उसका विनय प्रशंसनीय था। ....

महम्मद स्वेच्छाचारी था–परंतु उसकी चित्तवृत्ति उदार थी। शासन-प्रबन्धके संबन्धमें वह धर्माधिकारियोंको जरा भी हस्तक्षेप नहीं करने देता था और हिन्दुओंके प्रति उसका व्यवहार अन्य सुलतानोंकी अपेक्षा अधिक निष्पक्ष और सौजन्यपूर्ण था। वह बड़ा न्यायप्रिय था। शासनके छोटे बडे सभी कामोंकी स्वयं देख भाल करता था और फकीर तथा गृहस्थ सभीको न्यायकी दृष्टिसे समान समझता था।"

1 यद्यपि हाथी पर आरोहण करना मुनियोंका आचार नहीं है, परन्तु शासन-प्रभावनाका महान् लाभ एवं सम्राट्के विशेष आग्रहके कारण यह प्रवृत्ति अपवाद रूपसे हुई ज्ञात होती है। सं० १३३४ में रचित प्रभावकचरित्रमें भी, हस्त्यारूढ़के नामका होनेका उल्लेख मिलता है।

अतः समस्त श्वेताम्बर दर्शनकी उपद्रवसे रक्षा करनेके लिये सम्राट्ने एक फरमान पत्र सूरिजीको समर्पण किया। गुरुश्रीने चारों दिशाओंमें उस फरमानकी नकलें भेज दीं जिससे शासनकी बड़ी भारी उन्नति हुई। इसी प्रकार एक दिन सूरिजीने तीर्थोंकी रक्षाके लिये सम्राट्का ध्यान आकर्षित किया। सम्राट्ने तत्काल शत्रुञ्जय, गिरनार, फलौधी आदि तीर्थोंकी रक्षाके लिये फरमान पत्र लिखवा कर दे दिये। उन फरमान पत्रोंकी नकलें भी तीर्थोंमें भेज दीं गईं। अन्य समय एक वार सूरिजीके उपदेशसे सम्राट्ने बहुत वन्दियोंको कैदसे मुक्त कर दिया।

सं० १३८५ की माघ शुद्धि ७ को दिल्लीमें सूरिजीने 'राजप्रासाद'[1] नामक शत्रुंजय कल्प वनाया।

कन्यानयनकी चमत्कारी प्रतिमाका उद्धार—

संवत् १३८५ में आसीनगर (हांसी) के अल्लविय वंशके किसी क्रूर व्यक्तिने श्रावकों एवं साधुओंको वंदी वना कर उनकी विडम्वना की। उसने कन्यानयनके श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी पाषाण मय प्रतिमाको खण्डित कर दी, और सं० १२३३ आषाढ शुद्धि १० गुरुवारको, श्रीजिनपति सूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित एवं उनके चाचा विक्रमपुर निवासी सा० मानदेव कारित, २३ अंगुल प्रमाण वाली श्रीमहावीर भगवानकी चमत्कारी प्रतिमाको[2] अखण्डित रूपसे ही गाड़ीमें रख कर दिल्ली ले आया। सम्राट् उस समय देवगिरिमें था। अतः उसके आने पर उसकी आज्ञानुसार व्यवस्था करनेके विचारसे उस जिनविम्बको तुगुलकावादके शाही खजानेमें रख दिया। इससे वह प्रतिमा पंद्रह मास पर्य्यन्त तुर्कोंके आधिकारमें रही।

महावीर प्रभुकी इस प्रतिमाका यह वृत्तान्त ज्ञात कर सूरि महाराज सोमवारके दिन राजसभामें पधारे। उस समय वृष्टि हो रही थी जिससे उनके पैर कीचड़से भर गये थे। सम्राट्ने यह देख कर मल्लिक काफ़ूर द्वारा अच्छे वस्त्रखंडसे उनके पैर पुंछवाये। सूरिजीने वहुत ही भाव-गर्भित काव्य द्वारा सम्राट्को आशीर्वाद दिया। उस काव्यकी व्याख्या करने पर सम्राट्के हृदयमें अत्यन्त चमत्कृति पैदा हुई। अवसर जान कर सूरि महाराजने उपर्युक्त महावीर प्रतिमाका वृत्तान्त वतला कर सम्राट्से, उसे जैनसंघको समर्पण कर देनेके लिये निवेदन किया। सम्राट्ने सूरिजीकी आज्ञाको सहर्ष स्वीकार की। तुगुलकावादके खजानेसे असूअग मल्लिकोंके कन्धे पर विराजमान करा कर प्रभुप्रतिमाको राजसभामें मंगवाई और सम्राट्ने दर्शन करके सूरि महाराजको समर्पण कर दी। उस चमत्कारी प्रतिमाकी प्राप्तिसे संघको अपार हर्ष हुआ। समस्त संघने एकत्र हो कर वड़े समारोहके साथ सुखासनमें विराजमान कर 'मलिकताजदीन सराय' के जिनमन्दिरमें उसे स्थापित की। सूरिजीने वासक्षेप किया, और श्रावकलोग प्रतिदिन पूजन करने लगे।

कन्यानयकी प्रतिमाका पूर्व इतिहास—

इस प्रतिमाके पूर्व इतिहासके विषयमें सूरिजीने 'कन्यानयन' तीर्थकल्पमें लिखा है कि—सं० १२४८ में पृथ्वीराज चोहानके, सहाबुद्दीन गौरी द्वारा मारे जाने पर, राज्यप्रधान परम श्रावक सेठ रामदेवने स्थानीय श्रावक संघको लिखा कि—तुर्कोंका राज्य हो गया है, अतः महावीर प्रभुके विंवको कहीं प्रच्छन्नरूपसे रखना आवश्यक है। इस सूचनासे वहांके श्रावकोंने दाहिमाज्ञातीय मंडलेश्वर कैमासके नामसे वसे हुए 'कयंवास स्थल' में वालुके नीचे प्रतिमाको गाड़ दी।

सं० १३८६ में सूरिजीने ढिंपुरी तीर्थ स्तोत्रकी रचना की।

---

१ इस कल्प का नाम 'राजप्रासाद' होनेका कारण सूरिजीने ही वताया है कि इसके रचना-प्रारंभके समय राजाधिराज (महमद तुगुलक) संघ पर प्रसन्न हुए थे। उपर्युक्त फरमान द्वयकी प्राप्तिसे भी इसका समर्थन होता है।

सं० १३११ के दारुण दुर्भिक्षमें जीवन निर्वाहके लिये जाजओ नामक सूत्रधार कन्नाणयसे सुभिक्ष देशकी ओर चला। प्रथम प्रयाण थोड़ा ही करना चाहिये यह विचार कर उसने रात्रिनिवास 'कयंवास स्थल'में किया। अर्द्धरात्रिके समय उससे स्वप्नमें देवताने कहा—'तुम जहां सोये हो उसके कितनेक हाथ नीचे प्रभु महावीरकी प्रतिमा है। तुम उसे प्रकट करो ता कि तुम्हें देशान्तर न जाना पड़े और यहीं निर्वाह हो जाय!' संभ्रम पूर्वक जग कर देवकथित स्थानको अपने पुत्रादिसे खुदवाने पर प्रतिमा प्रकट हुई। यह शुभ सूचना उसने श्रावकोंको दी। उन्होंने महोत्सवके साथ मन्दिरजीमें प्रतिमाको स्थापित की और सूत्रधारकी आजीविका बांध दी।

एक बार न्हवणकरानेके पश्चात् प्रभुबिंब पर पसीना आता दिखाई दिया। बार-बार पोंछने पर भी अविरल गतिसे पसीना आता रहा। इससे श्रावकोंने भावी अमंगल जाना। इतने ही में प्रभातके समय जेहुय लोगोंकी धाड़ आई। उन्होंने नगरको चारों तरफसे नष्ट किया। इस प्रकार प्रकट प्रभाव वाले महावीर भगवान, सं० १३८५ तक 'कयंवास स्थल' में श्रावकों द्वारा पूजे गये। इसके बादका वृत्तान्त ऊपर आ ही चुका है।

कन्यानयन स्थान निर्णय—

पं० लालचंद भगवानदासका मत है कि उपर्युक्त कन्नाणय या कन्यानयन वर्त्तमान कानानूर है। पर हमारे विचारसे यह ठीक नहीं है। क्यों कि उपर्युक्त वर्णनमें, सं० १२४८ में उधर तुर्कोंका राज्य होना लिखा है; किन्तु उस समय दक्षिण देशके कानानूरमें तुर्कोंका राज्य होना अप्रमाणित है। 'युगप्रधानाचार्यगुर्वावली' में (जो कि श्री जिनविजयजी द्वारा सम्पादित हो कर 'सिंघी जैन ग्रन्थमाला' में प्रकाशित होने वाली है) कन्यानयनका कई स्थलोंमें उल्लेख आता है। उससे भी कन्नाणय, आसी नगर (हांसी) के निकट, वागड़ देशमें होना सिद्ध है। जिस कन्यानयनीय महावीर प्रतिमाके सम्बन्ध में ऊपर उल्लेख आया है उसकी प्रतिष्ठाके विषयमें भी गुर्वावलीमें लिखा है कि—सं० १२३३ के ज्येष्ठ सुदि ३ को, आशिकामें बहुतसे उत्सव समारोह होनेके पश्चात्, आषाढ महीनेमें कन्यानयनके जिनालयमें श्रीजिनपति सूरिजीने अपने पितृव्य सा० मानदेव कारित महावीर बिंबकी प्रतिष्ठा की और व्याघ्रपुरमें पार्श्वदेवगणिको दीक्षा दी। कन्यानयनके सम्बन्धमें गुर्वावलीके अन्य उल्लेख इस प्रकार हैं—

संवत् १३३४ में श्रीजिनचन्द्र सूरिजीकी अध्यक्षतामें कन्यानयन निवासी श्रीमाल ज्ञातीय सा० कालाने नागौरसे श्रीफलौधी पार्श्वनाथजीका संघ निकाला, जिसमें कन्यानयनादि समग्र वागड़ देश व सपादलक्ष देशका संघ सम्मिलित हुआ था।

संवत् १३७५ माघ सुदि १२ के दिन, नागौरमें अनेक उत्सवोंके साथ श्रीजिनकुशल सूरिजीके वाचनाचार्य-पदके अवसर पर, संघके एकत्र होनेका जहां वर्णन आता है वहां 'श्रीकन्यानयन, श्रीआशिका, श्रीनरभट प्रमुख नाना नगर ग्राम वास्तव्य सकल वागड़ देश समुदाय' लिखा है।

संवत् १३७५ वैशाख वदि ८ को, मन्त्रिदलीय ठकुर अचलसिंहने सुलतान कुतुबुदीनके फरमान से हस्तिनापुर और मथुराके लिये नागौरसे संघ निकाला। उस समय, श्रीनागपुर, रुणा, कोसवाणा, मेड़ता, कडुयारी, नवहा, झुंझुणु, नरभट, कन्यानयन, आसिकाउर, रोहद, योगिनीपुर, धामइना, जमुनापार आदि नाना स्थानोंका संघ सम्मिलित हुआ लिखा है। संघने क्रमशः चलते हुए नरभटमें श्रीजिनदत्तसूरि-प्रतिष्ठित श्रीपार्श्वनाथ महातीर्थकी वन्दना की। फिर समस्त वागड़ देशके मनोरथ पूर्ण करते हुए कन्यानयनमें श्रीमहावीर भगवानकी यात्रा की।

श्रीजिनचन्द्र सूरिजीने खण्डासराय (दिल्ली) चातुर्मास करके मेड़ताके राणा मालदेवकी वीनतिसे विहार कर मार्ग में धामइना, रोहद आदि नाना स्थानोंसे हो कर, कन्यानयन पधार कर महावीर प्रभुको नमस्कार किया।

संवत् १३८० में सुलतान गयासुद्दीनके फरमान ले कर दिल्लीसे शत्रुंजयका संघ निकला। वह सर्व-प्रथम कन्यानयन आया, वहां वीर प्रभुकी यात्रा कर फिर आशिका, नरभट, खाटू, नवहा, झुंझणू आदि स्थानोंमें होते हुए, फलौधी पार्श्वनाथजीकी यात्रा कर, शत्रुंजय गया।

उपर्युक्त इन सारे अवतरणोंसे कन्यानयनका, आशिकाके निकट वागड़ देशमें होना सिद्ध होता है। श्रीजिनप्रभ सूरिजीने कन्यानयनके पास 'कयंवासस्थल' का जो कि मंडलेश्वर कैमासके नामसे प्रसिद्ध था, उल्लेख किया है। मंडलेश्वर कैमासका संवन्ध भी कानानूरसे न हो कर हांसीके आसपासके प्रदेशसे ही हो सकता है। गुर्वावलीके अवतरणोंसे नागौरसे दिल्लीके रास्तेमें नरभट और आशिकाके बीचमें कन्यानयन होना प्रामाणित है। अनुसन्धान करने पर इन स्थानोंका इस प्रकार पता लगा है—

नरभट—पिलानी से ३ मील।

कन्यानयन—वर्तमान कन्नाणा दादरी से ४ मील जिंद रिसायतमें है।

आशिका—सुप्रसिद्ध हांसी।

पं० भगवानदासजी जैनने ठ० फेरु विरचित 'वस्तुसार' ग्रन्थकी प्रस्तावनामें कन्यानयनको वर्त्तमान करनाल वतलाया है, परन्तु हमें वह ठीक नहीं प्रतीत होता। गुर्वावलीके उल्लेखानुसार करनाल कन्यानयन नहीं हो सकता।

इसमें अव एक यह आपत्ति रह जाती है कि श्रीजिनप्रभ सूरिजीने स्वयं 'कन्याननीय—महावीरकल्प' में कन्यानयनको चोल देशमें लिखा है। हमारे विचारसे यह चोल देश, जिस स्थानको हम वतला रहे हैं, पूर्वकालमें उसे भी चोल देश कहते हों। इस विषयमें विशेष प्रमाण न मिलनेसे विशेष रूपसे नहीं कह सकते; पर गुर्वावलीमें महावीर प्रतिमाकी प्रतिष्ठाके संवन्धमें जव यह उल्लेख है कि—सं० १२३३ के ज्येष्ठ सुदि ३ को, आशिकामें धार्मिक उत्सव होनेके पश्चात्, आषाढमें ही कन्यानयनमें महावीर विंवकी प्रतिष्ठा श्रीजिनपति सूरिजी द्वारा हुई; और वहांसे फिर व्याघ्रपुर आ कर पार्श्वदेवको दीक्षित किया। श्रीजिनप्रभ सूरिजीने भी प्रतिमाको 'सा० मानदेव कारित, सं० १२३३ आषाढ सुदि १० को प्रतिष्ठित, मानदेवको श्रीजिनपति सूरिजीका चाचा होना, और प्रतिष्ठा भी श्रीजिनपति सूरिजी द्वारा होना' लिखा है। उसी प्रकार ये सारी वातें प्राचीन गुर्वावलीसे भी सिद्ध और समर्थित हैं। पिछले उल्लेखोंमें भी, जो कि कन्यानयनके महावीर भगवानकी यात्राके प्रसङ्गमें हैं, कन्यानयनको वागड़ देशमें आशिकाके पास ही वतलाया है। इन सव वातों पर विचार करते हुए हमारी तो निश्चित राय है कि कन्यानयन कानानूर न हो कर वर्त्तमान कनाणा ही है। जिस प्रकार वागड़ देश ४ हैं, इसी प्रकार चोल देश भी दो हो सकते हैं।

विक्रमपुर स्थल निर्णय—

सा० मानदेव के निवास स्थान विक्रमपुरको पं० लालचंद भगवानदासने दक्षिणके कानानूर के पासका वतलाया है; पर यह विक्रमपुर तो निश्चिततया जेसलमेरके निकटवर्त्ती वर्तमान वीक्रमपुर है। श्रीजिनपति सूरिजीके रास में 'अत्थि मरुमंडले नयर विक्कमपुरे' शव्दोंसे विक्रमपुरको मरुस्थलमें सूचित किया है। संभव है सा० मानदेव व्यापारादिके प्रसङ्गसे वागड़ देशके कन्यानयनमें रहते हों और वहीं श्रीजिनपति सूरिजीके जाने पर महावीर भगवानकी प्रतिष्ठा कराई हो।

'जैन स्तोत्र संदोह' भा० २ की प्रस्तावना, पृ० ४० में, इस विक्रमपुरको बीकानेर बतलाया है, पर यह भूल ही है। बीकानेर तो उस समय बसा भी नहीं था, उसे तो राव बीकाने, सं० १५४५ में बसाया है। पूर्वका विक्रमपुर जेसलमेर निकटवर्ती वर्तमान वीक्रमपुर ही है।

देवगिरिकी ओर विहार और प्रतिष्ठानपुर यात्रा—

श्री जिनप्रभ सूरिने दिल्लीमें इस प्रकारकी धर्म-प्रभावना करके महाराष्ट्र (दक्षिण)की ओर विहार किया। सम्राट्ने सूरिजीके विहारमें सब प्रकारकी अनुकूलतायें प्रस्तुत कर दीं। सूरिजीने सम्राट् एवं स्थानीय संघके संतोषके निमित्त श्री जिनदेव सूरिजीको, १४ साधुओंके साथ, दिल्लीमें ठहरनेकी आज्ञा दी। सूरिजी विहार-मार्गके अनेक नगरोंमें धर्म-प्रभावना करते हुए देवगिरि (दौलताबाद) पहुंचे। स्थानीय संघने प्रवेशोत्सव किया[1]। वहांसे संघपति जगसिंह, साहण, मल्लदेव आदि संघ-मुख्योंके सहित प्रतिष्ठानपुर पधारे और वहां जीवंत मुनिसुव्रत स्वामीकी प्रतिमाके दर्शन किये। यात्रा करके संघ सहित सूरिमहाराज पुनः देवगिरि पधारे। सं० १३८७ भा० शु० १२ के दिन 'दीवाली ल्कप' की यहां पर रचना की।

देवगिरिके जैन मन्दिरोंकी रक्षा—

एक बार, पेथड़, सहजा और ठ० अचलके करवाए हुए जिनमन्दिरोंको तुर्क लोग तोड़नेके लिये उद्यत हुए,[2] तब सूरजीने शाही फरमान दिखला कर उन मन्दिरोंकी रक्षा की। इस प्रकार और भी अनेक तरहसे शासन-प्रभावना करते हुए, शिष्योंको सिद्धान्त-वाचना और तपोद्वहन कराते हुए, तीन वर्ष यहीं व्यतीत किये। इसी बीच सूरजीने उद्भट ऐसे बहुतसे वादियोंको शास्त्रार्थमें परास्त किया। अपने शिष्यों एवं अन्य गच्छके मुनियोंको काव्य, नाटक, अलङ्कार, न्याय, व्याकरण आदि शास्त्र पढाए[3]।

दिल्लीमें जिनदेव सूरिद्वारा धर्म-प्रभावना—

इधर दिल्लीमें विराजित श्री जिनदेव सूरिजी, विजयकटक (शाही छावणीमें) में सम्राट्से मिले। सम्राट्ने बहुत सन्मानके साथ एक सराय (मुहल्ला) जैन संघके निवास करनेके लिये दी। इस सराय का नाम 'सुलतान सराय' रखा गया। वहां सम्राट्ने पौषधशाला और जैनमन्दिर बनवा दिया, एवं ४०० श्रावकोंको सकुटुम्ब निवास करनेका आदेश दिया। पूर्वोक्त कन्यानयनके महावीर बिम्बको, इस सरायमें सम्राट्के बनवाये हुए मन्दिरमें विराजमान किया गया। श्वेताम्बर, दिगम्बर एवं अन्य धर्मावलम्बी जन भी भक्तिभावसे इस प्रतिमाकी पूजा करने लगे। इस शासनोन्नतिके कायसे सम्राट् महम्मद तुगुलकका सुयश सर्वत्र फैल गया।

---

१. 'संस्कृत जिनप्रभसूरि प्रबन्ध' और शुभशीलगणिके कथाकोशमें लिखा है कि–जिनप्रभ सूरिजी सर्वत्र चैत्य परिपाटी करते हुए सुलतान महमद शाहके साथ देवगिरि पहुंचे। तब सा० जगसिंहने ३२००० मुद्रा व्यय कर प्रवेशोत्सव किया। स्थानीय चैत्योंकी वन्दना करते हुए, जब सूरिजी जगसिंहके गृहमन्दिर पर पहुंचे तो वहां के रत्नमय जिनबिम्बोंको देखकर सूरिजीने शिर धुनाया। जगसिंहके कारण पूछने पर कहा–'हमने बहुत स्थानोंमें जिनमन्दिरोंका वंदन किया पर एक तो आज तुम्हारे गृहमन्दिरको स्थावर तीर्थरूप और दूसरे जंगम तीर्थरूप जंघरालपुरमें तपागच्छीय सोमतिलकसूरि को देखा।

२. विशेष जाननेके लिये 'जिनप्रभसूरि अने सुलतान महम्मद' पृ० ७९ से १०१ तक देखना चाहिए।

३. हर्षपुरीय गच्छके मलधारि श्री राजशेखरसूरिने अपने बनाये हुए न्यायकन्दली विवरणमें, सूरिजीका अपने अध्यापक रूपसे स्मरण किया है। उन्होंने सूरिजीसे न्यायकंदली० ग्रन्थका अध्ययन किया था। रुद्रपल्लीय गच्छके संघतिलकसूरिने सम्यक्त्वसप्ततिकावृत्तिमें सूरिजीको अपना विद्यागुरु बतलाया है। इसी तरह, सं० १३४९ में नागेन्द्र गच्छके श्री मल्लिषेण सूरिने अपनी स्याद्वादमञ्जरीमें जिनप्रभ सूरिजी द्वारा प्राप्त सहायताका उल्लेख किया है।

सम्राट्का स्मरण और आमंत्रण—

एक वार दिल्लीमें बादशाह महम्मद तुगुल्क अपनी सभामें विद्वानोंके साथ विद्वद्गोष्ठी करता था। उसको किसी शास्त्रीय विचारमें सन्देह उत्पन्न हो जाने पर उपस्थित पण्डितों द्वारा समाधान न होनेसे एकाएक श्रीजिनप्रभ सूरिजीकी स्मृति हो आई। उसने कहा—'यदि इस समय राजसभामें वे सूरि विद्यमान होते तो अवश्य हमारे संशय का निराकरण हो जाता। सचमुच उनकी विद्वत्ता अगाध है।' इस प्रकार सम्राट्के मुखसे सूरिजीकी प्रशंसा सुन कर दौलतावादसे आए हुए ताजुलमल्लिकने शिर झुका कर निवेदन किया—'स्वामिन्! वे महात्मा अभी दौलतावादमें हैं, परंतु वहांका जलवायु अनुकूल न होनेसे वे वहुत कृश हो गये हैं।' यह सुन कर प्रसन्नता पूर्वक सूरिजीके गुणोंका स्मरण करते हुए उस मल्लिकको आज्ञा दी कि तुम शीघ्र दुवीरखाने जाकर फरमान लिखा कर सामग्री सहित भेजो, जिससे वे आचार्य देवगिरिसे यहां शीघ्र पहुंच सकें। सम्राट्की आज्ञासे मल्लिकने वैसा ही किया। यथा समय शाही फरमान दौलतावादके दीवानके पास पहुंचा। सूवेदार कुतुहल्खानने सूरिजीको दिल्ली पधारनेके लिये सविनय प्रार्थना करते हुए शाही फरमान वतलाया। सूरि महाराजने सप्ताह भरमें (१० दिन वाद) तैयार होकर ज्येष्ठ सुदि १२ को राजयोगमें संघके साथ वहांसे प्रास्थान किया।

अल्लावपुरमें उपद्रव निवारण—

स्थान स्थानमें धर्म-प्रभावना करते हुए सूरि महाराज अल्लावपुर दुर्ग पधारे। असहिष्णु म्लेच्छोंको एक जैनाचार्यकी इस प्रकारकी महिमा सह्य नहीं हुई। उन लोगोंने सथवाडेके लोगोंकी वहुतसी वस्तुएं छीन लीं एवं इसी प्रकार कीतने ही उपद्रव करने प्रारम्भ कर दिये। जव दिल्लीमें विराजमान श्रीजिनदेव सूरजीको यह वृत्तान्त ज्ञात हुआ तो उन्होंने तत्काल सम्राट्को सारा हाल कह सुनाया। सम्राट्ने वहुमान पूर्वक फरमान भेज कर वहांके मल्लिक द्वारा लोगोंकी सारी वस्तुएं वापिस दिला दीं। इससे सूरिजीका अद्भुत प्रभाव पड़ा, उन्होंने १॥ मास रह कर वहांसे प्रस्थान कर दिया। क्रमशः विचरते हुए जव आप सिरोह पहुंचे तो सम्राट्ने उन्हें देवदूष्यकी भाँति सुकोमल १० वस्त्र भेज कर सत्कृत किया। वहांसे विहार करके दिल्ली पहुंचे।

दिल्लीमें सम्राट्से पुनर्मिलन—

जैनसंघ और सम्राट् उनके दर्शनोंके लिये चिर कालसे उत्कण्ठित था ही। पूज्य श्रीके शुभागमनसे उनका हृदय अत्यन्त प्रफुल्लित हो गया। मिती भादवा सुदि २ के दिन मुनिमण्डल एवं श्रावकसंघके साथ युगप्रधान गुरुजी राजसभामें पधारे। सम्राट्ने मृदु वचनोंसे वन्दन पूर्वक कुशल प्रश्न पूछा और अत्यन्त स्नेहवश सूरजीके हाथको चुम्वन कर अपने हृदय पर रखा। सूरि महाराजने तत्काल ही नवीन निर्मित पद्यों द्वारा आशीर्वाद दिया। जिसे श्रवण कर सम्राट्का चित्त अत्यन्त चमत्कृत हुआ। सूरिजीके साथ वार्तालाप होनेके अनन्तर विशाल महोत्सव पूर्वक अपने हिन्दु राजाओं और प्रधान पुरुषोंके साथ वाजित्रादि वजते हुए सन्मान पूर्वक सम्राट्ने सुलतान सरायकी पौषधशालामें उन्हें पहुंचा दिया। उनका प्रवेशोत्सव अपूर्व आनंददायक और दर्शनीय था।

पर्युषणमें धर्म-प्रभावना—

मिती भादवा शुक्ला ४ के दिन संघने महोत्सव पूर्वक पर्युषणाकल्प सूरिजीसे भक्ति पूर्वक श्रवण किया। सूरिजीके आगमन और प्रभावनाके पत्र पा कर देशान्तरीय संघ हर्षित हुआ। सूरिजीने राजवन्दी श्रावकोंको

लाखों रुपयोंके दण्डसे मुक्त कराया; एवं अन्य लोगोंको भी करुणावान् पूज्यश्रीने कैदसे छुड़ाया। जो लोग अवकृपा प्राप्त हो गए थे वे भी सूरिजीके प्रभावसे पुनः प्रतिष्ठाप्राप्त हुए। सूरिजी निरन्तर राजसभामें जाते थे। उन्होंने अनेक वादियों पर विजय प्राप्त कर जिन शासनकी शोभा बढाई थी। सं० १३८९ के ज्येष्ठ सुदि ५ को 'वीरगणधर' कल्प और मिती भादवा सुदि १० को दिल्लीमें ही **विविधतीर्थकल्प** नामक अद्वितीय ग्रन्थरत्नकी पूर्णाहुती की।

फाल्गुन मासमें, दौलताबादसे सम्राट्की जननी मगदूमई जहांके आने पर, चतुरङ्ग सेनाके साथ बादशाह उसकी अभ्यर्थनामें सन्मुख गया। उस समय सूरि महाराज भी साथ थे। बडथूण स्थानमें मातासे मिल कर सम्राट्ने सबको प्रचुर दान दिया। प्रधानादि अधिकारियोंको वस्त्रादि देकर सत्कृत दिया। वहांसे दिल्ली आकर सूरिजीको वस्त्रादि देकर सन्मानित किया।

दीक्षा और बिम्बप्रतिष्ठादि उत्सव—

चैत सुदि १२ के दिन, राजयोगमें, सम्राट्की अनुमतिसे उसके दिये हुए साईबाणकी छायामें नन्दी स्थापना की। सूरिजीने वहां ५ शिष्योंको दीक्षित किया। मालारोपण, सम्यक्त्व ग्रहण आदि धर्मकृत्य हुए। स्थिरदेवके पुत्र ठ० मदनने इस प्रसङ्ग पर बहुतसा द्रव्य व्यय किया।

मिती आषाढ सुदि १० को नवीन बनवाये हुए १३ अर्हत बिंबोंकी सूरिजीने महोत्सव पूर्वक प्रतिष्ठा की। बिम्बनिर्माता एवं सा० पहराजके पुत्र अजयदेवने प्रतिष्ठा-महोत्सवमें पुष्कळ द्रव्य व्यय किया।

सम्राट् समर्पित भट्टारक-सरायमें प्रवेश—

सुल्तान सराय राजसभासे काफी दूर थी; अतः सूरिजीको हमेशा आनेमें कष्ट होता है ऐसा विचार कर सम्राट्ने अपने महलके निकटवर्ती सुन्दर भवनों वाली नवीन सराय समर्पण की। श्रावक-संघको वहां पर रहनेकी आज्ञा देकर बादशाहने उसका नाम 'भट्टारक सराय' प्रसिद्ध किया। वहां पर वीरप्रभुका मन्दिर व पौषधशाला बनवाई। सं० १३८९ मिती आषाढ कृष्णा ७ को, उत्सव पूर्वक सूरि महाराजने पौषधशालामें प्रवेश किया। इस प्रसङ्ग पर विद्वानों एवं दीन अनाथोंको यथेष्ट दान दिया गया।

मथुरा तीर्थका उद्धार—

मार्गशिर महिनेमें सम्राट्ने पूर्व देशकी ओर विजय प्राप्त करनेके हेतु ससैन्य प्रस्थान किया। उस समय उन्होंने सूरिजीको भी वीनति करके अपने साथमें लिये। स्थान स्थान पर बन्दीमोचनादि द्वारा शासन-प्रभावना करते हुए सूरि महाराजने मथुरा तीर्थका उद्धार कराया।

हस्तिनापुरकी यात्रा और प्रतिष्ठा—

शाही सेनाके साथ पैदल विहार करते हुए सूरिजीको कष्ट होता है, यह विचार कर सम्राट्ने खोजे जहां मलिकके साथ उन्हें आगरेसे दिल्ली लौटा दिया। हस्तिनापुरकी यात्राका फरमान लेकर आचार्य श्री दिल्ली पहुंचे। चतुर्विध संघ हस्तिनापुरकी यात्राके निमित्त एकत्र हुआ। शुभ मुहूर्तमें बोहित्थ (चाहड पुत्र) को संघपतिका तिलक कर यहांसे प्रस्थान किया। संघपति बोहित्थने स्थान स्थान पर महोत्सव किये।

तीर्थभूमिमें पहुंच कर तीर्थको बधाया। नवनिर्मित शान्तिनाथ, कुंथुनाथ, अरनाथ आदि तीर्थकरों-के बिम्बोंकी सूरिजीसे प्रतिष्ठा करवाई। अंबिकादेवीकी प्रतिमा स्थापित की। संघपतिने संघवात्सल्यादि किये। संघने घर, भोजन आदि द्वारा याचकोंको सन्तुष्ट किया। संवत् १३८९ वैशाख सुदि ६ के दिन रचित,

हस्तिनापुर तीर्थकल्पमें, संघ सहित यात्रा करनेका सूरिजीने स्वयं उल्लेख किया है। तीर्थयात्रासे लौट कर सूरिजीने वैशाख सुदि १० के दिन श्रीकन्यानयनके महावीर बिम्बको सम्राट्के बनवाये हुए जैन मन्दिरमें महोत्सव पूर्वक स्थापित किया।

इधर सम्राट् भी दिग्विजय करके दिल्ली लौटा। जैनमन्दिर और उपाश्रयोंमें उत्सव होने लगे। सम्राट् एवं सूरिजीका सम्बन्ध उत्तरोत्तर घनिष्ठता प्राप्त करने लगा। अतः सूरिजी और सम्राट् दोनोंके द्वारा जिनशासनकी बड़ी प्रभावना होने लगी। सूरिजीके प्रभावसे दिगम्बर श्वेताम्बर समस्त जैन संघ व तीर्थोंका उपद्रव शाही फरमानों द्वारा सर्वथा दूर हो गया।

ग्रन्थान्तरोंके चमत्कारिक उल्लेख—

सुलतान प्रतिबोधका उपर्युक्त वृत्तान्त, विविधतीर्थकल्प ग्रन्थान्तर्गत **'श्रीकन्यानयन-महावीर प्रतिमाकल्प'** और रुद्रपल्लीय गच्छके श्रीसोमतिलक सूरि कृत **'कन्यानयन-श्रीमहावीर-तीर्थकल्प परिशेष'** से लिखा गया है जो कि प्रथम स्वयं सूरि महाराजकी और दूसरी समकालीन रचना है। अब प्राकृत जिनप्रभसूरिप्रबन्धादि ग्रन्थान्तरोंसे सूरिजी एवं सम्राट् सम्बन्धी विशेष बातें संक्षेपमें दी जाती हैं।

पद्मावती सांनिध्य—

पद्मावती देवीकी सूचनानुसार सूरिजी दिल्लीके शाहपुरामें आकर ठहरे। एक बार शौचभूमि जाते समय अनार्योंने लेष्टु (ढेला-पत्थर) आदि द्वारा उन्हें अपमानित किया। पद्मावती देवीने उन अनार्योंको उचित शिक्षा दी। इससे उन्होंने भाग कर सुलतान महमदशाहसे सारा वृत्तान्त कहा। उसने चमत्कृत हो कर सूरिजीको अपने यहां बुलाया। सूरिजीके कुम्भकासनादि द्वारा सम्राट्का चित्त अत्यन्त प्रभावित हुआ।

व्यन्तरोपद्रव निवारण—

एक बार सम्राट्ने सूरिजीसे कहा—'मेरी प्रिया बालादेको किसी व्यन्तरकी बाधा है जिससे वह वस्त्र-ग्रहणादि शरीर शुश्रूषा नहीं करती। आपका प्रभाव असाधारण है अतः कृपया किसी प्रकारसे इस व्यन्त-रोपद्रवका निवारण करें'। सूरिजीने कहा,—'अच्छा! उसके पास जाकर कहो कि जिनप्रभ सूरि आते हैं।' सम्राट्ने वैसा ही किया। सूरिजीके आगमनकी बात सुन कर बालादेने सहसा उठ कर दासीसे वस्त्र मंगा कर पहन लिये। सूरि महाराजके नाममें ही कैसा अद्भुत प्रभाव है इसका प्रत्यक्ष फल देख कर सम्राट् अत्यन्त प्रसन्न हुआ, और सूरिजीको महलमें पधारनेकी बीनति की। सूरिजीने आते ही बालादेके देहमें प्रविष्ट व्यन्तरको कहा—'दुष्ट! तूं यहां कहांसे आया, चला जा'। उसने जब जानेकी आनाकानी की तो गुरुदेवने मेघनाद क्षेत्रपालके द्वारा उसे भगा दिया। रानी स्वस्थ हो गई और सूरिजीके प्रति अत्यन्त भक्तिभाव रखने लगी।

ईर्ष्यालु राघव चेतनको शिक्षा—

एक बार सम्राट्की सेवामें काशीसे चतुर्दशविद्यानिपुण मंत्र-तंत्रज्ञ राघवचेतन नामका ब्राह्मण आया। उसने अपनी चातुरीसे सम्राट्को रञ्जित कर लिया। सम्राट् पर जैनाचार्य श्रीजिनप्रभ सूरिजीका प्रभाव उसे बहुत अखरता था। अतः उन्हें दोषी ठहरा कर, उनका सम्राट् पर प्रभाव कम करनेके लिये सम्राट्की मुद्रिका अपहरण कर सूरिजीके रजोहरणमें प्रच्छन्न रूपसे डाल दी। पद्मावती देवीसे वृत्तान्त ज्ञात कर सूरिजीने धीरेसे उस मुद्रिकाको राघव चेतनकी पगडी पर लटका दी। सम्राट् मुद्रिका न पा कर इधर उधर देखने लगा तो राघव चेतनने कहा—'आपकी मुद्रिका सूरिजीके पास है।' सम्राट्ने जब सूरिजीकी ओर देखा तो उन्होंने

कहा—'उल्टा चोर कोतवालको दण्डे!' वाली उक्ति चरितार्थ हो रही है; मुद्रिका तो इसके मस्तक पर पड़ी है और यह हमारे पास बतलाता है। जब सम्राट्ने उसकी तलाशी ली तो वह अपनी करणीका फल पा कर म्लानमुख हो गया—"खाड खणे जो और को ता को कूप तैयार"।

कलंदर मुल्ला मानमर्दन—

इसी प्रकार फिर कभी राजसभामें खुरासानसे एक कलन्दर मुल्ला आया। उसने अपना प्रभाव जमाने और सूरिजीका प्रभाव घटानेके लिए अपनी टोपीको आकाशमें फैंक कर अधर रखी और गर्वपूर्वक सम्राट्से कहने लगा—'क्या कोई आपकी सभामें ऐसा है जो इस टोपीको नीचे उतार सकता है!' सम्राट्ने सूरिजीकी ओर देखा। उन्होंने तत्काल रजोहरण फैंक कर उसके द्वारा टोपीको ताडित करते हुए फकीरके मस्तक पर गिरा दी[1]। इस कौशलसे हताश होकर कलन्दरने एक पनिहारीके मस्तक पर रहे हुए घडेको अधर स्तम्भित कर दिया। सूरिजीने कहा—'घडेको स्तंभित करनेमें क्या है, बिना घडे पानीको स्तंभित करे वही श्रेष्ठ कला है'। सम्राट्ने मुल्लासे वैसा करनेको कहा परन्तु वह न कर सका। तब सूरिजीने तत्काल घडेको कंकरसे फोड कर पानीको अधर स्तंभित दिखला दिया।

अद्भुत भविष्य-वाणी—

एक समय सम्राट्ने शाही सभामें बैठे हुए समस्त पण्डितोंसे पूछा—'कहिये! आज मैं किस मार्गसे राजवाटिकामें जाऊंगा?' सभी पण्डितोंने अपनी अपनी बुद्धिके अनुसार लिख कर सम्राट्को दे दिया। सम्राट्ने सूरिजीसे कहा तो उन्होंने भी अपना मन्तव्य लिख दिया। सब चिट्ठीयोंको अपने दुप्पटेमें बांध कर सम्राट्ने विचार किया, कि आज किसी ऐसे मार्गसे जाना चाहिए जिससे ये सब असत्यवादी सिद्ध हो जावें। विचारानुसार वह किलेके बुर्जको तुडवा कर नवीन मार्गसे राजवाटिकामें पहुंचा और एक वट वृक्षकी छायामें बैठ कर सब पण्डितों और सूरिजीको बुलाया। सबके लेख पढे गये और वे असत्य प्रमाणित हुए। अन्तमें सूरिजीका लेख पढा गया। उसमें लिखा था—'किलेके बुर्जको तोड कर राजवाटिकामें जा कर सुल्तान वट वृक्षके नीचे विश्राम करेंगे।' इस अद्भुत निमित्तको श्रवण कर सभी विद्वान और विशेषतः सम्राट् अत्यन्त विस्मित हुए और सम्राट्ने स्पष्ट रूपसे सबके समक्ष सूरिजीकी इन शब्दोंमें स्तुति की कि—'सचमुच यह बात मनुष्यकी कल्पनासे भी अगम्य है। ये गुरु मनुष्य रूपमें साक्षात् परमेश्वर हैं।' इसी प्रकार अन्यदा सम्राट्के यह पूछने पर कि—'मैं आज क्या खाऊंगा?' सूरिजीने निमित्त बलसे एक पुर्जेमें अपना मन्तव्य लिख दिया और भोजनानन्तर खोलनेको कहा। सुल्तानने "खोल" खाया और जब सूरिजीका लिखा हुआ पुर्जा देखा गया तो उसमें भी वही लिखा पाया।

वट वृक्षको साथ चलाना—

एक बार सम्राट्ने देशान्तर जानेके लिये प्रस्थान कर एक शीतल छायावाले वृक्षके नीचे विश्राम किया। सम्राट्ने आराम पा कर उस वृक्षकी बहुत प्रशंसा की और कहा कि—'यदि यह वृक्ष अपने साथ रहे तो क्या ही अच्छा हो!' सूरिजीने अपने लोकोत्तर विद्या-प्रभावसे वृक्षको भी सम्राट्का सहगामी बना दिया। पांच कोस तक वृक्ष साथ चला; फिर सूरिजीने सम्राट्के कहनेसे उस वृक्षको वापिस स्वस्थान

---

[1] सम्राट्के समक्ष मुल्लाकी टोपीको रजोहरण द्वारा आकाशसे गिरानेका उल्लेख युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरिजीके संबन्धमें भी मिलता है। इसी प्रकार अमावास्याके दिन पूर्णचंद्रका उदय करनेका प्रसङ्ग भी यु० जिनचन्द्रसूरि और सम्राट् अकबरके चरित्रोंमें प्राप्त है। हमारे विचारसे ये दोनों बातें श्रीजिनप्रभसूरिजीके सम्बन्धकी होंगी।

जानेकी आज्ञा दी। तव वृक्ष भी सम्राट्को नमस्कार करके स्वस्थान चला गया। इस अनोखे चमत्कारसे सूरिजीके प्रति सम्राट्की श्रद्धा अत्यधिक दृढ हो गई।

वादशाह महमद तुगुलक क्रमशः प्रयाण करते हुए मारवाड़ पहुंचा। वहांके लोग सम्राट्के दर्शनार्थ आये। उन्हें उत्तम वस्त्राभरणोंसे रहित देख कर सम्राट्ने सूरिजीसे कहा—'ये लोग लुटे हुएसे क्यों माळूम होते हैं?' सूरिजीने कहा—'राजन्! यह मरुस्थली है; जलाभावके कारण धान्यादिकी उपज अत्यल्प होती है, अतएव निर्धनतावश इनकी ऐसी स्थिति है।' सम्राट्ने करुणार्द्र होकर प्रत्येक मनुष्यको पाँच पाँच दिव्य वस्त्र और प्रत्येक स्त्रीको दो दो स्वर्णमुद्राएं एवं साड़ी प्रदान कीं।

महावीर प्रतिमाका बोलना—

कन्यानयनकी श्री महावीर प्रतिमाको सूरिजीने सम्राट्से प्राप्त की थी, जिसका उल्लेख ऊपर आ ही चुका है। प्राकृत प्रबन्धमें लिखा है कि—जिस समय सम्राट्ने उस प्रतिमाका दर्शन किया और सूरिजीने प्रतिमाको जैन संघके सुपुर्द करनेका उपदेश दिया, तव सम्राट्ने कहा—'यदि यह प्रतिमा मुंहसे वोले तो मैं आपको दे सकता हूं।' इस पर सूरिजीने कहा—'प्रतिमाकी विधिवत् पूजा करनेसे वह अवश्य वोलेगी।' सम्राट्ने कौतुकसे उनके कथनानुसार पूजन किया और दोनों हाथ जोड़ कर विनीत भावसे प्रतिमाको वोलनेके लिए प्रार्थना की। तत्काल ही देवप्रभावसे अपना दाहिना हाथ लम्बा करके वह इस प्रकार वोली—

विजयतां जिनशासनमुज्ज्वलं विजयतां भूभुजाधिपवल्लभा।
विजयतां भुवि साहि महम्मदो विजयतां गुरुसूरिजिनप्रभः।

अपने पूछे हुए प्रश्नोंका प्रभुप्रतिमासे सन्तोषजनक उत्तर पा कर सम्राट्के चित्तमें अत्यन्त चमत्कृति उत्पन्न हुई और उस प्रतिमाकी पूजाके निमित्त खरह और मातंड नामक दो ग्राम दिये और मन्दिर वनवा दिया।

सम्राट्की शत्रुंजय यात्रा और रायणकी दूधवर्षा—

एक वार सुलतानने गुरुजीसे पूछा—'जिस प्रकार यह कान्हड़ महावीरका चमत्कारी तीर्थ है, क्या वैसा ही और कोई तीर्थ है?' सूरिजीने तीर्थाधिराज शत्रुंजयका नाम वतलाया। तव संघके साथ सम्राट् सूरिजीको लेकर शत्रुंजय गया। रायण रुंखकी यात्रा करते समय सूरिजीने कहा—'यदि इस रायणको मोतियोंसे वधाया जाय तो इसमेंसे दूधकी वर्षा होती है।' सम्राट्ने ऐसा ही किया, जिससे रायण रुंखसे दूध झरने लगा। इससे चमत्कृत हो कर सम्राट्ने वहां पर ऐसा लेख लिखवाया कि इस तीर्थकी जो अवज्ञा करेगा उसे सम्राट्की अवज्ञाका महान् दण्ड मिलेगा। शत्रुंजयकी तलहट्टीमें सर्व दर्शनोंके मान्य देवताओंकी मूर्तियां एकत्र कर मध्य भागमें जिनप्रतिमाको रखा और स्वयं सशस्त्र मुसाहिवोंके वीचमें वैठ कर लोगोंसे पूछा—'वड़ा कौन है?' लोग वोले—'आप ही वड़े हैं!' तो सुलतानने कहा जिस प्रकार हथियार वाले सव सेवक और मैं उनका मालिक हूं वैसे ही अस्त्र शस्त्र धारण करने वाले सव देवता सेवक हैं और जैन तीर्थङ्कर सव देवोंमें वड़े हैं।

गिरनारकी अच्छेद्य प्रतिमा—

वहांसे सूरिजी एवं संघके साथ सम्राट्ने गिरनार पर्वतकी यात्रा की। वहांके श्रीनेमिनाथ प्रभुके विम्वको अच्छेद्य और अभेद्य सुन कर परीक्षाके निमित्त उस पर कई प्रहार करवाये, पर प्रहारोंसे प्रभु-प्रतिमा खण्डित

न हो कर उससे अग्निकी चिनगारियां निकलने लगीं। तब सम्राट्‌ने प्रतिमाके समक्ष क्षमा याचना कर उसे स्वर्णमुद्राओंसे वधाई।

विजय-यन्त्र-महिमा –

एक वार मन्त्र-यन्त्रके माहात्म्यके सम्बन्धमें सूरिजी और सम्राट्‌में वार्त्तालाप हो रहा था। सम्राट्‌ने प्रसङ्गवश विजय-यन्त्रकी महिमा सुन कर उसके प्रभावको प्रत्यक्ष देखना चाहा। सूरिजीने विजय-यन्त्र देते हुए सम्राट्‌से कहा–'जिसके पास यह यंत्र होता है उसे देवताओंके अस्त्र भी नहीं लगते और कुपित शत्रु भी अनिष्ट नहीं कर सकते।' सम्राट्‌ने उस यन्त्रको एक बकरेके गलेमें बांध कर उस पर खड्गके कई प्रहार किये परन्तु यन्त्रके प्रभावसे बकरेके तनिक भी घाव नहीं हुआ। तब फिर उस यंत्रको छत्रदण्ड पर बांध कर उसके नीचे एक चूहेको रखा गया और सामनेसे बिल्ली छोड़ी गई। चूहेको पकड़नेके लिए बिल्ली दौड़ी अवश्य, परन्तु यन्त्रके प्रभावसे छत्रके नीचे न आ सकी, जिससे वह चूहा बाल बाल बच गया। यंत्रका यह अक्षुण्ण प्रभाव देख कर सम्राट्‌ने ताम्रमय दो यन्त्र बनवा कर एक स्वयं रखा और एक सूरिजीको दे दिया।

इसी प्रकारके चमत्कारी प्रवादोंमें अमावसको पूनम बना देना, शीतज्वरको झोलीमें बांधके रख देना, भैंसेके मुखसे वाद कराना, आदि जनश्रुतियां भी पाई जाती हैं।

बुद्धिशाली कथन –

पं० श्रीशुभशीलगणिके कथाकोशमें उपर्युक्त प्रवादोंके साथ सम्राट्‌के पूछे हुए दो प्रश्नोंके सूरिजी द्वारा दिये गये युक्तिपूर्ण उत्तरोंके उल्लेख इस प्रकार हैं–

एक बार सम्राट्‌ने राजसभामें पूछा, कहो–'शक्कर किस चीजमें डालनेसे मीठी लगती है?' पण्डितोंमेंसे किसीने कुछ और किसीने कुछ ही उत्तर दिया। उससे सम्राट्‌को सन्तोष न होने पर सूरिजीसे पूछा। उन्होंने कहा–'शक्कर मुँहमें डालनेसे मीठी लगती है।'

इसी तरह एक वार, सम्राट् क्रीड़ाके हेतु उद्यानमें गया था, वहां जलसे भरे हुए विशाल सरोवरको देख कर सबसे पूछा–'यह सरोवर धूलि आदि द्वारा भरे विना ही छोटा कैसे हो सकता है?' कोई भी इस प्रश्नका युक्तिपूर्ण उत्तर न दे सका; तब सूरिजीने कहा–'यदि इस सरोवरके पास अन्य कोई बड़ा सरोवर बनाया जाय तो उसके आगे यह सरोवर स्वयमेव छोटा कहलाने लग जायगा।'

एक समय सुलतानने सूरिजीसे पूछा कि–'पृथ्वी पर कौनसा फल बड़ा है?' उन्होंने कहा–'मनुष्योंकी लज्जा रखने वाली वउणी (कपास) का फल बड़ा है।'

सोमप्रभसूरि मिलन और अपराधी चूहेको शिक्षा –

सं० १५०३ में विरचित श्रीसोमधर्मकृत उपदेशसप्तति और संस्कृत जिनप्रभसूरि-प्रबन्धमें लिखा है कि–एक वार श्रीजिनप्रभ सूरिजी पाटणके निकटवर्ती जंघराल नगरमें पधारे तो वहां तपागच्छीय श्रीसोमप्रभ सूरिजीसे मिलनेके लिये गये। सोमप्रभ सूरिजीने खड़े हो कर बहुमान पूर्वक आसनादि द्वारा उनका सन्मान करते हुए कहा–'भगवन्! आपके प्रभावसे आज जैनधर्म जयवन्त वर्त रहा है। आपकी शासन-सेवा परम स्तुत्य है।' प्रत्युत्तरमें श्रीजिनप्रभ सूरिजीने कहा–'सम्राट्‌की सेनाके साथ एवं सभामें रहनेके कारण हम चारित्रका यथावत् पालन नहीं कर सकते। आपका चरित्रगुण श्लाघनीय है।' इस प्रकार दोनों आचार्योंका शिष्ट संभाषण हो रहा था, इतने-ही-में एक मुनिने प्रतिलेखन करते समय, अपनी सिक्किा

(झोली)को चूहों द्वारा काटी हुई देख कर सोमप्रभ सूरिजीको दिखलाई। श्रीजिनप्रभ सूरिजी भी पासमें बैठे थे, उन्होंने आकर्षणी विद्यासे उपाश्रयके समस्त चूहोंको रजोहरण द्वारा आकर्षित कर लिया और उनसे कहा कि—'तुममेंसे जिसने इस सिक्किकाको काटी हो वह यहां ठहरे, वाकी सब चले जाँय'। तब केवल अपराधी चूहा वहां रह गया, और बाकी सब चले गये। उसे भविष्यमें ऐसा न करनेको कह कर उपाश्रयका प्रदेश छोड़ देनेकी आज्ञा दे दी। इससे श्रीसोमप्रभ सूरि और मुनिमण्डली बड़ी विस्मित हुई।

योगिनी प्रतिबोध—

प्राकृत प्रबन्धमें लिखा है कि—एक बार चौसठ योगिनी श्राविकाके रूपमें सूरिजीको छलनेके लिये आईं और सामायक ले कर व्याख्यान श्रवणार्थ बैठीं। पद्मावती देवीने योगिनीयोंकी भावनाको सूरिजीसे विदित कर दी। तब सूरिजीने उन्हें व्याख्यान श्रवणमें निमग्न देख कर वहां खील करके स्तम्भित कर दीं। व्याख्यान समाप्तिके अनन्तर जब वे उठनेको प्रस्तुत हुईं तो अपनेको आसनों पर चिपकी हुई पाईं। यह देख कर सूरिजीने मृदु हास्यपूर्वक उनसे कहा—'मुनियोंके गोचरीका समय हो गया है, अतः शीघ्र वन्दना व्यवहार करके अवसर देखो!' मन-ही-मन लज्जित होती हुईं योगिनियोंने कहा—'भगवन्! हम तो आपको छलनेके लिये आईं थीं पर आपने तो हमें ही छल लिया। अब कृपा कर मुक्त करें।' सूरिजीने कहा—'हमारे गच्छके अधिपति जब योगिनीपीठ (उज्जैनी, दिल्ली, अजमेर, भरौंच) में जाँय तो उन्हें किसी प्रकारका उपद्रव नहीं करनेकी प्रतिज्ञा करो तो छोड़ सकता हूं।' योगिनियां इस बातका स्वीकार कर स्वस्थान चली गईं। इसके बाद खरतर गच्छके आचार्य सर्वत्र निर्विघ्नतया विहार करते रहे।

शैवोंको जैन बनाना—

सं० १३४४ (१७४)में खंडेलपुरमें जंगल गोत्रके बहुतसे शिवभक्तोंको प्रतिबोध दे कर जैन बनाए।

देवीउपद्रव निवारण—

शुभशीलगणिके कथाकोशमें लिखा है कि—एक नगरमें श्रावक लोगोंको दो दुष्ट देवियां रोगोपद्रवादि किया करती थीं, सूरिजीको ज्ञात होने पर उन्होंने उन देवियोंको आकर्षित कीं। उसी समय उस नगरके संघने दो श्रावकोंको इसी कार्यके लिये सूरिजीके पास भेजा था। उन्होंने, उपद्रवकारी देवियोंको सूरिजी समझा रहे हैं, यह अपनी आँखोंसे देखा तो उन्हें बड़ा विस्मय हुआ। उनके प्रार्थना करनेके पूर्व ही सूरिजीने उस उपद्रवको दूर करवा दिया। श्रावकोंने लौट कर संघके समक्ष सब वृत्तान्त कह कर सूरिजीकी भूरि भूरि प्रशंसा की।

श्रीजिनप्रभ सूरिजीकी साहित्य सम्पत्ति—

श्रीजिनप्रभ सूरिजीने साहित्यकी अनुपम सेवा की है। उनकी कृतियां जैन समाजके लिये अत्यन्त गौरवपूर्ण है। इन कृतियोंमेंसे रचना समयके उल्लेख वाली कृतियोंका निर्देश तो यथास्थान किया जा चुका है। पर बहुतसी कृतियोंमें रचना समयका उल्लेख नहीं है। अतः यहां उनकी सभी कृतियोंकी यथा ज्ञात सूची दी जाती है।

१ कातन्त्र विभ्रमटीका, ग्रं० २६१, सं० १३५२, योगिनीपुर, कायस्थ खेतलकी अभ्यर्थनासे।
२ श्रेणिक चरित्र (द्वयाश्रयकाव्य), सं० १३५६ (कुछ भाग प्रकाशित)
३ विधिप्रपा, ग्रं० ३५७४, सं० १३६३ विजयदशमी, कोशलानयर।
४ कल्पसूत्रवृत्ति—सन्देहविषौषधि, ग्रं० २२६९, सं० १३६४, अयोध्या, (प्रकाशित)

५ अजितशान्तिवृत्ति (बोधदीपिका) सं० १३६५ पोष, ग्रं० ७४०, दाशरथिपुर (प्र०)

६ उपसर्गहरस्तोत्रवृत्ति (अर्थकल्पलता), ग्रं० २७१, सं० १३६४ पो० व० ९, साकेतपुर (प्र०)

७ भयहरस्तोत्रवृत्ति (अभिप्रायचन्द्रिका), सं० १३६४, पो० सु० ९, साकेतपुर।

८ पादलिप्तकृत वीरस्तोत्रवृत्ति, सं० १३८०, (चतुर्विंशतिप्रबन्ध अनुवादके परिशिष्टमें प्र०)

९ राजादि-रुचादिगणवृत्ति, सं० १३८१।

१० विविधतीर्थकल्प, सं० १३९० तकमें पूर्ण (सिंघी जैन ग्रन्थ मालामें प्रकाशित)

११ विदग्धमुखमण्डनवृत्ति (इसकी एक मात्र प्रति बीकानेरके श्रीजिनचारित्रसूरि-भंडारमें है)।

१२ साधुप्रतिक्रमणवृत्ति, जैनस्तोत्रसंदोह, भा० २, प्रस्तावना पृ० ५१ में इसका रचना काल सं० १३६४ लिखा है।

१३ हैमव्याकरणानेकार्थकोष, श्लो० २००, (पुरातत्त्व, वर्ष २, पृ० ४२४ में उल्लिखित)

१४ प्रत्याख्यानस्थानविवरण
१५ प्रव्रज्याभिधानवृत्ति
१६ वन्दनस्थानविवरण
१७ विषमकाव्यवृत्ति
१८ पूजाविधि

} इनका उल्लेख, हीरालाल कापड़ियाकी 'चतुर्विंशति जिनानन्द-स्तुति'की प्रस्तावना, पृ० ४० में है।

१९ तपोटमतकुट्टन

२० परमसुखद्वात्रिंशिका, गा० ३२

२१ सूरिमन्त्राम्नाय (सूरिविद्याकल्प).

२२ वर्द्धमानविद्या, प्रा० गा० १७

२३ पद्मावती चतुष्पदिका, गा० ३७

२४ अनुयोगचतुष्टयव्याख्या (प्र०)

२५ रहस्यकल्पद्रुम, अलभ्य, उल्लेख ग्रं० नं० २४ में।

२६ आवश्यकसूत्रावचूरि (षडावश्यक टीका) उल्लेख 'जैन साहित्यनो सं० इतिहास' तथा जैनस्तोत्र-संदोह भाग २.

२७ देवपूजाविधि – विधिप्रपा परिशिष्टमें प्रकाशित.

जै० सा० सं० इ० ४२०, और जैनस्तोत्रसं० भा० २, प्रस्तावनामें इनके रचित ग्रन्थोंमें, चतुर्विधभावनाकुलक आदि कई अन्य कृतियोंका उल्लेख है पर हमें वे आगमगच्छीय जिनप्रभसूरिरचित प्रतीत होती हैं (देखो, जै० गु० क० भा० १, प्रस्तावना पृ० ८०–८१)

स्तुति-स्तोत्रादिकी सूची†

क्रमाङ्क	नाम	पद्य प्रारम्भ	भाषा	पद्यसंख्या	विशेष
१	श्रीजिनस्तोत्र (१० दिग्पाल-स्तुतिगर्भ)	अस्तु श्रीनाभिभूदेवो	सं०	११	श्लेषमय
२	श्रीऋषभजिनस्तोत्र	अल्लाल्लाहि ! तुराहं		११	पारसी भाषा
३	श्रीऋषभजिनस्तोत्र	निरवधिरुचिरज्ञानं		४०	अष्टभाषामय
४	श्रीअजितजिनस्तोत्र	विश्वेश्वरं मथितमन्मथ०		२१	महायमक
५	श्रीचन्द्रप्रभजिनस्तुति	देवैर्यस्तुष्टुवे तुष्टैः	सं०	४	समचरण-साम्य
६	,, ,,	नमो महासेननरेन्द्रतनुज !		१३	षड्भाषामय
७	श्रीशान्तिजिनस्तवन	श्रीशान्तिनाथो भगवान्	सं०	२०	
८	श्रीमुनिसुव्रतजिनस्तोत्र	निर्माय निर्माय गुणर्द्धि	सं०		त्र्यक्षर यमक
९	श्रीनेमिजिनस्तोत्र	श्रीहरिकुलहीराकर०	सं०	२०	क्रियागुप्त
१०	श्रीपार्श्वजिनस्तोत्र	अधियदुपनमन्तो	सं०	१२	सं० १३६९
११	,, ,,	कामे वामेय ! शक्तिर्भवतु	सं०	१७	
१२	,, ,, (जीरापल्ली)	जीरिकापुरपतिं सदैव तं	सं०	१५	त्र्यक्षर यमक
१३	,, ,, (प्रातिहार्य)	त्वां विनुत्य महिमश्रिया महं	सं०	१०	समचरण-साम्य
१४	,, ,, (नवग्रहग०)	दोसावहारदक्खो	प्रा०	१०	प्राकृत
१५	,, ,,	पार्श्वनाथमनघं	सं०	९	
१६	,, ,,	पार्श्वं प्रभु शश्वदकोपमानम्	सं०	८	पादान्तयमक
१७	,, ,,	श्रीपार्श्व ! पादानतनागराज	सं०	८	,,
१८	,, ,,	श्रीपार्श्वं भावतः स्तौमि	सं०	९	समचरण-साम्य
१९	,, ,,	श्रीपार्श्वः श्रेयसे भूयात्	सं०	४४	
२०	,, (फलवर्द्धि)	सयलाहिवाहिजलहर०	प्रा०	१२	प्राकृत
२१	श्रीवीरजिनस्तोत्र	असमशमनिवासं	सं०	२५	विविधछंद जाति
२२	श्रीवीरजिनस्तोत्र	कंसारिक्रमनिर्यदापगा०	सं०	२५	छंदनाममय
२३	,, ,,	चित्रैः स्तोष्ये जिनं वीरं	सं०	२७	चित्रमय
२४	,, ,,	निस्तीर्णविस्तीर्णभवार्णवं	सं०	१७	लक्षणप्रयोग
२५	,, (पंचकल्याणक)	पराक्रमेणेव पराजितोऽयं	सं०	३६	
२६	,, ,,	श्रीवर्द्धमानपरिपूरित०	सं०	१३	

† इनमेंसे नं० ८, १५, २९, ३३ अप्रकाशित हैं, अवशेष सब प्रकरण रत्नाकर, जैनस्तोत्रसमुच्चय, जैनस्तोत्रसन्दोह, प्राचीनजैनस्तोत्रसंग्रह आदिमें प्रकाशित हो गये हैं। नं० २ सावचूरि जैन साहित्यसंशोधकमें प्रकाशित हो चुका है। नं० १४, ४१ की अवचूरि, टिप्पण उपलब्ध है। पं० लालचंद भगवानदासने इस सूचीके अतिरिक्त "किं कप्पतरुरे" आदि वाले पंचपरमेष्ठिस्तवका भी नाम लिखा है। हीरालाल रसिकदास कापड़िया सूरिजीके सभी स्तोत्रोंका संग्रहग्रन्थ सम्पादित करके दे० ला० पु० फंडसे प्रकाशित करने वाले हैं। वह शीघ्र ही प्रगट हो यही हमारी मनोकामना है।

क्रमाङ्क	नाम	पद्य प्रारम्भ	भाषा	पद्यसंख्या	विशेष
२७	,, ,,	श्रीवर्द्धमानः सुखवृद्धयेऽस्तु	सं०	९	पद्यके आद्यान्ताक्षरोंमें नामोल्लेख
२८	,, (निर्वाणकल्याणक)	श्रीसिद्धार्थनरेन्द्रवंश०	सं०	१९	
२९	,, ,,	सिरिवीयराय देवाहिदेव	प्रा०	३५	प्राकृत
३०	,, ,,	स्वःश्रेयससरसीरुह—	सं०	२६	पंचवर्गपरिहार
३१	,, (चतुर्विंशतिजिनस्तव)	आनन्दसुन्दरपुरन्दरनम्रः	सं०	२९	
३२	,, ,,	आनम्रनाकिपति०	सं०	२५	
३३	चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र	ऋषभदेवमनन्तमहोदयं	सं०		त्र्यक्षर यमक
३४	चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र	ऋषभ! नम्रसुरासुर०	सं०	२९	त्र्यक्षर यमक
३५	,,	ऋषभनायमनायनिमानन!	सं०	२९	,,
३६	,,	कनककान्तिधनुःशत०	सं०	२९	,,
३७	,,	जिनर्षभ! प्रीणितभव्यसार्थ!	सं०	७	
३८	,,	तत्त्वानि तत्त्वानि भृतेषु सिद्धं	सं०	२८	त्र्यक्षर यमक
३९	,,	पात्वादिदेवो दशकल्पवृक्षः	सं०	२९	श्लेष
४०	,,	प्रणम्यादि जिनं प्राणी	सं०	२८	
४१	,,	यं सततमक्षमाक्षेप०	सं०	३०	
४२	श्रीवीतरागस्तोत्र	जयन्ति पादा जिननायकस्य	सं०	१६	
४३	श्रीअर्हदादिस्तोत्र	मानेनोर्वी व्यहृत परितो	सं०	८	
४४	श्रीपंचनमस्कृतिस्तोत्र	प्रतिष्ठितं तमःपारे	सं०	३३	
४५	श्रीमन्त्रस्तोत्र	स्वःश्रियं श्रीमदर्हन्तः	सं०	५	
४६	पंचकल्याणकस्तोत्र	निलिम्पलोकायितभूतलं	सं०	८	
४७	श्रीगौतमस्वामिस्तोत्र	जम्मपवित्तियसिरिमगह	प्रा०	२५	प्राकृत
४८	,,	श्रीमन्तं मगधेषु गोर्वर इति	सं०	२१	
४९	,,	ॐ नमस्त्रिजगन्नेतु	सं०	९	महामंत्रगर्भित
५०	श्रीशारदास्तोत्र	वाग्देवते! भक्तिमतां	सं०	१३	चरणसमानता
५१	श्रीशारदाष्टक	ॐ नमस्त्रिजगद्वन्दितक्रमे!	सं०	९	
५२	श्रीवर्द्धमानविद्या	इय वद्धमाण विज्जा	प्रा०	१७	
५३	सिद्धान्तागमस्तोत्र	नत्वा गुरुभ्यः	सं०	४६	
५४	आद्यस्तोत्र (ऋषभ०)	नयगमभंगपहाणा	प्रा०	११	प्राकृत
५५	श्रीजिनसिंहसूरिस्तोत्र	प्रभुः प्रदद्यान्मुनिपक्षिराट्,	सं०	१३	चरणसाम्य
५६	महाष्टक	नतसुरेन्द्र! जिनेन्द्र!	सं०	९	चौबीस जिननामगर्भित
५७	नन्दीश्वरकल्पस्तव	आराध्य श्रीजिनाधीशान्	सं०	४९	

इनके अतिरिक्त हमारे अन्वेषणमें निम्नोक्त स्तोत्र और मिले हैं—

क्रमाङ्क	नाम	पद्य प्रारम्भ	भाषा	पद्यसंख्या	विशेष
५८	श्रीफलवर्धिपार्श्वस्तोत्र	श्रीफलवर्धिपार्श्वप्रभो कारं	सं०	९	सं० १३८२ वै० सु० १०
५९	फलवर्द्धिपार्श्वस्तोत्र	जयामद्य श्रीफलवर्धिपार्श्व	सं०	२१	
६०	पार्श्वनाथस्तवन	असमसरणीय जउ निरंतरा	प्रा०	७	ऋतुवर्णन
६१	परमेष्ठिस्तव (मंगलाष्टक)	जितभावद्विषं सर्विदाम्	सं०	८	
६२	चन्द्रप्रभचरित्रस्तोत्र	चंदप्पह २ पणमिय चर०	प्रा०	२२	
६३	मथुरायात्रास्तोत्र	सुराचलश्रीजितदेवनिर्मिता	सं०	१०	
६४	शत्रुञ्जययात्रास्तोत्र	श्रीसत्तुंजयतित्थे	प्रा०	९	सं० १३७६यात्रा
६५	मथुरास्तूपस्तुतयः	श्रीदेवनिर्मितस्तूपशृंगारति०	सं०	४	
६६	पंचकल्याणकस्तुतयः	पद्मप्रभप्रभोर्जन्मगर्भा०	सं०	१५	
६७	त्रोटक	निय जम्मु सफल	प्रा०	५	
६८	पहाड़िया राग	अकलु अमलुअ जोणि संभवु	प्रा०	४	
६९	प्रभातिक नामावलि	सौभाग्याभाजनमभंगुर	(विधिप्रपाके परिशिष्टमें प्रकाशित)		
७०	प्राकृतसिद्धान्तस्तव	सिरि वीरजिणं सुयरयण	(समाचारी शतक पृ० ७६ में प्र०)		
७१	उवसग्गहरपादपूर्ति पार्श्वस्तवन		गा०	२२	
७२	मायाबीजकल्प		प्रा०गा०	३०	
७३	शान्तिनाथाष्टक	अजिकुह काफु जुनू०	पारशीभाषाचित्रक		

श्रीजिनप्रभसूरिकी शिष्यपरम्परा।

१ श्रीजिनदेव सूरि—आप सा० कुलधरकी पत्नी वीरिणीकी कुक्षिसे उत्पन्न हुए थे। आपने श्रीजिनसिंह सूरिजीके पास दीक्षा ग्रहण की थी। जिनप्रभ सूरिजीने इन्हें अपने पद पर स्थापित किये थे। सुलतान महमदसे जब सूरिजी मिले तब आप भी साथ ही थे। सम्राट्ने सूरिजीके साथ इनका भी बड़ा सन्मान किया था। सूरिजीके विहार करने पर आप सम्राट्के पास बहुत समय तक रहे थे और इनका सम्राट् पर अच्छा प्रभाव था। इनका उल्लेख आगे आ चुका है। आपकी रचित **कालकाचार्यकथा** प्रकाशित हो चुकी है।

२ श्रीजिनमेरु सूरि—आप श्री जिनदेव सूरिजीके शिष्य थे। इनके गुरुभाई श्रीजिनचंद्र सूरि थे।

३ श्रीजिनहित सूरि—इनका रचा हुआ एक वीरस्तवन गा० ९ (हमारे संग्रहके गुटकेमें) है। इनके प्रतिष्ठित १ पार्श्वनाथ पंचतीर्थीका लेख सं० १४४७ फा० ब० ८ सोम श्रीमाल ढोर धिरीयाराम कर्मसिंह कारित, बुद्धिसागरसूरिके धातुप्रतिमा लेखसंग्रह, भा० २, लेखांक ६१७में प्रकाशित हो चुका है।

४ श्रीजिनसर्व सूरि

५ श्रीजिनचन्द्र सूरि—इनके प्रतिष्ठित प्रतिमा लेख, सं० १४६९, १४९१, १५०६ के उपलब्ध होते हैं।

६ श्रीजिनसमुद्र सूरि—इनकी रचित कुमारसंभव टीका, डेक्कन कालेजवाले संग्रहमें उपलब्ध है।

७ श्रीजिनतिलक सूरि—इनकी प्रतिष्ठित प्रतिमाओंके लेख सं० १५०८ से १५२८ तक के उपलब्ध हैं। इनके शिष्य राजहंसकी की हुई वाग्भट्टालङ्कारवृत्ति सं० १४८६ में लिखित उपलब्ध है।

८ श्रीजिनराज सूरि—इनकी प्रतिष्ठित प्रतिमाका लेख सं० १५६२ वै० सु० १० का प्रकाशित है।

९ श्रीजिनचन्द्र सूरि—इनकी प्रतिष्ठित प्रतिमाका लेख सं० १५६६ ज्येष्ठ सुदि २ और सं० १५६७ मा० सु० ५ के उपलब्ध हैं।

१०A श्रीजिनभद्र सूरि—इनकी प्रतिष्ठित प्रतिमाओंके लेख सं० १५७३ वै० सु० ५ और सं० १५६८ मि० सु० ७ के प्रकाशित हैं।

१०B श्रीजिनमेरु सूरि।

११ श्रीजिनभानु सूरि—आप श्रीजिनभद्र सूरिजीके शिष्य थे (सं० १६४१)। इसके पश्चात् आचार्य परम्पराके नाम उपलब्ध नहीं है। सं० १७२६ के नयचक्र वचनिकासे—जो कि श्रीजिनप्रभ सूरिजीकी परम्पराके पं० नारायणदासकी प्रेरणासे कवि हेमराजने बनाई थी—श्रीजिनप्रभ सूरिजीकी परम्परा १८ वीं शताब्दीतक चली आ रही थी, ऐसा प्रमाणित होता है।

श्रीजिनप्रभ सूरिजीकी परम्परामें चारित्रवर्द्धन अच्छे विद्वान् हुए हैं जिनके रचित **'सिन्दूर प्रकर टीका' (सं० १५०५), नैषधमहाकाव्य टीका, रघुवंश टीका**—आदि ग्रन्थ उपलब्ध हैं। श्रीजिनप्रभ सूरिजीके शिष्य वाचनाचार्य उदयाकरगणि, जिन्होंने विधिप्रपाका प्रथमादर्श लिखा था, रचित श्रीपार्श्वनाथकलश, गा० २४ हमारे संग्रहके गुटकेमें उपलब्ध है। दि० जैन विद्वान्, पं० बनारसीदासजी, जिनप्रभ सूरिजीके शाखाके विद्वान् भानुचन्द्रके पास प्रतिक्रमणादि पढे थे, ऐसा वे स्वयं अपनी जीवनीमें लिखते हैं।

उपसंहार—

उपर्युक्त वृत्तान्तसे, श्रीजिनप्रभ सूरिजीका जैन साहित्यमें बहुत ऊँचा स्थान है यह स्वतः प्रमाणित हो जाता है। उन्होंने सुल्तान महम्मदको अपने प्रभावसे प्रभावित कर जैन समाजको निरुपद्रव बनाया, जैन तीर्थों व मन्दिरोंकी सुरक्षा की। सम्राट्को समय समय पर सत्परामर्श दे कर दीन दुःखियोंका कष्ट निवारण किया। उसकी रुचिको धार्मिक बना कर जनता पर होने वाले अत्याचारोंको रोका। जैन शासनकी तो इन सब कार्योंसे शोभा बढी ही, पर साथ साथ जन साधारणका भी बहुत कुछ उपकार हुआ।

सूरिजीने साहित्यकी जो महान् सेवा की उससे जैनसाहित्य गौरवान्वित है। उनका **विविध तीर्थकल्प** ग्रन्थ भारतीय साहित्यमें अपनी सानी नहीं रखता। इस ग्रन्थसे सूरिजीका विहार कितना सार्वत्रिक था, और पुरातन स्थानोंका इतिवृत्त संचय करनेकी उनमें कितनी बड़ी लगन थी,—यह बात इस ग्रन्थके पढने वालोंसे छिपी नहीं है। इसी प्रकार द्वयाश्रयकाव्यसे सूरिजीकी अप्रतिम प्रतिभाका अच्छा परिचय मिलता है। विधिप्रपा ग्रन्थ भी आपके श्रुतसाहित्यके गम्भीर अध्ययन और गुरुपरम्परासे प्राप्त ज्ञानका प्रतीक है। आपके निर्माण किये हुए स्तुतिस्तोत्र, स्तोत्रसाहित्यमें महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। एक ही व्यक्ति द्वारा इतने सुन्दर और वैशिष्ट्यपूर्ण अनेक स्तोत्रोंका निर्माण होना अन्यत्र नहीं पाया जाता। तपागच्छीय सोमतिलक सूरिसे मिलने पर सूरिजीने जो शब्द कहे, अपने रचित स्तोत्रोंको उन्हें समर्पित किया एवं अन्य गच्छीय विद्वानोंको शास्त्रीय अध्ययन कराया, उन्हें ग्रन्थ रचनेमें साहाय्य प्रदान किया—इन सब बातोंसे सूरिजीकी उदार प्रकृतिकी अच्छी झांकी मिलती है।

इस प्रकार विविध सत्प्रवृत्तियों द्वारा श्रीजिनप्रभ सूरिने जैन शासनकी महान् प्रभावना करके एक विशिष्ट आदर्श उपस्थित किया। मुसलमान बादशाहों पर **इतना अधिक प्रभाव डालने वालोंमें आप सर्वप्रथम हैं।** जैन धर्मकी महत्ताका और जैन विद्वानोंकी विशिष्ट प्रतिभाका सुन्दर प्रभाव डालनेका काम सबसे पहले इन्हों-हीने किया। सचमुच ही जैनधर्मके ये एक महाप्रभावक आचार्य हो गये।

जिनप्रभ सूरिकी परम्पराके प्रशंसात्मक कुछ गीत और पद

[इस शीर्षकके नीचे जो कुछ प्राचीन गीत, पद और गाथादि दिये जाते हैं वे बीकानेरके भंडारकी एक प्राचीन प्रकीर्ण पोथीमें उपलब्ध हुए हैं। यह पोथी प्रायः इन्हीं जिनप्रभ सूरिकी शिष्यपरंपरामेंके किसी यतिकी हाथकी लिखी हुई प्रतीत होती है। इसमें जो 'गुर्वावलि गाथा कुलक' लिखा हुआ मिलता है उसमें जिनहित सूरि तकका नामनिर्देश है उसके बादके किसी आचार्यका नाम नहीं है। अतः यह जिनहित सूरिके समयमें—वि० सं० १४२५–५० के अरसेमें—लिखी गई होनी चाहिए। इस पोथीमें प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश और तत्कालीन देश्य भाषामें बनी हुई अनेक प्रकीर्ण रचनाओंका संग्रह है। इसी संग्रहमेंसे ये निम्नोद्धृत कृतियां, जो श्रीजिनप्रभ सूरिकी परंपराके गुरु और शिष्य रूप आचार्योंके गुणगानात्मक रूप हैं—उपयोगी समझ कर यहां पर प्रकाशित की जाती हैं। इनमें जिनप्रभ सूरिके गुणवर्णनपरक जो गीत हैं वे उसी समयके बने हुए होनेसे भाषा और इतिहास दोनोंकी दृष्टिसे उल्लेखनीय हैं।—**जिनविजय**]

[१] जिनेश्वरसूरिवधावणा गीत—

जलाउर नयरि वधावणउं।
चलु न चलु हलि सखे देखण जाहिं। गणधरु गोतमसामि समोसरिउ ॥ १ ॥
वीरजिणभवणि देवलोकु अवतरियले। सुगुरु जिणसरसुरि मुनिरयणु ॥ आंचली ॥
चत्रुविधि रयली समोसरणु।
चतुर्विध वइठले संघसमुदाओं। जिणसरसूरि सूध देसण करए ॥ २ ॥
दिढ पहरि ग्या[रि]सि दिण सोधियले।
सुभ लगनि सुभ मुह[र]ति महतरि पहु थापियलि। चउदह मुणिवर दिख दिनले ॥ ३ ॥
तवसिरि षिवंसिरि संजमसिरि।
नाणि दरिसणि दुद्धरु संजमु भरु लइयले। जिणसरसुरि फुड वचन समुधरिउं ॥ ४ ॥

॥ वधावणागीतं ॥

---

[२] श्रीजिनसिंहसूरि गीत—

हियडइ लाछि परी वसए चलणइ ए आविकदेवि। उठि गोरा उठि पातलए।
उठि सहिय परगलओं विहाणउ, लइ चादणु करि वादणओं ॥ १ ॥
वादणओं करि रिसभ जिणेसर, जेणइ धरमु प्रकासियओं ॥ २ ॥
वंदणडउ करि सांतिजिणेसर, जिणि सरणागत राखियओं ॥ ३ ॥
वादणडउ मुणि सुव्रतसामिय, जीणइ मीतु प्रतिबोधियओं ॥ ४ ॥
वादणडउ करि नेमिजिणेसर, जेणइ जीव रखावियए ॥ ५ ॥
वादणडउ करि पासजिणेसर, जेणइ कमठु हरावियओं ॥ ६ ॥
वांदणउ करि वीरजिणेसर, जेणइ मेरु कंपावियओं ॥ ७ ॥
वांदणडउ गुरु वडउ सोहइ, जिणसिंघसूरि चारिति नीमलओं ॥ ८ ॥

॥ गीतपदानि ॥

---

[३] श्रीजिनप्रभसूरि गीत—

उदयले **खरतरगच्छ**गयणि अभिनवउ सहसकरो। सिरि **जिणप्रभसूरि** गणहरओ जंगमकलपतरो ॥ १ ॥
वंदहु भविक जना जिणसासणवणनववसंतो। छतीस गुण संजूतो वाइयमयगलदलणसीहो ॥ आंचली ॥

तेर पंचासियइ पोससुदि आठमि सणिहिं वारे । भेटिउ असपते महमदो सुगुरु ढीलियनयरे ॥ २ ॥
आपुणु पास यइसारए नमिवि आदरि नरिंदो । अभिनव कवितु वखाणिवि राय रंजइ मुणिंदो ॥ ३ ॥
हरखितु देइ राय गय तुरय धण कणय देस गाम । भणइ अनेवि जे चाहहो ते तुह दिउ इमा(म!) ॥ ४ ॥
लेइ णहु किंपि जिणप्रभुसुरि मुणिवरो अति निरीहो । श्रीमुखि सलहिउ पातसाहि विविहपरि मुणिसीहो ॥ ५ ॥
पूजिवि सुगुरु वस्त्रादिकिहिं करिवि सहियि निसाणु । देइ फुरुमाणु अनु कारवइ नव वसति राय सुजाणु ॥६॥
पाटहथि चाडिवि जुगपवरु जिणदिवसुरि समेतो । मोकलइ राउ पोसालहं वहु मलिक परिकरीतो ॥ ७ ॥
वाजहि पंच सबुद गहिरसरि नाचहि तरुण नारि । इंदु जम गइंद सठितु गुरु आवइ वसतिहिं मझारि ॥८॥
धंमधुरधवल संघवइ सयल जाचक जन दिंति दानु । संघ संजूत बहु भगति भरि नमहिं गुरु गुणनिधानु ॥९॥
सानिधि पउमिणि देवि इम जगि जुग जयवंतो । नंदउ जिणप्रभसूरि गुरु संजमसिरि तणउ कंतो ॥१०॥

॥ जिनप्रभसूरीणां गीतं ॥

[४] के सलहउ ढीली नयरु हे, के वरनउ वखाणू ए ।
जिणप्रभुसुरि जगि सलहीजइ, जिणि रंजिउ सुरताणू ए ॥ १ ॥
चलु सखि वंदण जाह, गुण गरुवउ जिणप्रभुसुरि ।
रलियइ तसु गुणगाह, रायरंजणु पंडियतिलओ ॥ आंचली ॥
आगमु सिद्धंतु पुराणु वखाणिइ, पडिबोहइ सब लोई ए ।
जिणप्रभसुरि गुरु सारिखउ, हो विरलउ दीसइ कोई ए ॥ २ ॥
आठाही आठमिहि चउथी, तेडावइ सुरिताणू ए ।
प्रहसितु मुख जिणप्रभुसुरि चलियउ, जिम ससि इंदु विमाणू ए ॥ ३ ॥
असपति कुतुबुदीनु मनि रंजिउ, दीठलि जिणप्रभसूरी ए ।
एकंतिहि मन सासउ पूछइ, रायमणोरह पुरी ए ॥ ४ ॥
गामन्तरिय पटोला गजवल, रूढउ देइ सुरिताणू ए ।
जिणप्रभसुरि गुरु कंपि न ईछइ, तिहुयणि अमलिय माणू ए ॥ ५ ॥
ढोल दमामा अरु नीसाणा, गहिरा वाजइ तूरा ए ।
इणपरि जिणप्रभसुरि गुरु आवइ, संघमणोरह पूरा ए ॥ ६ ॥

---

[५] मंगलु सीधिहि मंगलु साहू मंगलु आयरिय मंगलु च[उ]विहसंघ पर देवाधिदेवा ।
मंगलु राणिय तिसलादेविहि वीरजिणिंदहं जा जणणि ।
मंगलु सयसिधंतपरा मंगलु बहु लषमीइ मंगलु चविह संघ पर देवाधिदेवा ॥ आंचली ।
मंगलु रायहं कुमरहपालहं जेणि पलाविय जीव दया ॥
मंगलु सूरिहिं जिणप्रभसूरिहि चाव(च ?)गजी भटिया ॥

॥ मंगल गीतं ॥

[६] श्रीजिनदेवसूरि गीत—

निरुपम गुणगणमणि निधानु संजमि प्रधानु, सुगुरु जिणप्रभसुरि पट उदयगिरि उदयले नवल भाणु ॥१॥
वंदहु भविय हो सुगुरु जिणदेवसुरि ।
ढिल्लिय वर नयरि देसण अमिय रसि वरिसए मुणिवरु जणु घणु ऊनविउ ॥ आचली ॥
जेहि कन्नाणापुर मंडणु सामिउं वीरजिणु । महमद राइ समप्पिउ थापिउ सुभ लगनि सुभदिवसि ॥ २ ॥
नाणि विनाणि कलाकुसले विचारन्हि अजेओ । लखण छंद नाटक प्रमाण वखाणए आगमि गुणि अनेओ ॥३॥

धनु **कुलधरु** जसु कुलि उपंनु इहु मुणिरयणु । धनु **वीरिणिं** रमणि चूडामणि जिणि गुरु उरि धरिउ ॥४॥
धनु **जिणसिंघ**सूरि दिखियाओं धनु **चंद्रगच्छु** । धनु **जिणप्रभुसुरि** निजगुरु जिणि निजपाटिहि थापियाओं ॥५
हलि सखे ! घणउ सोहावणिय रलियावणिय । देसण **जिणदेवसुरि** मुणिरायहं जाणउं नितु सुणउं ॥ ६ ॥
महिमंडलि धरमु समुधरए जिणसासणिहिं । अणुदिण प्रभावन करइ गणधरो अवयरिउ वयरसामि ॥ ७ ॥
वादिय मयगल दलणसीहो विमल सील धरु । छत्रीस गणधर गुण कलिउ चिरु जयउ **जिणदेवसुरि** गुरु ॥८॥

॥ श्री आचार्याणां गीतपदानि ॥

[७] सुगुरु परंपरा गीत–

खरतर गच्छि **वर्द्धमानसुरि जिणेसरसूरि** गुरो ।
अभयदेवसूरि जिणवल्लहसुरि जिणदत्तु जुगपवरो ।
सुगुरु परंपर थुणहु तुम्हि भवियहु भत्तिभरि ।
सिद्धिरमणि जिम वरइ सयंवर नवियपरि ॥ आचली ॥

जिणचंदसूरि जिणपतिसुरि जिणेसरु गुणनिधानु ।
तदणुक्रमि उपनले सुगुरु **जिणसिंघसूरि** जुगप्रधानु ॥ २ ॥
तासु पटि उदयगिरि उदयले **जिणप्रभसूरि** भाणु ।
भवियकमलपडिवोहणु मिच्छततिमिरहरणु ॥ ३ ॥

राउ **महंमदसाहि** जिणि नियगुणिरंजियाओं ।
मेदमंडलि ढिल्लियपुरि जिणधरमु प्रकटु किओं ॥ ४ ॥
तसु गछ धुरधरणु भयलि **जिणदेवसुरि** सूरिराओं ।
तिणि थापिउ **जिणमेरुसूरि** नमहु जसु मनइ राओं ॥ ५ ॥

गीतु पवीतु जो गायए सुगुरुपरंपरह । सयल समीहि सिझहिं पुहविहिं तसु नरहं ॥ ६ ॥

॥ सुगुरु परंपरा गीतं ॥

[८] गुर्वावली गाथा कुलक–

वंदे सुहंमसामिं जंबूसामिं च पभवसूरिं च । सिज्जंभव-जसभद्दं अज्जसंभूयं तहा वंदे ॥ १ ॥
तह भद्दबाहुसामिं च थूलभद्दं जईजि(ज)णवरिट्ठं । अज्ज महा[गि]रिसूरिं अज्जसुहत्थिं च वंदामि ॥ २ ॥
तह संतिसूरि-हरिभद्दसूरिं मं(सं)डिल्लसूरिजुगपवरं । अज्जसमुद्दं तह अज्जमंगु अज्जधम्मं अहं वंदे ॥ ३ ॥
भद्दगुत्तं च वइरं च अज्जरक्खियमुणिवरं । अज्जनंदिं च वंदामि अज्जनागहत्थिं तहा ॥ ४ ॥
रवेय-खंडिल्ल-हिमवंत-नाग-उज्जोयसूरिणो वंदे । गोविंद-भूइदिन्ने लोहच्चिय-दूससूरिओं ॥ ५ ॥
उमासाइवायगे वंदे वंदे जिणभद्दसूरिणो । हरिभद्दसूरिणो वंदे वंदे हं देवसूरिं पि ॥ ६ ॥
तह नेमिचंदसूरिं उज्जोयणसूरिपभिइणो वंदे । तह वद्धमाणसूरिं सूरिसिरिजिणेसरं वंदे ॥ ७ ॥
जिणचदं अभयसूरिं सूरिजिणवल्लहं तहावंदे । जिणदत्तं जिणचंदं जिणवइ य जिणेसरं वंदे ॥ ८ ॥
संजमसरसइनिलयं सुमुणीण तित्थभरधरणं । सुगुरुं गणहररयणं वंदे **जिणसिंह**सूरिमहं ॥ ९ ॥
जिणपहसूरिमुणिंदो पयडियनीसेसतिहुयणाणंदो । संपइ जिणवरसिरिवद्धमाणतित्थं पभावेइ ॥ १० ॥
सिरिजिणपहसूरीणं पट्टंमि पइट्ठिओ गुणगरिट्ठो । जयइ **जिणदेव**सूरी नियपन्नाविजयसुरसूरी ॥ ११ ॥
जिणदेवसूरिपट्टोदयगिरिचूडाविभूसणे भाणू । **जिणमेरु**सूरिसुगुरू जयउ जए सयलविज्जनिही ॥ १२ ॥
जिणहितसूरिमुणिंदो तप्पट्टे भवियकुमुयवणचंदो । मयणकरिकुंभविहडणदुद्धरपंचाणणो जयउ ॥ १३ ॥
सुगुरुपरंपरगाहाकुलयमिणं जे पढेइ पच्चूसे । सो लहइ मणोवंछियसिद्धिं सव्वं पि भवजणे ॥ १४ ॥

॥ इति गुर्वावलीगाथाकुलकं समाप्तं ॥ छ ॥

अर्हम्

खरतरगच्छालङ्कारश्रीजिनप्रभसूरिकृता

विधि प्रपा

नाम

सुविहितसामाचारी ।



नमिय महावीरजिणं[1], सम्मं सरिउं गुरूवएसं च[2] ।
सावय-मुणिकिच्चाणं सामायारिं लिहामि अहं ॥ [१]

§ १. सम्मत्तमूलत्तेण गिहिधम्मकप्पतरुणो पढमं सम्मत्तारोहणविही भण्णइ — तत्थ जिणभवणे समोसरणे वा सुहेसु तिहि-मुहुत्ताइएसु उवसमाइगुणगणासयस्स[3] उवासयस्स विसिट्ठकयनेवत्थस्स चंदणरसरइय-भालयलतिलयस्स जहासत्ति निव्वत्तियजिणनाहपूओवयारस्स अखंडअक्खयाणं वड्ढंतियाहिं तिहिं मुट्ठीहिं गुरू अंजलिं भरेइ । सन्निहियसावओ साविया वा तदुवरि पसत्थफलं नालिकेराइ धारेइ । तओ नवकार-पुव्वं समोसरणं तिपयाहिणी काउं सावओ इरियावहियं पडिक्कमिय खमासमणं दाउं भणइ — 'इच्छा-कारेण तुब्भे अम्हं सम्मत्तसामाइय-सुयसामाइयआरोवणत्थं चेइयाइं वंदावेह ।' गुरू भणइ — 'वंदावेमो ।' पुणो खमासमणं दाउं — 'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं सम्मत्तसामाइय-सुयसामाइयआरोवणत्थं वासनिक्खेवं करेह' त्ति भणइ । तओ 'करेमी'ति भणित्ता निसिज्जासीणो कयसकलीकरणो सूरिमंतेण इयरो वद्धमाण-विज्जाए वासे अभिमंतिय तस्स सिरे देइ; चंदणक्खए य रक्खं च करेइ । तओ तं वामपासे ठवित्ता वड्ढंति[4]-याहिं थुईहिं संघसहिओ गुरू देवे वंदइ । चउत्थथुईअणंतरं सिरिसंतिनाह—संतिदेवया—सुयदेवया—[5]भवणदेवया—खेत्तदेवया—अंबा—पउमावई-चक्केसरी-अच्छुत्ता-कुबेर-बंभसंति-गोत्तसुरा-सक्काइवेयावच्चगराणं नवकारचिंतणपुव्वं[6] थुईओ । इत्थ य अंबाथुइं जाव थुईओ अवस्सदायव्वाओ । सेसाणं न नियमु त्ति गुरूवएसो । अम्हाणं पुण पउमावई गच्छदेवय त्ति तीसे थुई अवस्सदायव्वा । तओ सासणदेवयाकाउ-स्सग्गे चउरो उज्जोयगरा पणुवीसुस्सा चिंतिज्जंति । तओ गुरू पारित्ता थुइं देइ । सेसा काउस्सग्गट्ठिया सुणंति । तओ सव्वे पारित्ता उज्जोयगरं पढित्ता नवकारतिगं भणित्ता जाणूसु भंविय सक्कत्थयं भणंति । 'अरिहाणा'दि थुत्तं गुरू भणइ । तओ 'जयवीयराय' इच्चाइ पणिहाणगाहादुगं सव्वे भणंति । इच्चेसा पक्किया सव्वनंदीसु तुल्ला; णवरं तेण तेण अभिलावेणं । तओ खमासमणं दाउं सड्ढो भणइ — 'इच्छाकारेणं तुब्भे अम्हं सम्मत्तसामाइय-सुयसामाइयआरोवणत्थं काउस्सग्गं करावेह ।' गुरू भणइ — 'करावेमो' । पुणो खमासमणं दाउं भणइ — 'सम्मत्तसामाइय-सुयसामाइयआरोवणत्थं करेमि काउस्सग्गं'ति । तओ काउस्सग्गे सत्तावीसु-स्सासं उज्जोयगरं चिंतिय पारित्ता मुहेण भणइ सव्वं । गुरू वि काउस्सग्गं करेइ त्ति अन्ने । तओ खमासमणं

1 B वीरजिणं । 2 B वा । 3 B °गणायरस्स । 4 B वड्ढंतयाहिं । 5 B भुवण° । 6 A चिंतनपुव्वि ।

दाउं भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं सम्मत्तसामाइय-सुयसामाइयसुत्तं उच्चारावेह' त्ति। गुरू भणइ—'उच्चारावेमो'। तओ नवकारतिगं भणित्तु वारतिगं दंडगं भणावेइ। जहा—'अहं णं भंते तुम्हाणं समीवे मिच्छत्ताओ पडिक्कमामि; सम्मत्तं उवसंपज्जामि। नो मे कप्पइ अज्जप्पभिइ अन्नतित्थिए वा, अन्नतित्थिय-देवयाणि वा, अन्नतित्थियपरिग्गहियाणि अरहंतचेइयाणि वा; वंदित्तए वा, नमंसित्तए वा, पुव्विं अणालत्तएणं आलवित्तए वा, संलवित्तए वा; तेसिं असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, दाउं वा अणुप्पयाउं वा, तेसिं गंधमल्लाइं पेसेउं वा, नन्नत्थ रायाभिओगेणं, गणाभिओगेणं, बलाभिओगेणं, देवयाभिओगेणं, गुरुनिग्गहेणं, वित्तीकंतारेणं;—तं च चउव्विहं, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ—दंसणदव्वाइं अहिगिच्च; खित्तओ जाव भरहम्मि मज्झिमखंडे; कालओ जाव जीवाए; भावओ जाव छलेणं न छलिज्जामि, जाव सन्निवाएणं न भुज्जामि, जाव केणइ उम्मायवसेण एसो मे दंसणपालण-परिणामो न परिवडइ; ताव मे एसो दंसणाभिग्गहो त्ति'॥ तओ सीसस्स सिरे वासे खिवेइ। तओ निसिज्जोवविट्ठो गुरू सकलीकरणरक्खामुद्दापुव्वयं अक्खए अभिमंतिय उवरिं पणव(ॐ)—भुवणेसर(ह्रीँ)—लच्छी-(श्रीँ)—अरहंतवीयाइं* हत्थेण लिहित्ता, लोगुत्तमाण पाए सुगंधे खिवित्ता, संघस्स देइ।

पंचपरमिट्ठिमुद्दा, सुरही-सोहग्ग-गरुडवज्जा य।
मुग्गरकरा य सत्तओ एया अक्खयपयाणं मि॥ [२]

§२. तओ खमासमणं दाउं सावओ भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं सम्मत्तसामाइय-सुयसामाइयं आरोवेह'। गुरू भणइ—'आरोवेमो'। पुणो वंदिऊण सीसो भणइ—संदिसह किं भणामो?'। गुरू भणइ 'वंदित्ता पवेयह'। पुणो वंदिऊण सीसो भणइ†—'इच्छाकारेण तुब्भेहिं अम्हं सम्मत्तसामाइय-सुयसामाइयं आरोवियं?'। एवं पण्हे कए गुरू भणइ—'आरोवियं'। ३ खमासमणाणं; हत्थेणं, सुत्तेणं, अत्थेणं, तदुभएणं सम्मं धारणीयं चिरं पालणीयं। सीसो भणइ—'इच्छामो अणुसट्ठिं'। पुणो वंदिय भणइ—'तुम्हाणं पवेइयं; संदिसह साहूणं पवेएमि'। गुरू भणइ—'पवेयह'। तओ खमासमणं दाउं नमोक्कारं पढंतो पयाहिणं करेइ। 'गुरुगुणेहिं वड्ढाहि; नित्थारपारगा होहि'—त्ति भणंतो गुरू संघो य वासक्खए खिवेइ। एवं जाव तिन्नि वारा। तओ वंदित्ता भणइ—'तुम्हाणं पवेइयं, साहूणं पवेइयं;[1] संदिसह काउस्सग्गं करेमि'। गुरू आह—'करेह'। तओ खमासमणपुव्वं 'सम्मत्तसामाइय-सुयसामाइयथिरीकरणत्थं करेमि काउस्सग्गं' त्ति। सत्तावीसुस्सासं काउस्सग्गं काउं चउवीसत्थयं च भणिय गुरुं तिपयाहिणी करेइ। तओ गुरू लग्गवेलाए—

इय मिच्छाओ विरमिय सम्मं उवगम्म भणइ गुरुपुरओ।
अरहंतो[2] निस्संगो मम देवो दक्खिणा ‡साहू॥ [३]

इइ वारतियं भणावेइ। विणेओ वि तत्थ दिणे एगासणगाइ जहसत्ति तवं करेइ। तओ खमासमणं दाउं भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं धम्मोवएसं देह'। तओ गुरू देसणं करेइ।

भूएसु जंगमत्तं, तत्तो पंचिंदियत्तमुक्कोसं।
तेसु वि य माणुसत्तं, मणुसत्ते आरिओ देसो॥ [४]
देसे कुलं पहाणं, कुले पहाणे य जाइमुक्कोसा।
तीय वि रूवसमिद्धी, रूवे य बलं पहाणयरं॥ [५]

---

* 'वीजानि पदानि ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ नमः इत्यमूनि।' इति टिप्पणी A आदर्शे। † द्वितारकान्तर्गतः पाठो नोपलभ्यते B आदर्शे। 1 नास्ति B आदर्शे। 2 B अरिहंतो। ‡ 'सरला निष्कपटा इत्यर्थः।' इति A आदर्शे टिप्पणी।

होइ वले विय जीयं, जीए वि पहाणयं तु विन्नाणं ।
विन्नाणे सम्मत्तं, सम्मत्ते सीलसंपत्ती ॥ [६]
सीले खाइयभावो, खाइयभावेण केवलं नाणं ।
केवलिए पडिपुन्ने, पत्ते परमक्खरे मोक्खे ॥ [७]
पन्नरसंगो एसो समासओ मोक्खसाहणोवाओ ।
इत्थं यहू पत्तं ते थेवं संपावियवं ति ॥ [८]
तो तह कायवं ते जह तं पावेसि थोवकालेणं ।
सीलस्स नऽत्थऽसज्झं जयंमि तं पावियं तुमए-त्ति ॥ [९]

पुरिसो जाणुट्ठिओ इत्थियाओ उद्धट्ठियाओ सुणंति । जिणपूयणाइ[1] अभिग्गहे य गुरू देइ । जिणपूया कायवा । दवभावमित्ते लोइय-लोउत्तरिए अणाययणे न गंतवं । परतित्थे तव-न्हाण-होमाइ धम्मत्थं न कायवं । लोइयपवाइं गहण-संकंति-उत्तरायण-दुवट्ठमी-असोयट्ठमी-करगचउत्थी-चित्तट्ठमी-महानवमी-विहिसत्तमी-नागपंचमी-सिवरत्ति-वच्छबारसि-दुद्धबारसि-ओघबारसि-नवरत्तपूआ-होलियपयाहिणा-बुहअट्ठमी-कज्जलतइया-गोमयतइया-हलिहुव[2] चउद्दसी-अणंतचउद्दसी-सावणचंदण[3] छट्ठी-अक्कछट्ठी-गोरीभत्त-रविरहनिक्खमणपमुहाइं न कायवाइं । तहा कज्जारंभे विणायगाइनामग्गहणं, ससिरोहिणिगेयं, वीवाहे विणायगठवणं, छट्ठीपूयणं, माऊणं ठावणा, बीयाचंदस्स दसियादाणं, दुग्गाईणं ओवाइयं, पिंडपाडणं, थावरे पूया, माऊणं मल्लगाइं, रवि-ससि-मंगलवारेसु तवो, रेवंत-पंथदेवयाणं पूया, खेत्ते सीयाइअच्चणं, सुन्निणि-रुप्पिणि-रंगिणिपूया, माहे घयकंबलदाणं तिलदब्भदाणेण जलंजली, गोपुच्छे करुस्सेहो, सवत्ति-पियरपडिमाओ, भूयमल्लगं, सद्ध-मासिय-वरिसिय[5] करणं, पव्व[6] दाणं, कन्नाहलग्गहो, जलघडदाणं, मिच्छदिट्ठीणं लाहणयदाणं, धम्मत्थं कुमारियाभत्तं, संडविवाहो, पियरहं नई-कूवाइ-खणणपइट्ठोवएसो, वायस-विरालाइपिंडदाणं, तरुरोवण-वीवाहो, तालायरकहासवणं, गोधणाइपूया, धम्मनिमित्तयकरणं, इंदयाल-नडपिच्छण-पाइक्क-महिस-मेसाइ-जुज्झ-मूयखिलणाइदरिसणं, मूल-असिलेसाजाए बाले बंभणाह्वण-तव्वयणकरणं,—एमाइ मिच्छत्तठाणाइं परिहरियवाइं । सक्कत्थएण वि तिकालं चीवंदणं कायवं । छम्मासं जाव दोवाराओ संपुण्णा चीवंदणा कायवा । नवकाराणं च अट्ठुत्तरं सयं गुणेयवं । बीया-पंचमी-अट्ठमी-एगारसीए चउदसीए उद्दिट्ठपुन्निमासु दोकासणाइतवं । जा जीवं चउवीसं नवकारा गुणेयवा । पंचुंबरी-मज्ज-मंस-महु-मक्खण-मट्टिया-हिम-करग-विस-राईभत्त-बहुबीय-अणंतकाय-अत्थाणय-घोलवडय-वाइंगण-अमुणियनामपुप्फ-फल-तुच्छ-फल-चलियरस-दिणदुगातीयदहिमाईणि वज्जेयवाइं । संगरफलिया-मुग्ग-मउट्ठ-मास-मसूर-कलाय-चणय-चवलय-वल्ल-कुलत्थ-मेत्थिया-कंडुय-गोयारमाइ विदलाइं आमगोरसेण सह न जिमेयवाइं । एएसिं रायत्तयं न कायवं । निसिन्हाणं, अच्छाणियजलेण नदहाइसु ण्हाणं, अंदोलणं, जीवाणं जुज्झावणं, साहम्मिएहिं सद्धिं धरणगाइविरोहो, तेसुं च सीयंतेसुं सइ-विरिएऽभोयणं, चेइयहरे अणुचियगीयनट्टं निट्ठीवणाइआसायणाओ, देवनिमित्तं थावरपाडग्गकूवारामकरणाणि य वज्जणिज्जाइं । उस्सुत्तभासगलिंगीणं कुतित्थियाणं च वयणं न सद्दहेयवं । एमाइ अभिग्गहा गुरुणा दायवा । सो वि तम्मि दिणे साहम्मियवच्छलं सुविहियाणं च वत्थाइपडिलाहणं करेइ त्ति ॥

॥ सम्मत्तारोवणविही समत्तो ॥ १ ॥

---

1 B पूयणाय । 2 B हलिहुय° । 3 B चंदिन° । 4 B °दब्भदानं दाणे जलं° । 5 B °वीरसिय° । 6 A पव्वाणं ।

§ ३. पडिपन्नसम्मत्तस्स य पइदिणं देव–गुरु–पूया–धम्मसवणपरायणस्स देसविरइपरिणामे जाए बारसवयाइं आरोविज्जंति । तत्थ इमो विही–

गिहिधम्मे चीवंदण, गिहिवयउस्सग्गयइवउच्चरणं ।
जहसत्ति वयग्गहणं, पयाहिणुस्सग्गदेसणया ॥ [१०]

हत्थट्ठियपरिग्गहपरिमाणटिप्पणयस्स य । वयाभिलावो जहा–'अहं णं भंते तुम्हाणं समीवे थूलगं पाणाइवायं संकप्पओ निरवराहं पच्चक्खामि । जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए कायेणं, न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि' त्ति वारतिगं भणियव्वं । एवं, अहं णं भंते तुम्हाणं समीवे थूलगं मुसावायं जीहाच्छेयाइहेउयं कन्नालियाइपंचविहं पच्चक्खामि । दक्खिन्नाइअविसए अहागहियभंगएणं । एवं थूलगं अदिन्नादाणं खत्तखणणाइयं चोरंकारकरं रायनिग्गहकारयं सच्चित्ताचित्तवत्थुविसयं पच्चक्खामि । एवं, ओरालियवेउव्वियभेयं थूलगं मेहुणं पच्चक्खामि, अहागहियभंगएणं । तत्थ दुविहतिविहेणं दिव्वं, तेरिच्छं एगविहतिविहेणं, माणुस्सयं एगविहएगविहेणं वोसिरामि । अहं णं भंते परिग्गहं पडुच्च अपरिमियपरिग्गहं पच्चक्खामि । धणधन्नाइ–नवविह–वत्थुविसयं इच्छापरिमाणं उवसंपज्जामि, अहागहियभंगएणं । एवं गुणव्वयवए दिसिपरिमाणं पडिवज्जामि । उवभोगपरिभोगवए भोयणओ अणंतकाय–बहुबीय–राइभोयणाइं परिहरामि । कम्मओ णं पन्नरसकम्मादाणाइं इंगालकम्माइयाइं बहुसावज्जाइं खरकम्माइयं रायनिओगं च परिहरामि । अणत्थदंडे अवज्झाण-पावोवएस-हिंसोवकरणदाण-पमायायरियरूवं चउव्विहं अणत्थदंडं जहासत्तीए परिहरामि । अहं णं भंते तुम्हाणं समीवे सामाइयं पोसहोववासं देसावगासियं अतिहिसंविभागवयं च जहासत्तीए पडिवज्जामि । इच्चेयं सम्मत्तमूलं पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं सावगधम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरामि ।' पयाहिणा-वासदाणाइयं सेसं पुव्विं व दट्ठव्वं ॥

§ ४. पुव्वोल्लिंगियं परिग्गहपरिमाणटिप्पणं च गाहाहिं वित्तेहिं वा अत्थओ एवं लिहिज्जइ–'वीराइअन्नयरं जिणं नमित्तु, सम्मत्तमूलं गिहत्थधम्मं पडिवज्जामि । तत्थ अरहं[1] मह देवो । तदाणाठियसाहू गुरुणो । जिणमयं पमाणं । धम्मत्थं परतित्थे तव–दाण–न्हाण–होमाइ न करेमि । सक्कत्थएण वि तिकालं चीवदणं काहं ।

पाणिवह–मुसावाए अदत्त–मेहुण–परिग्गहे चेव ।
दिसि–भोग–दंड–समइय–देसे तह पोसह–विभागे ॥ [११]

संकप्पियं निरवराहं थूलं जीवं तिव्वकसायवसा मण–वय–तणूहिं जावज्जीवं न हणे न हणावे, सकज्जे सयणाइकज्जे वा ओसहाइसावज्जे किमि–गंडोलग–जलुगाविसए य जयणा । कन्नाइथूलगमलीयं दुविहं तिविहेण वोसिरे । देव–संघ–साहु–मित्ताइकज्जे लहणिज्ज–दिज्ज–पडिकयववहारे य जयणा । थूलमदत्तं दुविहतिविहेण वज्जे । निहि-सुंकाइसु जयणा । दुविहतिविहेण दिव्वमिच्चाइभणियभंगेणं मेहुणनियमो । परदारं परपुरिसं वा काएण सव्वहा नियमो वा । माणुस्से दुच्चिंतिय-दुब्भासिय-दुच्चिट्ठिय-हास-कलहवयणाइं अकयाणुबंधं वज्जित्ता जहासंभवं सव्वया । धण–धन्न–खेत्त–वत्थू–रुप्प–सुवन्ने चउप्पए दुपए कुविए परिग्गहे नवविहे इच्छापमाणमिणं । जाइफल-पुप्फलाइगणिमं, कुंकुम-गुडाइ-

1 B अरहंतो ।

धरिमं, चोप्पड-जीराइमेज्जं, रयण-वत्थाइपरिछिज्जं । एवं चउव्विहं पि धणं गहणक्खणे सव्वया वा इत्तिय-पमाणं, इत्तिओ धण्णसंगहो, इत्तियाइं हलाइं खेत्ताइं चरी वा, किसिनियमो वा। इत्तियाइं हट्टघराइं। रुप्प-कणगेसु टंकयपमाणं तोलयपमाणं गद्दियाणगपमाणं वा। चउप्पय-तिरियाणं पमाणं जहाजोग्गं नियमो वा। दुपए दासरूवाणं, सगडाईणं च पमाणं। कुवियं इत्तियमोल्लं उवक्खर-थालाइ; भणियपमाणाओ अहियं धम्मवए दाहं[1]। एसो नियमो मह सपरिग्गहावेक्खाए। भाइ-सयणाईणं तु रक्खण-ववहरणं मुक्कलयं अड्डाणगाइ य। तहा, अमुगनगराओ चउद्दिसिं जोयणसयाइं, उड्ढं जोयणदुगाइ, अहोदिसिं पुरिसपमाणं धणुहमाणं वा। दुविहतिविहेणं मंसं, एगविहं मज्ज-मक्खणं, अन्नत्थ ओसहाइकज्जेण महुं च वज्जेमि। सामन्नेणं वा मंसाइ नियमेमि। अप्पउलिय-दुप्पउलिय-तुच्छफलेसु जयणा। एवं पंचुंबरि-वाइंगण-पुंपुट्टय-अन्नायफल-सगोरसविदल-पुप्फिओयणाइं। वडिय-तीमणाइनिक्खित्तअद्दयाइ मुत्तुं अणंतकायं च। असण-खाइमे निसि न जिमे, पाण-साइमेसु जयणा। अत्थाणयाणं नियमो परिमाणं वा। असणे सेइया-सेराइपमाणं। भोयणे न्हाणे य नेहकरिस*दुगाइ। सच्चित्तदव्व-विगई-ओगाहिम-पाणगभेय-सालणयडक्कडदव्वाणं परिमाणं। पाणे एगाइघडा, उच्छुलयाणं, चिब्भडाइ-गाणियफलाणं च बोराइ-मेज्जफलाणं, दक्खाइ-तोलिमफलाणं संखा–मण–माणगाइपरिमाणं जहासंखं कायव्वं। संपत्ति गुच्छाणं पण्णाणं पुप्फ-फलाणं च संखा। कपूर-एलाइसु रूवयपरिमाणं। तियड्डय-तिहलाइसु पलाइ-परिमाणं। धोवत्तिय-सीओढणवज्जं इत्तियसुल्लाओ इत्तियाओ तियलीओ†। फुल्लाणं तुड्डुर-चउसराइ-संखा नियमो वा। आभरणे संखा सुवण्ण-रुप्प-पलमाणं वा। कुंकुम-चंदणविलेवणे पलाइसंखा। जलघड-दुगाइणा मासे इत्तिया सिरिन्हाणा, दिणे य अंगोहलीओ। आसण-सिज्जाणं संखा। ओहेण वा भोग-परिभोगाणं इंगालगाइकम्मादाणाणं नियमो, भाडगाइसु परिमाणं वा। मणुयाणं कयविक्कयनियमो। चउप्पयविक्कयसंखा। तलाराइखरकम्मनियमो। विचित्तोवरिं लाहाइलोमेणं तिले न धारइस्सं। चुल्लीसंधु-क्खण-जलघडाणयणसंखा, खंडण-पीसण-दलणाइसु मण-कलसियाइपरिमाणं।

चउहा अणत्थदंडं, अवज्झाणं, वेरितप्पुरवहाई।
वज्जे वद्दावणयं, मुत्तु महं गीयनट्टाइं॥ [१२]

जूयजलकीलणाई चएमि दक्खिण्णअवसए[3] देमि।
नो सत्थग्गिहलाई पाओवएसं च कइयावि॥ [१३]

मासे वरिसे वा सामाइयसंखा। दुब्मासियाइसु मिच्छादुक्कडदाणं। अहोरत्तंते गमणे जल-थलपहेसु जोयण-संखा। पोसहे वरिसंतो संखा जहासंभवं वा। अट्ठमि–चउद्दसि–चउमासिय[4]–पज्जुसणेसु जहासत्ति एगास-णाइ तवं, बंभचेरं, अन्हाणाइयं च। काले नियगेहागयसुविहियाणं संविभागपुव्वं भोयणं। दिणंतो नवकार-गुणणसंखा य। इत्तियं धम्मवयं वरिसंतो काहं। इत्तिओ य सज्झाओ मासे। एए य मह अभिग्गहा ओसह–परवसत्त–देहअसामत्थ–विचित्तचेय–रोग–मग्गकंतार–देवया–गुरु–गण–रायाभिओग–अणाभोग–सहसागार–महत्तर–सव्वसमाहिवत्तियागारे मोत्तुं। मज्झिमखंडाओ बाहिं सव्वासवदाराणं तिविहं तिविहेण नियमो, विरक्कयसव्वाहिगरणाणं च। इत्थ य पमाएण नियमभंगे सज्झायसहस्सं, आंबिलं च पच्छित्तं।"

1 B दानं। * 'पंचभिर्गुंजाभिर्माषकः, तैः षोडशभिः कर्षः।' इति A टिप्पणी। 2 B °भिग्गहा°। † 'अंगमर्दनादिः।' इति A टिप्पणी। 3 B °अविसए। 4 A चउमासय।

एवं लिहित्ता एसा गाहा लिहिज्जइ–

सम्मत्तमूलमणुवयखंधं उत्तरगुणोरुसाहालं ।
गिहिधम्मदुमं सिंचे सद्धासलिलेण सिवफलयं ॥ [१४]

तओ गुरुक्कमं लिहित्ता अमुगगणहरपायमूले अमुगसंवच्छर-मास-तिहीसु अमुगेण अमुगीए वा एसो सावगधम्मो पडिवण्णो त्ति परिग्गहपमाणटिप्पणविही ॥

॥ परिग्गहपरिमाणविही समत्तो ॥ २ ॥

§५. पडिवन्नदेसविरइयस्स विसिट्ठतरसद्धस्स सड्ढस्स छम्मासियं सामाइयवयं आरोविज्जइ । तत्थ य चेइयवंदणाइविही हिट्ठिल्लो चेव । नवरं, काउस्सग्गाणंतरं अहिणवमुहपोत्तिया वासविन्नासपुव्वं समप्पणीया । तीए य तेण छम्मासे जाव उभयसंझं सामाइयं गहेयव्वं । तओ नवकारतिगपुव्वं 'करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।' तहा 'दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । तत्थ दव्वओ सामाइयदव्वाइं अहिगिच्च; खेत्तओ णं इहेव वा अन्नत्थ वा; कालओ णं जाव छम्मासं; भावओ णं जाव रोगायंकाइणा परिणामो न परिवडइ, ताव मे एसा सामाइयपडिपत्ती ।' इति दंडगो वारतिगमुच्चारणीओ । सेसं पुव्विं व दट्ठव्वं ॥

॥ इइ सामाइयारोवणविही ॥ ३ ॥

§६. अंगीकयसामाइएण य उभयसंझं सामाइयं गहेयव्वं । तस्स एसो विही–पोसहसालाए साहुसमीवे गीहेगदेसे वा खमासमणदुगपुव्वं सामाइयमुहपोत्तिं पडिलेहिय पढमखमासमणेण 'सामाइयं संदिसावेमि, वीयखमासमणेण सामाइए ठामि' त्ति भणिऊण पुणो वंदिय, अद्धावणओ नमोकारतिगपुव्वं 'करेमि भंते सामाइयं–इच्चाइदंडगं–वोसिरामि' पज्जंतं वारतिगं कड्ढिय, खमासमणेण इरियावहियं पडिक्कमिय, खमासमणदुगेणं वासासु कट्ठासणं, उडुबद्धे पाउंछणं, खमासमणदुगेण सज्झायं च संदिसाविय, पुणो वंदिय नवकारऽट्ठगं भणइ । तओ सीयकाले पंगुरणं संदिसावेइ । संझाए सज्झायाणंतरं कट्ठासणं संदिसावेइ त्ति । जइ पुण कयसामाइयं पोसहइत्तं वा, कोइ कयसामाइओ पोसहइत्तो वा वंदइ, तया 'वंदामो' त्ति वत्तव्वं, जइ इयरो वंदइ तत्थ 'सज्झायं करेह' त्ति वत्तव्वं । जहण्णओ वि घडियादुगं सुहज्झवसाएण चिट्ठित्ता, तओ मुहपोत्तिं पडिलेहिय पढमखमासमणे 'सामाइयं पारावेह'–गुरू आह–'पुणो वि कायव्वो' । वीयखमासमणे 'सामाइयं पारेमि'–गुरू आह–'आयारो न मुत्तव्वो' । तओ नवकारतिगं भणिय, 'भयवं दसन्नभद्दो' इच्चाइगाहाओ भूमिनिहित्तसिरो भणइ ।

॥ इय सामाइयग्गहण-पारणविही ॥ ४ ॥

§७. इत्थ केइ आइल्लाणं चउण्हं सावयपडिमाणं पडिवत्तिं इच्छंति । तं च न सुगुरूणं संमयं । जओ संपयं पडिमारूवं सावयधम्मं वोच्छिन्नं विंति गीयत्था । अओ न तस्स विही भण्णइ ।

§८. इयाणिं उवहाणविही – सोहणतिहि–करण–मुहुत्ताइदिणे जिणभवणाइसु नंदी कीरइ । पंचमंगलमहासुयक्खंधे इरियावहियासुयक्खंधे य; अन्नेसु उवहाणतवेसु नंदीए न नियमो । जइ कोइ समोसरणे पूयं करेइ तया कीरइ नऽन्नहा । दोसु आइल्लउवहाणतवेसु पुण नियमा नंदी । तत्थ सावओ साविया

वा विसिट्ठकयनेवत्था महया विच्छड्डेणं गुरुसमीवमागम्म समवसरणं वत्थ-नेवेज्ज-अक्खय-थाल-नालिएरविसिट्ठं पूयाए पूइऊण नालिकेरं अंजलीए करित्ता पयाहिणं करेइ, चउसु ठाणेसु पणामपुव्वं* । तओ समवसरणपुरओ अक्खए नालिएरं च मुंचइ† । तओ दुवालसावत्तवंदणं दाउं, खमासमणं दाऊण भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं पंचमंगलमहासुयक्खंधाइउवहाणतवं उक्खिवह' । गुरू भणइ—'उक्खिवामो' । तओ 'इच्छं'ति भणित्ता, वंदिय भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं पंचमंगलमहासुयक्खंधाइउवहाणतवउक्खिवणत्थं काउसग्गं करावेह' । गुरू भणइ—'करेह' । सीसो 'इच्छं'ति भणिय, खमासमणं दाउं भणइ—'पंचमंगलमहासुयक्खंधाइउवहाणतवउक्खिवणत्थं करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ ऊससिएण'मिच्चाइ । तत्थ नवकारं उज्जोयगरं वा चिंतेइ । तओ नमोक्कारेण पारित्ता, नमोक्कारं उज्जोयगरं वा भणिय, खमासमणं दाउं, भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं पंचमंगलमहासुयक्खंधाइउवहाणतवउक्खिवणत्थं चेइयाइं वंदावेह' । गुरू भणइ—'वंदावेमो' । सीसो भणइ—'इच्छं'ति । तओ गुरू तस्सुत्तमंगे वासे खिवेइ, वारतिन्नियं सत्त वा । तओ गुरू चउविहसंघसहिओ वड्ढंतियाहिं थुईहिं चेइए वंदावेइ । संतिनाह-सुयदेवयापमुह-जाव-सासणदेवयाए काउस्सग्गे करित्ता, तासिं चेव थुईओ दाउं, सासणदेवयाए काउस्सग्गं चउरो उज्जोयगरे चिंतिय, नमोक्कारेण पारिय, थुइं दाउं, चउवीसत्थयं कहित्ता, नवकारतियं कहिय, वइसिऊण, सक्कत्थयं कहिय, पंचपरमेट्ठिथवं भणेइ । तओ गुरू लोगुत्तमाणं पाएसु वासे छुहिय, समवसरणंमि सव्वदेवयाणं सरणं करिय, वासे खिवेइ । तओ वद्धमाणविज्जाइणा अक्खए वासे य अहिमंतिय चउव्विहसंघस्स दाऊण, गुरू सीसं दुवालसावत्तवंदणं दाविय, भणावेइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं पंचमंगलमहासुयक्खंधाइउवहाणतवं उद्दिसह' । गुरू भणइ—'उद्दिसामो' । सीसो 'इच्छं' इति भणिय, वंदिय, भणइ—'संदिसह किं भणामो' । गुरू भणइ—'वंदित्ता पवेयह' । सीसो 'इच्छं'ति भणिय, खमासमणेणं वंदिय, भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भेहिं अम्हं पंचमंगलमहासुयक्खंधाइउवहाणतवो उद्दिट्ठो ?' । तओ गुरू वासे खिवंतो आह—'उद्दिट्ठो' । २ खमासमणाणं । हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तदुभएणं सम्मं जोगो कायव्वो । सीसो भणइ—'इच्छामो अणुसट्ठिं' । तओ वंदिय भणइ—'तुम्हाणं पवेइयं; संदिसह साहूणं पवेएमि' । गुरू भणइ—'पवेयह' । तओ वंदिय, नम्मोक्कारं भणंतो पयक्खिणं करेइ । अणेण विहिणा अन्ने वि दो वारे पयक्खिणं करेइ । चउव्विहो वि संघो तस्सुत्तमंगे वासे अक्खए य खिवइ । तओ खमासमणं दाउं भणइ—'तुम्हाणं पवेइयं, साहूणं पवेइयं; संदिसह काउस्सग्गं करेमि' । गुरू भणइ—'करेह' । तओ वंदिय खमासमणेणं भणइ—'पंचमंगलमहासुयक्खंधाइउवहाणतवउद्देसनिमित्तं करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ ऊससिएणं' इच्चाइ । उज्जोअगरं चिंतिय सागरवरगंभीरा जाव पारिय, चउविसत्थयं पढइ । तओ पंचमंगलमहासुयक्खंधाइउवहाणतवउद्देसनंदिथिरीकरणत्थं अट्ठुस्सासं उस्सग्गं काउं नमोक्कारं भणित्ता, खमासमणदुगदाणपुव्वं पुत्तिं पेहिय वंदणं दाउं भणइ—'इच्छाकारेण संदिसह, पवेयणं पवेयहं' । गुरू भणइ—'पवेयह' । तओ वंदिय भणइ—'पंचमंगलमहासुयक्खंधदुवालसमपवेसनिमित्तु' तपु करहं । गुरू भणइ—'करेह' । वंदिय उववासाइतवं करेइ, वंदणं देइ । तम्मि चेव समए पोसहं करेइ सज्झाए वा करेइ । तत्थ पोसहविही सव्वो वि कीरइ ।

---

* 'उक्खिवावणियं नंदिपवेसावणियं करेमि ।' इति B टिप्पणी । † 'ईर्यां प्रतिक्रम्य मुखवस्त्रिकां प्रतिलिख्य ।' इति B टिप्पणी । 1 A अन्नत्थूससिएण । 2 B निमित्तं तवु ।

§९. एवं सेसेसु वि दिणेसु नंदिवज्जं गुरुसगासे पोसहं सामाइयं च करेइ, पोसहकरणविहिणा। सो य इमो— इरियं पडिक्कमिअ आगमणमालोइय खमासमणदुगेणं पोसहमुहपोत्तिं पडिलेहित्ता, पढमखमासमणेणं 'पोसहं संदिसावेमि'। बीयखमासमणेणं 'पोसहं ठामि'। पुणो तइयखमासमणं दाउं नवकारतिगं भणिय,— 'करेमि भंते पोसहं। आहारपोसहं देसओ, सरीरसक्कारपोसहं सव्वओ, बंभचेरपोसहं सव्वओ, अव्वावारपोसहं सव्वओ। चउव्विहे पोसहे सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि। दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि'—इइ दंडगं वारतिगं भणइ। तओ इरियावज्जं पुव्वविहिणा सामाइयं गिण्हइ। तओ मुहपोत्तिं पडिलेहिय दुवालसावत्तवंदणं दाउं भणइ—'इच्छाकारेण संदिसह पवेयणं पवेयहं'। जो पुण पुढो पडिक्कंतो सो दुवालसावत्तवंदणेण आलोयणं, दुवालसावत्तवंदणेण य खमासमणं काउं, दुवालसावत्तवंदणेण पवेयणं पवेइए। तओ वंदिउं भणइ—'पंचमंगलमहासुयक्खंधउवहाणदुवालसमपवेसनिमित्तु तपु करहं'। तओ गुरू भणइ—'करेह'। तओ 'इच्छं'ति भणिय, वंदिय, पच्चक्खाणं काउं, खमासमणदुगेण बहुवेलं संदिसाविय, खमासमणदुगेण सज्झायं, खमासमणदुगेण बइसणं च संदिसाविय, वंदणयं देइ। तओ गुरुणा सुहतवे पुच्छिए 'देवगुरुपसाएण'त्ति भणइ। एसो पभायसमये विही कीरइ। जओ पउणपहरमज्झे पवेयणं न पवेएइ, तओ सो दिवसो गलइ त्ति। उवहाणवाही पाभाइयपडिक्कमणे नवकारसहियं चेव पच्चक्खंति। 'उग्गए सूरे नवकारसहियं पच्चक्खामि' इच्चाइ।

तओ चरमपोरिसीए गुरुसमीवमागम्म इरियावहियं पडिक्कमिय, आगमणं आलोइय, खमासमणदुगेण पुत्तिं[1] पडिलेहिय, दुवालसावत्तवंदणं दाउं, आलोयणं खामणं च *पच्चक्खाणं च करिय, खमासमणदुगेण उवहि–थंडिल–पडिलेहणं संदिसाविय, खमासमणदुगेण सज्झायं संदिसाविय, खमासमणदुगेण बइसणं संदिसाविय, कट्ठासणं पाउंछणं वा पडिलेहिय, दुवालसावत्तवंदणं देइ। एसो चरमपोरिसीए विही। सेसविही जहा पोसहविहीए भणिओ तहा कीरइ।

§१०. तओ दुवालसमतवे पडिपुन्ने वायणा दिज्जइ। तत्थ एसो विही—पुत्तिं[2] पेहाविय, वंदणं दाविय, गुरू भणावेइ—'इच्छाकारेणं संदिसह पंचमंगलमहासुयक्खंधवायणापडिगाहणत्थं काउस्सग्गं करावेह'। गुरू भणइ—'करावेमो'। तओ 'इच्छं'ति भणिय, खमासमणेणं वंदिय, भणइ—'पंचमंगलमहासुयक्खंधवायणापडिगाहणत्थं करेमि काउस्सग्गं। अन्नत्थ ऊससिएणं'—इच्चाइ जाव—'वोसिरामि'त्ति भणिय, सागरवरगंभीरा जाव उज्जोयगरं चिंतिय, नमोक्कारेण पारिय, उज्जोयगरं भणिय, खमासमणं दाउं, भणइ—'इच्छाकारेण पंचमंगलमहासुयक्खंधवायणापडिगाहणत्थं चेइयाइं वंदावेह'। गुरू भणइ—'वंदावेमो'। तओ सक्कत्थयं भणिय खमासमणेण वंदिय, सीसो भणइ—'इच्छाकारेण संदिसह वायणं संदिसावेमि'। बीयखमासणेण 'वायणं पडिगाहेमि'। गुरू भणइ—'पडिगाहेह'। तओ 'इच्छं'ति भणिय, खमासमणं दाउं, उभयकरविहिगहियमुहपोत्तियाथइयमुहकमलस्स, अद्धोणयकायस्स सीसस्स तिक्खुत्तो पंचनमुक्कारं कड्ढिय पंचण्हं अज्झयणाणं पढमा वायणा दिज्जइ। तओ दिन्नाए वायणाए तस्सुत्तमंगेसु गुरू वासे खिवइ। तओ सीसो वंदिय सज्झायमाइ करेइ। तओ अट्ठहिं आयंबिलेहिं तिहिं उववासेहिं कएहिं बीया वायणा तिण्हं चूलाअज्झयणाणं दिज्जइ।

---

1 B मुहपुत्तिं। * A खामणं च करिय खमासमणपुव्वं पच्चक्खिय। 2 B मुहपुत्तिं।

§ ११. एयस्स चेव निक्खिवणविही वोच्छइ—सीसो गुरुसमीवमागम्म इरियावहियं पडिक्कमिय, गमणागमणं आलोइय, खमासमणदुगदाणपुव्वं पुत्तिं पेहिय[1] दुवालसावत्तवंदणं दाउं, भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं पंचमंगलमहासुयक्खंधउवहाणतवं †निक्खिवह'। गुरू भणइ—'निक्खिवामो'। सीसो 'इच्छं'ति भणिय, खमासमणेण वंदिय, भणइ—'इच्छाकारेण संदिसह पंचमंगलमहासुयक्खंधाइउवहाणतवनिक्खिवणत्थं काउस्सग्गं करावेह'। गुरू भणइ—'करावेमो'। 'इच्छं'ति भणिय खमासमणेण वंदिय, पंचमंगलमहासुयक्खंधाइउवहाणतवनिक्खिवणत्थं करेमि काउस्सग्गं। अन्नत्थ ऊससिएणं' इच्चाइ जाव 'वोसिरामि'त्ति। तत्थ नवकारं चिंतिय, पारिय, नमोक्कारं पढिय, खमासमणेण वंदिय, भणइ—'इच्छाकारेण संदिसह पंचमंगलमहासुयक्खंधाइउवहाणतवनिक्खिवणत्थं चेइयाइं वंदावेह'। गुरू भणइ—'वंदावेमो'। तओ सक्कत्थयं भणिय, दुवालसावत्तवंदणं दाउं, 'पवेयणं पवेयह'त्ति भणिय, पडिपुण्णा विगइपारणगेणं पच्चक्खइ। तओ पोसहं सामाइयं च पारिय, खमासमणं दाउं, भणइ—'उपधाण[3] मज्झि अविधि आसातना मनि वचनि काइ ज कोई कीई तहिं मिच्छामि दुक्कडं'॥

॥ उवहाणनिक्खिवणविही समत्तो ॥ ६ ॥

§ १२. इयाणिं उवहाणसामायारी भण्णइ। पंचमंगलमहासुयक्खंधे पढमं दुवालसमं पुव्वसेवाए[4]। तओ पंचण्हं अज्झयणाणं वायणा दिज्जइ ॥ १ ॥

तत्थ पुण सव्वे अज्झयणा अट्ठ, आयंबिलट्ठगेणं उववासतिगेणं। तओ तिण्हं चूलाअज्झयणाणं वायणा दिज्जइ। इत्थ उववासतिगं उत्तरसेवाए ॥ २ ॥

॥ पंचमंगलउवहाणं समत्तं ॥

§ १३. एवं इरियावहियासुयक्खंधे वि अट्ठ अज्झयणा। तिण्णि चरिमाणि चूला भण्णइ। सेसं जहा पंचमंगलमहासुयक्खंधे। दोसु वि दो दो वायणाओ। उवरिल्लेसु चउसु एगा पुव्वसेवा। अंते उववासाभावाओ उत्तरसेवा नत्थि ॥ ३ ॥

भावारिहंतत्थए पढमं अट्ठमं, तओ तिण्हं संपयाणं वायणा दिज्जइ। १। पुणो बत्तीसं आयंबिलाणि। सोलसहिं गएहिं तिण्हं संपयाणं वायणा दिज्जइ। २। अन्नेहिं सोलसहिं गएहिं तिण्हं संपयाणं वायणा दिज्जइ। चरमगाहाए वि वायणा दिज्जइ। ३। सक्कत्थए सव्वाओ तिण्णि वायणाओ। नवरं सक्कत्थए 'नमोत्थुणं वियट्टछउमाणमुत्तु'मिति वयणा सेसा बत्तीसं पया बत्तीसं हुंति अज्झयणा।

ठवणारिहंतत्थए आईए चउत्थं, तओ तिन्नि आयंबिलाणि, तओ अंते तिण्हवि अज्झयणाणं एगा वायणा दिज्जइ। अज्झयणतिगं च इमं—'अरिहंतचेइयाणं...जाव...निरुवसग्गवत्तियाए'। १। 'सद्धाए...जाव...ठामि काउस्सग्गं'। २। 'अन्नत्थऊससिएणं...जाव...वोसिरामि'। ३। * ॥ ४ ॥

नामारिहंतचउवीसत्थए आईए अट्ठमं। तओ चउरतिसयसिलोगस्स पढमा वायणा दिज्जइ। १। पुणो पंचवीसं आयंबिलाणि। बारसहिं गएहिं अट्ठनाम गाहातिगस्स बीया वायणा दिज्जइ। २। पुणोवि तेरसहिं गएहिं पणिहाण-गाहातिगस्स तइया वायणा दिज्जइ। ३। नवरं छहिं रूवगेहिं चउवीसं अज्झयणा, पंचवीसइमं सत्तम-सत्तगाहाए। ४। * ॥ ५ ॥

---

1 B मुहपुत्तिं। 2 B पडिलेहिय। † एतच्चिह्नद्वयान्तर्गता पंक्तिर्नोपलभ्यते A आदर्शे। 3 B उवहाण मज्झे। 4 B °सेवाओ।

दव्वारिहंतसुयत्थए पढमं चउत्थं, तओ पंच आयंबिलाणि, अंते एगा वायणा दिज्जइ । १ । नवरं अज्झयणाइं तिहिं रूवगेहिं तिन्नि, चउत्थरूवगे दोहिं पाएहिं चउत्थमज्झयणं, अन्नेहिं दोहिं पंचमं ॥ ६ ॥

सव्वत्थ जत्थ जेत्तियाणि अंबिलाणि तत्थ तेत्तियाणि अज्झयणाणि भवंति । सिद्धत्थथुईए उवहाणं विणावि मालादिणकओववासस्स तिण्हं गाहाणं वायणा दिज्जइ । न उण गाहादुगस्स । जेण वोडियपरिग्गहियउज्जिंततित्थसंगहत्थं । दाहिणदारपविट्ठ–सिरिगोयमगणहरवंदिय–अट्ठावय–सीहनिसीहिइचेइयट्ठियजिणबिंबकमउववंदंसणत्थं च पच्छा वुड्ढेहिं कयं ति अन्ने भणंति । एयस्स वि एगा परिवाडी दिज्जइ । वायणा किर सव्वत्थ परिवाडीतिगेणं दिज्जइ । एयस्स पुण गाहादुगस्स एगा चेव परिवाडि त्ति भावत्थो ॥

संपयं पुण जहोत्ततवोविहाणअसामत्था एगविगइगहण–एगासण–पारणगंतरिया दस उववासा पंचमंगलमहासुयक्खंधे कीरंति । जओ दुवालसमट्ठमेहिं अट्ठ उववासा, आयंबिलट्ठगेणं चत्तारि, मिलिया बारस उववासा पंचमंगलमहासुयक्खंधे । जयावि दस एगासणा, दस उववासा, तयावि चउहिं एगासणेहिं उववासो त्ति दुवालसोववासा साइरेगा जायंति त्ति परमत्थओ सो चेव तवोवीही । एवं च वीसं पोसहदिणाइं भवंति । अओ चेव 'वी स डं ति' भण्णइ । जो य असहू पारणगे दोक्कासणं करेइ तस्स इक्कारस उववासा । अट्ठहिं दोक्कासणेहिं च एगो उववासो । एवं दुवालस ॥ एवं चेव इरियावहियासुयक्खंधे वि ॥

भावारिहंतत्थए पणतीसं पोसहदिणाइं उववासा इगुणवीसं पारणएहिं सह पूरिज्जंति ॥

एवं ठवणारिहंतत्थए अड्ढाइज्जा उववासा चत्तारि पोसहदिणाइं । एयं च उवहाणदुगं एगट्ठमेव वहिज्जइ । अओ चेव एगूणत्ते वि रूढीए 'चा ली स डं'ति भण्णइ । ‡उक्खेव-निक्खेवा पुण पुढो पुढो कायव्वा‡ ॥

नामारिहंतत्थए अट्ठावीसपोसहदिणा पन्नरस उववासा पारणेहिं सह पूरिज्जंति । अओ चेव 'अ ट्ठा वी स डं'ति रूढं । एवं सुयत्थए अद्धुट्ठ उववासा छप्पोसहदिणाइं । अओ चेव 'छ क्क डं'ति भण्णइ । साहु-साहुणीओ य निव्विगइ-आयंबिलोववासेहिं जहुत्तोववाससंखं पूरंति । न उण तेसिं दिणसंखानियमो विगइपवेसो वा ॥

॥ उवहाणसामायारी समत्ता ॥

§ १४. संपयं एय उज्जमणरूवो मालारोवणविही भण्णइ । तत्थ पुव्विल्लो चेव नंदिक्कमो । *नाणत्तं पुण एयं । मालग्गाही भव्वो मालादिणाओ पुव्वदिणे परमभत्तीए वत्थासणाइणा पडिलाभियसाहु-साहुणिवग्गो, विहियसाहम्मियवत्थतंबोलाइपवरवच्छलो, पत्ते य पसत्थतिहि–करण–मुहुत्त–नक्खत्त–जोग–लग्ग–चंदबलोवेए मालादिणे नियविहवाणुरूवं कयजिणपूओवयारोपक्खेव-वलिनिक्खेवपुव्वं विरइयविसिट्ठ-उचियणेवत्थो मेलियनीसेसमाया-पिउमाइबंधुजणो कय-साहु-साहम्मियवंदणो सन्निहीकयपउरगंध–चंदण–अक्खय–नालिकेराइपसत्थवत्थू अखंड-अक्खय-नालिकेरसणाहकरंजली तिपयाहिणीकयसमोसरणो खमासमणपुव्वं भणइ– 'पंचमंगलमहासुयक्खंध–पडिक्कमणसुयक्खंध–चीवंदणसुत्तअणुजाणावणियं वासनिक्खेवं करेह, देवे वंदावेह' त्ति । तओ गुरुणा अहिमंतियसिरोविन्नत्थगंधो जिणपडिमानिच्चलीकयदिट्ठी जिणमुद्दाइविहिणा पए पए सुत्तत्थं भाविंतो सद्धासंवेगपरमवेरग्गजुत्तो पवड्ढमाणसुहपरिणामो भत्तिभरनिब्भरो हरिसुल्लसियरोमंचो गुरुणा चउव्विहसंघेण य सद्धिं समोसरणपुरो वड्ढमाणथुईहिं देवे वंदेइ । जाव परमिट्ठित्थुत्तभणणाणंतरं उट्ठित्ता पंचमंगलमहासुयक्खंध–पडिक्कमणसुयक्खंध–भावारिहंतत्थय–ठवणारिहंतत्थय–चउवीसत्थय–नाणत्थय–सिद्धत्थय–अणुजाणावणियं नंदिकड्ढावणियं सत्तावीसूस्सासं काउस्सग्गं दो वि करंति । पारित्ता,

‡ एतद्द्विदण्डान्तर्गतः पाठः पतितः B आदर्शे। * 'विशेषः पुनः' इति A टिप्पणी।

चउवीसत्थयं भणित्ता, नवकारतिगं भणित्तु,–'नाणं पंचविहं पण्णत्तं तं जहा–आभिणिबोहियनाणं, सुयनाणं, ओहिनाणं, मणपज्जवनाणं, केवलनाणं,...जाव...सुयनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुन्ना अणुओगो पवत्तइ'– इति मंगलत्थं नंदिं कड्ढिय सूरी निसिज्जाए उवविसिय 'भो भो देवाणुप्पिय' इच्चाइगाहाहिं, अह वा–

कल्लाणकंदकंदलकारणमइतिक्खदुक्खनिद्दलणं।
सम्मद्दंसणरयणं सिवसुहसंसाहगं भणियं ॥ १ ॥
तस्स य संसिद्धिविसुद्धिसाहगं बाहगं विवक्खस्स।
चिइवंदणमिह वुत्तं तस्सुवहाणं अओ वुत्तं ॥ २ ॥
लोए वि अणेगंतियपयत्थलंभे निहाणमाइम्मि।
पुरिसा पवत्तमाणा उवहाणपरा पयट्टंति ॥ ३ ॥
किं पुण एगंतियमोक्खसाहगे सयलमंतमूलम्मि।
पंचनमोक्काराईसुयम्मि भविया पयट्टंता ॥ ४ ॥
किंच–कप्पियपयत्थकप्पणपउणा वरकप्पपायवलया वि।
पाविज्जइ पाणीहिं ण उणो चीवंदणुवहाणं ॥ ५ ॥
लाभंमि जस्स नूणं दंसणसुद्धिवसेणनिमिसेणं।
करतलगय ग्घ जायइ सिद्धी धुवसिद्धिभावस्स ॥ ६ ॥
धन्ना सुणंति एयं मुणंति धन्ना कुणंति धन्नयरा।
जे सद्दहंति एयं ते वि हु धन्ना विणिद्दिट्ठा ॥ ७ ॥
कम्मक्खओवसमेणं गुरुपयपंकयपसायओ एयं।
तुब्भेहिं सुयं मुणियं सद्दहियमणुट्ठियं विहिणा ॥ ८ ॥

इच्चाइगाहाहिं देसणं करित्ता तिसंझं चेइय-साहुवंदणाभिग्गहं देइ। तओ वासक्खए अभिमंतेइ। तम्मि समये सुरहिगंधड्ढा अमिलाणसियपुप्फमाला सत्तसरिया जिणपडिमापाओवरि विण्णसणीया। तओ उट्ठाय सूरी जिणपाए सुगंधे खिविय चउविहसंघस्स वासक्खए देइ। तओ मालागाही वंदित्ता भणइ–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं पंचमंगलमहासुयक्खंधं अणुजाणह'। गुरू भणइ–'अणुजाणामो'। तओ सीसो वंदिय भणइ–'संदिसह किं भणामो ?'। गुरू भणइ–'वंदित्ता पवेयह'। पुणो वंदिय सीसो भणइ–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं पंचमंगलमहासुयक्खंधो अणुन्नाओ ?'। तओ गुरू वासे खिवंतो भणइ–'अणुन्नाओ'। ३ खमासमणाणं। हत्थेणं सुत्तेणं, अत्थेणं, तदुभएणं, 'सम्मं धारणीओ, चिरं पालणीओ, साहुं पइ पुणु अन्नेसिं पि पवेयणीओ त्ति'। सीसो भणइ–'इच्छामो अणुसट्ठिं'। सीसो वंदिय भणइ–'तुम्हाणं पवेइयं, संदिसह साहूणं पवेएमि'। गुरू भणइ–'पवेयह'। तओ वंदिय, नमोक्कारं भणंतो पयक्खिणं देइ। संघो गुरू य तस्स सिरे वासे अक्खए य खिवइ; 'नित्थारगपारगो होहि'त्ति भणिरो। एवं पढमा पयक्खिणा ॥ १ ॥ 'इरियावहियासुयक्खंधं अणुजाणह'–अणेण अभिलावेण सव्वे आलावगा भणिज्जंति। बीया पयक्खिणा ॥ २ ॥ भावारिहंतत्थयं अणुजाणह'–अणेण तईया पयक्खिणा ॥ ३ ॥ 'ठवणारिहंतत्थयं अणुजाणह'–अणेण चउत्थी पयक्खिणा ॥ ४ ॥ नामारिहंतत्थयं अणुजाणह'–अणेण पंचमी पयक्खिणा ॥ ५ ॥ 'सुयत्थयं अणुजाणह'–अणेण छट्ठी पयक्खिणा ॥ ६ ॥ 'सिद्धत्थयं अणुजाणह'–अणेण सत्तमी पयक्खिणा ॥ ७ ॥ सत्तसु य पयक्खिणासु सत्त गंधमुट्ठीओ हवंति। अन्ने अक्खयदाणाणंतरं एगहेलाए च्चिय सत्त गंधमुट्ठीओ दिंति त्ति ॥

तओ खमासमणं दाउं सीसो भणइ–'तुम्हाणं पवेइयं, साहूणं पवेइयं, संदिसह काउस्सग्गं कारवेह' । गुरू भणइ–'करावेमो' । तओ खमासमणं दाउं–'पंचमंगलमहासुयक्खंधाइअणुन्नानिमित्तं करेमि काउस्सग्गं' । उज्जोयं चिंतिय, तं चेव पढिय, खमासमणं दाउं भणइ–'इच्छाकारेणं तुब्भे अम्हं उवहाणविहिं सुणावेह' । तओ सूरी उद्धट्ठिओ उवहाणविहिं वक्खाणेइ ।

§ १९. सो य इमो–

पंच नमोक्कारे किल, दुवालस तवो उ होइ उवहाणं ।
अट्ठ य आयामाइं, एगं तह अट्ठमं अंते ॥ १ ॥
एयं चिय निस्सेसं इरियावहियाइ होइ उवहाणं ।
सक्कत्थयंमि अट्ठममेगं बत्तीस आयामा ॥ २ ॥
अरहंतचेइयथए उवहाणमिणं तु होइ कायव्वं ।
एगं चेव चउत्थं तिन्नि अ आयंबिलाणि तहा ॥ ३ ॥
एगं चिय किर छट्ठं चउत्थमेगं च होइ कायव्वं ।
पणवीसं आयामा चउवीसथयंमि उवहाणं ॥ ४ ॥
एगं चेव चउत्थं पंच य आयंबिलाणि नाणथए ।
चिइवंदणाइसुत्ते उवहाणमिणं विणिद्दिट्ठं ॥ ५ ॥
अव्वावारो विगहाविवज्जिओ रुद्दझाणपरिमुक्को ।
विस्सामं अकुणंतो उवहाणं वहइ[1] उवजुत्तो ॥ ६ ॥
अह कहवि होज्ज बालो वुड्ढो वा सत्तिवज्जिओ तरुणो ।
सो उवहाणपमाणं पूरिज्जा आयसत्तीए ॥ ७ ॥
राईभोयणविरई दुविहं तिविहं चउव्विहं वावि ।
नवकारसहियमाई पच्चक्खाणं विहेऊण ॥ ८ ॥
एक्केण सुद्धअच्चंबिलेण इयरेहिं दोहिं उववासो ।
नवकारसहियएहिं पणयालीसाए उववासो ॥ ९ ॥
पोरसिचउवीसाए होइ अवड्ढेहिं दसहिं उववासो ।
विगईचाएहिं छहिं एगट्ठाणेहिं य चऊहिं ॥ १० ॥
जीएण निव्वियतियं पुरिमड्ढा सोलसेव उववासो ।
एक्कासणगा चउरो अट्ठ य बिक्कासणा तह य ॥ ११ ॥
भयवं! पभूयकालो एव करेंतस्स पाणिणो होज्जा ।
तो कहवि होज्ज मरणं नवकारविवज्जियस्सावि ॥ १२ ॥
नवकारवज्जिओ सो निव्वाणमणुत्तरं कह लभिज्जा ।
तो पढमं चिय गिण्हइ, उवहाणं होउ वा मा वा ॥ १३ ॥
गोयम! जं समयं चिय सुओवयारं करिज्ज सो पाणी ।
तं समयं चिय जाणसु गहियतयट्ठं जिणाणाए ॥ १४ ॥
एवं कयउवहाणो भवंतरे सुलभबोहिओ होज्जा ।
एयज्झवसाणो वि हु गोयम! आराहगो भणिओ ॥ १५ ॥

1 B कुणइ ।

जो उ अकाऊणमिमं गोयम ! गिण्हिज्ज भत्तिमंतो वि।
सो मणुओ दट्ठव्वो अगिण्हमाणेण सारिच्छो ॥ १६ ॥
आसायइ तित्थयरं तव्वयणं संघ-गुरुजणं चेव।
आसायणबहुलो सो गोयम ! संसारमणुगामी ॥ १७ ॥
पढमं चिय कन्नाहेडएण जं पंचमंगलमहीयं।
तस्स वि उवहाणपरस्स सुलहिया बोहि निद्दिट्ठा ॥ १८ ॥
इय उवहाणपहाणं निउणं सव्वं पि वंदणविहाणं।
जिणपूयापुव्वं चिय पढिज्ज सुयभणियनीईए ॥ १९ ॥
तं सर-वंजण-मत्ता-बिंदु-परिच्छेयठाणपरिसुद्धं।
पढिऊणं चियवंदणसुत्तं अत्थं वियाणिज्जा ॥ २० ॥
तत्थ वि य जत्थे य सिया संदेहो सुत्त-अत्थविसयंमि।
तं बहुसो वीमंसिय सयलं निस्संकियं कुणसु ॥ २१ ॥
अह सोहणतिहि-करणे मुहुत्त-नक्खत्त-जोग-लग्गंमि।
अणुकूलंमि ससियले *सस्से सस्सेयसमयंमि ॥ २२ ॥
निययविहवाणुरूवं संपाडियभुवणनाहपूएणं।
फुडभत्तीए विहिणा पडिलाहियसाहुवग्गेण ॥ २३ ॥
भत्तिभरनिब्भरेणं हरिसवसोल्लसियबहलपुलएणं।
सद्धा-संवेग-विवेग-परमवेरग्गजुत्तेणं ॥ २४ ॥
निट्ठियघणराग-होस-मोह-मिच्छत्त-मलकलंकेणं।
अइउल्लसंतनिम्मलअज्झवसाएण अणुसमयं ॥ २५ ॥
तिहुयणगुरुजिणपडिमाविणिवेसियनयणमाणसेण तहा।
जिणचंदवंदणाए धन्नोऽहमी मन्नमाणेण ॥ २६ ॥
नियसिररइयकरकमलमउलिणा जंतुविरहिओगासे।
निस्संकं सुत्तत्थं पयं पयं भावयंतेण ॥ २७ ॥
जिणनाहदिट्ठगंभीरसमयकुसलेण सुद्धचरित्तेणं।
अपमायाईबहुविहगुणेण गुरुणा तहा सद्धिं ॥ २८ ॥
चउविहसंघजुएणं विसेसओ नियबंधुसहिएणं।
इय विहिणा निउणेणं जिणचियं वंदणिज्जं च[1] ॥ २९ ॥
तयणंतरं गुणड्ढे साहू वंदिज्ज परमभत्तीए।
साहम्मियाण कुज्जा जहारिहं तह पणामाई ॥ ३० ॥
जाव य महग्घ-माउक्क[1]-चोक्ख-वत्थप्पयाणपुव्वेणं।
पडिवत्ति[2]विहाणेणं कायव्वो गुरुयसम्माणो ॥ ३१ ॥
एयावसरे गुरुणा सुविइयगंभीरसमयसारेण।
अक्खेवणि-विक्खेवणि-संवेयणिपमुहविहिणा उ ॥ ३२ ॥

* 'प्रयसे' इति A टिप्पणी। 1 B तु। 1 'मृदुल' इति A टिप्पणी। 2 A पडिवित्ति°।

भवनिव्वेयपहाणा सद्धासंवेगसाहणे पउणा ।
गुरुएण पबंधेणं धम्मकहा होइ कायव्वा ॥ ३३ ॥
सद्धासंवेगपरं सूरी नाऊण तं तओ भव्वं ।
चिइवंदणाइकरणे इय [1]वयणं भणइ निउणमई ॥ ३४ ॥
भो भो देवाणंपिय ! संपावियसयलजम्मसाफल्ल[2] ! ।
तुमए अज्जप्पभिई तिकालं जावजीवाए ॥ ३५ ॥
वंदेयव्वाइं चेइयाइं एगग्गसुथिरचित्तेणं ।
खणभंगुराओ मणुयत्तणाओ इणमेव सारं ति ॥ ३६ ॥
तत्थ तुमे पुव्वण्हे पाणं पि न चेव ताव पेयव्वं ।
नो जाव चेइयाइं साहू विय वंदिया विहिणा ॥ ३७ ॥
मज्झण्हे पुणरवि वंदिऊण नियमेण कप्पए भोत्तुं ।
अवरण्हे पुणरवि वंदिऊण नियमेण सयणं ति ॥ ३८ ॥
एवमभिग्गहबंधं काउं तो वद्धमाणविज्जाए ।
अभिमंतिऊण गेण्हइ सत्त गुरू गंधमुट्ठीओ ॥ ३९ ॥
तस्सोत्तमंगदेसे 'नित्थारगपारगो भविज्ज'त्ति ।
उच्चारेमाणु च्चिय निक्खिवइ गुरू सुपणिहाणं ॥ ४० ॥
एयाए विज्जाए पभावजोगेण जो स किर भव्वो ।
अहिगयकज्जाण लहुं नित्थारगपारगो होइ ॥ ४१ ॥
अह चउविहो वि संघो 'नित्थारगपारगो भविज्ज तुमं धन्नो ।
सुलक्खणो' जंपिरो त्ति से निक्खिवइ गंधे ॥ ४२ ॥
तत्तो जिणपडिमाए पूया देसाउ सुरहि गंधड्ढं ।
अमिलाणं सियदामं गिण्हिय विहिणा सहत्थेणं ॥ ४३ ॥
तस्सोभयखंधेसुं आरोविंतेण सुद्धचित्तेणं ।
निस्संदेहं गुरुणा वत्तव्वं एरिसं वयणं ॥ ४४ ॥
'भो भो सुलद्धनियजम्म ! निचियअइगुरुअ-पुण्णपब्भार ! ।
नारय-तिरियगईओ तुज्झ अवस्सं निरुद्धाओ ॥ ४५ ॥
नो बंधगो य सुंदर ! तुममित्तो अयस-नीयगोत्ताणं ।
न य दुलहो तुह जम्मंतरे वि एसो नमोक्कारो ॥ ४६ ॥
पंचनमोक्कारपभावओ य जम्मंतरे वि किर तुज्झ ।
जातीकुलरूवारोग्गसंपयाओ पहाणाओ ॥ ४७ ॥
अन्नं च इमाउ च्चिय न हुंति मणुया कयावि जियलोए ।
दासा पेसा दुभगा नीया विगलिंदिया चेव ॥ ४८ ॥
किं बहुणा जे गोयम ! विहिणा एयं सुयं अहिज्जित्ता ।
सुयभणियविहाणेणं सुद्धे सीले अभिरमिज्जा ॥ ४९ ॥

1 वयणे । 2 B °साफल्ला ।

ते जइ नो तेणं चिय भवेण निव्वाणमुत्तमं पत्ता ।
ताऽणुत्तरगेविज्जाइएसु सुइरं अभिरमेउं ॥ ५० ॥
उत्तमकुलंमि उक्किट्ठलट्ठसव्वंगसुंदरा पयडी ।
सयलकलापत्तट्ठा जणमणआणंदणा होउं ॥ ५१ ॥
देविंदोवमरिद्धी दयावरा विणयदाणसंपन्ना ।
निव्विन्नकामभोगा धम्मं सयलं अणुट्ठेउं ॥ ५२ ॥
सुहझाणानलनिद्दड्ढघाइकम्मिंधणा महासत्ता ।
उपन्नविमलनाणा विहुयमला झत्ति सिज्झंति ॥ ५३ ॥
इय विमलफलं मुणिउं जिणस्स मह माणदेवसूरिस्स ।
वयणा उवहाणमिणं साहेह महानिसीहाओ ॥ ५४ ॥

॥ उवहाणविही समत्तो ॥ ७ ॥

§ १६. तओ मालोववूहणं करेइ । जहा–

सावज्जकज्जवज्जणनिट्ठुरणुट्ठाणविहिविहाणेण ।
दुक्करउवहाणेणं विज्जा इव सिज्झए माला ॥ १ ॥
परमपयपुरीपत्थियपवयणपाहेयपाणिपहियस्स ।
पत्थाणपढममंगलमाला पयडा परमपसवा ॥ २ ॥
संतोसखग्गदारियमोहरिउस्सेण रुद्धविसयस्स ।
आणंदपुरपवेसे वंदणमाला जियनिवस्स ॥ ३ ॥
अहवा दुजोह-मय-मोह-जोहविजयत्थमुज्जमपरस्स ।
जीवज्जोहस्सेसा रणमाला इव सहइ माला ॥ ४ ॥
समत्त-नाण-दंसण-चरित्तगुणकलियभव्वजीवस्स ।
गुणरंजियाइ एसा सिद्धिकुमारीइ वरमाला ॥ ५ ॥
माला सग्गपवग्गमग्गगमणे सोवाणवीही समा,
एसा भीमभवोयहिस्स तरणे निच्छिद्दपोओवमा ।
एसा कप्पियवत्थुकप्पणकए संकप्परुक्खोवमा,
एसा दुग्गइदुग्गवारपिहणा गाढग्गला देहिणं ॥ ६ ॥
जह पुडपायविसुद्धं रयणं ठाणं वरं लहइ तह य ।
तवतवणुतवियपावो परमपयं पावए पाणी ॥ ७ ॥
जह सूरसमारुहणे कमेण छिज्जंति[1] सयलछायाओ ।
तह सुहभावारुहणे जीवाणं कम्मपयडीओ ॥ ८ ॥
दाणं सीलं तव-भावणाओ धम्मस्स साहणं भणिया ।
ताओ एय विहाणे बहु पडिपुन्नाओ नायव्वा ॥ ९ ॥

* 'शोभते' इति A टिप्पणी । 1 B छज्जंति ।

—इच्चाइ। इत्थंतरे सुनेवत्थेहिं मालागाहिणो बंधवेहिं जिणनाहपूयाऽऽदेसाओ अणुजाणावित्तु माला आणेयव्वा। संपइ सुत्तमई रत्तवत्थुच्छुया माला कीरइ। सूरी य तत्थ वासे खिवेइ। तओ तव्वंधवहत्थेण तस्स भवस्स कंठे माला पक्खेवणीया। इत्थ केई भणंति—'पक्खित्तमाला समोसरणे पयाहिणाचउक्कं दिंति; संघो य तस्सीसे वासक्खए खिवइ'त्ति। तओ पंचसद्दे वज्जंते मालागाहिणो जिणग्गओ सपरियणा नच्चंति, दाणं च दिंति। आयंबिलं उपवासो वा तस्स तम्मि दिणे पच्चक्खाणं। संपयं उववासो कारविज्जइ त्ति दीसइ। तओ आरत्तियमाइ सावया कुणंति। तओ महयाविच्छड्डेणं सावय-सावियाओ मालागाहिणं गिहे नेंति। सो वि गिहागयाण तेसिं ससत्तीए वत्थ-तंबोलाइ देइ। जइ पुण वसहीए नंदीरयणा कया, तओ चेईहरे समुदाएण गम्मइ त्ति, सा य माला घरपडिमाअग्गओ ठाविया छम्मासं जाव पूइज्जइ त्ति॥

॥ मालारोवणविही समत्तो ॥ ८ ॥

§ १७. इत्थ केई उदग्गकुग्गाहगहियचित्ता **महानिसीह**सिद्धंतमवमन्नंता उवहाणतवं न मन्नंति चेव। तओ य तेसिं जुत्तिआभासेहिं भावियमइणो* सीसा मा मिच्छत्तं गमिहिंति त्ति परिभाविय पुव्वायरिएहिं **उवहाणपइट्ठापंचासयं** नाम पगरणं विरइयं तं च सीसाणमणुग्गहट्ठाए इत्थ पत्थावे लिहिज्जइ।

नमिऊण वीरनाहं, वोच्छं नवकारमाइ उवहाणे।
किं पि पइट्ठाणमहं विमूढसंमोहमहणत्थं॥ १॥
जं सुत्ते निद्दिट्ठं पमाणमिह तं सुओवयाराइ।
आयाराईणं जह जहुत्तमुवहाणनिव्वहणं† ॥ २॥
वुत्तं च सुए नवकार–इरिय–पडिक्कमण–सक्कथयविसयं।
चेइय–चउवीसत्थय–सुयत्थएसु[1] च उवहाणं॥ ३॥
किं पुण सुत्तं तं इह जत्थ नमोकारमाइउवहाणं।
उवइट्ठं आह गुरू, महानिसीहक्खसुयखंधे॥ ४॥
एसो वि कह पमाणं नंदीए हंदि कित्तणाओ त्ति।
जं तत्थेव निसीहं महानिसीहं च संलत्तं॥ ५॥
अह तं न होइ एयं एवं आयारमाइवि तयन्नं[2]।
तुल्ले वि नंदिपाढे को हेऊ विसरिसत्तम्मि॥ ६॥
अह दुब्बलिसूरीणं, पराभवत्थं कयं सबुद्धीए।
गोट्ठेणं ति मयं नो इमं पि वयणं अविण्णूणं॥ ७॥
पुट्ठमबद्धं कम्मं अप्परिमाणं च संवरणमुत्तं[3]।
जं तेण दुगं एयं तं विय अपमाणमक्खायं॥ ८॥
सेसं तु पमाणत्तेण कित्तियं गोट्ठमाहिलुत्तं पि।
इग-दुगपभेयए[4] चिय जं सुत्ते निण्हवा वुत्ता॥ ९॥
किंच न गोट्ठामाहिलकयमेयं नंदिसेणचरिए जं।
कह भोगफलं भणिही अबद्धिओ बद्धपुट्ठं सो॥ १०॥ प्रक्षेपः।

* 'भव्या' इति A टिप्पणी। † 'निम्मवण' इति A आदर्शे पाठभेदसूचिका टिप्पणी। 1 B °त्थए सुयं च। 2 B नयत्तं। 3 B संवरसुत्तं। 4 B ° मइभेए।

अह भूरि मयविरोहा पमाणया नो महानिसीहस्स।
लोइयसत्थाणं पिव तहाहि तम्मी अणुचियाइं ॥ ११ ॥
सत्तमनरयगमाइंणि इत्थियाणं पि वण्णियाइं ति।
तह लिहणाइदोसा संति विरोहा[1] सुए वि जओ ॥ १२ ॥
आभिणिबोहियनाणे अट्ठावीसं हवंति पयडीओ।
आवस्सयम्मि वुत्तं इममन्नह कप्पभासम्मि ॥ १३ ॥
नाणमवाय-धिईओ दंसणमिट्ठं[2] च उग्गहेहाओ।
एवं कह न विरोहो विवरीयत्तेण भणणाओ ॥ १४ ॥
किंच–गइ-इंदियाइसु दारेसु न सम्मसासणं इट्ठं।
एगिंदीणं विगलाण मइ-सुए तं चऽणुन्नायं ॥ १५ ॥
सयगे पुण विगलाणं एगिंदीणं च सासणं इट्ठं।
न पुणो मइ-सुयनाणे तहेवमावस्सए वुत्तं ॥ १६ ॥
सीहो तिविट्ठुजीओ जाओ सत्तममहीओं उवट्टो।
जीवाभिगममएणं मीणत्तं चेव सो लहइ ॥ १७ ॥
नायासुं पुव्वण्हे दिक्खा नाणं च भणियमवरण्हे।
आवस्सयम्मि नाणं वीयम्मि दिणम्मि मल्लीस्स ॥ १८ ॥
छउमत्थप्परियाओ सड्ढछम्मास-वारससमाओ।
मग्गसिर[3]किण्हदसमी दिक्खाए वीरनाहस्स ॥ १९ ॥
वइसाहसुद्धदसमी केवललाभम्मि संभविज्ज कहं।
इय [4]सत्थेसुं वहवो दीसंति परोप्परविरोहा ॥ २० ॥
तस्संभवे वि आवस्सयाइँ सत्थाइँ जह पमाणाइँ।
तह किं महानिसीहं घिप्पइ न पमाणबुद्धीए ॥ २१ ॥
अह पंचनमोकाराइयाणमुवहाणमणुचियं भिन्नं।
आवस्सयस्स अंतो पाढाओ तहाहि सामइयं ॥ २२ ॥
नवकारपुव्वयं चिय कारइ जं ता तयंगमेसो ति।
अन्नं च इत्थ-अत्थे पयडं चिय कित्तिअं एयं ॥ २३ ॥
नंदिमणुओगदारं, विहिवहुचग्घाइयं च नाऊणं।
काऊण पंचमंगलमारंभो होइ सुत्तस्स ॥ २४ ॥
इय सामाइयनिज्जुत्तिमज्झमज्झासिओ इमो ताव।
पडिकमणे य पविट्ठो इरियावहियाएँ पाढो वि ॥ २५ ॥
अरिहंतचेइयाण य वंदणादंडो सुयत्थओ य तहा।
काउसग्गज्झयणे पंचमए अणुपविट्ठो ति ॥ २६ ॥

1 B विरोहो। 2 B °मितं। 3 B °कन्ह। 4 B सुतेसुं। † 'विधिपयोद्घातिकं उपन्यास इत्यर्थः।' इति A टिप्पनी।

वीयज्झयणसरूवो चउवीसथओ वि जं विणिदिट्टो।
आवस्सयाउ न पिहो जुज्जइ ता तेसिमुवहाणं ॥ २७ ॥
आवस्सओवहाणे ताणुवहाणं कयं समवसेयं।
कयओवहाणे य पिहो तक्करणे होइ अणवत्था ॥ २८ ॥
भण्णइ उत्तरमिहइं नवकारो आइमंगलत्तेणं।
वुच्चइ जया तयच्चिय सामइयऽणुप्पवेसो से ॥ २९ ॥
जइया य सयण-भोयणनिज्जरहेउं[1] पढिज्जए एसो।
तइया सतंत एव हि गिज्झइ अन्नो सुयक्खंधो ॥ ३० ॥
इह-परलोयत्थीणं सामाइयविरहिओ वि वावारो।
दीसइ नवकारगओ तदत्थसत्थाणि य बहूणि ॥ ३१ ॥
नवकारपडल-नवकारपंजिया-सिद्धचक्कमाईणि।
सामाइयंगभावो इमस्स णेगंतिओ तम्हा ॥ ३२ ॥
पढमुच्चारणमित्ते वि ऽणुप्पवेसो हविज्ज सामइए।
एयस्स सव्वहा जइ ता नंदणुओगदाराणं[2] ॥ ३३ ॥
तदणुप्पवेसओ च्चिय तवचरणं नेय जुज्जइ विभिन्नं।
दीसइ य कीरमाणं जोगविहीए य भन्नंतं (भिन्नत्तं) ॥ ३४ ॥
किं वा भिन्नत्ते सव्वहा वि सामाइयाउ एयस्स।
काऊण पंचमंगलमिच्चाई अणुचियं वयणं ॥ ३५ ॥
इय भेयपक्खमणुसरिय जइ तवो कीरई नमोक्कारे।
ता को दोसो नंदणुओगदारेसु व हविज्ज ॥ ३६ ॥
इरियावहियाईयं सुयं पि आवस्सयस्स करणम्मि।
अणुपविसइ तम्मि तयन्नया य भिन्नं हि तेणेव ॥ ३७ ॥
भत्ते पाणे सयणासणाइसुत्तं पि जायइ कयत्थं।
तिन्नि वि कड्ढइ तिसिलोइयत्थुइच्चाइसुत्तं पि ॥ ३८ ॥
आवस्सए पवेसो जइ एसिं सव्वहावि य हविज्ज।
तो पिहुपढणं एसिं सव्वेसिं कह घडिज्ज त्ति ॥ ३९ ॥
जं च इयरेयरासयदूसणमेवं च वुच्चइ इमाण।
पाढेण विणा ण तवो तवं विणा नेसिं पाढो ति ॥ ४० ॥
तं पि हु अदूसणं जह पव्वइउमुवट्ठियस्सऽणुन्नायं।
सामाइयाइयाणं आलावगदाणमतवे वि ॥ ४१ ॥
एवं जइ पढिएसु वि नवकाराईसु ताणमुवहाणं।
सविसेसगुणनिमित्तं कारिज्जइ को णु ता दोसो ॥ ४२ ॥
नियमइविगप्पियं पि हु कारिज्जइ मुक्खदंडयाइतवं।
सत्थुत्तं पि निसिज्झइ उवहाणं ही महामोहो ॥ ४३ ॥

1 A निज्जराहेऊ। 2 B °दारेण।

मंतंमि पुव्वसेवा जइ तुच्छफले वि वुच्चइ इहं ता।
मुक्खफले वि उवहाणलक्खणा किं न कीरइ सा ॥ ४४ ॥
एईइ परमसिद्धी जायइ जं ता दढं तओ अहिगा।
जत्तंमि वि अहिगत्तं भव्वस्सेयाणुसारेण ॥ ४५ ॥
अह सड्ढविरयणाओ सड्ढयए नोवहाणमुववन्नं।
एयं पि केण सिट्ठं जमेस सक्केण रइओ ति ॥ ४६ ॥
सड्ढस्स अविरयत्ता जिणथुई जइ अणेणणुन्नाया।
ता तड्ढउ त्ति सो वुत्तुमेवमुचियं कहं तम्हा ॥ ४७ ॥
केवलिणा दिट्ठाणं उवइट्ठाणं च विरइयाणं च।
नवकारमाइयाणं महप्पभावो व वेयाणं ॥ ४८ ॥
तिकालियमहवा सत्तकालियं सुमरणे निउत्ताणं।
जुत्तं चिय उवहाणं महानिसीहे नियद्धाणं ॥ ४९ ॥
उवहाणविहीणाण चि मरुदेवाईण सिवगमो दिट्ठो।
एवं च वुच्चमाणे तवदिक्खाईण वि निसेहो ॥ ५० ॥
इय भूरिहेउजुत्तीजुयंमि पहुकुसलसलहिए मग्गे।
कुग्गहविरहेणुज्जमह महह जइ मोक्खसुहमणहं ॥ ५१ ॥

॥ उवहाणपइट्ठापंचासगपगरणं समत्तं ॥ ९ ॥

---

§ १८. संपयं पुव्वुल्लिगिओ पोसहविही संखेवेण भण्णइ। जम्मि दिणे सावओ सावया वा पोसहं गिण्हिही, तम्मि दिणे अ प्पभाए चेव वावारंतरपरिच्चाएण गहियपोसहोवगरणो पोसहसालाए साहुसमीवे वा गच्छइ। तओ इरियावहियं पडिक्कमिय गुरुसमीवे ठवणायरियसमीवे वा खमासमणदुगपुव्वं पोसहमुहपोत्तिं पडिलेहिय पढमखमासमणेण पोसहं संदिसाविय, बीयखमासमणेण पोसहे ठामि त्ति भणइ। तओ वंदिय, नमोक्कारतिगं कड्ढिय, 'करेमिभंते पोसहमिच्चाइ दंडगं...वोसिरामि' पज्जंतं भणइ। तओ पुव्वुत्तविहिणा सामाइयं गेण्हइ। वासासु कट्ठासणं, सेसट्ठमासेसु पाउंछणं च संदिसाविय, उवउत्तो सज्झायं करिंतो, पडिक्कमणवेलं जाव पडिवालिय, पाभाइयं पडिक्कमइ। तओ आयरिय–उवज्झाय–सव्वसाहू वंदइ। तओ जइ पडिलेहणाए सवेला, ताहे सज्झायं करेइ। जायाए य पडिलेहणाए खमासमणदुगेण अंगपडिलेहणं संदिसावेमि, पडिलेहणं करेमि त्ति भणिय, मुहपोत्तिं पडिलेहेइ। एवं खमासमणदुगेण अंगपडिलेहणं करेइ। इत्थ अंगसद्देणं 'अंग-ट्ठियं कडिपट्टाइ णेयं' इइ गीयत्था। तओ ठवणायरियं पडिलेहित्ता नवकारतिगेणं ठविय, कडिपट्टयं पडि-लेहिय, पुणो मुहपोत्तिं पडिलेहित्ता, खमासमणदुगेण उवहिपडिलेहणं संदिसाविय, कंबल-वत्थाइ, अवरण्हे पुण वत्थ-कंबलाइ, पडिलेहेइ। तओ पोसहसालं पमज्जिय, कज्जयं विहीए परिट्ठविय, इरियं पडिक्कमिय, सज्झायं संदिसाविय, गुणण–पढण–पुच्छण–वायण–वक्खाणसवणाइ करेइ। तओ जायाए पउणपोरिसीए, खमासमणदुगेण पडिलेहणं संदिसाविय, मुहपोत्तिं पडिलेहिय, भोयणभायणाइं पडिलेहेइ। तओ पुणो सज्झायं करेइ, जाव कालवेला। ताहे आवस्सियापुव्वं चेइहरे गंतुं देवे वंदेइ। उवहाणवाही पुण पंचहिं सक्कत्थएहिं देवे वंदेइ। तओ जइ पारणइत्तओ तो पच्चक्खाणे पुन्ने खमासमणदुगपुव्वं मुहपोत्तिं पडिलेहिय, वंदिय, भणइ–'भगवन्! भाति पाणी पारावइं।' उवहाणवाही भणइ–'नवकारसहिउ चउविहार।' इयरो

भणइ–'पोरिसि पुरिमड्ढो वा, तिविहारं चउविहारं वा, एकासणउं निवी आंबिलु वा, जा काइ वेला, तीए भत्तपाणं पारावेसि'त्ति। तओ सक्कत्थयं भणिय, खणं सज्झायं च काउं, जहासंभवं अतिहिसंविभागं काउं, मुह-हत्थे पडिलेहिय, नमोक्कारपुव्वं, अरत्तदुट्ठो असुरसुरं अचवचवं अद्दुयमविलंबियं अपरिसाडिं जेमेइ। तं पुण नियघरे अहापवत्तं फासुयं ति; पोसहसालाए वा पुव्वसंदिट्ठसयणोवणीयं। न य भिक्खं हिंडेइ। तओ आसणाओ अचलिओ चेव दिवसचरिमं पच्चक्खइ। तओ इरियावहियं पडिक्कमिय, सक्कत्थयं भणइ। जइ पुण सरीरचिंताए अट्ठो तो नियमा दुगाई आवस्सियं करिय साहु व्व उवउत्ता निज्जीवथंडिले गंतुं 'अणुजाणह जस्सावग्गहो' ति भणिऊण, दिसि–पवण–गाम–सूरियाइसमयविहिणा उच्चारपासवणे वोसिरिय, फासुयजलेणं आयमिय, पोसहसालाए आगंतूण, निसीहियापुव्वं पविसिय, इरियावहियं पडिक्कमिय, खमासमणपुव्वं भणंति–'इच्छाकारेण संदिसह गमणागमणं आलोयहं'। 'इच्छं' आवस्सियं करिय, अवर–दक्खिणप्पमुहदिसाए गच्छिय, दिसालोयं करिय, संडासए थंडिलं च पडिलेहिय, उच्चार-पासवणं वोसिरिय, निसीहियं करिय, पोसहसालं पविट्ठा आवंतजंतेहिं जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं। तओ सज्झायं ताव करेइ, जाव पच्छिमपहरो। जाए य तम्मि खमासमणपुव्वं 'पडिलेहणं करेमि, पुणो पोसहसालं पमज्जेमि'त्ति भणइ। तओ पुव्वं व अंगपडिलेहणं काउं, पोसहसालं दंडग-पुंछणेण पमज्जिय, कज्जयं उद्धरिय, परिट्ठविय, इरियं पडिक्कमिय, ठवणायरियं पडिलेहिय ठवेइ। तओ गुरुसमीवे ठवणायरियसमीवे वा खमासमणदुगेण मुहपोत्तिं पडिलेहिय, पढमखमासमणे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झायं संदिसावेमि'; बीए खमासमणे 'सज्झायं करेमि'त्ति भणिय, काऊण य, वंदणयं दाऊण गुरुसक्खियं पच्चक्खाइ। तओ खमासमणदुगेण उवहिथंडिलपडिलेहणं संदिसाविय, खमासमणदुगेण 'बइसणं संदिसावेमि, बइसणे ठामि'त्ति भणिय वत्थकंबलाइ पडिलेहेइ। इत्थ जो अभत्तट्ठी सो सव्वोवहिपडिलेहणाणंतरं कडिपट्टयं पडिलेहेइ। जो पुण भत्तट्ठी सो कडिपट्टयं पडिलेहिय, उवहि पडिलेहेइ त्ति विसेसो। तओ सज्झायं ताव करेइ, जाव कालवेला। जायाए य तीए उच्चारपासवणथंडिले चउवीसं पडिलेहिय, जइ तम्मि दिणे चउद्दसी तो पक्खियं चउम्मासियं वा; अह अट्ठमी उद्दिट्ठा पुन्नमासिणी वा तो देवसियं; अह भद्दवयसुद्धचउत्थी तो संवच्छरियं, पडिक्कमणसामायारीए पडिक्कमिय साहुविस्सामणं कुणइ। तओ सज्झायं ताव करेइ जाव पोरिसी। उवरिं जइ समाही तो लहुयसरेणं कुणइ; जहा खुद्दजंतुणो न उट्ठिंति। तओ असज्झभणणपुरओ भूमिपमज्जणाइविहिविहियसरीरचिंतो खमासमणदुगेण मुहपोत्तिं पडिलेहिय, खमासमणेण राईसंथारयं संदिसाविय, वीयखमासमणेण राईसंथारए ठामि त्ति भणिय, सक्कत्थयं भणइ। तओ संथारगं उत्तरपट्टं च जाणुगोवरि मीलित्तु पमज्जिय भूमीए पत्थरेइ। तओ सरीरं पमज्जिय, निसीही 'नमोखमासमणाणं'ति भणिय, संथारए भविय, नमोक्कारतिगं सामाइयं च उच्चारिय–

अणुजाणह परमगुरू गुणगणरयणेहिं भूसियसरीरा।
बहुपडिपुन्ना पोरिसि राईसंथारए ठामि॥ १॥
अणुजाणह संथारं बाहुवहाणेण वामपासेण।
कुक्कुडपायपसारण [1]अतुरंतु पमज्जए भूमिं॥ २॥
संकोइयसंडासे उवत्तंते य कायपडिलेहा।
दव्वाओ उवओगं ऊसासनिरुंभणा लोए॥ ३॥
जइ मे होज्ज पमाओ इमस्स देहस्स इमाइ रयणीए।
आहारमुवहिदेहं तिविहं तिविहेण वोसिरियं॥ ४॥

---
1 B अंतरंतु।

'खामेमि सबजीवे' इच्चाइगाहाओ भणिऊण वामबाहूवहाणो निद्दासोक्खं करेइ । जइ उच्चयइ तो सरीरसंथारए पमज्जिय, अह सरीरचिंताए उट्ठेइ, तो सरीरचिंतं काऊण, इरियावहियं पडिक्कमिय, जहन्नेण वि गाहातिगं गुणिय सुयइ । सुत्तो वि जाव न निद्दा एइ ताव धम्मजागरियं जागरंतो थूलभद्दाइमहरिसिचरियाइं परिभावेइ । तओ पच्छिमरयणीए उट्ठिय, इरियावहियं पडिक्कमिय, कुसुमिण-दुस्सुमिणकाउस्सग्गं सयउस्सासं मेहुणसुमिणे अट्ठुत्तरसयउस्सासं करिय, सक्कत्थयं भणिय, पुव्वुत्तविहीए सामाइयं काउं, सज्झायं संदिसाविय, ताव करेइ जाव पडिक्कमणवेला । तओ विहिणा पडिक्कमिय, जायाए पडिलेहणाए, पुवविहिणा काऊण पडिलेहणं, जहन्नओ वि मुहुत्तमेत्तं सज्झायं करिय, पोसहपारणट्ठी खमासमणदुगेण मुहपोत्तिं पडिलेहिय, खमासमणपुवं भणइ—'इच्छाकारेण संदिसह पोसहं पारावेह' । गुरू भणइ—'पुणो वि कायवो' । बीयखमासमणेण 'पोसहं पारेमि'त्ति । गुरू भणइ—'आयारो न मोतवो'ति । तओ नमोक्कारतिगं उद्धट्ठिओ भणइ । पुणो मुहपोत्तिं पडिलेहिय, पुवविहिणा सामाइयं पारेइ । पोसहे पारिए नियमा सइ संभवे साहू पडिलाभिय, पारियवं ति । जो पुण रत्तिं पोसहं लेइ सो संझाए उवहिं पडिलेहिय, तो पोसहट्ठाउं, थंडिलपेहणाई सवं करेइ । नवरं जाव दिवससेसं रत्तिं वा पज्जुवासामि त्ति उच्चरइ । पभाए पुण जाव अहोरत्तं दिवसं वा पज्जुवासामि त्ति उच्चरइ । भणियत्थ संगाहियाओ इमाओ गाहाओ[1] —

घत्थाइअ पडिलेहिय, सड्ढो गोसंमि पेहिउं पोत्तिं ।
नवकारतिगं कड्ढिउमिय पोसहसुत्तमुचरइ ॥ १ ॥

'करेमि भंते पोसहं मिचाइ' ।

सामाइयं पगिण्हिय कयपडिक्कमणो य कुणइ पडिलेहं ।
अंगपडिलेहणं पिय कडिपट्टय-ठावणायरिए ॥ २ ॥
उवहिमुहपोत्ति-उवहीपोसहसालाइपेहसज्झाओ ।
पुत्तीभंडुवगरणस्स पेहणं पउणपहरम्मि ॥ ३ ॥
चेइयचियवंदण-पुत्तिपेहणं भत्तपाणपरवणं ।
सक्कत्थय-भोयण-सक्कत्थयग-वंदणय-संवरणे ॥ ४ ॥
आवस्सियाइगमणं सरीरचिंताइ-आगमनिसीही ।
काउं गमणागमणालोयणमह कुणइ सज्झायं ॥ ५ ॥
तह चरिमपोरिसीए विहीइ पडिलेहणंगपडिलेहे ।
कडिपट्ट-वसहिपेहा-ठवणायरिउवहिमुहपोत्ती ॥ ६ ॥
तो उवहिथंडिले संदिसावइ कंबलाइ पडिलेहे ।
पुण मुहपोत्तिय-सज्झाय-आसणे संदिसावेइ ॥ ७ ॥
पढइ सुणेइ जाव कालवेलमह थंडिले चउवीसं ।
पेहिय पडिकमिउं जाममित्तमिह गुणइ विहिणाउ ॥ ८ ॥
राइयसंथारय-पुत्तिपेह-सक्कत्थएण उ सुवित्ता ।
सुत्तुट्ठिओ उ इरियं सक्कथयं कहिय मुहपोत्तिं ॥ ९ ॥
पेहिय विहिणा सामाइयं पि काउं तओ पडिक्कमइ ।
पडिलेहणाइपुवं च कुणइ सवं पि कायवं ॥ १० ॥

1 B संगाहियाओ इमाइ गाहाओ ।

जो पुण रयणीपोसहमाययई सो वि संझसमयम्मि ।
पढमं उवहिं पडिलेहिऊण तो पोसहे ठाइ ॥ ११ ॥
थंडिल्लपेहणाई सो वि विहीए करेइ सव्वं पि ।
पारिंतो पुण पोत्तिं पेहित्ता दो खमासमणे[1] ॥ १२ ॥
दाउं नवकारतिगं भणइ ठिओ एवमेव सामाइयं ।
पारेइ किं पुण 'भयवं दसण्ण'भणणे इह विसेसो ॥ १३ ॥
गुरुजिणवल्लहविरइयपोसहविहिपयरणाउ संखेवा[2] ।
दंसियमेयविहाणं विसेसओ पुण तओ नेयं ॥ १४ ॥
आसाढाईपुरओ चउरंगुलवुड्ढिमाहओ हाणी ।
†पहरो दु-ति-ति-ति-एगे सड्ढे‡ छट्ठदसट्ठछहिं पउणो ॥ १५ ॥

एयाए गाहाए उवरि पोसहिएण पडिलेहणाकालो नायव्वो त्ति ॥

॥ इति पोसहविही समत्तो ॥ १० ॥



§ १९. पुव्वोल्लिंगिया पडिकमणसामायारी पुण एसा । सावओ गुरूहिं समं इक्को वा 'जावंति चेइयाइं'ति गाहादुग-थुत्तिपणिहाणवज्जं चेययाइं वंदित्तु, चउराइखमासमणेहिं आयरियाई वंदिय, भूनिहियसिरो 'सव्वस्सवि देवसिय' इच्चाइदंडगेण सयलाइयारमिच्छामिदुक्कडं दाउं, उट्ठिय सामाइयसुत्तं भणित्तु, 'इच्छामि ठाइउं काउस्सग्गं'मिच्चाइसुत्तं भणिय, पलंबियभुयकुप्परधरिय नाभिअहो जाणुड्ढं चउरंगुलठवियकडियपट्टो संजइकविट्ठाइदोसरहियं काउस्सग्गं काउं, जहक्कमं दिणकए अइयारे हियए धरिय, नमोक्कारेण पारिय, चवीसत्थयं पढिय, संडासगे पमज्जिय, उवविसिय, अलग्गवियययवाहुजुओ मुहणंतए पंचवीसं पडिलेहणाओ काउं, काए वि तत्तियाओ चेव कुणइ । साविया पुण पुट्ठि–सिर–हिययवज्जं पन्नरस कुणइ । उट्ठिय बत्तीसदोसरहियं पणवीसावस्सयसुद्धं किइकम्मं काउं अवणयंगो करजुयविहिधरियपुत्ती देवसियाइयाराणं गुरुपुरओ वियडणत्थं आलोयणदंडगं पढइ । तओ पुत्तीए कट्ठासणं पाउंछणं वा पडिलेहिय वामं जाणुं हिट्ठा दाहिणं च उड्ढं काउं, करजुयगहियपुत्ती सम्मं पडिकमणसुत्तं भणइ । तओ दव्वभावुट्ठिओ 'अब्भुट्ठिओमि' इच्चाइदंडगं पढित्ता, वंदणं दाउं, पणगाइसु जइसु तिन्नि खामित्ता, सामन्नसाहूसु पुण ठवणायरिएण समं खामणं काउं, तओ तिन्नि साहू खामित्ता, पुणो कीइकम्मं काउं, उद्धट्ठिओ सिरकयंजली 'आयरियउवज्झाए' इच्चाइगाहातिगं पढित्ता, सामाइयसुत्तं उस्सग्गदंडयं च भणिय, काउस्सग्गे चारित्ताइयारसुद्धिनिमित्तं, उज्जोयदुगं चिंतेइ । तओ गुरुणा पारिए पारित्ता, सम्मत्तसुद्धिहेउं उज्जोयं पढिय, सव्वलोयअरिहंतचेइयाराहणुस्सग्गं काउं, उज्जोयं चिंतिय, सुयसोहिनिमित्तं 'पुक्खरवरदीवड्ढं' कड्ढिय, पुणो पणवीसुस्सासं काउस्सग्गं काउं पारिय, सिद्धत्थवं पढित्ता, सुयदेवयाए काउस्सग्गे नमुक्कारं चिंतिय, तीसे थुइं देइ सुणेइ वा । एवं खित्तदेवयाए वि काउस्सग्गे नमुक्कारं चिंतिऊण पारिय, तत्थुइं दाउं सोउं वा पंचमंगलं पढिय, संडासए पमज्जिय, उवविसिय, पुव्वं व पुत्तिं पेहिय, वंदणं दाउं, 'इच्छामो अणुसट्ठिं'ति भणिय, जाणूहिं ठाउं वड्ढमाणक्खरस्सरा

1 B °समणा । 2 B संखेवो । † 'एवं द्वादशमासेषु' । ‡ 'यथासंख्येन षडादिभिरंगुलैः' इति A आदर्शे स्थिता टिप्पणी ।

तिन्निथुईउ पढिय, सक्कत्थयं थुत्तं च भणिय, आयरियाई वंदिय, पायच्छित्तविसोहणत्थं काउस्सग्गं काउं रुज्जोयचउक्कं चिंतेइ त्ति ।

॥ इति देवसियपडिक्कमणविही ॥ ११ ॥

§ २०. पक्खियपडिक्कमणं पुण चउद्दसीए कायव्वं । तत्थ 'अब्भुट्ठिओमि आराहणाए' इच्चाइसुत्तंतं देवसियं पडिक्कमिय, तओ खमासमणदुगेण पक्खियमुहपोत्तिं पडिलेहिय, पक्खियाभिलावेणं वंदणं दाउं, संबुद्धाखामणं काउं, उट्ठिय पक्खियालोयणसुत्तं 'सव्वस्स वि पक्खिय' इच्चाइपज्जंतं पढिय, वंदणं दाउं भणइ–'देवसियं आलोइयं पडिक्कंतं, पत्तेयखामणेणं अब्भुट्ठिओऽहं अब्भिंतरपक्खियं खामेमि' त्ति भणित्ता, आहारायणियाए साहू सावए य खामेइ, मिच्छुक्कडं दाउं सुहतवं पुच्छेइ, सुहपक्खियं च साहूणमेव पुच्छेइ, न सावयाणं । तओ जहामंडलीए ठाउं वंदणं दाउं भणइ–'देवसियं आलोइयं पडिक्कंतं, पक्खियं पडिक्कमावेह' । तओ गुरुणा–'सम्मं पडिक्कमह'त्ति भणिए, इच्छंति भणिय, सामाइयसुत्तं उस्सग्गसुत्तं च भणिय, खमासमणेण 'पक्खियसुत्तं संदिसावेमि', पुणो खमासमणेण 'पक्खियसुत्तं कड्ढेमि'त्ति भणित्ता, नमोक्कारतिगं कड्ढिय पडिक्कमणसुत्तं भणइ । जे य सुणंति ते उस्सग्गसुत्ताणंतरं 'तस्सुत्तरीकरणेणं'ति तिदंडगं पढिय काउस्सग्गे ठंति । सुत्तसमत्तीए उद्धट्ठिओ नवकारतिगं भणिय, उवविसिय, नमोक्कारसामाइयतिगपुव्वं 'इच्छामिपडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ अइयारो कओ' इच्चाइदंडगं पढिय, सुत्तं भणित्ता, उट्ठिय 'अब्भुट्ठिओमि आराहणाए'त्ति दंडगं पढित्ता, खमासमणं दाउं 'मूलगुण–उत्तरगुण–अइयारविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं'ति भणिय, 'करेमि भंते' इच्चाइ, 'इच्छामि ठामि काउस्सग्ग'मिच्चाइदंडयं च पढित्ता, काउस्सग्गं काउं, बारसुज्जोए चिंतेइ । तओ पारित्ता, उज्जोयं भणित्ता, मुहपोत्तिं पडिलेहिय, वंदणं दाउं, समत्तिखामणं काउं, चउहिं छोभवंदणगेहिं तिन्नि तिन्नि नमोकारे, भूनिहियसिरो भणेइ त्ति । तओ देवसियसेसं पडिक्कमइ । नवरं सुयदेवयाथुइअणंतरं भवणदेवयाए काउसग्गे नमोकारं चिंतिय, तीसे थुइं देइ सुणेइ वा । थुत्तं च अजियसंतित्थओ । एवं चाउम्मासिय–संवच्छरिया वि पडिक्कमणा तदभिलावेण नेयव्वा । नवरं जत्थ पक्खिए बारसुज्जोया चिंतिज्जंति, तत्थ चाउम्मासिए वीसं, संवच्छरिए चालीसं, पंचमंगलं च । तहा पक्खिए पणगाइसु जइसु तिण्हं संबुद्धखामणाणं, चाउम्मासिए सत्ताइसु पंचण्हं, संवच्छरिए नवाइसु सत्तण्हं । दुगमाईनियमा सेसे कुज्ज त्ति भावत्थो । तहा संवच्छरिए भवणदेवयाकाउस्सग्गो न कीरइ न य थुई । असज्झाइयकाउस्सग्गो न कीरइ । तहा राइय-देवसिएसु 'इच्छामोऽणुसट्ठिं'ति भणणाणंतरं, गुरुणा पढमथुईए भणियाए मत्थए अंजलिं काउं 'नमो खमासमणाणं'ति भणिय, मत्थए अंजलिपग्गहमित्तं वा काउं इयरे तिन्नि थुईओ भणंति । पक्खिए पुण नियमा गुरुणा थुइतिगे पूरिए, तओ सेसा अणुकड्ढंति त्ति ॥

॥ पक्खियपडिक्कमणविही ॥ १२ ॥

§ २१. देवसियपडिक्कमणे पच्छिमउस्सग्गाणंतरं खुद्दोवद्दवओहडावणियं सयउस्सासं काउस्सग्गं काउं, तओ खमासमणदुगेण सज्झायं संदिसाविय, जाणुट्ठिओ नवकारतिगं कड्ढिय विग्घावहरणत्थं सिरिपासनाहनमोक्कारं सक्कत्थयं 'जावंति चेइयाइं'ति गाहं च भणित्तु, खमासमणपुव्वं 'जावंत केइ साहू' इति गाहं पासनाहथयं च जोगमुद्दाए पढिय, पणिहाणगाहादुगं च मुत्तासुत्तिमुद्दाए भणिय, खमासमणपुव्वं भूमिनिहियसिरो 'सिरिथंभणयट्ठियपाससामिणो' इच्चाइगाहादुगमुच्चरित्ता, 'वंदणवत्तियाए' इच्चाइदंडगपुव्वं चउ लोगुज्जोयगरियं काउस्सग्गं काउं चउवीसत्थयं पढंति त्ति पडिक्कमणविहिविसेसो पुव्वपुरिससंताणकमागओ, 'आयरणा वि हु

आण' त्ति वयणाओ कायव्वो चेव । जहा थुइतिगभणणाणंतरं सक्कत्थय–थुत्त–पच्छित्त–उस्सग्गा । पुव्विं हि गुरुथुइगहणे थुईतिन्नि त्ति पज्जंतमेव पडिक्कमणमासि । अओ चेव थुइतिगे कड्ढिए छिंदणे वि न दोसो । छिंदणं ति वा अंतरणि त्ति वा अग्गलि त्ति वा एगट्ठा । छिंदणं च दुहा–अप्पकयं, परकयं च । तत्थ अप्पकयं अप्पणो अंगपरियत्तणेण भवइ । परकयं जया परो छिंदइ । पक्खियपडिक्कमणे पत्तेयखामणं कुणंताणं पुढोकयआलोयणं मुत्तुं नत्थि छिंदणदोसो । अओ चेव अम्ह सामायारीए मुहपोत्तिया पत्तेयखामणाणंतरं न पडिलेहिज्जइ त्ति । जया य मज्जारिया छिंदइ तया–

जा सा करडी कब्बरी अंखिहिं कक्कडियारि ।
मंडलिमाहिं संचरीय हय पडिहय मज्जारि–त्ति ॥ १ ॥

चउत्थपयं वारतिगं भणिय, खुद्दोपद्दवओहडावणियं काउस्सग्गो कायव्वो । सिरिसंतिनाहनमोक्कारो घोसेयव्वो । कारणंतरेण पुढोपडिक्कंता पुढोकयआलोयणा वा पडिक्कमणाणंतरं गुरुणो वंदणं दाउं, आलोयण–खामण–पच्चक्खाणाइं कुणंति । पडिक्कमणं च पुव्वाभिमुहेण उत्तराभिमुहेण वा ।

आयरिया इह पुरओ, दो पच्छा तिन्नि तयणु दो तत्तो ।
तेहिं पि पुणो इक्को, नवगणमाणा इमा रयणा ॥ १ ॥

इइगाहाभणियसिरिवच्छाकारमंडलीए कायव्वं । श्रीवत्सस्थापनाचेयम्– 

तत्थ देवसियं पडिक्कमणं रयणिपढमपहरं जाव सुज्झइ । राइयं पुण आवस्सयचुण्णिअभिप्पाएण उग्घाडपोरिसिं जाव, ववहाराभिप्पाएण पुण पुरिमड्ढं जाव सुज्झइ ।

जो वट्टमाणमासो तस्स य मासस्स होइ जो तइओ ।
तन्नामयनक्खत्ते सीसत्थे गोसपडिकमणं ॥ १ ॥

राइयपडिक्कमणे पुण आयरियाई वंदिय भूनिहियसिरो 'सव्वस्स वि राइय' इच्चाइदंडगं पढिय, सक्कत्थयं भणित्ता, उट्ठिय, सामाइय–उस्सग्गसुत्ताइं पढिय, उस्सग्गे उज्जोयं चिंतिय पारिय, तमेव पढित्ता, बीये उस्सग्गे तमेव चिंतित्ता, सुयत्थयं पढित्ता; तईए जहक्कमं निसाइयारं चिंतित्ता, सिद्धत्थयं पढित्ता, संडासए पमज्जिय, उवविसिय, पुत्तिं पेहिय, वंदणं दाउं, पुव्विं व आलोयणसुत्तपढण–वंदणय–खामणय–वंदणय–गाहातिगपढण–उस्सग्गसुत्तउच्चारणाइं काउं, छम्मासियकाउस्सग्गं करेइ । तत्थ य इमं चिंतेइ–'सिरिवद्धमाणतित्थे छम्मासिओ तवो वट्टइ । तं ताव काउं अहं न सकुणोमि । एवं एगाइएगूणतीसंतदिणूणं पि न सकुणोमि । एवं पंच–चउ–ति–दु–मासे वि न सकुणोमि । एवं एगमासं पि जाव तेरसदिणूणं न सकुणोमि । तओ चउतीस-बत्तीसमाइकमेण हावितो जाव चउत्थं आयंबिलं निव्वियं एगासणाइ पोरिसिं नमोक्कारसहियं वा जं सक्केइ तेण पारेइ । तओ उज्जोयं पढिय, पुत्तिं पेहिय, वंदणं दाउं, काउस्सग्गे जं चिंतियं तं चिय गुरुवयणमणुभणिंतो सयं वा पच्चक्खाइ । तो 'इच्छामोणुसट्ठिं'ति भणंतो जाणूहिं ठाउं तिन्नि वड्ढमाणथुईओ पढित्ता, मिउसद्देणं सक्कत्थयं पढिय, उट्ठिय, 'अरहंतचेइयाणं' इच्चाइपढिय, थुइचउक्केणं चेइए वंदेइ । 'जावंति चेइयाइं' इच्चाइगाहादुगथुत्तं पणिहाणगाहाओ न भणेइ । तओ आयरियाई वंदेइ । तओ वेलाए पडिलेहणाइ करेइ त्ति ॥

॥ राइयपडिक्कमणविही ॥

॥ पडिक्कमणसामायारी समत्ता ॥ १३ ॥

§ २२. भणिओ पसंगाणुप्पसंगसहिओ उवहाणविही। उवहाणं च तवो। अओ तवोविसेसा अन्ने वि उवदंसिज्जंति।

तत्थ कल्लाणगतवो चवण-जम्मेसु जिणाणं तासु तासु तिहीसु उववासा कीरंति ॥ १ ॥ दिक्खा-नाणोप्पत्ति-मोक्खगमणेसु जो तवो उसभाईहिं जिणेहिं कओ सो चेव जहासत्ति कायव्वो।

सो य इमो–

सुमइत्थ निच्चभत्तेण निग्गओ वासुपुज्जो जिणो चउत्थेणं।
पासो मल्ली विय अट्ठमेण, सेसाउ छट्ठेणं ॥ १ ॥

निच्चभत्ते वि उववासो कीरइ त्ति सामायारी।

अट्ठमतवेण नाणं पासोसभ-मल्लि-रिट्ठनेमीणं।
वसुपुज्जस्स चउत्थेण छट्ठभत्तेण सेसाणं ॥ २ ॥
निव्वाणमन्तकिरिया सा चउदसमेण पढमनाहस्स।
सेसाण मासिएणं वीरजिणिंदस्स छट्ठेणं ॥ ३ ॥

एगंतराइकरणे वि तहा कायव्वाइं निक्खमणाइतवाइं, जहा तीए कल्लाणगतिहीए उववासो एइ त्ति।

सग[४] तेरस[५] दस[६] चोद्दस,[७] पनरस[८] तेरस[९] य सत्तरस[१०] दस[११] छ[१२]।
नव[१] चउ[२] ति[३] कत्तियाइसु, जिणकल्लाणाइं जह संखं ॥ ४ ॥

प्रतिमासकल्याणकसंख्यासंग्रहः, सर्वाग्रेण १२१।

तहा सुक्कपक्खे अट्ठोववासा एगंतरआयंबिलपारणेण सव्वंगसुंदरो खमाभिग्गहजिणपूयासुणिदाणपरेण विहेओ ॥ ४ ॥

एवं चिय किण्हपक्खे गिलाणपडिजागरणाभिग्गहसारो निरुजसिहो ॥ ५ ॥

तहा एगासणपारणेण बत्तीसं आयंबिलाणि परमभूसणो। इत्थुज्जमणे तिलग-मउडाइ जहासत्ति जिणभूसणदाणं ॥ ६ ॥

आयइजणगो वि एवं चिय। नवरं वंदणग–पडिकमण–सज्झायकरण–साहुसाहुणिवेयावच्चाइसव्वकज्जेसु अणिगूहियबलविरियस्स अचंतपरिसुद्धो हवइ ॥ ७ ॥

एगे पुण एवमाहंसु–'अणिगूहियबलविरियस्स निरंतरबत्तीसायंबिलपमाणो एगासणंतरियबत्तीसोववासप्पमाणो वा आयइजणगो त्ति।

तहा सोहग्गकप्परुक्खो चित्ते एगंतरोववासा गुरुदाणविहिपुव्वं सव्वरसं पारणगं च। उज्जमणं पुण सुवण्णतंदुलाइमयस्स नाणाविहफलभरोणयस्स जिणनाहपुरओ कप्परुक्खस्स कप्पणेण चारित्तपवित्तमुणिजणदाणेण य विहेयं ॥ ८ ॥

तहा इंदियजओ जत्थ पुरिमड्ढ–इक्कासणग–निव्विय–आंबिल–उववासा एगेगमिंदियमणुसरिय पंचहिं परिवाडीहिं कज्जंति इत्थ तवोदिणा पंचवीसं ॥ ९ ॥

कसायमहणो उण पुरिमड्ढवज्जाहिं चउहिं परिवाडीहिं पइकसायं किज्जइ। तवो दिणा सोलस ॥ १० ॥

जोगसुद्धी उण इक्केक्कं जोगं पडुच निव्विगइय–आयाम–उववासा कीरंती त्ति पुरिमड्ढ–एगासणवज्जाहिं तिहिं परिवाडीहिं तवोदिणा नव ॥ ११ ॥

तहा जत्थेगेगं कम्ममणुसरिय, उववास–एगासणग–एगसित्थय–एगठाणग–एगदत्तिग–निव्विय–आयंबिल–अट्ठकवलाणि अट्ठहिं परिवाडीहिं किज्जंति, सो अट्ठकम्मसूडणो तवो दिणा चउसट्ठी। उज्जमणे सुवन्नमयकुहाडिया कायव्वा ॥ १२ ॥

तहा अट्ठमतिगेण नाण–दंसण–चरित्ताराहणातवो भवइ ॥ १३ ॥

तहा रोहिणीतवो रोहिणीनक्खत्ते वासुपुज्जजिणविसेसपूयापुरस्सरमुववासो सत्तमासाहियसत्तवरिसाणि। उज्जमणे वासुपुज्जबिंबपइट्ठा ॥ १४ ॥

तहा अंबातवो पंचसु किण्हपंचमीसु एगासणगाइ–नेमिनाह–अंबापूयापुव्वं किज्जइ ॥ १५ ॥

तहा एगारससु सुक्कएगारसीसु सुयदेवयापूया मोणोपवासकरणजुत्तो सुयदेवया तवो ॥ १६ ॥

तहा नाणपंचमिं छ अकम्ममासे वज्जित्ता मग्गसिर–माह–फग्गुण–वइसाह–जेट्ठ–आसाढेसु सुक्कपंचमीए जिणनाहपूयापुव्वं तयग्गविणिवेसियमहत्थपोत्थयं विहियपंचवण्णकुसुमोवयारो अखंडक्खयाभिलिहियपसत्थसत्थिओ घयपडिपुन्नपवोहियरत्तपंचवट्टिपईवो फलबलिविहाणपुव्वं पडिवज्जेइ। उववासबंभचेरविहाणेण। एवं पडिमासं पंचमासकरणे लहुई। महई उण पंचवरिसाणि। विसेसो उण पंचगुणपूयाविहाणं, पंचपोत्थयपूयणं, पंचसत्थियदाणं, पंचपईवबोहणं च त्ति। केइ पुण एयं जहन्नं पंचमासाहियपंचहिं वरिसेहिं; मज्झिमं तु दसमासाहियदसवरिसेहिं; उक्किट्ठं पुण जावज्जीवं ति भणंति। असहणो पुण बालाई पंचसु नाणपंचमीसु इक्कासणे, तओ पंचसु निव्वीए, तओ पंचसु आयंबिले, तओ पंचसु उववासे कुणंति त्ति। उज्जमणं पुण तीए आईए मज्झे अंते वा कुज्जा। तत्थ सविभवाणुसारेण जिणपूया–पुत्थयपंचयलेहण–संघदाणाइ कायव्वं। पंचविहबलिवित्थारो नाणग्गे, पंच ठवणियाओ, पंच मसीभायणाइं, एवं लेहणीओ, पंचकवलियाओ, कट्ठगरणाइं, निक्खेवणाइं, छिद्ददोरयाइं, फुलियाओ, उत्तरियाओ। पट्टदुगुल्लाइपुत्थयवेट्ठणयाइं। कुंपियाओ, पडलियाओ, जवमालियाओ, ठवणायरिया, ठवणायरियसिंहासणाइं, मुहपोत्तियाओ, सिरिखंडियाओ, पिंगाणियाओ, पट्टियाओ, वासकुंपगा; अन्नाइं वि जोडय–धूवकडुच्छय–कलस–भिंगारथाल–आरत्तियमाइ पंच पंच उवगरणाइं दायव्वाइं। सवित्थरुज्जमणे पुण सव्वं पंचवीसगुणं कायव्वं। नाणपंचमीतवोदिणे पुत्थयपुरओ नाणस्स तइयथुइरूवे अन्ने वा नमोक्कारे पढिय, उट्ठित्तु 'तमतिमिरपडल'इच्चाइदंडगं भणिय, काउस्सग्गनमोक्कारं चिंतिय, पारिय –

देविंदवंदियपएहिं परूवियाणि नाणाणि केवलमणोहिमईसुयाणि।
पंचावि पंचमगइं सियपंचमीए पूया तवोगुणरयाण जियाण दिंतु ॥ १ ॥

इच्चाइथुइं दाऊण पुणो जाणुट्ठिओ नाणथुत्तं भणिय, 'बोधागाध'मिच्चाइनाणथुइं पढइ त्ति। नाणचीवंदणविही ॥ १७ ॥

तहा अमावसाए, मयंतरेण दीवूसवामावसाए, पडिलिहियनंदीसरजिणभवणपूयापुव्वं उववासाइसत्तवरिसाणि नंदीसरतवो ॥ १८ ॥

तहा एगा पडिवया, दुन्नि दुइज्जाओ, तिन्नि तिज्जाओ, एवं जाव पंचदसीओ उववासा भवंति जत्थ सो सच्चसुक्खसंपत्तितवो ॥ १९ ॥

तहा चित्तपुन्नमासीए आरब्भ पुंडरीयगणहरपूयापुव्वमुववासाइणमन्नतरं तवो दुवालसपुन्निमाओ पुंडरीयतवो ॥ २० ॥

तहा सत्तसु भद्दवएसु पइदिणं नवनवनेवज्जढोवणेण जिणजणणिपूयापुव्वं सुक्कसत्तमीए आरब्भ तेरसिपज्जंतं एगासणसत्तगं कीरइ जत्थ स मायरतवो । भद्दवयसुद्धचउद्दसीए पइवरिसं उज्जवणं कायव्वं । वलि-दुद्ध-दहि-घिय-खीर-करंवय-लप्पसिया-घेउर-पूरीओ चउवीसं खीचडीथालं, दाडिमाइफलाणि य सपुत्तसावियाणं दायव्वाइं । पीयलीवत्थं च तंबोलाइ ऊसवो य ॥ २१ ॥

तहा भद्दवए किण्हचउत्थीए एगासण-निव्विगइय-आयंबिल-उववासेहिं परिवाडीचउक्केण जहासत्ति-कएहिं समवसरणपूयाजुत्तं चउसु भद्दवएसु समवसरणदुवारचउक्कसाराहणेण समवसरणतवो चउसट्ठिदिण-माणो होइ । उज्जमणे नेवज्जथालाइ चत्तारि भद्दवयसुद्धचउत्थीए दायव्वाइं ॥ २२ ॥

तहा जिणपुरओ कलसो पइट्ठिओ मुट्ठीहिं पइदिणखिप्पमाणतंदुलेहिं जावइयदिणेहिं पूरिज्जइ, तावइयदिणाणि एगासणगाइं अक्खयनिहितवो ॥ २३ ॥

तहा आयंबिलवद्धमाणतवो जत्थ अलवण-कंजिय-संछन्नभत्तमोयणमित्तरूवमेगमायंबिलं, तओ उव-वासो; दुन्नि आयंबिलाणि, पुणो उववासो; तिन्नि आयंबिलाणि, उववासो; चत्तारि आयंबिलाणि, उववासो; एवं एगेगायंबिलवुड्ढीए चउत्थं कुणंतस्स जाव अंबिलसयपज्जंते चउत्थं । तओ पडिपुन्नो होइ । एत्थायं-बिलाणं पंचसहस्सा पंचासाहिया, उववासाणं सयं । एयस्स कालमाणं वरिसचउद्दसगं, मासतिगं, वीसं च दिणाणि त्ति ॥ २४ ॥

तहा थेराइणो वद्धमाणतवो-जत्थ आइतित्थगरस्स एगं, दुइज्जस्स दुन्नि, जाव वीरस्स चउवीसं आयंबिलनिव्वियाईणि तस्स विसेसपूयापुव्वं कीरंति । पुणो वीरस्स एगं जाव उसहस्स चउवीसं, तओ पडिपुन्नो होइ त्ति ॥ २५ ॥

तहा एगेगतित्थगरमणुसरिय वीस-वीस-आयंबिलाणि पारणयरहियाणि । एगं चायंबिलं सासण-देवयाए । उज्जमणे विसेसपूयापुव्वं तित्थयराणं चउवीसतिलयदाणं च जत्थ सो दवदंतीतवो ॥ २६ ॥

नाणावरणिज्जस्स उत्तरपयडीओ पंच; दंसणावरणिज्जस्स नव, वेयणीयस्स दो, मोहणीयस्स अट्ठावीसं, आउस्स चत्तारि, नामस्स तेणउई, गोयस्स दो, अंतरायस्स पंच;-एवं अडयालसएण उववासाणं अट्ठकम्मउत्तरपयडीतवो ॥ २७ ॥

चंदायणतवो दुहा-जवमज्झो, वज्जमज्झो य । तत्थ जवमज्झो सुक्कपडिवयाए एगदत्तियं एगकवलं वा । तओ एगोत्तरवुड्ढीए जाव पुन्निमाए किण्हपडिवयाए य पंचदस । तओ एगेगहाणीए जाव अमाव-साए एगदत्तियं एगकवलं वा । इय जवमज्झो । वज्जमज्झे किण्हपडिवयाए पंचदस । तओ एगेगहाणीए जाव अमावसाए सुक्कपडिवयाए य एगो । तओ एगेगवुड्ढीए जाव पुन्निमाए पंचदस । इय वज्जमज्झो । दोसु वि उज्जमणे रुप्पमयचंददाणं; जवमज्झे बत्तीसं सुवन्नमयजवा य, वज्जमज्झे वज्जं च ॥ २८ ॥

तहा अट्ठ-दुवालस-सोलस-चउवीसपुरिसाण एक्कतीसं, थीणं सत्तावीसं कवला । जहक्कमं पंचहिं दिणेहिं ऊणोयरियातवो । जदाह-

अप्पाहार अवड्ढा दुभागपत्ता तहेव किंचूणा ।
अट्ठ-दुवालस-सोलस-चउवीस-तहिक्कतीसा य ॥ इति ॥

उज्जमणे पुण मोलियं सव्वदिणकवलपरिमियमोयगा पूयापुव्वं तित्थनाहस्स ढोएयव्वा ॥ २९ ॥

भद्दाइतवेसु तहा, इमालया इग दु तिन्नि चउ पंच।
तह ति चउ पंच इग दो तह पण इग दो तिग चउक्कं॥१॥
तह दु ति चउ पण एगेगं तह चउ पणगेग दु तिन्नेव।
पणहुत्तरि उववासा पारणयाणं तु पणवीसा॥ २॥

१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
४	५	१	२	२

भद्रतपः। तपोदिन ७५, पारणा २५.

*

पभणामि महाभद्दं, इग दुग तिग चउ पण छ सत्तेव।
तह चउ पण छग सत्तग इग दुग तिग सत्त इक्कं दो॥ ३॥
तिन्नि चउ पंच छक्कं तह तिग चउ पण छ सत्तगेगं दो।
तह छग सत्तग इग दो तिग चउ पण तह दुग चऊ॥ ४॥
पण छग सत्तेक्कं तह, पण छग सत्तेक्क दोन्नि तिय चउ।
सो पारणयाणुगवन्ना छन्नउयसयं चउत्थाणं॥ ५॥

१	२	३	४	५	६	७
४	५	६	७	१	२	३
७	१	२	३	४	५	६
३	४	५	६	७	१	२
६	७	१	२	३	४	५
२	३	४	५	६	७	१
५	६	७	१	२	३	४

महाभद्रतपः। तपोदिन १९६, पारणा ४९.

*

भद्दोतरपडिमाए पण छग सत्त ट्ठ नव तहा सत्त।
अड नव पंच छ तहा नव पण छग सत्त अट्ठेव॥ ६॥
तह छग सत्तड नव पण तह ट्ठ नव पण छ सत्तभत्तट्ठा।
पणहत्तरसयमेवं पारणगाणं तु पणवीसं॥ ७॥

५	६	७	८	९
७	८	९	५	६
९	५	६	७	८
६	७	८	९	५
८	९	५	६	७

भद्रोत्तरतपः। तपोदिन १७५, पारणा २५.

*

पडिमाइ सव्वभद्दाए पण छ सत्त ट्ठ नव दसेक्कारा।
तह अड नव दस एक्कार पण छ सत्त य तहेक्कारा॥ ८॥
पण छग सत्तग अड नव दस तह सत्त ट्ठ नव दसेक्कारा।
पण छ तहा दस एगार पण छ सत्तट्ठ नव य तहा॥ ९॥
छग सत्तड नव दसगं एक्कारस पंच तह य नव दसगं।
एक्कारस पण छक्कं सत्त ट्ठ य इह तवे होंति॥ १०॥
तिन्निसया वाणउया इत्थुववासाण होंति संखाए।
पारणयागुणवन्ना भद्दाइतवा इमे भणिया॥ ११॥

५	६	७	८	९	१०	११
८	९	१०	११	५	६	७
११	५	६	७	८	९	१०
७	८	९	१०	११	५	६
१०	११	५	६	७	८	९
६	७	८	९	१०	११	५
९	१०	११	५	६	७	८

सर्वतोभद्रतपः। तपोदिन ३९२, पारणा ४९.

एए चत्तारि वि तवा पारणगभेया चउविहा होंति। सव्वकामगुणिएण वा, निव्वीएण वा, वल्लचणगाइअलेवाडेण वा, आयंबिलेण वा। चउविहं पारणगं ति॥ ३०॥

तहा एगारससु सुद्धएगारसीसु सुयदेवयापूयापुव्वं एगासणगाइ तवो मासे एगारस कीरइ जत्थ सो एगारसंगतवो। उज्जमणं पंचमी तुल्लं। नवरं सव्ववत्थूणि एगारसगुणाइं ति॥ ३१॥

एवं बारससु सुद्धबारसीसु दुवालसंगाराहणतवो। उज्जवणे पुण बारसगुणाणि वत्थूणि॥ ३२॥

एवं चउदससु सुद्धचउद्दसीसु चउद्दसपुव्वाराहणतवो उज्जवणे चउद्दसठाणाणि॥ ३३॥

तहा आसोयसियट्ठमिमाइं अट्ठदिणे एगासणाइतवो त्ति पढमा पाउडी । एवं अट्ठसु वरिसेसु अट्ठ-पाउडिओ । उज्जवणे कणगमयअट्ठावयपूया कणगनिस्सेणी य कायव्वा । पक्कन्नाइं फलाइं चउवीसवत्थूणि जत्थ सो अट्ठावयतवो ॥ ३४ ॥

सत्तरसय जिणाणं सत्तरसयं उववासाइं तवो कीरइ जत्थ सो सत्तरसयजिणाराहणतवो । उज्जवणे लड्डुयाइं वत्थूहिं सत्तरसयसंखेहिं सत्तरसयजिणपूया ॥ ३५ ॥

पंचनमोक्कारउवहाणअसमत्थस्स नवकारतवेणावि आराहणा कारिज्जइ । सा य इमा–पढमपए अक्खराणि सत्त, अओ सत्त इक्कासणा । एवं पंचक्खरे बीयपए पंच इक्कासणा । तइयपए सत्त । चउत्थपए वि सत्त । पंचमपए नव । छट्ठपए चूलापयदुगरूवे सोलस, सत्तमपए चूलाअंतिमपयदुगरूवे सत्तरस्सखरे सत्तरस्स इक्कासणा । उज्जमणे रुप्पमयपट्टियाए कणयलेहणीए मयनाहिरसेण अक्खराणि लिहित्ता अट्ठसट्ठीए मोयगेहिं पूया ॥ ३६ ॥

तित्थयरनामकरणाइं वीसं ठाणाइं पारणंतरिएहिं वीसाए उववासेहिं आराहिज्जंति त्ति चालीसदिण-माणो वीसट्ठाणतवो ॥ ३७ ॥

कीरंति धम्मचक्के तवंमि आयंबिलाणि पणवीसं ।
उज्जमणे जिणपुरओ दायव्वं रुप्पमयचक्कं ॥ १ ॥
अहवा–दो चेव तिरत्ताइं सत्तत्तीसं तहा चउत्थाइं ।
तं धम्मचक्कवालं जिणगुरुपूया समत्तीए ॥ २ ॥ ३८ ॥

चित्तबहुलट्ठमीओ आरब्भ चत्तारिसया उववासा एगंतराइक्कमेण जहा अंगिकारं पूरिज्जंति । तईय-वरिससंतियअक्खयतइयाए संघ–गुरु–साहम्मियपूयापुव्वं पारिज्जंति । उसभसामिचिन्नो संवच्छरियतवो ॥३९॥

एवं उसभसामितित्थसाहुचिण्णो बारसमासियतवो छट्ठेहिं तिहिं तिहिं सएण उववासाणं । बावीस-तित्थयरसाहुचिण्णो अट्ठमासियतवो चालीसाहियदुसयउववासेहिं । वद्धमाणसामितित्थसाहुचिण्णो असिय-सएण उववासाणं छम्मासियतवो ॥ ४० ॥

अन्ने य माणिक्कपत्थारिया–मउडसत्तमी–अमियट्ठमी–अविहवदसमी–गोयमपडिग्गह–मोक्खदंडय–अदुक्खदिक्खिया–अखंडदसमीमाइतवविसेसा आगमगीयत्थायरणवज्झ त्ति न परूविया । जे य एगार-संगतवाइणो अट्ठावयाइणो य तवविसेसा ते तहाविहथेरेहिं अपवत्तिया वि आराहणापगारो त्ति पयंसिया । जे पुण एगावली–कणगावली–रयणावली–मुत्तावली–गुणरयणसंवच्छर–खुड्डमहल्ल–सिंहनिक्कीलियाइणो तवभेया ते संपयं दुक्कर त्ति न दंसिया । सुयसागराओ चेव नेय त्ति ॥

॥ तवोविही समत्तो ॥ १४ ॥

§ २३. संपयं पुण सम्मत्तारोवणाइसावयकिच्चाणि वित्थरनंदीए भवंति, दव्वत्थयप्पहाणत्तेण तेसिं; साहूणं पुण भावत्थयप्पहाणत्तेण संखेवनंदीए वि कीरंति त्ति–सावयकिच्चाहिगारे नंदिरयणाविही भण्णइ । अहवा सावय-साहुकिच्चाणमंतरे भणिओ नंदिरयणाविही, डमरुगमणिनाएण उभयत्थ वि संवज्झइ त्ति इहेव भण्णइ । तत्थ पसत्थखित्ते सूरिणा मुत्तासुत्तिमुद्दाए 'ॐ ह्रीं वायुकुमारेभ्यः स्वाहा' इइमंतेण वायुकुमारा आहविज्जंति । तओ सावएहिं अवणीए[1] सुपरिमज्जणं तेसिं कम्मं कीरइ । एवं मेहकुमाराहवणे गंधोदग-दाणं । तओ देवीणं आहवणे सुगंधपंचवण्णकुसुमवुट्ठी । अग्गिकुमाराहवणे धूवक्खेवो । वेमाणिय–जोइस–

1 'अवन्या' इति B टिप्पणी ।

भवणवासिआहवणे रयण-कंचण-रुप्पवण्णएहिं पगारतिगन्नासो। वंतराहवणे तोरण-चेइय-तरु-सिंहासण-छत्त-ज्झाणाइणं विन्नासो। तओ उक्किट्ठवण्णगोवरि समोसरणे बिंबरूवेण भुवणगुरुठवणा। एयस्स पुव्वदक्खिणभागे गणहरमग्गओ मुणीणं वेमाणियत्थीसाहुणीणं च ठावणा। एवं नियगवण्णेहिं अवरदक्खिणे भवणइ-वाणवंतर-जोइसदेवाणं। पुव्वोत्तरेण वेमाणियदेवाणं नराणं नारीणं च। बीयपायारंतरे अहि-नउल-मय-मयाहिवाइतिरियाणं। तईयपायारंतरे दिव्वजाणाईणं ठावणा। एवं विरइए, आलिक्ख-समोसरणे जिणभवणागिइकट्ठाइनंदिआलगट्ठिय[1]पडिमासु वा थालाइपइट्ठियपडिमाचउक्के वा, वासक्खेवं चउद्दिसिं काऊणं, तओ धूववासाइदाणपुव्वं दिसिपाला नियनियमंतेहिं आहविज्जंति। तं जहा–'ॐ ह्रीँ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह नन्द्यां आगच्छ आगच्छ स्वाहा।' एवं अग्नये, यमाय, नैर्ऋताय, वरुणाय, वायवे, सौम्याय, कुवेराय वा ईशानाय, नागराजाय, ब्रह्मणे। दससु वि दिसासु वासक्खेवो। तओ समोसरणस्स पुप्फवत्थाइएहिं पूया। एवं नंदिरयणा सव्वकिच्चेसु सामन्ना। नंदिसमत्तीए तेणेव कमेण आहूय देवे विसज्जेइ। जाव 'ॐ ह्रीँ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पुनरागमाय स्वस्थानं गच्छ गच्छ यः।' इच्चाइमंतेहिं दिसिपाले विसज्जिय, समोसरणमणुजाणाविय, खमावेइ। जं च इत्थ पुव्वायरिएहिं भणियं जहा–'अक्खएहिं पुप्फेहिं वा अंजलिं भरित्ता सियवत्थच्छाइयनयणो पराहुत्तो वा काऊण, दिक्खट्ठसुवट्ठिओ संतोऽणंतरोत्तविहिरइयसमोसरणे अक्खयंजलिं पुप्फंजलिं वा खेवाविज्जइ। जइ तस्स मज्झदेसे सिहरे वा पडइ तया जोग्गो; बाहिरे पडइ अजोग्गो। इइ परिक्खं काउणं सावयत्त-दिक्खा दिज्जइ त्ति।' तं मिच्छद्दिट्ठीहोंतो जो सम्मत्तं पडिवज्जइ तं पडुच्च बोधव्वं। जे पुण परंपरागयसावय-कुलप्पसूया तेसिं परिक्खाकरणे न नियमो। अओ चेव सावयधम्मकहा पीइमाइपंचलिंगगम्मस्स अत्थिणो चेव गुरुविणयाइपंचलक्खणलक्खियव्वस्स समत्थस्सेव सव्वजणवल्लहत्ताइलिंगपंचगसज्झस्स सुत्तापडिकुट्ठस्सेव य सावयधम्माहिगारित्ते पुव्वायरियभणिए वि संपयं परिक्खाए अभावे वि पवाहओ सावयधम्मारोवणं पसिद्धं ति।

§ २४. देववंदणावसरे वड्ढंतियाओ य थुईओ इमाओ–

यदङ्घ्रिनमनादेव देहिनः सन्ति सुस्थिताः।
तस्मै नमोस्तु वीराय सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥
सुरपतिनतचरणयुगान् नाभेयजिनादिजिनपतीन् नौमि।
यद्वचनपालनपरा जलाञ्जलिं ददन्ति दुःखेभ्यः ॥ २ ॥
वदन्ति वन्दारुगणाग्रतो जिनाः, सदर्थतो यद् रचयन्ति सूत्रतः।
गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे, तदङ्घ्रिनामस्तु मतं तु मुक्तये ॥ ३ ॥
शक्रः सुरासुरवरैः सह देवताभिः, सर्वज्ञशासनसुखाय समुद्यताभिः।
श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान्, भव्यान् जनानवतु नित्यममंगलेभ्यः ॥ ४ ॥

§ २५. संतिनाहाइथुईओ पुण इमाओ–

रोगशोकादिभिर्दोषैरजिताय जितारये।
नमः श्रीशान्तये तस्मै, विहितानतशान्तये ॥ ५ ॥
श्रीशान्तिजिनभक्ताय भव्याय सुखसंपदम्।
श्रीशान्तिदेवता देयादशान्तिमपनीय मे ॥ ६ ॥
सुवर्णशालिनी देयाद् द्वादशाङ्गी जिनोद्भवा।
श्रुतदेवी सदा मह्यमशेषश्रुतसंपदम् ॥ ७ ॥

[1] B आगल°।

चतुर्वर्णाय संघाय देवी भवनवासिनी ।
निहत्य दुरितान्येषा करोतु सुखमक्षतम् ॥ ८ ॥
यासां क्षेत्रगताः सन्ति साधवः श्रावकादयः ।
जिनाज्ञां साधयन्तस्ता रक्षन्तु क्षेत्रदेवताः ॥ ९ ॥
अंबा निहतडिंबा मे सिद्ध-बुद्धसुताश्रिता ।
सिते सिंहे स्थिता गौरी वितनोतु समीहितम् ॥ १० ॥
धराधिपतिपत्नी या देवी पद्मावती सदा ।
क्षुद्रोपद्रवतः सा मां पातु फुल्लत्फणावली ॥ ११ ॥
चञ्चचक्रकरा चारु प्रवालदलसन्निभा ।
चिरं चक्रेश्वरी देवी नन्दतादवताच्च माम् ॥ १२ ॥
खड्गखेटककोदंडबाणपाणिस्तडिद्द्युतिः ।
तुरङ्गगमनाऽच्छुप्ता कल्याणानि करोतु मे ॥ १३ ॥
मथुरापुरिसुपार्श्व-श्रीपार्श्वस्तूपरक्षिका ।
श्रीकुबेरा नरारूढा सुताङ्काऽवतु वो भवात् ॥ १४ ॥
ब्रह्मशान्तिः स मां पायादपायाद् वीरसेवकः ।
श्रीमत्सत्यपुरे सत्या येन कीर्त्तिः कृता निजा ॥ १५ ॥
या गोत्रं पालयत्येव सकलापायतः सदा ।
श्रीगोत्रदेवता रक्षां सा करोतु नताङ्गिनाम् ॥ १६ ॥
श्रीशक्रप्रमुखा यक्षा जिनशासनसंश्रिताः ।
देवा देव्यस्तदन्येऽपि संघं रक्षं त्वपायतः ॥ १७ ॥
श्रीमद्विमानमारूढा यक्षमातङ्गसङ्गता ।
सा मां सिद्धायका पातु चक्रचापेषुधारिणी ॥ १८ ॥

*

§२६. अरहाणादि थुत्तं च इमं–

अरिहाण नमो पूयं अरहंताणं रहस्सरहियाणं ।
पयओ परमेट्ठीणं अरहंताणं धुयरयाणं ॥ १ ॥
निद्दड्ढअट्ठकम्मिंधणाण वरणाणदंसणधराणं ।
मुत्ताण नमो सिद्धाणं परमपरमेट्ठिभूयाणं ॥ २ ॥
आयारधराण नमो पंचविहायारसुट्ठियाणं च ।
नाणीणायरियाणं आयारुवएसयाण सया ॥ ३ ॥
बारसविहंगपुव्वं दिंताण सुयं नमो सुयहराणं ।
सययमुवज्झायाणं सज्झायज्झाणजुत्ताणं ॥ ४ ॥
सव्वेसिं साहूणं नमो तिगुत्ताण सव्वलोए वि ।
तव नियमनाणदंसणजुत्ताणं बंभयारीणं ॥ ५ ॥

एसो परमेट्ठीणं पंचण्ह वि भावओ नमोक्कारो ।
सवस्स कीरमाणो पावस्स पणासणो होइ ॥ ६ ॥
भुवणे वि मंगलाणं मणुयासुरअमरखयरमहियाणं ।
सवेसिमिमो पढमो होइ महामंगलं पढमं ॥ ७ ॥
चत्तारिमंगलं मे हुंतु ऽरहंता तहेव सिद्धा य ।
साहू अ सवकालं धम्मो य तिलोअमंगल्लो ॥ ८ ॥
चत्तारि चेव ससुरासुरस्स लोगस्स उत्तमा हुंति ।
अरहंत–सिद्ध–साहू धम्मो जिणदेसियमुयारो ॥ ९ ॥
चत्तारि वि अरहंते सिद्धे साहू तहेव धम्मं च ।
संसारघोररक्खसभएण सरणं पवज्जामि ॥ १० ॥
अह अरहओ भगवओ महइ महावीरवद्धमाणस्स ।
पणयसुरेसरसेहरवियलियकुसुमच्चियकमस्स ॥ ११ ॥
जस्स वरधम्मचक्कं दिणयरविंबं व भासुरच्छायं ।
तेएण पज्जलंतं गच्छइ पुरओ जिणिंदस्स ॥ १२ ॥
आयासं पायालं सयलं महिमंडलं पयासंतं ।
मिच्छत्तमोहतिमिरं हरेइ तिण्हं पि लोयाणं ॥ १३ ॥
सयलम्मि वि जीयलोएँ चिंतियमेत्तो करेइ सत्ताणं ।
रक्खं रक्खस-डाइणि-पिसाय-गह-जक्ख-भूयाणं ॥ १४ ॥
लहइ विवाए वाए ववहारे भावओ सरंतो य ।
जूए रणे य रायंगणे य विजयं विसुद्धप्पा ॥ १५ ॥
पच्चूस-पओसेसुं सययं भवो जणो सुहज्झाणो ।
एवं झाएमाणो मुक्खं पइ साहगो होइ ॥ १६ ॥
वेयाल-रुद्द-दाणव-नरिंद-कोहंडि-रेवईणं च ।
सवेसिं सत्ताणं पुरिसो अपराजिओ होइ ॥ १७ ॥
विज्जु व पज्जलंती सवेसु वि अक्खरेसु मत्ताओ ।
पंच नमोक्कारपए इक्किक्के उवरिमा जाव ॥ १८ ॥
ससिधवलसलिलनिम्मलआयारसहं च वण्णियं बिंदुं ।
जोयणसयप्पमाणं जालासयसहसदिप्पंतं ॥ १९ ॥
सोलससु अक्खरेसुं इक्किक्कं अक्खरं जगुज्जोयं ।
भवसयसहस्समहणो जंमि ठिओ पंच नवकारो ॥ २० ॥
जो थुणति हु इक्कमणो भविओ भावेण पंचनवकारं ।
सो गच्छइ सिवलोयं उज्जोयंतो दसदिसाओ ॥ २१ ॥
तव-नियम-संजमरहो पंचनमोक्कारसारहिनिउत्तो ।
नाणतुरंगमजुत्तो नेइ फुडं परमनिवाणं ॥ २२ ॥

सुद्धप्पा सुद्धमणा पंचसु समिईसु संजुय तिगुत्ता ।
जे तम्मि रहे लग्गा सिग्घं गच्छंति सिवलोयं ॥ २३ ॥
थंभेइ जलं जलणं चिंतियमत्तो वि पंचनवकारो ।
अरि–मारि–चोर–राउल–घोरुवसग्गं पणासेइ ॥ २४ ॥
अट्ठेव य अट्ठसया अट्ठसहस्सं च अट्ठकोडीओ ।
रक्खं तु मे सरीरं देवासुरपणमिया सिद्धा ॥ २५ ॥
नमो अरहंताणं तिलोयपुज्जो य संठिओ भयवं ।
अमरनररायमहिओ अणाइनिहणो सिवं दिसउ ॥ २६ ॥
सब्वे पओसमच्छरआहियहियया पणासमुवयंति ।
दुगुणीकयधणुसद्दं सोउं पि महाधणुं सहसा ॥ २७ ॥
इय तिहुयणप्पमाणं सोलसपत्तं जलंतदित्तसरं ।
अट्ठारअट्ठवलयं पंचनमोक्कारचक्कमिणं ॥ २८ ॥
सयलुज्जोइयभुवणं विद्दावियसेससत्तुसंघायं ।
नासियमिच्छत्ततमं वियलियमोहं हयतमोहं ॥ २९ ॥
एयस्स य मज्झत्थो सम्मद्दिट्ठी विसुद्धचारित्तो ।
नाणी पवयणभत्तो गुरुजणसुस्सूसणापरमो ॥ ३० ॥
जो पंच नमोक्कारं परमो पुरिसो पराइ भत्तीए ।
परियत्तेइ पइदिणं पयओ सुद्धप्पओ अप्पा ॥ ३१ ॥
अट्ठेव य अट्ठसयं अट्ठसहस्सं च उभयकालं पि ।
अट्ठेव य कोडिओ सो तइयभवे लहइ सिद्धिं ॥ ३२ ॥
एसो परमो मंतो परमरहस्सं परंपरं तत्तं ।
नाणं परमं नेयं सुद्धं झाणं परं झेयं ॥ ३३ ॥
एयं कवयमभेयं खाइयमत्थं[1] परा भुवणरक्खा[2] ।
जोईसुन्नं बिंदुं नाओ 'तारालवो[3] मत्तो[4]' ॥ ३४ ॥
सोलसपरमक्खरबीयबिंदुगब्भो जगोत्तमो जोओ ।
सुयबारसंगसायरमहत्थपुव्वत्थपरमत्थो ॥ ३५ ॥
नासेइ चोर-सावय-विसहर-जल-जलण-बंधणसयाइं ।
चिंतिज्जंतो रक्खस-रण-रायभयाइं भावेण ॥ ३६ ॥

॥ अरिहाणादिथुत्तं समत्तं ॥

अन्नं पि वा परमिट्ठियवण्णं भणिज्जइ त्ति ।

॥ नंदिरयणाविही समत्तो ॥ १५ ॥

*

1 A °मित्थं । 2 C रक्खो । 3 A तारो । 4 A मित्तो ।

§ २७. सावओ कयाइ चारित्तमोहणीयकम्मक्खओवसमेणं पव्वज्जापरिणामे जाए दिक्खं पडिवज्जइ त्ति, तीए विही भण्णइ — पव्वज्जादिणस्स पुव्वदिणम्मि संझासमये वयग्गाही सत्तो जहाविभूईए मंगलतूरसहिओ रयहरणाइवेससंगयछव्वएणं अविहवसुइनारीसिरम्मि दिन्नेणं समागम्म गुरुवसहीए, समोसरणाइ-पूयसक्कारं अक्खयवत्तनालिएरसहियं करेत्ता गुरूणं पाए वंदइ । तओ गुरू वासचंदणअक्खए अहिमंतिऊण सीसस्स सिरम्मि वासे खिवंतो वद्धमाणविज्जाईहिं अट्टाओ† अहिवासिय कुसुंभरत्तदसियाए ठगाहेइ‡, चंदणं अक्खए य सिरे देइ । तओ रयहरणाइवेसमहिवासिय तस्स मज्झे पूगीफलानि पंच सत्त नव पणवीसं वा पक्खिवावेइ । भूइपोट्टलियं च वेसछव्वएणं अविहवनारीसिरदिन्नएणं उभओ पासट्ठिएसु निक्कोसखग्गहत्थेसु दोसु पच्चइयनरेसु गिहं गंतूण जिणबिंबे पूइत्ता, तेसिं पुरओ सासणदेवयापुरो वा छव्वयं ठवित्ता, रयणिं जग्गंति । सावया सावियाओ य देव-गुरूणं चउव्विहसंघस्स य गीयाणि गायमाणीओ चिट्ठंति, जाव पभायवेला । तओ पभाए गुरूणं चउविहसंघसहियाणं गिहमागयाणं पूयं काऊण अमारिघोसणापुव्वयं दाणं दावितो जहोचियं सयणाइवग्गं[1] सम्माणेइ । तओ तस्स माइपिइबंधुवग्गो गुरूणं पाए वंदिय भणइ —'इच्छाकारेण सचित्तभिक्खं पडिग्गाहेह ।' गुरू भणइ —'इच्छामो, वट्टमाणजोगेण ।' तओ गुरुसहिओ जाणाइसु आरूढो मंगलतूररवेणं सयमेव दाणं दिंतो जिणभवणे समागच्छइ । लग्गाइकारणे पच्छा वा । तओ जिणाणं पूयं करेइ । तओ अक्खयाणं अंजलिं नालिएरसहियं भरिऊणं पयाहिणत्तयं नमोक्कारपुव्वयं देइ । तओ पुव्वोत्तविहिणा पुप्फे अक्खए वा खेवाविज्जइ, परिक्खानिमित्तं । तओ पच्छा इरियावहियं पडिक्कमिऊण खमासमणपुव्वयं पुव्विं पडिवन्नसम्मत्ताइगुणो सीसो भणइ — 'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं सव्वविरइसामाइयआरोवणत्थं चेइयाइं वंदावेह' । जो पुण अपडिवन्नसम्मत्ताइगुणो सो 'सम्मत्तसामाइय-सव्वविरइसामाइयआरोवणत्थं' ति भणइ । गुरू आह—'वंदावेमो' । पुणरवि खमासमणं दाउं, गुरुपुरओ जाणूहिं ठाइ । गुरू वि तस्स सीसे वासे खिवेइ । तओ गुरुणा सह चेइयाइं वंदेइ । गुरू वि सयमेव संतिनाह—संतिदेवयाइथुईओ देइ । सासणदेवयाकाउस्सग्गे उज्जोयगरचउक्कं चंदेसुनिम्मलयरापज्जंतं चिंतंति । गुरू वि पारित्ता थुई देइ, सेसा काउस्सग्गठिया सुणंति । पच्छा सव्वे वि य उज्जोयगरं पढंति । तओ नमोक्कारतयं कड्ढंति । तओ जाणूहिं ठाऊण सक्कत्थयं पंचपरमेट्ठित्थवं च भणिंति । तओ गुरू वेसमभिमंतेइ । पच्छा खमासमणं दाउं सीसो भणइ —'इच्छाकारेण संदिसह तुब्भे अम्हं रयहरणाइवेसं समप्पेह' । तओ नमोक्कारपुव्वं 'सुगृहीतं करेह' त्ति भणंतो सीसदक्खिणबाहासंमुहं रओहरणदसियाओ करिंतो पुव्वाभिमुहो उत्तराभिमुहो वा वेसं समप्पेइ । पुणो खमासमणं दाउं, रयहरणाइवेसं गहाय, ईसाणदिसाए गंतूण आभरणाइअलंकारं ओमुयइ । वेसं परिहरेइ । पयाहिणावत्तं । चउरंगुलोवरिं कप्पियकेसो गुरुपासमागम्म खमासमणं दाउं भणइ —'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं अड्डं गिण्हह' । पुणो खमासमणं दाउं उद्धट्ठियस्स ईसिमोणयकायस्स नमोक्कारतिगमुच्चरित्तु उद्धट्ठिओ गुरू पत्ताए लग्गवेलाए समकालनाडीदुगपवाहवज्जं अब्भितरपविसमाणसासं अक्खलियं अट्ठातिगं गिण्हइ । तस्समीवट्ठिओ साहू सदसवत्थेणं अट्ठाओ पडिच्छइ । तओ खमासमणं दाउं सीसो भणइ — 'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं सव्वविरइसामाइयआरोवणत्थं काउस्सग्गं करावेह ।' खमासमणपुव्वयं 'सव्वविरइ-सामाइयआरोवणत्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थूससिएण' मिच्चाइ पढिय, उज्जोयगरं सागरवरगंभीरापज्जंतं सीसो गुरू य दो वि चिंतंति । पारित्ता उज्जोयगरं भणंति । तओ खमासमणं दाऊं सीसो भणइ —'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं सव्वविरइसामाइयसुत्तं उच्चारावेह' । गुरू आह—'उच्चारावेमो' । पुणो खमासमणं दाऊण ईसिमोणयकाओ गुरुवयणमणुभणंतो, नमोक्कारतिगपुव्वं सव्वविरइसामाइयसुत्तं वारतिगमुच्चरइ । गुरू मंतो-

---

† 'शिखा' इति A टि° । ‡ 'बध्नाति' इति B टि° । 1 B सयणवग्गं ।

खमासमणपुव्वं पणामं काउं लोगुत्तमाणं पाएसु वासे खिवेइ। अक्खए अभिमंतिऊण संघस्स देइ। तओ खमासमणं दाउं सीसो भणइ–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं सव्वविरइसामाइयं आरोवेह'। गुरू भणइ–'आरोवेमो'। खमासमणं दाउं सीसो भणइ–'संदिसह किं भणामो'। गुरू भणइ–'वंदित्ता पवेयह'। पुणो खमासमणं दाउं भणइ–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं सव्वविरइसामाइयं आरोवियं?' गुरू वासक्खेवपुव्वयं भणइ–'आरोवियं'। ३ खमासमणाणं, 'हत्थेणं सुत्तेणं, अत्थेणं, तदुभएणं, सम्मं धारणीयं, चीरं पालणीयं, नित्थारगपारगो होहि, गुरुगुणेहिं वड्ढाहि'। सीसो–'इच्छामो अणुसट्ठिं'ति भणित्ता खमासमणं दाऊण भणइ–'तुम्हाणं पवेइयं, संदिसह साहूणं पवेएमि'। तओ खमासमणं दाउं नमोक्कारमुच्चरंतो पयाहिणं देइ, वाराओ तिन्नि। संघो य तस्सिरे अक्खयनिक्खेवं करेइ। तओ खमासमणं दाउं भणइ–'तुम्हाणं पवेइयं, संदिसह काउस्सग्गं करेमि'। गुरू भणइ–'करेह'। खमासमणं दाउं 'सव्वविरइसामाइयआरोवणत्थं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थूससिएणं'मिच्चाइ पढिय, सागरवरगंभीरापज्जंतं उज्जोयगरं चिंतिय, पारित्ता उज्जोयगरं पढइ। तओ खमासमणपुव्वं भणइ–'इच्छाकारेण तुम्हे अम्हं सव्वविरइसामाइयथिरीकरणत्थं काउस्सग्गं करावेह'। 'सव्वविरइसामाइयथिरीकरणत्थं करेमि काउस्सग्गं'। तत्थ सागरवरगंभीरापज्जंतं उज्जोयगरं चिंतिय पारित्ता उज्जोयगरं पढइ। तओ खमासमणं दाउं–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं नामठवणं करेह'। गुरू भणइ–'करेमो'। तओ वासे खिवंतो रवि–ससि–गुरुगोयरसुद्धीए जहोचियं नामं करेइ। तओ कयनामो सेहो सव्वसाहूणं वंदेइ। अज्जिया सावया साविआओ वि तं वंदंति। तओ खमासमणपुव्वयं सेहो गुरुं भणइ–'तुब्भे अम्हं धम्मोवएसं देह'। पुणो खमासमणं दाउं जाणूहिं ठिओ सीसो सुणइ। गुरू–

चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह देहिणो।
माणुसत्तं सुई सद्धा, संजमंमि य वीरियं॥

इच्चाइ उत्तरज्झयणाणं तइयज्झयणं चाउरंगिज्जं वक्खाणइ। पव्वज्जाविहाणं वा। "जयं चरे जयं चिट्ठे" इच्चाइयं वा। सो वि संवेगाइसयओ तहा सुणेइ, जहा अन्नो वि को वि पव्वयइ। इत्थ संगहो–

चिइवंदण वेसऽप्पण समइय उस्सग्ग लग्ग अट्ठगहो।
सामाइय तिय कड्ढण तिपयाहिण वास उस्सग्गो॥

॥ पव्वज्जाविही समत्तो॥ १६॥

§२८. पव्वइएण य लोओ कायव्वो। अओ तव्विही भण्णइ–गुरुसमीवे खमासमणदुगेण मुहपोत्तिं पडिलेहिय दुवालसावत्तवंदणं दाउं, पढमखमासमणेण 'इच्छाकारेण संदिसह लोयं संदिसावेमि'; बीए 'लोयं करेमि'; तइए 'उच्चासणं संदिसावेमि'; चउत्थए 'उच्चासणे ठामि'। तओ लोयगारं खमासमणपुव्वं भणइ–'इच्छाकारि लोयं करेह'। मत्थयरक्खधारिणो य इच्छाकारं देइ। तओ–

पुव्विं पडिवय नवमी तइया इक्कारसी य अग्गीए।
दाहिणि पंचमि तेरसि, बारसि चउत्थि नेरइए॥ १॥
पच्छिम छट्ठि चउद्दसि सत्तमि पडिपुन्न वायवदिसाए।
दसमि दुइज्जा उत्तर, अट्ठमि अमावसा य ईसाणे॥ २॥

इइ गाहक्कमेण जोगिणीओ वामे पिट्ठओ वा काउं, बुह-सोमवारेसु चंदबलाइभावे सुक्क-गुरूसु वि, पुस्स–पुणव्वसु–रेवइ–चित्ता–सवण–धणिट्ठा–मियसिर–अस्सिणि–हत्थेसु किंत्तिया–विसाहा–महा–

---

१ 'समाधिक। सर्वविरतिसामायिकोत्सर्गः।' इति A टिप्पनी।

भरणीवज्जेसु अन्नेसु वा रिक्खेसु उववेसिय सम्ममहियासंतो लोयं कारिय, लोयगारवाहुं विस्सामिय, इरियावहियं पडिक्कमिय, सक्कत्थयं भणिय, गुरुसमीवमागम्म, खमासमणदुगेण मुहपोत्तिं पडिलेहिय, दुवालसावत्तवंदणं दाउं, खमासमणं दाउं, पढमखमासमणे भणइ–'इच्छाकारेण संदिसह लोयं पवेएमि' । गुरू भणइ–'पवेयह'; वीए 'संदिसह किं भणामो' । गुरू भणइ–'वंदित्ता पवेयह'; तइए 'केसा मे पज्जुवासिया' । तओ 'दुक्करं कयं, इंगिणी साहिय'त्ति गुरुणा वुत्ते 'इच्छामो अणुसट्ठिं'ति भणइ । चउत्थे 'तुम्हाणं पवेइयं, संदिसह साहूणं पवेएमि'; पंचमे नमोक्कारं भणइ । छट्ठेणं 'तुम्हाणं पवेइयं, साहूणं पवेइयं, संदिसह काउस्सग्गं करेमि' । सत्तमे केसेसु पज्जुवासिज्जमाणेसु सम्मं जन्न अहियासियं, कुइयं कक्कराइयं छीयं जंभाइयं तस्स ओहडावणियं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थूससिएण'मिच्चाइणा सत्तावीसुस्सासं काउस्सग्गं करेइ । चउवीसत्थयं भणित्ता जहारायणियं साहू वंदइ, पाए य विस्सामेइ । जो उण सयं चिय लोयं करेइ सो संदिसावणपवेयणाइ न करेइ ।

॥ इइ लोयकरणविही ॥ १७ ॥

§ २९. पव्वइएण य उभयकालं पडिक्कमणं विहेयं । तव्विही य सावयकिच्चाहिगारे वुत्तो । जओ साहूणं सावयाण पडिक्कमणविही तुल्लो चेव । नाणत्तं पुण इमं – साहुणो ससूरिए चेव चउव्विहाहारं पच्चक्खिय, जलाइ उज्झिय, जलभंडाइ संठविय, सम्मं इरियं पडिक्कमिय, चउवीसं थंडिले जहन्नओ विहत्थमित्ते बाहिं अंतो य अहियासि-अणहियासिजुग्गे आसन्ने मज्झिमे दूरे य दंडाउंछणेणं पेहिय गुरुपुरओ खमासमणेण 'गोयरचरियं पडिक्कमेमो'; वीयखमासमणेणं 'गोयरचरियपडिक्कमणत्थं काउस्सग्गं करेमो'त्ति भणित्ता, अन्नत्थूससिएणमिच्चाइ भणित्ता, नवकारं चिंतिय पढित्ता य इमं गाहं घोसंति –

कालो गोयरचरिया थंडिल्ला वत्थपत्तपडिलेहा ।
संभरऊ सो साहू जस्सवि जं किंचि अणुवउत्तं ॥

तओ अहारायणियाए साहू वंदित्ता, तहा देवसियपडिक्कमणमारभंति, जहा चेइयवंदणाणंतरं अद्धनिवुड्डे सूरिए सामाइयसुत्तं कड्ढंति । सावया पुण वावारवाहुल्लेण अत्थमिए वि पडिक्कमंति । तहा साहुणो रयणीचरमजामे जागरिय, सत्तट्ठ नवकारे भणिय, इरियं पडिक्कमिय, कुसुमिण-दुस्सिमिणुस्सग्गे उज्जोयचउक्कं चिंतिय, सक्कत्थएण चेइए वंदिय, मुहपोत्तिं पडिलेहिय, खमासमणदुगेण सज्झायं संदिसाविय, नवकारं सामाइयं च तिक्खुत्तो कड्ढिय, अहारायणियाए साहू वंदिय, सज्झायं काउं, पडिक्कमणाणंतरं मुहपोत्ती–रयहरण–निसिज्जा–दुगचोलपट्ट–कप्पतिग–संथारुत्तरपट्टेसु पडिलेहिएसु जहा सूरो उट्ठेइ तहा वेलं तुलित्ता राइयं पडिक्कमंति । तहा चेइयवंदणाणंतरं साहुणो खमासमणदुगेण 'बहुवेलं संदिसावेमि, बहुवेलं करेमि' त्ति भणित्ता, आयरियाई वंदंति । सावया पुण बहुवेलं न संदिसावेयंति अपोसहिया । तहा साहुणो 'आयरियउवज्झाए' इच्चाइगाहातिगं न भणंति । पडिक्कमणसुत्तं च साहूणं 'चत्तारिमंगल'मिच्चाइ । सावयाणं तु 'वंदित्तु सव्वसिद्धे' इच्चाइ । तहा पक्खिए पज्जंतियखामणाणंतरं चउसु छोभवंदणएसु साहुणो भूनिहित्तसिरा 'पियं च मे जं मे' इच्चाइदंडगे भणंति । सावया पुण तिन्नि तिन्नि नवकारे पढंति । पढमे छोभवंदणए 'साहूहिं समं'; वीए 'अहमवि चेइयाइं वंदे'; तइए 'गच्छस्स संतियं'; चउत्थे 'नित्थारपारगा होह'त्ति जहक्कमं गुरुवयणाइं । पक्खियसुत्तं च साहूणं 'तित्थं करेइ तित्थे' इच्चाइ । सावयाणं पुण पडिक्कमणसुत्तमेव । तहा साहुणो खुद्दोवद्दवकाउस्सग्गाणंतरं पक्खिए चाउम्मासिए वा 'असज्झाइय अणाउत्तओहडावणियं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थूससिएण' मिच्चाइ भणिय, चउगुणं पंचवीसुस्सासं काउस्सग्गं कुणंति । सावया न कुणंति ।

§ ३०. संपयं उवओगं विणा न भत्तपाणविहरणं ति उवओगविही भण्णइ—तत्थ सूरिए उग्गए पमज्जियाए वसहीए गुरुणो पुरओ आयरिय–उवज्झाय–वायणायरिया पंगुरिया, सेसा कडिपट्टमित्तावरणा पढमे खमासमणे 'सज्झायं संदिसावेमि' त्ति; बीए 'सज्झायं करेमि' त्ति भणिय, जाणूवरि धरियरयहरणा मुहपोत्तिया-थइयवयणा 'धम्मो मंगलाइ' सत्तरससिलोगे थेरावलियं वा सज्झायं सुत्तपोरिसि-आयारसच्चवणत्थं करित्ता, खमासमणं दाउं 'उवओगं संदिसावेमि'त्ति; बीए 'उवओगं करेमि'त्ति भणिय, उट्ठित्तु 'उवओगस्स कारावणियं करेमि काउस्सग्गं'ति दंडगं भणिय, काउस्सग्गं करिय, नवकारं चिंतेति । गुरुणो पुण नवकारं चिंतित्ता वारतिगं मंतं सुमरंति । सो य इमो–

अउम् नअ मुओ भअ गअ वअ तइ कआ मए शवअ रइ अ ननअम् पऊ इणअम् भअ वअ तउ सवआ हआ ।

तओ नमोक्कारेण गुरुणा पारिए काउस्सग्गे, साहुणो पारित्ता पंचमंगलं भणंति । तओ जिट्ठो ओणयकाओ भणइ–'इच्छाकारेण संदिसह' । इत्यंतरे गुरुनिमित्तोवउत्तो भणइ 'लाभु' त्ति पुणो जिट्ठो ओणयतरकाओ भणइ–'कह लेसहं' । गुरू भणइ 'तह'त्ति । जहा पुव्वसाहूहिं गहियं तहा घित्तव्वमित्यर्थः । तओ इत्थं आवसियाए जस्स वि जोगो त्ति भणिऊण जहारायणियाए साहुणो वंदंति ।

॥ उवओगविही समत्तो ॥ १८ ॥

§ ३१. कए य उवओगे सो नवदिक्खिओ सोम-सणिवज्जिय पसत्थदिणे, चित्ता–अणुराहा–रेवई–मियसिर–रोहिणि–तिउत्तरा–साइ–पुणव्वसु–स्सवण–धणिट्ठा–सयभिस–हत्थ–स्सिणि–पुस्स–अभीइरिक्खेसु अहिणवपत्ताबंध उग्गाहिय कयवासक्खेवपत्तो मह्सवपुव्वं गोयरचरियाए गीअत्थसाहुसहिओ भिक्खालाभं जाव भूमिअट्ठवियदंडगो वच्चइ । तओ उच्च-नीय-मज्झिमकुलेसु एसियं[1] वेसियं[2] गवेसियं[3] फासुयं घयाइ-[4] भिक्खमादाय पडिनियत्तो–'निसीही ३, नमो खमासमणाणं गोयमाईणं महामुणीणं' ति भणिय उवस्सए पविसइ । तओ गुरुपुरओ खमासमणपुव्वं इरियं पडिक्कमिय, काउस्सग्गे जं जहा गहियं तं तहा चिंतिय, नमोक्कारेण पारित्ता, गमणागमणं आलोइत्ता, कविया–करोडिया–चट्टुयाइणा इत्थीओ पुरिसाओ वा जं जहा गहियं भत्तपाणं तं तहा आलोइत्ता । तओ 'दुरालोइय-दुपडिक्कंतस्स इच्छामि पडिक्कमिउं गोयरचरियाए भिक्खायरियाए'...इच्चाइ जाव...जं उग्गमेण उप्पायणेसणाए अपरिसुद्धं पडिग्गाहियं परिभुत्तं वा जं न परिट्ठवियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं । तस्सुत्तरीकरणेणमिच्चाइ...जाव...वोसिरामि त्ति पढिय, काउस्सग्गे य–

अहो जिणेहिऽसावज्जा, वित्ती साहूण देसिया ।
मोक्खसाहणहेउस्स साहुदेहस्स धारणा ॥ १ ॥

इइ चिंतेइ । तओ नमोक्कारेण पारित्ता, चउवीसत्थयं भणित्ता, भत्तपाणं पारावियं, उवरिं अहे य पमज्जियाए भूमीए दंडगं ठाविय, देवे वंदित्ता जहन्नओ वि 'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं'मिच्चाइ सत्तरससिलोगे सज्झायं करित्ता, जहारायणियं जहारिहं दवाइ जेसिं न अट्ठो ते अणुन्नवित्ता, मुहपोत्तियाए मुहं पडिलेहित्ता, रयहरणेण पायमाणट्ठाणं च पमज्जिय, असुरसुरमिच्चाइविहिणा अरत्तदुट्ठो जेमेइ ।

॥ आइमअडणविही ॥ १९ ॥

*

---

१ एषणादोषविशुद्धं एषितं । २ वेषमात्रेण ग्रहणं तदनु ... अनुज्ञाप्य एषणागुण इत्यादि वचनत इति वेषितं ।
३ स्वयं कृत्वा अवलोकितं गवेषितं । ४ एतेनादौ पूर्वं निर्दोषं ... । इति A आदर्शे टिप्पनी ।

§ ३२. तत्तो य आवस्सगतवं कारिज्जइ। मंडलिसत्तगायंबिलाणि य। मंडलिसत्तगं च इमं —

सुत्ते[1] अत्थे[2] भोयण[3] काले[4] आवस्सए य[5] सज्झाए[6]।
संथारए[7] विय तहा सत्तेया मंडली होंती ॥ १ ॥

अन्ने पुणुवट्ठावियं चेव कारियायंबिलं मंडलीए पवेसंति, तं च जुत्तयरं। जओ भणियं —

अणुवट्ठावियासहं अकयविहाणं च मंडलीए उ।
जो परिभुंजइ सहसा सो गुत्तिविराहगो भणिओ ॥ २ ॥

तओ दसवेयालियतवं कारित्ता उट्ठावणा कीरइ। आवस्सय-दसवेयालियजोगविही उवरिं भण्णिही। तीए विही पुण इमो —

पढिए य कहिय अहिगय परिहर उवठावणाए सो कप्पो।
छक्कं तेहिं विसुद्धं परिहरनवएण भेएण ॥ ३ ॥

'धम्मो मंगलाइ—छज्जीवणियासुत्तं' पाढित्ता, तस्सेव अत्थं कहित्ता, पुढविकायाइजीवरक्खणविहिं जाणावित्ता, पाणाइवायविरमणाईणि वयाणि सभावणाइं साइयाराणि कहिय, पसत्थे तिहि—करणजोगे ओसरणे गुरू अप्पणो वामपासे सीसं ठावेऊण मुहपोत्तिं पडिलेहाविय, दुवालसावत्तवंदणयं दाविय भणइ — 'इच्छा-कारेण तुब्भे अम्हं पंचमहव्वयाणं राईभोयणवेरमणछट्ठाणमारोवणत्थं चेइयाइं वंदावेह'। गुरू भणइ —'वंदा-वेमो'। तओ सेहस्स वासक्खेवं काउं वड्ढमाणथुईहिं चेइए वंदिय, जाव थोत्तभणणं पणिहाणपज्जंतं। तओ सेहं खमासमणं दावित्ता, पंचमहव्वयसुत्तउच्चारावणत्थं सत्तावीसुस्सासं काउस्सग्गं कराविय, चउवीसत्थयं भाणित्ता, लोगुत्तमाण पाएसु वासे छुहित्ता, पंचमंगलं तिक्खुत्तो कड्ढित्ता, गुरुकुप्परेहिं पट्टं धरिय, वामहत्थ-अणामियाए मुहपोत्तिं लंबंतिं धरित्ता, गयग्गदंतोन्नएहिं करेहिं रयहरणं धारिय, तिक्खुत्तो पंचमहव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं उच्चारावेइ। जाव लग्गवेलाए 'इच्चेयाइं पंचमहव्वयाइं' इति आलावगं तिन्निवारे कड्ढेइ। गुरू वासक्खए अभिमंतेइ। तओ गुरू लोगुत्तमाण पाएसु वासे खिवइ। वासक्खए अभिमंतिए संघस्स देइ। तओ खमासमणं दाउं सीसो भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं पंचमहव्वयाइं राईभोयणवेरमण-छट्ठाइं आरोवेह'। गुरू भणइ—'आरोवेमि'। सीसो खमासमणं दाउं भणइ—'संदिसह किं भणामो'। गुरू भणइ—'वंदित्ता पवेयह'। पुणो खमासमणं दाउं भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भेहिं अम्हं पंचमहव्वयाइं राई-भोयणवेरमणछट्ठाइं आरोवियाइं?'। गुरू वासक्खेवपुव्वयं भणइ—'आरोवियाइं। ३ खमासमणाणं, हत्थेणं, सुत्तेणं, अत्थेणं, तदुभएणं, सम्मं धारणीयाणि, चिरंपालणीयाणि, नित्थारगपारगो होहि, गुरुगुणेहिं वड्ढाहिइ।' सीसो 'इच्छामो अणुसट्ठिं'ति भणित्ता, खमासमणं दाऊण भणइ—'तुम्हाणं पवेइयं, संदिसह साहूणं पवेएमि'। तओ खमासमणं दाउं नमोक्कारमुच्चरंतो पयाहिणं देइ वाराओ तिन्नि। संघो य तस्स सिरे वासअक्खय-निक्खेवं करेइ। तओ खमासमणं दाऊण भणइ—'तुम्हाणं पवेइयं, साहूणं पवेइयं, संदिसह काउस्सग्गं करेमि'। गुरू भणइ—'करेह'। खमासमणं दाऊण 'पंचमहव्वयाणं राईभोयणवेरमणछट्ठाणं आरोवणत्थं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थूससिएण'—मिच्चाइ पढिय, सागरवरगंभीरापज्जंतं उज्जोयगरं चिंतिय, पारित्ता उज्जोयगरं पढइ। तओ खमासमणपुव्वयं भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं पंचमहव्वयाणं राईभोयणवेरमण-छट्ठाणं थिरीकरणत्थं काउस्सग्गं करावेह'। गुरू भणइ—'करावेमो'। 'पंचमहव्वयाणं राईभोयणवेरमणछट्ठाणं थिरीकरणत्थं करेमि काउस्सग्गं' इच्चाइ भणिय, काउस्सग्गं करेइ। तत्थ सागरवरगंभीरापज्जंतं उज्जोयगरं चिंतिय, पारित्ता उज्जोयगरं पढइ। तओ खमासमणं दाउं भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं नामठवणं करेह'। गुरू भणइ—'करेमो'। तओ वासे खिवंतो जहोचियं नामं करेइ। तओ कयनामो सीसो सव्वे

साहुणो वंदइ । अज्जिया सावया सावियाओ वि तं वंदंति । पुणो खमासमणं दाउं भणइ–'इच्छाकारेण तुम्हे अम्हं दिसिबंधं करेह' । गुरू भणइ–'करेमो' । तओ सीसस्स आयरिओवज्झायरूवो दुविहो दिसिबंधो कीरए । जहा–चंदाइयं कुलं, कोडियाइओ गणो, वइराइया साहा, अप्पणिच्चया गुरुणो आयरिया उवज्झाया य । गच्छे य उवज्झायाभावे आयरिया चेव उवज्झाया । साहुणीए अमुगा पवत्तिणीय त्ति तिविहो । तम्मि दिणे जहासत्तीए आयामनिव्वियाइ तवो कारिज्जइ । तओ खमासमणपुव्वयं सीसो गुरुं भणइ–'तुब्भे अम्हं धम्मोवएसं देह' । पुणो खमासमणं दाउं जाणूहिं ठिओ सीसो सुणइ । गुरू य नायाधम्मकहा-अंग–पढमसुयक्खंध–सत्तमज्झयणस्स रोहिणीनायस्स अत्थओ वक्खाणं करेइ । सो वि संवेगाइसयओ तहा सुणेइ, जहा अन्नो वि को वि पव्वयइ । रोहिणीनायं पुण सुपसिद्धं । तस्स य अत्थोवणओ एवं–

§ ३३. जह सिट्ठी तह गुरुणो जह नाइजणो तहा समणसंघो ।
जह वहुया तह भव्वा जह सालिकणा तह वयाइं ॥ १ ॥
जह सा उज्झियनामा उज्झियसाली जहत्थमभिहाणा ।
पेसणगारित्तेणं असंखदुक्खक्खणी जाया ॥ २ ॥
तह भव्वो जो कोई संघसमक्खं गुरुविइन्नाइं ।
पडिवज्जिउं समुज्झइ महव्वयाइं महामोहो ॥ ३ ॥
सो इह चेव भवंमी जणाण धिक्कारभायणं होइ ।
परलोए उ दुहत्तो नाणाजोणीसु संचरइ ॥ ४ ॥
उक्तं च–धम्माउ भट्ठं सिरिओववेयं जन्नग्गिविज्झायमिवप्पतेयं ।
हीलंति णं दुव्विहियं कुसीला दाढोद्धियं घोरविसं व नागं ॥ ५ ॥
इहेव धम्मो अयसो अ कित्ती दुन्नामधिज्जं च पिहुज्जणंमि ।
चुअस्स धम्माउ अहम्मसेविणो संभिन्नचित्तस्स उ हिट्ठओ गई ॥ ६ ॥
जहवा सा भोगवई जहत्थनामोवभुत्तसालिकणा ।
पेसणविसेसकारित्तणेण पत्ता दुहं चेव ॥ ७ ॥
तह जो महव्वयाइं उवभुंजइ जीविय त्ति पालिंतो ।
आहाराइसु सत्तो चत्तो सिवसाहणिच्छाए ॥ ८ ॥
सो इत्थ जहिच्छाए पावइ आहारमाइ लिंगि त्ति ।
विउसाण नाइपुज्जो परलोगम्मी दुही चेव ॥ ९ ॥
जहवा रक्खियवहुया रक्खियसालीकणा जहत्थक्खा ।
परिजणमन्ना जाया भोगसुहाइं च संपत्ता ॥ १० ॥
तह जो जीवो सम्मं पडिवज्जित्ता महव्वए पंच ।
पालेइ निरइयारे पमायलेसं पि वज्जंतो ॥ ११ ॥
सो अप्पहिइक्करुई इहलोयंमि वि विऊहिं पणयपओ ।
एगंतसुही जायइ परंमि मोक्खं पि पावेइ ॥ १२ ॥
जह रोहिणी उ सुण्हा रोवियसाली जहत्थमभिहाणा ।
वड्ढित्ता सालिकणे पत्ता सव्वस्स सामित्तं ॥ १३ ॥

तह जो भव्वो पाविय वयाइं पालेइ अप्पणा सम्मं।
अन्नेसि वि भव्वाणं देइ अणेगेसि हियहेउं ॥ १४ ॥
सो इह संघपहाणो जुगप्पहाणो त्ति लहइ संसद्दं।
अप्पपरेसिं कल्लाणकारओ गोयमपहु व्व ॥ १५ ॥
तित्थस्स वुड्ढिकारी अक्खेवणओ कुतित्थियाईण।
विउसनरसेवियकमो कमेण सिद्धिं पि पावेइ ॥ १६ ॥

उट्ठावणा जहन्नओ सत्तराइंदिएहिं, सा पुण पुव्वोवट्ठावियपुराणस्स कीरइ। मज्झिमओ चउहिं मासेहिं, सा य अणहिज्जओ मंदसद्धस्स य। उक्कोसओ छम्मासेहिं, सा य दुम्मेहस्स। असद्दहओ य रुगाइकारणे य अइरित्तेणावि कालेण कीरइ त्ति ॥

॥ उट्ठावणाविही समत्तो ॥ २० ॥

§ ३४. उट्ठाविएण य सुयमहिज्झियव्वं। सुयाहिज्झणं[1] च न जोगवहणमंतरेण त्ति संपयं जोगविही भण्णइ—तत्थ पढमं ताव जोगवाहीहिं एवं भूएहिं होयव्वं।

पियधम्मा सुविणीया लज्जालुइया तहा महासत्ता।
उज्जुत्ता य विरत्ता दढधम्मा सुट्ठियचरित्ता ॥ १ ॥
जियकोह-माण-माया जियलोहा जियपरीसहा निरुया।
मण-वयण-कायगुत्ता एरिसया जोगवाहीओ ॥ २ ॥
थोवोवहिओवगरणा निद्दजयाहारजयपहाणा य।
आलोयणसलिलेणं पक्खालियपावमलपडला ॥ ३ ॥
कयकप्पतिप्पकिरिया सन्निहिचाई गुरूण आणरया।
अणगाढजोगिणो विहु अगाढजोगी विसेसेण ॥ ४ ॥

तत्थ पसत्थे दिणे अमियजोग-सिद्धिजोग-रविजोगाइगुणगणोवेए मिगसिराइनाणनक्खत्तजुत्ते मच्चुजोगवज्जपायाइदोसलेसादूसिए संझागय-रविगय-विड्डेर-सग्गहविलंवि-राहुहय-गहभिन्ननक्खत्तवत्ते सुभेसु सुमिणसउणनिमित्तेसु दिणपढमपोरिसीए चेव अंगसुयक्खंधाणं उद्देस-समुद्देसाणुन्नाओ कीरंति। नो पच्छिमपोरिसीए राईए वा। अज्झयणुद्देसाइयं राईए वि कीरइ।

§ ३५. तहा जोगा दुविहा-गणिजोगा, वाहिरजोगा य। तत्थ गणिजोगा आगाढा चेव। आगाढा नाम जेसु सव्वसमत्तीए उत्तरीज्जइ। इयरे आगाढा अणागाढा य। तत्थ उत्तरज्झयणसत्तिक्कय पण्हावागरण-महानिसीहाणि आगाढा। आवस्सगाई अणागाढा असमत्तीए वि उत्तरिज्जइ त्ति काउं। अन्ने दिणचउक्काणंतरमुत्तरिज्जइ त्ति भणंति। तहा उक्कालिया कालिया य। तत्थुक्कालिएसु जोगुक्खेवो कीरइ न संघट्टं। केसिंचि मएण न जोगुक्खेवो न संघट्टं। कालिएसु जोगुक्खेवो संघट्टं च। केसु वि आउत्तवाणयं च। एयविहाणं परथावे भणिही।

§ ३६. तहा कालिएसु कालग्गहणाइयं च होइ। कालग्गहणं च अणज्झाए न विहेयव्वं ति पुव्वमणज्झयणविही भण्णइ। तत्थ गब्भमासेसु कत्तिय-मग्गसिराइसु महियाए पडंतीए रए वा जाव पडइ ताव असज्झाओ। जओ महिया पडणसमकालमेव सव्वं आउक्कायभावियं करेइ। अओ तक्कालसममेव सव्वचिट्ठाओ निरुंभंति पाणिदयट्ठा। सचित्तो आरण्णो उद्धुओ आगओ रओ भण्णइ। वण्णओ ईसि आयंवो[1] दियंतेसु

1 B सुयमहिज्झणं। १ 'आताम्रो दिगन्तेषु' इति A टिप्पणी।

दीसइ । जइ आगासे गंधव्वनगरं विज्जु उक्का दिसदाहो वा तो असज्झाओ । जाव एयाणि वट्टंति । थक्केसु वि एगा पोरसी हवइ । उक्कालक्खणं पडियाए वि पच्छओ रेहा, अहवा उज्जोओ हवइ । कणगो पुण तव्विरहिओ । तहिं वरिसाले सत्तहिं, सीयाले पंचहिं, उण्हयाले तिहिं पहरमित्तमसज्झाओ हवइ । गज्जिए पुण पहरदुगं । तहा आसाढचाउम्मासियपडिक्कमणानंतरं पडिवया जाव असज्झाओ । बीयाए सुज्झइ । एवं कत्तिय-चाउम्मासिए वि । आसोयसुक्कपक्खपंचमीपहरदुगाओ आरब्भ बारसदिणाणि, जाव पडिवया ताव असज्झाओ, बीयाए सुज्झइ । एवं चित्तमाससुक्कपक्खे वि; नवरमेगारसीए आरब्भ जाव पुन्निमा दिणतिगं अचित्तरजओ-हडावणियं काउस्सग्गो कीरइ । लोगस्सुज्जोयगरचउक्कं चिंतिज्जइ । अह न सुमरियं तो बारसी-तेरसीओ वि आरब्भ कीरइ । अह तेरसीए वि न सुमरियं तो संवच्छरं जाव धूलीए पडंतीए असज्झाओ होइ । दोण्हं राईणं कलहे, मेच्छाइभए, आलयासन्ने, इत्थीणं पुरिसाणं वा जुज्झे, फग्गुणे धूलिकीलाए य जाव एयाणि वट्टंति, ताव असज्झाओ । दंडिए पंचत्तं गए जाव अन्नो न हवइ ताव असज्झाओ । ठविए वि जाव न समंजसं ति । नयरपहाणपुरिसे अहोरत्तमसज्झाओ । आलयाओ सत्तघरमज्झे पसिद्धे पंचत्तं गए अहोरत्तमसज्झाओ । अणाहपुरिसे पुण जत्तियावेला मडयं चिट्ठइ । एवं तिरिए वि नीणिए सुज्झइ । तिरियाणं रुहिरे पडिए, अंडए फुट्टिए, गोणीए य पसूयाए, जराउपडणे, पहरतियं असज्झाओ हवइ । माणुसरुहिरे पडिए, उद्धरिए वि अहोरत्तं । जइ महईए वुट्टीए धोयं तो तव्वेलाए वि सुज्झइ । अह रयणीए घडियामेत्ताए वि चिट्ठंतीए पडियं उद्धरियं च तो अहोरत्तछेओ त्ति सूरुग्गमे सुज्झइ । माणुसहड्डे बारस संवच्छराणि असज्झाओ । अह दंता वा दाढा वा पडिया, पयत्तेण पलोइया वि न लद्धा, तो ओहडावणिज्ज-काउस्सग्गो कीरइ । नवकारो चिंतिज्जइ भणिज्जइ य । जइ मूसगं बिराली गहिऊण जीवंतं नेइ तो न असज्झाओ; अह विणासिऊण नेइ तो अहोरत्तमसज्झाओ । तिरियाणमवयवा रुहिरं च सट्ठिहत्थमज्झे असज्झायं कुणंति । माणुस्साणं पुण हत्थसयमज्झे, जइ न अंतरे सगडस्स उभयदिसिगामिणी वत्तणी । हत्थसयमज्झे इत्थीए पसूयाए जइ कप्पट्टगो[1] तो सत्तदिणाणि असज्झाओ, अह कप्पट्ठिया[2] तो अट्ठदिणाणि । रत्तुक्कडा इत्थिय त्ति — इत्थीए मासे मासे रिउरुहिरं पडइ, जइ जाणिज्जइ तो तिन्नि दिणाणि असज्झाओ कीरइ । अह पवाहि-यारोगाओ उवरिं पि पवहइ, ता असज्झायओहडावणत्थं काउसग्गो कीरइ । अद्दाइनक्खत्तदसगे आइच्चेण संगए विज्जु-गज्जियं पि सज्झायं न उवहणइ । तारगादंसणमवि जाव साइनक्खत्ते आइच्चगमणं होइ । सेसकाले उण अवस्सं तारगतिगदंसणे सुज्झइ । अह केसिं पि साहूणं तहाविहं नक्खत्तपरिण्णाणं न हवइ, तओ आसाढ-चउम्मासाओ कत्तियचउम्मासं जाव विज्जु-गज्जिएसु वि न असज्झाओ होइ । उक्का सयावि उवहणइ । तहा धडहडे भूमिकंपे य संजाए अट्ठपहरा असज्झाओ होइ । जत्तियावेलाए संजाओ बीयदिणे तत्तियाए वेलाए परओ सुज्झइ । ससद्दो धडहडो, सद्दरहिओ भूमिकंपो । पलीवणे य संजाए जाव तं वट्टइ ताव असज्झाओ ।

संपयं चंदसूरगहणअसज्झाओ भण्णइ — चंदे गहिए उक्कोसेण बारस पहरा असज्झाओ । कहं ? — उप्पायगहणे चंदो उग्गमंतो चेव गहिओ, गहिओ चेव सव्वराई पज्जंते अत्थमिओ । एए रयणीए चत्तारि पहरा, अन्नं च अहोरत्तं, एवं दुवालस पहरा असज्झाओ । अहवा अन्नहा दुवालस पहरा । को त्ति साहू अयाणओ न जाणइ कित्तियाए वेलाए गहणं, इत्तियं पुण जाणइ जहा अज्ज पुण्णिमाराईए गहणं भवि-स्सइ । अब्भच्छन्नत्तेण य गहणदंसणाभावाओ चत्तारि वि पहरा परिहरिया । पभायसमये अब्भविगमे सगहो अत्थमंतो दिट्ठो तओ एए रयणितणया चत्तारि पहरा अन्नं च अहोरत्तं । एवं दुवालस । जहन्नेणं पुण अट्ठ । पुण्णिमारयणीपज्जंते चंदो गहिओ, तहट्ठिओ चेव अत्थमिओ; तओ अहोरत्तं परिहरिज्जइ । एवं अट्ठ । एयाणं मज्झे मज्झिमो । सग्गहनिवुड्डे एवं । जइ पुण राईए गहिओ, राईए चेव घडियाए सेसाए विमुक्को तो तीए

१ 'पुत्रः' इति A टिप्पणी । २ 'पुत्री' इति A टिप्पणी ।

चेव राईए सेसं परिहरिज्जइ। सूरे उग्गए सज्झाओ हवइ। आइच्चगहणे पुण उक्कोसेण सोलसपहरा असज्झाओ। कहं?—उप्पायगहणे उग्गमंतो चेव गहिओ, सव्वं दिणं ठाऊण गहिओ चेव अत्थमिओ। तओ एए चत्तारि दिणपहरा, चत्तारि राईपहरा, अन्नं च अहोरत्तं—एवं सोलस। अहवा अब्भच्छन्ने साहू न याणइ केवइवेलाए गहणं भविस्सइ; तहाविहपरिण्णाणाभावाओ। तओ तं दिवसं सूरुग्गमाओ आरब्भ परिहरियं। अत्थमणसमए गहिओ अत्थमंतो दिट्ठो, तओ सा राई य परिहरिया; अन्नं च अहोरत्तं—एवं सोलस। जहन्नेणं पुण वारस। कहं?—अत्थमंतो आइच्चो गहिओ, तह चेव अत्थमिओ, तओ आगामिराइतणया चत्तारि पहरा अन्नं च अहोरत्तं—एवं वारस। सोलस-वारसण्हमंतराले मज्झिमो असज्झाओ। सग्गहनिवुड्डे एवं। जइ पुण दिणमज्झे गहिओ मुक्को य, तो गहणाओ आरब्भ अहोरत्तं परिहरिज्जइ।

जदाह—उक्कोसेण दुवालस चंदो जहन्नेण पोरिसी अट्ठ।
सूरो जहन्नवारस पोरसि उक्कोस दो अट्ठ॥ १॥
सग्गहनिवुड्ड एवं सूराई जेण होंत ऽहोरत्ता।
आइन्नं दिणमुक्को सो च्चिय दिवसो य राई य॥ २॥

संपयं वुट्ठीअसज्झाओ—वारसखु वि मासेखु वुब्बुयवरिसे अहोरत्ता उड्ढंपि जइ वरिसइ तो असज्झाओ, जाव वरिसइ। बुब्बुयवज्जवरिसे दोण्हमहोरत्ताणमुवरि जाव पडइ, ताव असज्झाओ। फुसियवरिसे सत्तण्हमहोरत्ताणमुवरि संतयं[1] पडंते जाव पडइ, ताव असज्झाओ, न परओ। अणुदिए सूरे, मज्झन्ने अत्थमणे अड्ढरत्ते य त्ति चउसु संझासु असज्झाओ। सुक्कपक्खस्स पडिवयं वीयं वा आरब्भ दिणतिगं जूवओ तत्थ वाघाइयकालो न घिप्पइ। एवं पक्खियदिणे वि।

॥ अणज्झायविही समत्तो॥ २१॥

§ ३७. अह कालग्गहणविही—तत्थ सामन्नेण कालो दुविहो—वाघाइओ अवाघाइओ य। तत्थ जो वाघाइओ सो घंघसालाए घेप्पइ, जो उण अवाघाइओ सो मज्झे वाहिरे वा। जइ मज्झे घिप्पइ तो नियमा सोहगो ठावेयव्वो। अह बाहिरे, तो ठाविज्जइ वा नवा। दंडधरो चेव सोहइ। विसेसो, जहा—चत्तारि काला। तं जहा—पाओसिओ वाघाइओ वा १. अड्ढरत्तिओ २. वेरत्तिओ ३. पाभाइओ ४। तत्थ पाओसिओ पओसवेलाए घेप्पइ। तीए य वेलाए छीयकलयलाइ अणेगे वाघाया होंति। अओ घंघसालाए घेप्पइ। अओ चेव पाओसिओ वाघाइओ भण्णइ १। अड्ढरत्तिओ अड्ढरत्तुवरिं घेप्पइ २। वेरत्तिय-पाभाइया चउत्थपहरे घिप्पंति। पाओसिय-अड्ढरत्तिएसु नियमा उत्तरदिसाए कालग्गहणं पुव्वं कायव्वं। वेरत्तिए भयणा उत्तरा वा पुव्वा वा। पाभाइए पुव्वा चेव। कालं गेण्हमाणस्स वाणारियस्स दंडधरस्स वा वच्चंतस्स कालुउस्सग्गे वा वंदणाणंतरं संदिसावण-पवेयणसमए वा जइ छीय—खलिय—जोइ—निग्घाय—विज्जुक्क—गज्जियाईणि भवंति तओ चउरो वि हम्मंति। पाओसिय—अड्ढरत्तिय—वेरत्तिया जइ उवहया तो उवहया चेव। पाओसिओ एगं वारं घिप्पइ न सुद्धो तो उवहम्मइ। अड्ढरत्तिओ दो तिन्नि वारा, वेरत्तिओ चत्तारि पंच वा, पाभाइओ नव वारेत्ति। अओ चेव पाभाइए असुद्धे योगवाहीणं जाव काला न पुज्जंति ताव दिणं गलइ त्ति। एवं पि पवाओ सुवइ त्ति—पाभाइओ उण पुणो पुणो नियत्तिय घेप्पइ नववेला जाव। इमिणा विहिणा जइ संदिसावणापुव्विं भज्जइ तो मूलाओ घेप्पइ; अह संदिसावणाणंतरं वच्चंतस्स कालमंडलस्स पडिलेहणाए पुव्वं वा भज्जइ, तो एवमेव नियत्तिऊण कालगेण्हगो ठवणायरियसमीवे खमासमणपुव्वं संदिसाविऊण विहिणा कालमंडले आगच्छइ। अह कालपडिलेहणाणंतरं कालकाउस्सग्गो, कालकाउस्सग्गाणंतरं कालमंडले ठियस्स, तो तत्थेव ठिओ ठवणायरियसंमुहं ठाऊण खमासमणपुव्वं संदिसाविऊण पुणो मूलाओ

1 B सव्व°। 2 A °राईए तणया। † सन्ततं।

काउस्सग्गं करेइ । अह कालकाउस्सग्गाणंतरं गच्छंतस्स पवेयणसमए वा भज्जइ तो मूलओ गच्छेइ । एगम्मि कालमंडले जइ तिन्नि वेला भज्जइ तो तम्मि गहणं न कप्पइ । अओ दुइए कालमंडले इमाए विहीए मूलाओ घेप्पइ । तम्मि वि तिन्नि वेला; एवं तइए वि । अहवा अन्नम्मि कालमंडले जइ गेण्हिउं न जाइ तो एगंमि चेव नववेला घेप्पइ । तदुवरि न कप्पइ ।

§ ३८. अहुणा विसेसेण कालग्गहणविही भण्णइ — तत्थ पाभाइयस्स ताव जहा पच्छिमदिसि ठवणायरियं ठविता, दंडगं च तस्स समीवे धरिय कालग्गाही वामपासट्ठियदंडधरसमेओ कालमंडले ठाउं नमोक्कारं भणइ । तओ दोवि आवस्सियं काऊण, असज्ज ३. निसीही ३. नमो खमासमणाणं ति भणंता ठवणायरियमंडले गंतूण खमासमणं दाउं भणंति — 'इच्छाकारेण संदिसह पाभाइउ कालु पडियरहं; इच्छं मत्थएण वंदामि' आवस्सी असज्ज ३. निसीही ३. नमो खमासमणाणं ति भणिय कालमंडलसगासे दोवि ठंति । तओ दंडधरो दिसालोयं करिय, आवस्सियाइ पुव्वोत्तं भणंतो ठवणायरियमंडलमागम्म, इरियं पडिक्कमिय, अट्ठुस्सासं काउस्सग्गं करित्ता, नमोक्कारं भणइ । तओ मुहपोत्तिं पडिलेहिय, दुवालसावत्तवंदणं दाऊण, खमासमणपुव्वं 'इच्छाकारेण पाभाइयकालवेला वट्टइ, साहुणो उवउत्ता होह त्ति' भणिय, दंडं गिण्हिय, आवस्सियाइं कुणंतो कालग्गाहि-समीवमागम्म पच्छिमामुहो चिट्ठइ । तओ कालग्गाही आवस्सिई असज्ज ३. निसीही ३. नमो खमासमणाणं ति भणंतो ठवणायरियमंडले गंतूण, इरियं पडिक्कमिय, अट्ठुसासुस्सग्गं करिय, पारिय, पंचमंगलं भणिय, मुहपोत्तिं पडिलेहिय, दुवालसावत्तवंदणं दाऊण, खमासमणदुगेण भणइ — 'पाभाइउ कालु संदिसावहं, पाभाइउ कालु लेहं ।' जउ सुद्धु, तउ मोणेणं आवस्सी असज्ज ३. निसीही ३. नमो खमासमणाणं ति भणंतो काल-मंडले जाइ । तदागमणे दंडधरो हत्थसंठियं दंडं तस्संमुहं ठवेइ । तओ कालग्गाही तयग्गे उद्धट्ठिओ इरियं पडिक्कमिय, अट्ठुस्सासमुस्सग्गं करिय पारिय, नमोक्कारं भणिय, संडासगे पडिलेहिय, उवविसिय, पुत्ति-तिगपडिलेहणेण अक्खलियाइविहिणा रयहरणेण वारतिगं कालमंडलं पडिलेहेइ । इत्थ कालमंडलकरणे उव-ओगहत्थपरावत्ताइविही गुरुमुहाओ सिक्खियव्वो । न लिहिउं पारिज्जइ । तओ दंडयं नमोक्कारपुव्वं दंडधर-करे समप्पेइ । अणंतरं पाए हत्थेसु लाएयंतो निसीही नमोखमासमणाणं ति भणंतो, कालमंडले पविसिय, चोलपट्टं वेढयाअंतो पडिलेहिय, उद्धो होऊण भणइ — 'उवउत्ता होह । पाभाइयकाललियावणियं करेमि-काउस्सग्गं, अन्नत्थूससिएणमिच्चाइ' जावअट्ठुस्सासं काउस्सग्गं उद्धट्ठिय दंडधरधरिय दंडग्गे करिय पारित्ता सणियं बाहाओ समाहट्टु रयहरणसणाहं मुहपोत्तियं मुहे दाउं, जोडियकरसंपुडो चउवीसत्थयं भणिय, दुमपुप्फिय - सामन्नपुव्वियअज्झयणे तइयअज्झयणसिलोगं च चिंतेइ । णवरं अज्झयणसमत्तिआलावगे न उच्चारेइ । उच्चारणे कालवहो । एवं पुव्वाए चिंतिय, दाहिणाए पच्छिमाए उत्तराए य सिलोग १७ चिंतेइ । दंडधरो वि जत्थ जत्थ सो पडिदिसं पाए ठाविस्सइ, तत्थ तत्थ रयहरणेण अग्गं पडिलेहेइ । पुणो पुव्व-दिसाए बाहाओ अवलंबिय, नमुक्कारं चिंतिय, पारित्ता नमोक्कारं कड्ढित्ता, 'मत्थएण वंदामि आवस्सिई असज्ज ३. निसीही ३. नमो खमासमणाणं' ति भणंतो, ठवणायरियमंडलसमीवे पविसिय, खमासमणपुव्वं इरियं पडि-क्कमइ । काउस्सग्गे नमुक्कारं चिंतिय पारित्ता भणित्ता य, खमासमणमुहपोत्तिपुव्वं वंदणं दाऊण — 'इच्छाकारेण संदिसह पाभाइउ काल पवेयहं । इच्छाकारि तपसियहु पाभाइउ कालु सूझइ' । सव्वे भणंति सूझति त्ति । तओ दोवि जाणुट्ठिया दुमपुप्फियज्झयणेण सज्झायं करेंति । तओ कालग्गाही दुवालसावत्तवंदणं दाउं भणइ 'इच्छकारि तपसियहु दिट्ठं सुयं ?' । सव्वे भणंति न किंचि । एवं वाघाइय-अड्ढरत्तिय-वेरत्तिया वि तव्वय-णाभिलावेण घिप्पंति । नवरं पाभाइयकालो पभाए वसहिपवेयणाणंतरं पवेइज्जइ । सेसा गहणाणंतरं चेव पवेइज्जंति । तहा पाभाइयकालो अवरण्हे पडिलेहणाए कयाए सज्झायं पट्ठविय, कालमंडलाइं दुक्खुत्तो काउं, पच्चक्खाणं वंदणं दाऊण, सज्झायपडिक्कमणाणंतरं च पडिक्कमिज्जइ । अन्नसंघाडाइसु उदुबद्धे गच्छि-

माइभया कयाइ उद्देसाइकिरियाए अणंतरं सज्झायं पट्ठाविय, कालमंडलाइं दुक्खुत्तो काऊण, सज्झायं पडिक्कमिय, पउणपहरमज्झे वि पडिक्कमिज्जइ। सेसा पुण उद्देसाइ किरियाणंतरं चेव पडिक्कमिज्जंति। जाव कालो न पडिक्कंतो ताव गज्जिमाईहिं उवघाओ। उद्देसाइसु कप्पेसु खमासमणदुगेण 'सज्झाउ पडिक्कमहं, सज्झायपडिक्कमणत्थु काउसग्गु करेहं' इति भणिय, मोणेण अन्नत्थूससिएणमिच्चाइ पढित्ता, अट्ठुस्सासं काउस्सग्गं करिय, पारित्ता, नमोक्कारं भणंति। एवं कालो वि पाभाइयाइअभिलावेण पडिक्कमियव्वो। एयं पसंगओ भणियं।

§ ३९. एवं सुद्धे पाभाइए काले पडिक्कमणं काउं, पडिलेहणं अंगपडिलेहणं च काउं, वसहिं पमज्जिय, सोहित्ता य हड्डाई परिट्ठविय, वायणायरियअग्गओ इरियं पडिकमिय, पुत्तिं पडिलेहित्ता, वसहिं पवेयंति। 'इच्छकारि तपसियहु वसति सूझइ'। जो वसहिं सोहिउं सह गओ सो भणइ सुज्झइ त्ति। तओ कालग्गाही एवं चेव कालं पवेएइ। नवरं इत्थ दंडधरो सूझइ त्ति भणइ। तओ वायणायरिओ वामपासट्ठिओ सीसो य ठवणायरिअग्गओ सज्झायं पट्ठवेति। जहा मुहपोत्तिं पडिलेहिय बारसावत्तवंदणं दाउं, खमासमणदुगेण भणंति– 'इच्छाकारेण संदिसह सज्झाउ संदिसावहं, सज्झाउ पाठविसहं'। जउ सुद्धु तउ मोणेण–'सज्झाय पट्ठवणत्थं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थूससिएण'मिच्चाइ भणिय, अट्ठुस्सासं काउस्सग्गं वेइयामज्झे काउं पारिय, चउवीसत्थयं सत्तरससिलोगे य पढित्ता, पुणो ओलंबियबाहू नवकारं चिंतिय, भणिय, उवविसिय, वेइयामज्झे दाहिणपासट्ठियरयहरणे वंदणयं दाउं, खमासमणेण भणंति–'इच्छाकारेण संदिसह सज्झाउ पवेयहं'। पुणो खमासमणं 'इच्छाकारि तपसियहु सज्झाउ सूझइ?'। सव्वे भणंति सूझइ। तओ खमासमणदुगेण सज्झायं संदिसाविंति, कुणंति य 'धम्मोमंगलाइ'सिलोग ५। पुणो वायणारिओ निसिज्जाए सीसो पाउंछणे वासासु कट्ठासणे रयहरणं ठाविय, वंदणं दाउं भणंति–'इच्छाकारि तपसियहु दिट्ठं सुयं?'। सव्वे भणंति न किंचि। इत्थवि छीय-खलियाईयं कालगमणेण नेयव्वं।

॥ सज्झायपट्ठवणविही ॥ २२ ॥

§ ४०. एवं सुद्धे सज्झाए जोगवाहिणो वंदणं दाउं भणंति–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं जोगे उक्खिवेह।' गुरू भणइ 'उक्खेवामो'। पुणो वंदिय भणंति–'तुब्भे अम्हं जोगोक्खेवावणियं काउस्सग्गं करावेह'। गुरू भणइ 'करावेमो'। तओ जोगोक्खेवावणियं पणवीसुस्सासं अट्ठोस्सासं वा, मयंतरे सत्तावीसुस्सासं वा, काउस्सग्गं करेंति। पारित्ता चउवीसत्थयं भणंति। तओ सावयकयपूयाचेइयहरे वसहीए वा समोसरणे सुयक्खंधस्स अंगस्स वा उद्देसनिमित्तं अणुन्नानिमित्तं वा वासे सिरसि खिवावेंति। पुणो वंदिय भणंति– 'तुब्भे अम्हं अमुगसुयक्खंधाइ-उद्देसाइनिमित्तं चेइयाइं वंदावेह'। गुरू भणइ 'वंदावेमो'। तओ ते वामपासे काऊण वड्ढंतियाहिं थुईहिं गुरू चेइए वंदइ पुव्वविहीए, जाव थुत्तपणिहाणपज्जंतं। तओ पुत्तिं पडिलेहिय बारसावत्तवंदणं दाऊं नंदिकड्ढावणियं अट्ठुस्सासं काउस्सग्गं करेंति। पारित्ता नमोक्कारं पढंति। अन्नेसिं पुण सत्तावीसुस्सासं काउस्सग्गं काउं चउवीसत्थयं भणंति। तओ तेहिं खमासमणपुव्वं 'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं नंदिं सुणावेह'त्ति वुत्ते गुरू नमोक्कारतिगपुव्वं उद्देसत्थं अणुन्नत्थं वा नंदिं कड्ढइ।

जहा–नाणं पंचविहं पण्णत्तं। तं जहा–आभिणिबोहियनाणं, सुयनाणं, ओहिनाणं, मणपज्जवनाणं, केवलनाणं। तत्थ चत्तारि नाणाइं ठप्पाइं ठवणिज्जाइं, नो उद्दिसिज्जंति, नो समुद्दिसिज्जंति, नो अणुन्नविज्जंति। सुयनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ। जइ सुयनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ, किं अंगपविट्ठस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ? अंगबाहिरस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ?। अंगपविट्ठस्स वि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ, अंगबाहिरस्स वि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ। जइ अंगबाहिरस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा

अणुओगो पवत्तइ, किं आवस्सगस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ ?; आवस्सगवइरित्तस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ ? । आवस्सगस्स वि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ; आवस्सगवइरित्तस्स वि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ । जइ आवस्सगस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ; किं सामाइयस्स, चउवीसत्थयस्स, वंदणस्स, पडिक्कमणस्स, काउस्सगस्स, पच्चक्खाणस्स सव्वेसिं पि एएसिं उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ ? । जइ आवस्सगवइरित्तस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ, किं कालियस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ ?; उक्कालियस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ ? । कालियस्स वि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ; उक्कालियस्स वि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ । जइ उक्कालियस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ, किं दसवेयालियस्स, कप्पियाकप्पियस्स, चुल्लकप्पसुयस्स, महाकप्पसुयस्स, पमायप्पमायस्स, ओवाइयस्स, रायपसेणईयस्स, जीवाभिगमस्स, पण्णवणाए, महापण्णवणाए, नंदीए, अणुओगदाराणं देविंदत्थयस्स, तंदुलवेयालियस्स, चंदाविज्झयस्स, पोरिसीमंडलस्स, मंडलिपवेसस्स, गणिविज्जाए, विज्जाचरणविणिच्छियस्स, झाणविभत्तीए, मरणविभत्तीए, आयविसोहीए, मरणविसोहीए, ।[1] संलेहणासुयस्स, वीयरायसुयस्स, विहारकप्पस्स, चरणविहीए, आउरपच्चक्खाणस्स, महापच्चक्खाणस्स, सव्वेसिं पि एएसिं उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ । जइ कालियस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ; किं उत्तरज्झयणाणं, दसाणं, कप्पस्स, ववहारस्स, इसिभासियाणं, निसीहस्स, जंबुद्दीवपन्नत्तीए, चंदपन्नत्तीए, सूरपन्नत्तीए, दीवसागरपन्नत्तीए, खुड्डियाविमाणपविभत्तीए, महल्लियाविमाणपविभत्तीए, अंगचूलियाए, वग्गचूलियाए, विवाहचूलियाए, अरुणोववायस्स, गुरुलोववायस्स, धरणोववायस्स, वेलंधरोववायस्स, वेसमणोववायस्स, देविंदोववायस्स, उट्ठाणसुयस्स, समुट्ठाणसुयस्स, नागपरियावलियाणं, निरयावलियाणं, कप्पियाणं, कप्पवडिंसियाणं, पुप्फियाणं, पुप्फचूलियाणं, वण्हीदसाणं, आसीविसभावणाणं, दिट्ठिविसभावणाणं, चारणभावणाणं, महासुमिणगभावणाणं, तेयग्गनिसग्गाणं, सव्वेसिं पि एएसिं उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ । जइ अंगपविट्ठस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ, किं आयारस्स, सूयगडस्स, ठाणस्स, समवायस्स, विवाहपण्णत्तीए, नायाधम्मकहाणं, उवासगदसाणं, अंतगडदसाणं, अणुत्तरोववाइदसाणं, पण्हावागरणाणं, विवागसुयस्स दिट्ठिवायस्स। सव्वेसिं पि एएसिं उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ ।

इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च—इमस्स साहुस्स इमाइ साहुणीए वा अमुगस्स अंगस्स, सुयक्खंधस्स वा उद्देसनंदी अणुण्णानंदी वा पयट्टइ । तओ गंधाभिमंतणं तित्थयरपाएसु गंधक्खेवो अहासन्निहियाणं वासदाणं । तओ बारसावत्तवंदणयपुव्वं खमासमाणं दाउं भणंति—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं अंगं सुयक्खंधं वा उद्दिसह' । गुरू भणइ—'उद्दिसामो' । १ । पुणो वंदित्ता भणइ—'संदिसह किं भणामो' । गुरू भणइ—'वंदित्ता पवेयह' । २ । इच्छं भणित्ता; पुणो वंदित्ता भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भेहिं अम्हं सुयक्खंधाइ उद्दिट्ठं ?' । गुरू आह 'उद्दिट्ठं' । ३. खमासमणाणं । हत्थेणं, सुत्तेणं, अत्थेणं, तदुभयेणं । सम्मं जोगो कायव्वो' । सीसो भणइ—'इच्छामो अणुसट्ठिं' । ३ । पुणो वंदित्ता भणइ—'तुम्हाणं पवेइयं, संदिसह साहूणं पवेएमि' । गुरू आह—'पवेयह' । ४ । इच्छं ति भणिऊण वंदित्ता नमोक्कारं कड्ढितो पयाहिणं देइ । ५ । पुणो वि, एवं दुन्निवारे । तओ वंदित्ता—'तुम्हाणं पवेइयं, साहूणं

1 A संदेहणा° ।

पवेइयं, संदिसह काउस्सग्गं करावेह'। गुरू आह—'करावेमो'। ६। इच्छं भणित्ता, वंदित्ता, 'सुयक्खंधाइउद्दिसावणियं करेमि काउस्सग्गं...जाव...वोसिरामि'। सत्तावीसुस्सासं काउस्सग्गं काऊण पारित्ता, पुणो चउवीसत्थयं भणइ। एवं सव्वत्थ सत्त छोभा वंदणा भवंति। तओ उद्देस-अणुण्णानंदिथिरीकरणत्थं अट्ठुस्सासं काउस्सग्गं करिय नवकारं भणंति। सुयक्खंधस्स अंगस्स य उद्देसाणुन्नासु नंदी। एवं उद्देसे सम्मं जोगो कायव्वो। समुद्देसे थिरपरिचियं कायव्वं। अणुण्णाए सम्मं धारणीयं, चिरं पालणीयं, अन्नेसिं पि पवेणीयं। साहुणीणं तु अन्नेसिं पि पवेयणीयं ति न वत्तव्वं। उद्देसाणंतरं खमासमणदुगेण वायणं संदिसाविय तहेव वइसणं संदिसाविज्जइ। अणुण्णानंतरं वंदणयपुव्वं पवेयणे पवेइए। पढमदिणे असहस्स आयंविलं निरुद्धं ति वुच्चइ, सहस्स अब्भत्तट्ठं। बीयदिणे पारणयं निव्वीयं। तओ दोहिं दोहिं खमासमणेहिं बहुवेलं सज्झायं वइसणं च संदिसाविय, खमासमणदुगेण 'सज्झाउ पाठविसहं, सज्झायपाठवणत्थु काउस्सग्गु करिसहं। तहेव कालमंडला संदिसाविसहं, कालमंडला करिसहं'। तओ खमासमणतिगेण 'संघट्टउ संदिसाविसहं संघट्टउ पडिगाहिसहं, संघट्टपडिगाहणत्थु काउस्सग्गु करिसहं'। केसु वि आउत्तवाणयं च एमेव संदिसाविंति। तओ खमासमणदुगेण 'सज्झाउ पडिक्कमिसहं, सज्झायपडिक्कमणत्थु काउस्सग्गु करिसहं। तहेव पाभाइकालु पडिक्कमिसहं, पाभाइयकालपडिक्कमणत्थु काउस्सग्गु करिसहं'। ततो तववंदणयं दिंति। गुरुणा सुहतवो पुच्छियव्वो। तओ मुहपोत्ति पडिलेहिय, खमासमणतिगेण 'संघट्टउ संदिसावउं, संघट्टउ पडिगाहउं, संघट्टापडिगाहणत्थु काउस्सग्गु करउं। संघट्टापडिगाहणत्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थूससिएण'मिच्चाइ। नमोक्कारचिंतणं भणणं च। एवं आउत्तवाणयं पि घेप्पइ। पुणो खमासमणं दाउं 'त्रांबा त्रउया सीसा कांसा सूना रूपा हाड चाम रुहिर लोह नह दंत वाल [1]सूकीसान लादि[2] इच्चाइ ओहडावणियं करेमि काउस्सग्गं'। नवकारचिंतणं भणणं च।

§ ४१. जोगसमत्तीए जया उत्तरंति तया सिरसि गंधक्खेवपुव्वं वायणायरिओ योगनिक्खेवावणियं देवे वंदाविय, पुत्तिं पडिलेहाविय, वंदणं दाविय, पच्चक्खाणं कारिय, विगइलियावणियं अट्ठुस्सासं काउस्सग्गं कारेइ। अन्ने भणंति दुवालसावत्तवंदणं दाउं, खमासमणेण 'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं जोगे निक्खिवहं; बीए जोगनिक्खेवावणियं काउस्सग्गं करावेह'त्ति भणित्ता,—जोगनिक्खेवावणियं करेमि काउस्सग्गं। नवकारचिंतणं भणणं च। तओ 'जोगनिक्खेवावणियं चेइयाइं वंदावेह'त्ति खमासमणेण भणित्ता, सक्कत्थयं कहिंति। पुणो वंदणं दाउं, भणंति—'पवेयणं पवेयहं। पडिपुण्णा विगइ, पारणउं करहं'। गुरू भणइ—'करेह'त्ति। तओ विगईपच्चक्खाणं काउं, वंदिय गुरुणो पाए संवाहिय, जोगे वहंतेहिं अविही आसायणं च मण-वयण-काएहिं मिच्छादुक्कडेण खमाविय आहारायणियाए सव्वे वंदंति।

॥ जोगनिक्खेवणविही ॥ २३ ॥

§ ४२. राइयपडिक्कमणे जोगवाहिणो पइदिणं नवकारसहियं पच्चक्खंति। जोगारंभदिणादारब्भ छम्मासं जाव काला न उवहम्मंति, तत्तियाणि दिणाणि जाव संघट्टा कीरंति; उवरि न सुज्झंति। एस पगारो अणागाढेसु आयाराइसु नेओ। चित्तासोयसुद्धपक्खे वि आगाढा गणिजोगा न निक्खिप्पंति। कप्पतिप्पकिरिया य कीरइ। सज्झाओ पुण निक्खिप्पइ। छम्मासियकप्पो य वइसाह-कत्तियबहुलपाडिवयाउड्ढं उत्तारिज्जइ। अन्नं च रयणीए पढम-चरमजामेसु जागरणं बालवुड्ढाईणं सामन्नं। जोगिणा उण सव्ववेलं अप्पणिद्देण होयव्वं। विसेसओ दिवा हास-कंदप्प-विगहा-कलहरहिएण य होयव्वं। एगागिणा सया वि हत्थसया बाहिं न गंतव्वं; किमुय जोगवाहिणा। अह जाइ अणाभोगेणं आयामं से पच्छित्तं। जं च हत्थे भत्तं पाणं वा

1 'विष्ठा' टि°। 2 A. 'लाद'।

तं उवहम्मइ । आगाढजोगवाही सीवण-तुन्नण-पीसण-लेवणाइं न करेइ । उभयपोरिसीसु सुत्तत्थाइं परियट्टेइ । वहिज्जमाणसुयं मुत्तूण अपुव्वपढणं न करेइ । पुव्वपढियं न वीसारेइ । पत्ताइउवगरणं सया उववत्तो नियनियकाले पडिलेहेइ । अप्पसद्देण वयइ न दड्डरेण । कामकोहाइनिग्गहो कायव्वो । तहा कप्पइ भत्तं वा पाणं वा अब्भितरं संघट्टं, वेइयाहिं गयं न कप्पइ । [1]उग्गुडिओ तुयट्टो विगहाओ वा असंखडं व करेमाणो संघट्टेइ उस्संघट्टं, उग्गुडिओ भूमीए मेलइ । परिसाडिं वा भत्तपाणे छुहेइ । तिन्नि मायणाइं उवरिं ठवेइ । उवविट्टस्स उब्भो भत्तपाणं अप्पेइ । संघट्टे वा पयलाइ, उस्संघट्टं वलीसंघट्टं भत्तं पाणं च न कप्पइ । भत्तं पाणं वा मज्झपविट्ठकरंगुलिचउक्कगहियं तिप्पणय-तुंवगाइयं, मज्झपविट्ठकरंगुट्ठगहियं तुंवगाइपत्तं च न उस्संघट्टइ । एयविवरीयं उस्संघट्टइ । उग्गुडिओ भूमिट्ठियं संघट्टइ उस्संघट्टं[2] ।

§ ४३. संपयं गणिजोगविहाणे कप्पाकप्पविही भण्णइ – सा य जोगिपरिण्णेया जोगि-सावयपरिण्णेया य । तत्थ जोगिपरिण्णेया जहा – पिंडवायहिंडयसंघाडयछित्ते परोप्परं न उवहम्मइ । सीवण-तुन्नणाइयं वाणायरियाणुन्नाए करेइ । जोगवाहिणो सण्णा असज्झाइयं च रुहिराइ न उवहणइ । ओड्डी सण्णा[3] मणुय-साण-मज्जाराईणं, आमिसासीणं पक्खीणं च । अतिणभक्खिणो *तन्नयस्स य गय-हय-खराण य छिक्कासमाणी[4] उवहणइ, न सुक्का । उल्लं चम्मं हड्डं च । गोसाले अणुण्णाए वालुयकचम्मट्ठिसुक्कसन्नाओ वि न उवहणंति । तेसिं अणुवघायट्ठा पवेयणासमए काउस्सग्गो कीरइ । अट्ठंगुलाहियप्पमाणो दिट्ठो मोयणाइसु वालो उवहणइ । तहा गिहत्थीए वालए थणं पियंते सुक्के जइ थणे दुद्धं न दीसइ, तो कप्पियं होइ । एवं गोपमुहेसु वि । सन्निहि-आहाकम्म-मणुय-तिरियपंचिंदियसंघट्टे उवहम्मइ । लेवाडयपरिवासे पत्ते पत्तावंधे वा भत्तं पाणं च उवहम्मइ । आहाकम्मिओवहए पत्तगाइं चउकप्पाइं अन्नत्थ तिकप्पाइं । जइ कप्पिएणं भाणं हत्थाइकप्पिया तो उल्लेणावि हत्थभत्तएणं घिप्पइ । अह पुण [5]मूलमंडलियाणं पाणएणं ताहे सुक्केसु काउस्सग्गे कए घिप्पइ । [6]वायणायरियाणुण्णाए पढण-सुणण-वक्खाण-धम्मकहाओ कीरंति न समईए । परियट्टणं अणुप्पेहा य जहाजोगं कीरइ । पढमपोरिसिमज्झे पवेयणे पवेइए संघट्टाइए य संदिसाविए कप्पइ असणाइपडिगाहित्तए; न उण उवरिं । कप्पइ निव्विगइयघयतिलेहिं कारणे पायगायाइ अब्भंगित्तए वायणायरियसंसट्टेण य ॥

इयाणिं जोगिसावयपरिण्णेया जहा – आ छट्ठजोगाओ दससु विगईसु, छट्ठजोगे पुण लग्गे पक्कन्नवज्जासु नवसु विगईसु, छिवणदाणलिवणाइवावडहत्थो उवहम्मइ । तेसिं जइ अवयवं पि छिवइ तो भत्तं पाणं वा जं हत्थे तं उवहम्मइ । विगइसंसट्ठं ति परंपरं न उवहणइ । मयगभत्तं न कप्पइ । तिल्लघयाइअब्भंगिया इत्थी पुरिसो वा जं संघट्टेइ सो उवहम्मइ । तद्दिणनवर्णायमोइयकज्जलं छिवंती तेणंजियनयणा वा दिंती उवहम्मइ; न सेसदिवसेसु । अन्नं पि अकप्पिएणं दव्वेणं मीसियं छिक्कं वा वीयदिणे न उवहणइ । ण्हाया जइ केसेसु असुक्केसु असणाइ देइ तो उवहम्मइ । तद्दिणतिल्लाइमोइयकुंकुमपिंजरियसरीरा य उवहणइ । दीवओ वि जं पुण थिरं कट्ठकवाडाइयं अकप्पिएणं दव्वेणं छिक्कं तं न उवहणइ । जइ तं दव्वं न छिवइ थिरकट्ठकवाडाइं जोगवाहिणा छिक्काइं न उवहणंति । उचिविंडिठियअकप्पवत्थुभायणछिक्कं सत्तपरंपरमवि अणायरियं । एगे तिपरंपरं गिण्हंति, अन्ने दुपरंपरं पि । एवं तिरिच्छयलीठिएसु वि परोप्परसंबद्धेसु दायगेसु वि तहा कप्पइ । कक्कव-इक्खुरस-गुडपाय-गुलवाणीय-खंड-सक्करवाट-खीरि-दुद्धकंजिय-दुद्धसाडिया-कक्करियग-मोरिंडग-गुलहाणा । दुद्धसाडिया नाम दक्खदुद्धरद्धा । मोरिंडगाणि

1 A उग्गुडुओ । 2 C भूमिट्ठियं संघट्टं । 3 C उड्डा सण्णा । * C स्तन्यपायिनः । 4 A 'स्पृष्टासती' । 5 B मूलि° । 6 B वाणायरि° । 7 A लियणाइ°; C लिवणाइ° ।

कक्करियविसेसा । तहा मोइय कुल्लरि[1] चुप्पडिय मंडग मोइय सत्तुय दहिकरंवय घोल सिहरणि तिलवट्टिय पगरणसंसट्ट माइसराव एयाणि वासियाणि कप्पंति । वीसंदण भरोलग नंदिहलि नालिएर तिल्लमाइ गिहत्थेहिं अप्पणो कए कयं कप्पइ । वीसंदणं तावियघयहंडियाए वेसणाइकयं । भरोलगाणि घयलोट्टकयमुट्टियाणि । अन्नं पि [2]खुड्डहडियदक्खा, दक्खावाणयं, अंबिलियावाणय-नालिएरवाणय-सुंठिमिरियमाइयं कप्पइ । तहा [3]दहिकयआसुरी, धूविय इड्डुरी [4]मोक्कलिपमुहं तद्दिणे उवहणइ; वीयदिणे कप्पइ । छट्टजोगे लग्गे संधूइय लक्कतीमणं भज्जियाइयं च कप्पइ; न आरओ कप्पइ । अववाएणं असहुस्स तिण्ह घाणाणोवरिं जं निब्भंजणं चउत्थघाणो गाहिमं, अन्नघयाइअपक्खेवे पुव्विल्लघयभरियतावियाए बीयघाणपक्कं पि ओगाहिमं कप्पइ । जइ एगेण चेव पूएण ताविया पूरिज्जइ । उद्देसाइ, जइ साहुणीहिं सह तो चोलपट्टसंजुयाणं; अह अन्नहा, तो अग्गोयरेणावि कप्पइ । कप्पइ साहुणीणं उद्देसाइ पडिक्कमणं वा काउं सया ओढियपरिहियाणं । कप्पइ दुगाउयद्धाणं भिक्खायरियाए अडित्तए । कप्पइ बत्तीसं कवला आहारं आहारित्तए । कप्पंति तिन्नि पाउरणा पाउरित्तए । असहुस्स चत्तारि पंच जाव समाही । कप्पइ दिया वा राओ वा आयावेउं । एवं सव्वो वि जो जंमि कप्पे विही उवहयाणुवहय-कप्पा-कप्पाइ जहा दिट्ठो गीयत्थेहिं, सो तहेव संकारहिएहिं वायणायरियाणुन्नाए कायव्वो; न समईए । अन्नहाकरणे वहुदोसप्पसंगाओ । तहाहि–

उम्मायं व लभिज्जा रोगायंकं व पाउणइ दीहं ।
केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ वा वि भंसिज्जा ॥ १ ॥
इह लोए फलमेयं परलोए फलं न दिंति विज्जाओ ।
आसायणा सुयस्स य कुव्वइ दीहं च संसारं ॥ २ ॥
जं जह जिणेहिं भणियं केवलनाणेण तत्तओ नाउं ।
तस्सन्नहाविहाणे अणाभंगो महापावो ॥ ३ ॥

एसो य उवहयाणुवहयविही भत्तपाणनिमित्तं आउत्तवाणयकाउस्सग्गे कए दट्ठव्वो, न सामन्नेण । विगइवावडहत्थाइदंसणेण, तहा अंजियनयणाए पुंछिए धोयल्लहिए वि जेहिं सा दिट्ठा तेसिं तीए हत्थेण न कप्पइ । जेसिं पुण न दिट्ठा ते धूयल्लहिए गेण्हंति, जइ दिट्ठपुव्वजोगीहिं न साहियं । अओ चेव परोप्परं असुगा उवहय त्ति न साहियव्वं । एवं भत्तं पाणं च इमाए विहीए अडित्ता, इरियं पडिक्कमिय, गमणागमण-मालोइत्ता, भत्तपाणं च जहागहियविहिणा तओ पारावित्ता, सन्निहियसाहुणो अणुण्णवित्ता, मुहपोत्तियाए मुहं पडिलेहित्ता, उवउत्ता असुरसुरं अचवचवं अदुयमविलंबियं अपरिसाडिं अकसरक्कं अकुरुडुक्कभुरुडुक्कं[5] इच्चाइविहिणा अरत्तदुट्ठा जेमंति । इत्थ य पमाय-अन्नाणाइणा अन्नहाणुट्ठाणे जोगवाहिणो पच्छित्तं, उवरिं तवाइयारपच्छित्ते भणीहामो ।

एवं जोगविहाणं संखेवेणं तु तुम्हमक्खायं ।
जं च न इत्थ उ भणियं गीयायरणाइ तं नेयं ॥

*

§ ४४. संपयं जो जत्थ तवोविही सो भण्णइ–

आवस्सयंमि एगो सुयक्खंधो छच्च होंति अज्झयणा ।
दोण्णि दिणा सुयक्खंधे सव्वे वि य होंति अट्ठदिणा ॥ १ ॥

सव्वंगसुयक्खंधोद्देसाणुन्नासु नंदी हवइ । पढमदिणे सुयक्खंधस्स उद्देसो पढमज्झयणस्स य उद्देस-समुद्देसाणुण्णाओ । वीयाइदिणेसु वीयाइअज्झयणा । सत्तमदिणे सुयक्खंधस्स समुद्देसो, अट्ठमदिणे

1 B C कुल्लुरि । 2 A खुड्डहडिय । 3 A दहिकय° । 4 'पूरण' । 5 A भरडुक्कं ।

तस्सेव अणुण्णा । सुयक्खंधस्स अंगस्स य उद्देसे समुद्देसे अणुण्णाए य आयंबिलं । अन्नदिणेसु निव्वीयं । एवं सव्वजोगेसु नेयं, भगवई – पण्हावागरण – महानिसीहवज्जं । अन्नसामायारीसु पुण निव्वियंतरियाणि आयंबिलाणि चेव कीरंति । जहा निसीहे असइ बालाई निव्वीयदिणे पणगेणावि णिव्वाहिज्जंति; एवं दसकालिए वि ।

छच अज्झयणा पुण – सामाइयं १, चउवीसत्थओ २, वंदणं ३, पडिक्कमणं ४, काउस्सग्गो ५, पच्चक्खाणं ६ ति । ओहनिज्जुत्ती आवस्सयं चेव अणुप्पविट्ठा अओ न तीए पुढो उवहाणं ।

§ ४५. दसयालियम्मि एगो सुयक्खंधो बारसेव अज्झयणा । पंचम-नवमे दो-चउउद्देसा दिवसपन्नरस ॥१॥ ऐगेगमज्झयणमेगेगदिणेण वच्चइ । नवरं पंचमं अज्झयणमुद्दिसिय पढम-बीयउद्देसया उद्दिस्संति । तओ ते अज्झयणं च समुद्दिसइ । तओ ते अज्झयणं च अणुण्णवइ । एवं नवमं दोहिं दिणेहिं दो दो उद्देसा दिणे जंति त्ति काउं दो दिणा सुयक्खंधे । एवं पन्नरस ।

बारस अज्झयणाइं इमाइं, जहा – दुमपुप्फिया १, सामन्नपुव्विया २, खुड्डियायारकहा ३, छज्जीवणिय धम्मपन्नत्ती वा ४, पिंडेसणा ५, इत्थ पिंडनिज्जुत्ती ओयरइ । धम्मत्थकामज्झयणं – महल्लियायारकहा वा ६, वक्कसुद्धी ७, आयारप्पणिही ८, विणयसमाही ९, सभिक्खु अज्झयणं १०, रइवक्का ११, चूलिया १२ ।

–दसवेयालियजोगविही ।

§ ४६. उत्तरज्झयणाणं एगो सुयक्खंधो, छत्तीसं अज्झयणाणि, एगेगदिणेण एगेगं जाइ । नवरं चउत्थमज्झयणमसंखयं पढणपहरमज्झे जइ उट्ठवेइ, तओ तम्मि चेव दिवसे निव्विएण अणुण्णवइ । अह न उट्ठवेइ, तओ तम्मि दिणे अंबिलं काउं, बीयदिणे अंबिलेण अणुण्णवइ । एवं दोहिं दिणेहिं आयंबिलेहि य असंखयं जाइ । केई भणंति जइ पढमपोरिसीए उट्ठवेइ तो निव्विएण अणुजाणिज्जइ; अह न, तो आयंबिलं कारिज्जइ । तओ जइ पच्छिमपोरिसीए उट्ठावेइ, तो वि तम्मि चेव दिणे अणुजाणिज्जइ । जइ पुण बीयदिणे पढमपोरिसीमज्झे तो वि तम्मि दिणे निव्विएण अणुजाणिज्जइ । अह न, तो आयंबिलदुगेणं । तं चेमं–

असंखयं जीविय मा पमायए जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ।
एवं वियाणाहि जणे पमत्ते कण्णु विहिंसा अजया गहिंति ॥ १ ॥
जे पावकम्मेहिं धणं मणूसा समाययंती अमइं गहाय ।
पहाय ते पासपयट्टिए नरे वेराणुबद्धा नरयं उवेंति ॥ २ ॥
तेणे जहा संधिमुहे गहीए सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ।
एवं पया पिच्च इहं च लोए कडाण कम्माण न मोक्खु अत्थि ॥ ३ ॥
संसारमावन्नपरस्स अट्ठा साहारणं जं च करेइ कम्मं ।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले न बंधवा बंधवयं उवेंति ॥ ४ ॥
वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते इमम्मि लोए अदुवा परत्था ।
दीवप्पणट्ठे व अणंतमोहे नेयाउयं दट्ठुमदट्ठुमेव ॥ ५ ॥
सुत्तेसु आवी पडिबुद्धजीवी न वीससे पंडिय आसुपन्ने ।
घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं भारंडपक्खीव चरऽप्पमत्तो ॥ ६ ॥

चरे पयाइं परिसंकमाणो जं किंचि पासं इह मन्नमाणो।
लाभंतरे जीविय वूहइत्ता पच्छा परिन्नाय मलावधंसी ॥ ७ ॥

छंदं निरोहेण उवेइ मुक्खं आसे जहा सिक्खियवम्मधारी।
पुव्वाइं वासाइं चरऽप्पमत्तो तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मुक्खं ॥ ८ ॥

स पुव्वमेवं न लभेज्ज पच्छा एसोवमा सासयवाइयाणं।
विसीयई सिढिले आउयंमि कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥ ९ ॥

खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे।
समिच्च लोगं समया महेसी आयाणरक्खी चरअप्पमत्तो ॥ १० ॥

मुहुं मुहुं मोहगुणा जयंतं अणेगरूवा समणं चरंतं।
फासा फुसंती असमंजसं च न तेसु भिक्खू मणसा पऊसे ॥ ११ ॥

मंदा य फासा बहुलोभणिज्जा तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा।
रक्खिज्ज कोहं विणइज्ज माणं मायं न सेवे पयहिज्ज लोहं ॥ १२ ॥

जे संखया तुच्छपरप्पवाई ते पिज्ज दोसाणुगया परज्झा।
एए अहम्मु त्ति दुगुंछमाणो कंखे गुणे जाव सरीरभेउ ॥ १३ ॥ — त्तिबेमि ॥

समत्तेसु अज्झयणेसु छत्तीसाए सत्ततीसाए वा दिणेहिं एगायंबिलेण सुयक्खंधो समुद्दिसइ। बीएणं नंदीए अणुजाणिज्जइ। एवं अट्ठत्तीसा एगूणचत्ता वा दिणाइं हवंति। अहवा जाव चोद्दस ताव एगसराणि, सेसाणि २२ एगेगदिणे दो दो उद्दिसिज्जंति, समुद्दिसिज्जंति, अणुजाणिज्जंति। दो दिणा सुयक्खंधे। एवं सत्तावीसं अट्ठावीसं वा दिणाणि होंति। आगाढजोगा एए। एएसु संघट्टिय-मोइय-वोट्टियाइं च तद्दिवसियं न कप्पइ। तेसिं नामाणि जहा — विणयसुयं १, परीसहा २, चाउरंगिज्जं ३, असंखयं पमायप्पमायं वा ४, अकाममरणिज्जं ५, खुड्डागणियंठिज्जं ६, एलइज्जं ७, काविलिज्जं ८, नमिपव्वज्जा ९, दुमपत्तयं १०, वहुस्सुयपुज्जं ११, हरिएसिज्जं १२, चित्तसंभूइज्जं १३, उसुयारिज्जं १४, सभिक्खु अज्झयणं १५, वंभचेरसमाहिट्ठाणं १६, पावसमणिज्जं १७, संजइज्जं १८, मियापुत्तिज्जं १९, महानियंठिज्जं २०, समुद्दपालिज्जं २१, रहनेमिज्जं २२, केसिगोयमिज्जं २३, समिईओ २४, जन्नइज्जं २५, सामायारी २६, खुलंकिज्जं २७, मोक्खमग्गगई २८, सम्मत्तपरक्कमं २९, तवमग्गइज्जं ३०, चरणविही ३१, पमायठाणं ३२, कम्मपयडी ३३, लेसज्झयणं ३४, अणगारमग्गो ३५, जीवाजीवविभत्ती ३६। छत्तीसं उत्तरज्झयणाणि। — **उत्तरज्झयणजोगविही।**

*

§ **४७.** संपयं पढम**मायारंगं** नंदीए उद्दिसिय अणंतरं पढमसुयक्खंधो उद्दिसिज्जइ। पढमं अंगउद्देसकाउसग्गं काऊण तओ सुयक्खंधउद्देसकाउस्सग्गो कायव्वो। तओ तस्स पढममज्झयणं, पच्छा तस्स पढमबीयउद्देसया उद्दिसिज्जंति समुद्दिसिज्जंति अणुजाणिज्जंति य। एवं एगदिणेण एगकालेण दो उद्देसगा जंति। एवं तइय-चउत्था वि पंचम-छट्ठा वि, सत्तमउद्देसओ एगकालेण उद्दिसिज्जइ समुद्दिसिज्जइ वा। तओ अज्झयणं समुद्दिसिज्जइ, तओ उद्देसओ अज्झयणं च अणुजाणिज्जइ। एवं पढमज्झयणे दिण ४, काल ४। एवं जत्थ अज्झयणे समा उद्देसया तत्थेगेगदिणेण एगेगकालेण य दो दो वच्चंति। विसमुद्देस-

एसु चरिमो उद्देसओ अज्झयणेण सह एगदिणेण एगकालेण य वच्चइ । एवं सव्वंगसुयक्खंधज्झयणेसु दट्ठव्वं । बीए उद्देसा ६, दिणा ३। तइए उद्देसा ४, दिणा २। चउत्थए उद्देसा ४, दिणा २। पंचमे उद्देसा ६, दिणा ३। छट्ठे उद्देसा ५, दिणा ३। सत्तमे उद्देसा ८, दिणा ४। अट्ठमे उद्देसा ४, दिणा २। नवमज्झयणं वोच्छिन्नं । तं च महापरिण्णा—इत्तो किर आगासगामिणी विज्जा **वइरसामिणा** उद्धरिया आसि त्ति साइसयत्तणेण वोच्छिन्नं । निज्जुत्तिमित्तं चिट्ठइ । **सीलंकायरिय**मएण पुण एयं अट्ठमं, विमुक्खज्झयणं सत्तमं, उवहाणसुयं नवमं ति । एएसिं नामाणि जहा—सत्थपरिण्णा १, लोगविजओ २, सीओसणिज्जं ३, सम्मत्तं ४, आवंती, लोगसारं वा ५, धूयं ६, विमोहो ७, उवहाणसुयं ८, महापरिण्णा ९। सुयक्खंधो एगकालेण एगायंबिलेण वच्चइ । तम्मि चेव दिणे समुद्दिसिय नंदीए अणुजाणिज्जइ । एवं बंभचेरसुयक्खंधे दिणा २४। एवं अन्नत्थ वि जत्थ दो सुयक्खंधा तत्थेगकालेण एगायंबिलेण य समुद्दिसिज्जइ, नंदीए अणुजाणिज्जइ य । जत्थ पुण एगो सुयक्खंधो सो एगकालेण एगायंबिलेण समुद्दिसिज्जइ, बीयदिणे बीयकालेण आयंबिलेण य नंदीए अणुजाणिज्जइ ।

इयाणिं आयारंगबीयसुयक्खंधं नंदीए उद्दिसिय पढमज्झयणमुद्दिसिज्जइ । तम्मि उद्देसगा ११। एगेगदिणेण एगेगकालेण य दो दो जंति । चरिमुद्देसओ पुव्वं व अज्झयणेण समं दिणा ६। बीए उद्देसा ३, दिणा २। तइए उद्देसा ३, दिणा २। चउत्थे उद्देसा २, दिण १। पंचमे उद्देसा २, दिण १। छट्ठे उद्देसा २, दिण १। सत्तमे उद्देसा २, दिण १। अणंतरं सत्तसत्तिक्कया नामज्झयणा एगसरा आउत्तवाणएणं पुव्वुत्तभगवईविहाणछट्ठजोगा लग्गविहीए एक्केक्केण दिणेण वच्चंति । एवं चोद्दस-पनरसमे दिणमेगं, सोलसमे दिणमेगं । एएसिं नामाणि जहा—पिंडेसणा १, सेज्जा २, इरिया ३, भासाजायं ४, वत्थेसणा ५, पाएसणा ६, उग्गहपडिमा ७, एएहिं सत्तहिं अज्झयणेहिं पढमा चूला । तओ सत्तसत्तिक्कएहिं बीया चूला । तत्थ पढमं ठाणसत्तिक्कयं १, बीयं निसीहियासत्तिक्कयं २, तइयं उच्चारपासवणसत्तिक्कयं ३, चउत्थं सद्दसत्तिक्कयं ४, पंचमं रूवसत्तिक्कयं ५, छट्ठं परकिरियासत्तिकियं ६, सत्तमं अन्नोन्नकिरियासत्तिक्कयं ७। एएसुं च उद्देसगाभावाओ इक्कगवएसो ।

ठाण-निसीहिय-उच्चारपासवण-सद्द-रूव-परकिरिया ।
अन्नोन्नकिरिया वि य सत्तिक्कयसत्तगं कमेण* ॥

तओ भावणज्झयणं तइया चूला । तओ विमुत्तिअज्झयणं चउत्थी चूला । एवं बीयसुयक्खंधे आयारंगे अज्झयणा १६, उद्देसा २५। पंचमचूला निसीहज्झयणं सुयक्खंधसमुद्देसाणुण्णाए दिणमेगं । एवं बीयसुयक्खंधे दिणा २४। अंगसमुद्देसे दिण १। अंगाणुण्णाए दिण १। एवमायारंगे दिणा ५०। सव्वोद्देसगपरिमाणमिणं—

सत्तय १, छ २, चउ ३, चउरो ४, छ ५, पंच ६, अट्ठेव ७ होंति चउरो य ८।
—इति पढमसुयक्खंधस्स ।

एक्कारस १, दोसु तिगं ३, चउसुं दो दो ७, नवेक्कसरा १६ ॥ १ ॥
—इति बीयसुयक्खंधस्स । **आयारंगविही ।**

§४८. बीयं **सूयगडंगं** नंदीए उद्दिसिय पढमसुयक्खंधो उद्दिसिज्जइ, तओ पढमज्झयणं । तम्मि उद्देसा ४, दिणा २। बीए उद्देसा ३, दिणा २। तइए उद्देसा ४, दिणा २। चउत्थे उद्देसा २, दिण १। पंचमे

* इयं गाथा नास्ति C आदर्शे.

उद्देसा २, दिण १। इओणंतरमेगारसज्झयणाणि एगसराणि एगेगदिणेण एगकालेण जंति। पढमसुयक्खंधज्झयणनामाणि जहा–समओ १, वेयालीयं २, उवसग्गपरिण्णा ३, थीपरिण्णा ४, निरयविभत्ती ५, वीरत्थओ ६, कुसीलपरिभासा ७, वीरियं ८, धम्मो ९, समाही १०, मग्गो ११, समोसरणं १२, अहतहं १३, गंथो १४, जमईयं १५, गाहा १६। सुयक्खंधसमुद्देसाणुण्णाए दिणमेगं। सव्वे दिणा २०। पढमसुयक्खंधो गाहासोलसगो नाम गओ। वीयसुयक्खंधे नंदीए उद्दिसिए तस्स सत्त महज्झयणाणि, एगसराणि, एगेगदिणेण एगेगकालेण य वच्चंति। तेसिं नामाणि जहा–पुंडरीयं १, किरियाठाणं २, आहारपरिण्णा ३, पच्चक्खाणकिरिया ४, अणगारं ५, अद्दइज्जं ६, नालंदा ७। सुयक्खंधसमुद्देसाणुण्णाए दिणमेगं। उद्देसगमाणमिणं–

सूयगडे सुयखंधा दोन्निउ पढमम्मि सोलसज्झयणा।
चउ १, तिय २, चउ ३, दो ४, दो ५, एक्कारस ६, पढमसुयखंधस्स ॥ १॥

सत्त इक्कसरा वीयसुयक्खंधस्स। अंगसमुद्देसे दिण १, अंगाणुण्णाए दिण १। सवे दिणा ३०।

–सूयगडंगविही।

§४९. तइयं **ठाणंगं** नंदीए उद्दिसिज्जइ। तओ सुयक्खंधो, तओ पढमज्झयणं, एगसरं एगदिणेण एगकालेण वच्चइ। वीए उद्देसा ४, दिणा २। तइए उद्देसा ४, दिणा २। चउत्थे उद्देसा ४, दिणा २। पंचमे उद्देसा ३, दिणा २। सेसाणि पंचठणाणि एगसराणि पंचहिं दिणेहिं वच्चंति। एयउद्देसगमाणमिणं–

पढमं एगसरं चिय१ चउ२ चउ३ चउरो४ ति५ पंच१० एगसरा।
ठाणंगे सुयखंधो एगो दस होंति अज्झयणा ॥ १ ॥

तेसिं नामाणि जहा–एगठाणं दुठाणमिच्चाइ...जाव...दसठाणं ७। सुयक्खंधसमुद्देसाणुण्णाए दिणा २, अंगसमुद्देसाणुण्णाए दिणा २, सवे दिणा १८। **–ठाणंगविही।**

§५०. चउत्थं **समवायंगं** एगदिणे नंदीए उद्दिसिज्जइ, वीयदिणे समुद्दिसिज्जइ, तइयदिणे नंदीए अणुजाणिज्जइ। एवं तिहिं कालेहिं तिहिं आयंबिलेहिं वच्चइ। सुयक्खंधज्झयणुद्देसा इत्थ नत्थि।

–समवायंगविही।

§५१. इत्थंतरे इमे जोगा–**निसीहे** एगमज्झयणं वीसं उद्देसगा एगेगदिणेण एगेगकालेण य दो दो वच्चंति। दसहिं दिवसेहिं एगंतरायामेहिं समप्पइ। इत्थ अज्झयणत्तेण नंदी नत्थि। अणागाढजोगो। निसीहे दिणा १०।

§५२. **दसा-कप्प-ववहाराणं** एगो सुयक्खंधो सो नंदीए उद्दिस्सइ। तत्थ दस दसाअज्झयणा एगसरा, दसहिं दिवसेहिं वच्चंति। तेसिं नामाणि जहा–असमाहिठाणाइं १, सबला २, आसायणाओ ३, गणिसंपया ४, अत्तसोही ५, उवासगपडिमा ६, भिक्खुपडिमा ७, पज्जोसवणाकप्पो ८, मोहणीयठाणाइं ९, आयाइ ठाणं १० ति। **कप्प**ज्झयणे उद्देसा ६, दिणा ३। **ववहारज्झयणे** उद्देसा १०, दिणा ५। एगदिणे सुयक्खंधसमुद्देसो, वीयदिणे नंदीए सुयक्खंधाणुण्णा, सवे दिणा २०। केइ **कप्प-ववहाराणं** भिन्नं सुयक्खंधमिच्छंति। एवं च दिणा २२। तहा **पंचकप्पो** आयंबिलेण मंडलीए वहिज्जइ। **जीयकप्पो** निव्वीएणं ति। **निसीह–दसा–कप्प–ववहारसुयक्खंध–पंचकप्प–जीयकप्पविही।**

§ ५३. इयाणिं भगवईए विवाहपन्नत्तीए पंचमंगस्स जोगविहाणं[1]—गणिजोगा छहिं मासेहिं छहिं दिवसेहिं आउत्तवाणएणं वच्चंति । तत्थ सुयक्खंधो नत्थि । अज्झयणाणि य सयनामाणि एकचालीसं । अंगं नंदीए उद्दिसिय पढमसयं उद्दिसिज्जइ । तत्थ उद्देसा १०; कालेण दो दो वच्चंति । एगंतरायामेणं दिणेहिं ५, कालेहिं ५ पढमसयं जाइ । एगंतरायामं जाव चमरो । बीयसए उद्देसा १०; नवरं पढमुद्देसओ खंदओ । तस्स अंबिलेण उद्देसो समुद्देसो य कीरइ । तओ जइ उट्ठवेइ तो तंमि चेव दिणे तेण चेव कालेण अणुजाणिय आयामं कारिज्जइ । अह न उट्ठिओ, तो बीयदिणे बीयकालेण बीयअंबिलेण अणुजाणिज्जइ । उट्ठिओ त्ति पाढेणागओ । अणुण्णाए य तंमि अंबिले पविट्ठे अगओ काउस्सग्गाइअणुट्ठाणं कीरइ । एत्थ[2] पंच दत्तीओ सपाणमोयणाओ भवंति । सेसा दो दो उद्देसा दिणे दिणे जंति । जाव नवमुद्देसो । एगंमि पंचमे दिणे दसमो सयं च । सव्वे दिणा ७, काला ७ । तइयसए वि उद्देसा १०; नवरं पढमदिवसे पढमकालेण पढमुद्देसयं मोयानामगमणुजाणिय, बीयकालेण चमरस्स उद्देसो समुद्देसो य कीरइ । सेसं तओ जइ उट्ठवेइ इच्चाइ जहा खंदए । दत्तीओ वि सपाणमोयणाओ पंच । केई चत्तारि भणंति ।[3] एवं चमरे अणुण्णाए पनरसहिं कालेहिं पनरसहिं दिणेहिं य गएहिं छट्ठजोगो लग्गइ । छट्ठजोगअणुजाणावणत्थं ओगाहिमविगइविसज्जणत्थं काउस्सग्गो कीरइ; नमोक्कारचिंतणं भणणं च । पंचनिव्वियाणि छट्ठं निरुद्धं ४ । अन्ने छन्निव्वियाणि सत्तमं निरुद्धं ति भणंति[4] । तम्मि लग्गे संघूइयतक्क-तीमण-वंजणाइ तद्दिणकयं पि कप्पइ । तओ पुव्वं एयमकप्पमासि । ओगाहिमविगई वि न उवहणइ । जहा दिट्ठिवाए मोयगो गुरुमाइकए आणेउं पि कप्पइ । सेसा अट्ठ उद्देसा चउहिं दिवसेहिं सएणसमं वच्चंति । सव्वे दिणा ७, काला ७ । चउत्थसए वि उद्देसा १०, दोहिं दिणेहिं वच्चंति । पढमदिणे ८, चत्तारि चत्तारि आइल्ला अंतिल्ल त्ति काऊण उद्दिसिज्जंति, समुद्दिसिज्जंति, अणुन्नविज्जंति । बीयदिणे दो सएण समं वच्चंति । दिणा २, काला २ । पंचम-छट्ठ-सत्तम-अट्ठमसएसु दस दस उद्देसया दो दो दिणे दिणे जंति । चत्तारि वि बीसाए दिणेहिं कालेहिं य वच्चंति । अट्ठसु सएसु काला ४१ । नवमं दसमं एगारसं बारसं तेरसं चउदसमं च एयाइं [5]छस्सयाइं एक्केक्ककालेण वच्चंति । नवरं नवमसयमुद्दिसिय तस्सुद्देसा ३४ दुहाकाउं (१७+१७) पढममाइल्ला उद्दिसिज्जंति, तओ अंतिल्ला सयं च समुद्दिसिज्जंति । तओ आइल्ला अंतिल्ला सयं च अणुन्नविज्जंति । एवं सए सए नव नव काउस्सग्गा कीरंति । एवं दसमसए वि उद्देसा ३४ दुहा (१७+१७); एक्कारसमे उद्देसा १२ दुहा (६+६); बारसमे तेरसमे चउदसमे य दस दस पत्तेयं पंच पंच दुहा कज्जंति । पनरसमं गोसालसयमेगसरं पढमदिणे उद्दिसिज्जइ । तओ जइ उट्ठिओ तो तम्मि चेव दिणे तेणेव कालेण आयंबिलेण य अणुजाणिज्जइ । अह न उट्ठिओ, तो [6]बीय-दिणे बीयकालेण बीयअंबिलेण अणुजाणिज्जइ । [6]इत्थ दत्तीओ तिन्नि तिन्नि सपाणमोयणाओ भवंति । गोसाले अणुन्नाए अट्ठमजोगो लग्गइ । तस्स अणुजाणावणत्थं काउस्सग्गो कीरइ । सत्त निव्वियाणि अट्ठमं निरुद्धं । अण्णे अट्ठ निव्वियाणि नवमं निरुद्धं । सेसाणि निव्वियाणि वि । गोसालयसए तेयनिसग्गावरनामगे अणुण्णाए निव्वियदिणे नंदिमाईणं वंदणय-खमासमण-काउस्सग्गपुव्वं उद्देसाई कीरंति । ते य इमे—नंदि १, अणुओग २, देविंद ३, तंदुलं ४, चंदवेज्झ ५, गणिविज्जा ६, मरण ७, ज्झाणविभत्ती ८, आउर ९, महा-पच्चक्खाणं च १० । गोसाले जो[7] जइ दत्तीहिं अलद्धियाहिं उवहओ ताहे उवहओ चेव । अह बहवे जोगवाहिणो ताहे ताण संबंधिणीओ घेप्पंति । गोसालाणुण्णं जाव एगूणवन्नासं काला ४९ हवंति । तदुवरि सेसाणि छव्वीससयाणि एक्केक्केण कालेण वच्चंति । एएहिं २६ सह ७५ भवंति । एगेणंगं समुद्दिसिज्जइ । बीएण नंदीए अणुजाणिज्जइ । गणिसद्दपज्जंतं नामं च ठाविज्जइ । अंगस्स समुद्देसे अणुण्णाए य अंबिलं ।

1 B विहीणं । 2 B इत्थ । 3 नास्ति A । 4 B C छच्च सयाइं । 5 नास्तिपदमेतद् A । 6 B नास्ति 'इत्थ' । 7 नास्ति 'जो' A C ।

एवं सतहत्तरि ७७ कालेहिं भगवईपंचमंगं समप्पइ । नवरं सोलसमे सए उद्देसा चउद्दस ७+७। सत्तरसमे सत्तरस ९+८। अट्ठारसमे दस ५+५। एवं एगूणविसइमे वि ५+५। वीसइमे वि ५+५। इक्कवीसइमे असीई ४०+४०। बावीसइमे सट्ठी ३०+३०। तेवीसइमे पण्णासा २५+२५। इत्थं इक्कवीसमे अट्ठवग्गा, बावीसइमे छवग्गा, तेवीसइमे पंचवग्गा। वग्गे वग्गे दस उद्देसा। अओ असीइ-सट्ठि-पण्णासा उद्देसा कमेण। चउवीसइमे चउवीसं १२+१२। पंचवीसइमे बारस ६+६। बंधिसए २६। करिंसुगसए २७। कम्मसमज्जिणणसए २८। कम्मपट्ठवणसए २९। समोसरणसए ३०। एएसु पंचसु वि सएसु एक्कारस-एक्कारस उद्देसा दुहा ६+५ कज्जंति। उववायसए अट्ठावीसं १४+१४; ३१। उव्वट्टणासए अट्ठावीसं १४+१४; ३२। एगिंदियजुम्मसयाणि बारस, तेसु उद्देसा १२४, दुहा ६२+६२; ३३। सेढीसयाणि बारस तेसु वि उद्देसा १२४, दुहा ६२+६२; ३४। एगिंदियमहाजुम्मसयाणि बारस, तेसु उद्देसा १३२, दुहा ६६+६६; ३५। बेइंदियमहाजुम्मसयाणि बारस, तेसु वि उद्देसा १३२; दुहा ६६+६६, ३६। तेइंदियमहाजुम्मसयाणि बारस, तेसु वि उद्देसा १३२, ६६+६६; ३७। चउरिंदियमहाजुम्मसयाणि बारस, तेसु वि उद्देसा १३२, ६६+६६; ३८। असन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयाणि बारस, तेसु वि उद्देसा १३२, दुहा ६६+६६; ३९। सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयाणि इक्कवीसं, तेसु उद्देसगा २३१, दुहा ११६+११५; ४०। रासीजुम्मसए उद्देसा १९६, दुहा ९८+९८; ४१। इत्थ य तेत्तीसइमे सए अवंतरसया १२, तत्थ अट्ठसु पत्तेयं उद्देसा ११, चउसु ९, सव्वग्गेणं १३४। एवं चउतीसइमे वि १२४। पणतीसइमाइसु पंचसु[1] सएसु अवंतरसया १२, तेसु पत्तेयं उद्देसा ११, सव्वग्गेणं १३२। चालीसइमे अवंतरसया २१, तेसु पत्तेयं उद्देसा ११, सव्वग्गेणं २३१। एवं महाजुम्मसयाणि ८१, एवं सव्वग्गेणं सया १३८। सव्वग्गेणं उद्देसा १९२३।

इत्थ संगहगाहाओ उवरिं जोगविहाणे भणिहिंति। **भगवईए जोगविही।**

गणिजोगेसु वूढेसु संघट्टओ थिरो भवइ। नय घिप्पइ नय विसज्जिज्जइ त्ति समायारी। आउत्तवाणयं तु घिप्पइ विसज्जिज्जइ य त्ति।

अथ यन्त्रकम्। इदं सकलं शतकउद्देशादि यन्त्रतोऽवसेयम्।

शत १ उद्देस १०। दिन ५।	शत ४ उद्देश १०। प्र०दि० ८। द्वि०दि० २।	शत ७ उद्देश १०। दिन ५।	शत १० उद्देश ३४। दिन १।
शत २ उद्देस १०। दिन ५।	शत ५ उद्देश १०। दिन ५।	शत ८ उद्देश १०। दिन ५।	शत ११ उद्देश १२। दिन १।
शत ३ उद्देस १०। दिन ७।	शत ६ उद्देश १०। दिन ५।	शत ९ उद्देश ३४। दिन १।	शत १२ उद्देश १०। दिन १।

1 नास्ति पदमिदम् A।

शत १३
उद्देश १०।
दिन १।

शत १४
उद्देश १०।
दिन १।

गोशालशत १५
उद्देश०
दिन २।

शत १६
उद्देश १४।
दिन १।

शत १७
उद्देश १७।
दिन १।

शत १८
उद्देश १०।
दिन १।

शत १९
उद्देश १०।
दिन १।

शत २०
उद्देश १०।
दिन १।

शत २१
उद्देश ८०।
दिनानि १।

शत २२
उद्देश ६०।
दिन १।

शत २३
उद्देश ५०।
दिन १।

शत २४
उद्देश २४।
दिन १।

शत २५
उद्देश १२।
दिन १।

शत २६
उद्देश ११।
दिन १।

शत २७
उद्देश ११।
दिन १।

शत २८
उद्देश ११।
दिन १।

शत २९
उद्देश ११।
दिन १।

शत ३०
उद्देश ११।
दिन १।

शत ३१
उद्देश २८।
दिन १।

शत ३२
उद्देश २८।
दिन १।

शत ३३
उद्देश १२४।
दिन १।

शत ३४
उद्देश १२४।
दिन १।

शत ३५
उद्देश १३२।
दिन १।

शत ३६
उद्देश १३२।
दिन १।

शत ३७
उद्देश १३२।
दिन १।

शत ३८
उद्देश १३२।
दिन १।

शत ३९
उद्देश १३२।
दिन १।

शत ४०
उद्देश १३१।
दिन १।

शत ४१
उद्देश १९६।
दिन १।

शत सं० ४१
उद्देश सर्वाग्र
१९३२।

§५४. अणंतरं कयपंचमंगजोगविहाणस्स तस्सामग्गिविरहे अन्नहावि अणुण्णवियगुरुयणस्स छट्ठमंगं नायाधम्मकहा नंदीए उद्दिसिज्जइ । तम्मि दो सुयक्खंधा नायाइं धम्मकहाओ य । तत्थ नायाणं एगूणवीसं अज्झयणाणि । एगूणवीसाए दिणेहिं वच्चंति । तेसिं नामाणि जहा—उक्खित्तनाए १, संघाडनाए २, अंडनाए ३, कुम्मनाए ४, सेलयनाए ५, तुंबयनाए, ६, रोहिणीनाए ७, मल्लीनाए ८, मायंदीनाए ९, चंदिमानाए १०, दावद्दवनाए ११, उद्गनाए १२, मंडुक्कनाए १३, तेतलीनाए १४, नंदिफलनाए १५, अवरकंकानाए १६, आइण्णनाए १७, सुसुमानाए १८, पुंडरीयनाए १९। एगं दिणं सुयक्खंधसमुद्देसाणुन्नाए । सव्वे दिणा २०। धम्मकहाणं दस वग्गा दसहिं दिवसेहिं जंति.। तत्थ नंदीए सुयक्खंधमुद्दिसिय पढमवग्गो उद्दिसिज्जइ । तम्मि दस अज्झयणा । पंच पंच आइल्ला अंतिल चि काउस्स उद्दिसिज्जंति, समुद्दिसिज्जंति य । तओ वग्गो समुद्दिसिज्जइ । तओ आइल्ला अंतिल्ला वग्गा य अणुण्णविज्जंति । एवं वग्गो एगकालेण एगदिणेण नवहिं काउस्सग्गेहिं वच्चइ । एवं सेसावि नव वग्गा । नवरं अज्झयणेसु नाणत्तं । बीए दस अज्झयणा, तइय-चउत्थेसु चउप्पण्णं चउप्पण्णं । पंचम-छट्ठेसु बत्तीसं बत्तीसं । सत्तम-अट्ठमेसु

चत्तारि चत्तारि । नवम-दसमेसु अट्ठ अट्ठ अज्झयणा । दुहा काऊण सव्वत्थ आइल्ला अंतिल्ल त्ति वत्तव्वा । एवं दससु वग्गेसु दिणा १०। सुयक्खंधसमुद्देसाणुण्णाए दिण १। अंगसमुद्देसे दिण १। अंगाणुण्णाए दिण १। एवं सव्वे दिणा ३३।–**नायाधम्मकहांगविही ।**

§ ५५. **उवासगदसा**सत्तमंगं नंदीए उद्दिसिज्जइ । तम्मि एगो सुयक्खंधो, तस्स दस अज्झयणा, एगसरा दसहिं कालेहिं दसहिं दिणेहिं वच्चंति । तेसिं नामाणि जहा–आणंदे १, कामदेवे २, चूलणीपिया ३, सुरादेवे ४, चुल्लसयगे ५, कुंडकोलिए ६, सद्दालपुत्ते ७, महासयगे ८, नंदिणीपिया ९, लेतियापिया १०। दो दिणा सुयक्खंधे, दो अंगे, सव्वे दिणा १४।–**उवासगदसंगविही ।**

§ ५६. **अंतगडदसा**अट्ठमंगे एगो सुयक्खंधो अट्ठवग्गा । तत्थ पढमे वग्गे दस अज्झयणा । वीयवग्गे अट्ठ । तइए तेरस । चउत्थ-पंचमेसु दस दस । छट्ठे सोलस । सत्तमे तेरस । अट्ठमवग्गे दस अज्झयणा । आइल्ला अंतिल्ला भणिय जहा धम्मकहाए तहा । अट्ठहिं कालेहिं अट्ठहिं दिणेहिं वच्चंति । इत्थ अज्झयणाणि गोयममाईणि दो दिणा सुयक्खंधे, दो अंगे, सव्वे वारस १२।–**अंतगडदसाअंगविही ।**

§ ५७. **अणुत्तरोववाइयदसा**नवमंगे एगो सुयक्खंधो, तिन्नि वग्गा, तिहिं दिणेहिं तिहिं कालेहिं वच्चंति। इत्थ अज्झयणाणि जालिमाईणि । तत्थ पढमे वग्गे दस । वीए तेरस । तइए दस अज्झयणा । सेसं जहा धम्मकहाणं । वग्गेसु दिणा तिन्नि, सुयक्खंधे दिणा दोन्नि, दो दिणा अंगे, सव्वे दिणा ७, काल ७। –**अणुत्तरोववाइयदसंगविही ।**

§ ५८. **पण्हावागरण**दसमंगे एगो सुयक्खंधो, दस अज्झयणा, दसहिं कालेहिं, दसहिं दिवसेहिं वच्चंति । तेसिं नामाणि जहा–हिंसादारं १, मुसावायदारं २, तेणियदारं ३, मेहुणदारं ४, परिग्गहदारं ५, अहिंसादारं ६, सच्चदारं ७, अतेणियदारं ८, बंभचेरदारं ९, अपरिग्गहदारं १० । सुयक्खंधसमुद्देसाणुण्णाए दिणा दो, अंगे दिणा दो, सव्वे दिणा चोद्दस १४। आगाढजोगा आउत्तवाणएणं जइ भगवईए अवूढाए गुरुमणुण्णविय वहइ तो भगवईए छट्ठजोगाऽलग्गकप्पाकप्पविहीए; अह वूढाए तो छट्ठजोगलग्गकप्पाकप्पविहीए एगंतरायंविलेहिं वच्चंति । महासत्तिक्कय त्ति भण्णंति । इत्थ केई पंचहिं पंचहिं अज्झयणेहिं दो सुयक्खंधा इच्छंति ।–**पण्हावागरणंगविही ।**

§ ५९. **विवागसुय**इक्कारसमंगे दो सुयक्खंधा । तत्थ पढमे दुहविवागसुयक्खंधे दस अज्झयणा, दसहिं कालेहिं, दसहिं दिवसेहिं वच्चंति । तेसिं नामाणि जहा–मियापुत्ते १, उज्झियए २, अभग्गसेणे ३, सगडे ४, वहस्सइदत्ते ५, नंदिवद्धणे ६, उंवरिदत्ते ७, सोरियदत्ते ८, देवदत्ता ९, अंजू १०। एगं दिणं सुयक्खंधे, एवं सव्वे दिणा ११ । एवं सुहविवागवीयसुयक्खंधे अज्झयणा १० । तेसिं नामाणि जहा–सुवाहु १, भद्दनंदी २, सुजाय ३, सुवासव ४, जिणदास ५, धणवइ ६, महब्बल ७, भद्दनंदी ८, महचंद ९, वरदत्त १० । सुयक्खंधे दिण १, अंगे दिण २, सव्वे दिणा २४, काला २४ ।

विवागसुयंगविही ।

दिट्ठिवाओ दुवालसमंगं तं च वोच्छिन्नं ।

§ ६०. इत्थ य दिक्खापरियाएण तिवासो आयारपकप्पं वहिज्जा वाइज्जा य । एवं चउवासो सूयगडं । पंचवासो दसा-कप्पववहारे । अट्ठवासो ठाण-समवाए । दसवासो भगवई । इक्कारसवासो खुड्डियाविमाणाइ-पंचज्झयणे । वारसवासो अरुणोववायाइपंचज्झयणे । तेरसवासो उट्ठाणसुयाइचउरज्झयणे । चउदसाइ-अट्ठारसंतवासो कमेण आसीविसभावणा-दिट्ठिविसभावणा-चारणभावणा-महासुमिणभावणा-तेयनिसग्गे । एगूणवीसवासो दिट्ठिवायं । संपुन्नवीसवासो सव्वसुत्तजोगो त्ति ।

*

§ ६१. इयाणिं उवंगा—आयारे उवंगं ओवाइयं १, सूयगडे रायपसेणइयं २, ठाणे जीवाभिगमो ३, समवाए पण्णवणा ४, एए चत्तारि उक्कालिया तिहिं तिहिं आयंबिलेहिं मंडलीए वहिज्जंति। अहवा आयारे अंगाणुण्णाणंतरं संघट्टयमज्झे चेव उद्देससमुद्देसाणुण्णासु आयंबिलतिगेण ओवाइयं गच्छइ। जोगमज्झे चेव निव्वीयदिणे आयंबिलेण अंबिलतिगपूरणाओ वच्चइ त्ति अन्ने। एवं सूयगडे रायपसेणइयं पि बोढव्वं। एवं चेव जीवाभिगमो ठाणंगे। एवं समवाए वूढे दसा-कप्प-ववहारसुयक्खंधे अणुण्णाए य संघट्टयमज्झे अंबिलतिगेण, मयंतरेण अंबिलेण, पण्णवणा वोढव्वा। एएसु तिन्नि इक्कसरा। नवरं जीवाभिगमे दुविहाइ-दसविहंतजीवमग्गणाओ नव पडिवत्तीओ। पण्णवणाए छत्तीसं पयाइं। तेसिं नामाणि जहा—पण्णवणापयं १, ठाणपयं २, बहुवत्तव्वपयं ३, ठिईपयं ४, विसेसपयं ५, वुक्कंतीपयं ६, ऊसासपयं ७, आहाराइदससण्णापयं ८, जोणिपयं ९, चरमपयं १०, भासापयं ११, सरीरपयं १२, परिणामपयं १३, कसायपयं १४, इंदियपयं १५, पओगपयं १६, लेसापयं १७, कायट्ठिइपयं १८, सम्मत्तपयं १९, अंतकिरियापयं २०, ओगाहणापयं २१, किरियापयं २२, कम्मपयं २३, कम्मबंधगपयं २४, कम्मवेयगपयं २५, वेयगबंधपयं २६, वेयगपयं २७, आहारपयं २८, उवओगपयं २९, पासणापयं ३०, मणोविन्नाणसन्नापयं ३१, संजमपयं ३२, ओहीपयं ३३, पवियारणापयं ३४, वेयणापयं ३५, समुग्घायपयं ति ३६।

भगवईए सूरपण्णत्तीउवंगं आउत्तवाणएणं तिहिं कालेहिं अंबिलतिगेणं वोढव्वा। अहवा भगवई-अंगाणुण्णाणंतरे एयं संघट्टयमज्झे तिहिं कालेहिं अंबिलेहिं च वच्चइ। नायाणं जंबुद्दीवपण्णत्ती, उवासगदसाणं चंदपण्णत्ती; एयाओ दोवि पत्तेयं तिहिं तिहिं कालेहिं, तिहिं तिहिं अंबिलेहिं वहिज्जंति संघट्टएणं। अहवा निय-नियअंगेऽणुण्णाए तस्संघट्टयमज्झे चेव तिहिं तिहिं कालेहिं अंबिलेहिं च वच्चंति। सूरपण्णत्तीए चंदपण्णत्तीए य वीसं पाहुडाइं। तत्थ पढमे पाहुडे अट्ठ पाहुड-पाहुडाइं, बिए तिन्नि, दसमे बावीसं, सेसाइं एगसराणि। जंबुद्दीवपण्णत्ती एगसरा। अंतगडदसाइपंचण्हमंगाणं दिट्ठिवायंताणं एगमुवंगं निरयावलियासुयक्खंधो। तम्मि पंच वग्गा कप्पियाओ, कप्पवडिंसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हिदसाओ। तत्थ पढम-बीय-तइय-चउत्थवग्गेसु दस दस अज्झयणा, पंचमे बारस। तत्थ पढमे वग्गे अज्झयणा कालाई, बीए पउमाई, तईए चंदाई, चउत्थे सिरिमाई, पंचमे निसढाई। सुयक्खंधं नंदीए उद्दिसिय पढमवग्गं च। तओ अज्झयणाणि दुहा काऊण आइल्ला अंतिल त्ति भणिय, वग्गे वग्गे नव नव काउस्सग्गा कीरंति। वग्गेसु दिणा ५, सुयक्खंधे दिणा २, सव्वे दिणा ७; काला ७। केई सव्व अंबिले करेंति। अन्ने सुयक्खंध-उद्देस-समुद्देसाणुण्णासु अंबिलं करेंति। अन्नदिणेसु निव्वीयं। निरयावलिया-सुयक्खंधो गओ।

अन्ने पुण चंदपण्णत्तिं सूरपण्णत्तिं च भगवईउवंगे भणंति। तेसिं मएण उवासगदसाईण पंचण्ह-मंगाणमुवंगं निरयावलियासुयक्खंधो।

ओ०रा०जी०पण्णवणा सू०जं०चं०नि०क०क०पुप्पु०वण्हिदसा।
आयाराइउवंगा नायव्वा आणुपुव्वीए॥ —उवंगविही।

§ ६२. संपयं पइण्णगा, नंदी-अणुओगदाराइं च इक्किक्कं[1] निव्वीएण मंडलीए वहिज्जंति। केई तिहिं दिणेहिं निव्वीएहिं य उद्देसाइकमेण इच्छंति। देविंदत्थयं-तंदुलवेयालियं-मरणसमाहि-महापच्चक्खाण-आउरपच्चक्खाण-संथारय-चंदाविज्झयं-भत्तपरिण्णा-चउसरण-वीरत्थय-गणिविज्जा-दीवसागरपण्ण-

1 A मिरदन्नं। 2 A इक्किक्कनिव्वीएण।

त्ति-संगहणी[13]-गच्छायार[14]–इच्चाइपइण्णगाणि इक्किक्केण निवीएण वच्चंति। जइ पुण भगवईजोगमज्झे केसिंचि पुव्वुत्तविहिए खमासमण-वंदण-काउस्सग्गा कया ते पुढो न चोढव्वा। दीवसागरपण्णत्ती तिहिं कालेहिं तिहिं अंबिलेहिं जाइ। **इसिभासियाइं** पणयालीसं अज्झयणाइं कालियाइं, तेसु दिण ४५ निव्विएहिं अणागाढजोगो। अण्णे भणंति–उत्तरज्झयणेसु चेव एयाइं अंतब्भवंति। पुज्जा पुण एवमाइसंति–तिहिं कालेहिं आयंबिलेहिं य उद्देस-समुद्देसाणुण्णाओ एएसिं कीरंति।–**पइण्णगविही।**

§ ६३. संपयं **महानिसीह**जोगविही–आउत्तवाणएणं गणिजोगविहाणेण निरंतरायंबिलपणयालीसाए भवइ। तत्थ महानिसीहसुयक्खंधं नंदीए उद्दिसिय पढमज्झयणं उद्दिसिज्जइ, समुद्दिसिज्जइ, अणुण्णविज्जइ य। तओ बीयज्झयणं, तत्थ नव उद्देसा दो दो दिणे दिणे जंति। नवमुद्देसो अज्झयणेण सह वच्चइ। एवं तइए उद्देसा १६, चउत्थे १६, पंचमे १२, छट्टे ४, सत्तमे ६, अट्ठमे २०। जओ आह–

अज्झंयणं[1] नवे[2] सोलस[3], सोलस[4] बारस[5] चउक्क[6] छ[7]-वीसा।
अट्ठज्झयणुद्देसा ४५, तेसीइ महानिसीहम्मि॥

इत्थ सत्तट्ठमाइं चूलारूवाइं तेयालीसाए दिणेहिं अज्झयणसमत्ती। एगं दिणं सुयक्खंधस्स समुद्देसे, एगमणुण्णाए, सव्वे दिणा ४५, काला ४५। आगाढजोगा।–**महानिसीहजोगविही।**

*

॥ जोगविहाणपयरणं ॥

§ ६४. संपयं भणियत्थसंगहरूवं जोगविहाणं नाम पयरणं भण्णइ–

नमिऊण जिणे पयओ जोगविहाणं समासओ वोच्छं।
पइअंगसुयक्खंधं अज्झयणुद्देसपविभत्तं॥ १॥
जंमि उ अंगंमि भवे दो सुयखंधा तहिं तु कीरंति।
सुयखंधस्स दिणेणं दोवि समुद्देसणुण्णाओ॥ २॥
अह एगो सुयखंधो अंगे तो दिणदुगेण सुयखंधो।
अणुण्णवइ अंगं पुण सव्वत्थ वि दोहिं दिवसेहिं॥ ३॥
आवस्सयसुयखंधो तहियं छ चेव हुंति अज्झयणा।
अट्ठहिं दिणेहिं वच्चइ आयामदुगं च अंतम्मि॥ ४॥
दसयालियसुयखंधो दस अज्झयणाइं दो य चूलाओ।
पिंडेसणअज्झयणे भवंति उद्देसगा दुन्नि॥ ५॥
विणयसमाहीए पुण चउरो तं जाइ दोहिं दिवसेहिं।
इक्केक्कवासरेणं सेसा पक्खेण सुयखंधो॥ ६॥
आवस्सय-दसकालियमोइण्णा ओह-पिंडनिज्जुत्ती।
एगेण तिहिं च निव्विएहिं णंदि-अणुओगदाराइं॥ ७॥
एगो य सुयक्खंधो छत्तीस भवंति उत्तरज्झयणा।
तत्थेक्केक्कज्झयणं वच्चइ दिवसेण एगेण॥ ८॥
नवरि चउत्थमसंखयमज्झयणं जाइ अंबिलदुगेणं।
अह पढइ तद्दिणि चिय अणुण्णवइ निव्विगइएणं॥ ९॥
सव्वोवि य सुयखंधो वच्चइ मासेण नवहि य दिणेहिं।
केसिं च मएण पुणो अट्ठावीसाइ दिवसेहिं॥ १०॥

जा अ-चउत्थं[1] चउद्दस इगेगकालेण जाइ इक्किक्को ।
दो दो इगेगकालेण जंति पुण सेस बावीसं ॥ ११ ॥
आयारो पढमंगं सुयखंधा तेसु दोण्णि जहसंखं ।
अड-सोलस अज्झयणा इत्तो उद्देसए वोच्छं ॥ १२ ॥
सत्तयं छे चउ चउरो छे पंच अट्ठेवं होंति चउरो य ।
इक्कारसं ति तियं दो दो दो दो नवं हुंति इक्कसरा ॥ १३ ॥
बीयम्मि सुयक्खंधे उग्गहपडिमाणमुवरि सत्तिक्का ।
आउत्तवाणएणं सुयाणुसारेण वहियव्वा ॥ १४ ॥
आयारो य समप्पइ पन्नासदिणेहिं तत्थ पढमम्मि ।
सुयखंधे चउवीसं बीए छव्वीसई दिवसा ॥ १५ ॥
बीयंगं सूयगडं तत्थवि दो च्चेव होंति सुयखंधा ।
सोलस-सत्तज्झयणा कमेण उद्देसए सुणसु ॥ १६ ॥
चउ तियं चउरो दो दो इक्कारसं पढमयंमि इक्कसरा ।
सत्तेव महज्झयणा इक्कसरा बीय सुयखंधे ॥ १७ ॥
सूयगडो य समप्पइ तीसाए वासरेहिं सयलो वि ।
पढमो बीसाए तहिं दिणेहिं बीओ तह दसेहिं ॥ १८ ॥
ठाणंगे सुयखंधो एगो दस चेव होंति अज्झयणा ।
पढमं एगसरं चउ चउ चउ तिगं सेस एगसरा ॥ १९ ॥
समवाओ पुण नियमा सुयखंधविवज्जिओ चउत्थंगं ।
तिहि वासरेहिं गच्छइ ठाणं अट्ठारसदिणेहिं ॥ २० ॥
होंति दसा-कप्पाईसुयखंधे दस दसा उ एगसरा ।
कप्पम्मि छ उद्देसा ववहारे दस विणिद्दिट्ठा ॥ २१ ॥
अज्झयणंमि निसीहे वीसं उद्देसगा मुणेयव्वा ।
तीसेहिं दिणेहिं जंति हु सव्वाणि वि छेयसुत्ताणि ॥ २२ ॥
निव्विएण जीयकप्पो आयामेणं तु जाइ पणकप्पो ।
तिहिं अंबिलेहिं उक्कालियाइं ओवाइयाइं चऊ ॥ २३ ॥
आउत्तवाणएणं विवाहपण्णत्ति पंचमं अंगं ।
छम्मासा छद्दिवसा निरंतरं होंति वोढव्वा ॥ २४ ॥
इत्थ य नय सुयखंधो नय अज्झयणा जिणेहिं परिकहिया ।
इगचत्तालसयाइं ताइं तु कमेण वोच्छामि ॥ २५ ॥
अट्ठ दसुद्देसाइं ८, दो चउ तीसाइं १०, बारसहिं एगं ११ ।
तिण्णि दसुद्देसाइं १४, गोसालसयं तु एगसरं १५ ॥ २६ ॥

---

1 'चतुर्थमसंख्यापादने पर्यवसिता' इति टिप्पनी ।

वीए पढमुद्देसो खंदो तइयम्मि चमरओ वीओ ।
गोसालो पनरसमो पण पण तिग हुंति दत्तीओ ॥ २७ ॥

एया सभत्तपाणा पारणगदुगेण होयणुण्णवणा ।
खंदाईण कमेणं वोच्छामि विहिं अणुण्णाए ॥ २८ ॥

चमरंमि छट्ठजोगो विगईए विसज्जणत्थमुस्सग्गा ।
अट्ठमजोगो लग्गइ गोसालसए अणुण्णाए ॥ २९ ॥

पनरसहिं कालेहिं पनरसदियहेहिं चमरणुण्णाए ।
लग्गइ य छट्ठजोगो पणलिविय अंविलं छट्ठं ॥ ३० ॥

अउणावण्णादिणेहिं अउणावण्णाइ वावि कालेहिं ।
अट्ठमजोगो लग्गइ अट्ठमदियहे निरुद्धं च ॥ ३१ ॥

चोद्दस १६ सत्तरस १७ तिण्णि उ दस उद्देसाइ २० तह असी २१ सट्ठी २२।
पन्नासा २३ चउवीसा २४ बारस २५ पंचसु य इक्कारा ३० ॥ ३२ ॥

अट्ठावीसा दोसुं ३२ चउवीससयं च ३४ पणसु बत्तीसं ३९ ।
दोण्णि सया इगतीसा ४० चरिमसए चेव छन्नउयं ४१ ॥ ३३ ॥

बंधी २६ करिसुगनामं २७ कम्मसमज्जिणण २८ कम्मपट्ठवणं २९ ।
ओसरणं समपुव्वं ३० उववा-३१ उव्वट्टणसयं च ३२ ॥ ३४ ॥

एगिंदिय ३३ तह सेढी ३४ एगिंदिय ३५ बेइंदियाण समहाणं ३६ ।
तेइंदिय ३७ चउरिंदिय ३८ असण्णिपणिंदिमह सहिया ३९ ॥ ३५ ॥

एएसिं सत्तण्हं जुम्मसयदुवालसाणि नेयाणि ।
आइदुगजुम्मवज्जं सन्निमहाजुम्मि य सयाणि ॥ ३६ ॥

एयाइं इक्कतीसं ४० चरमं पुण होइ रासिजुम्मसयं ४१ ।
पणवीसइमा आरा अभिहाणाइं वियाणाहिं ॥ ३७ ॥

इत्थ चउत्थम्मि सए अट्ठुद्देसा दुहा उ कायव्वा ।
अट्ठमसयवोलीणे सव्वो वि हु विसमयाई वि ॥ ३८ ॥

दोमासअद्धमासे विहिणा अंगे इमम्मिऽणुण्णाए ।
नामट्ठवणं कीरइ पुणरवि तह कालसज्झायं ॥ ३९ ॥

असुहभवक्खयहेऊ अच्चंतं अप्पमत्तपियधम्मा ।
पूरंति हु परियायं जावसमप्पंति कइवि[1] दिणा ॥ ४० ॥

सट्ठाणे वोढव्वं होइ इमं तह सुयाणुसारेणं ।
आयारेऽणुण्णाए केई आलंवणाइरया ॥ ४१ ॥

सोहणतिहि-रिक्खाइसु विउलेसण-निरुवसग्गि खित्तम्मि ।
उक्खिवणमाइजोगाण काहि किंचं निरवसेसं ॥ ४२ ॥

---

1 'कहिय' A टिप्पणी ।

नायाधम्मकहाओ छट्ठंगं तत्थ दो सुयक्खंधा ।
पढमे इक्कसराइं अज्झयणाइं अउणवीसं ॥ ४३ ॥
बीए दसवग्गा तहिं उद्देसा दसं दसेवं चउवन्ना ।
चउपन्ना बत्तीसा बत्तीसा चउ चउ अडऽट्ठं ॥ ४४ ॥
नायाधम्मकहाओ तेत्तीसाए दिणेहिं वच्चंति ।
पढमे वीसं दिवसा सुयखंधे तेरस उ बीए ॥ ४५ ॥
सत्तमयं पुण अंगं उवासगदस त्ति नाम तत्थेगो ।
सुयखंधो इक्कसरा इत्थऽज्झयणा हवंति दस ॥ ४६ ॥
अंतगडदसाओ पुण अट्ठममंगं जिणेहिं पन्नत्तं ।
तत्थेगो सुयखंधो वग्गा पुण अट्ठ विण्णेया ॥ ४७ ॥
अंतगडदसाअंगे वग्गे वग्गे कमेण जाणाहिं ।
दसं दसं तेरसं दसं दसं सोलसं तेरसं दसुद्देसा ॥ ४८ ॥
अहऽणुत्तरोववाइयदसा उ नामेण नवमयं अंगं ।
एगो य सुयक्खंधो तिन्नि उ वग्गा मुणेयव्वा ॥ ४९ ॥
उद्देसगाण संखं वग्गे वग्गे य एत्थ वोच्छामि ।
दसं तेरसं दसं चेव य कमसो तीसुं पि वग्गेसुं ॥ ५० ॥
चोद्दस उवासगदसा अंतगडदसा दुवालसेहिं तु ।
सत्तहिं दिणेहिं जंति उ अणुत्तरोववाइयदसाओ ॥ ५१ ॥
वग्गस्साइल्लाणं उद्देसाणं तहिं तिमिल्लाणं ।
उद्देस-समुद्देसे तहा अणुण्णं करिज्जासु ॥ ५२ ॥
दिवसेण जाइ वग्गो उस्सग्गा तत्थ होंति नव चेव ।
छप्पुव्वण्हे भणिया अवरण्हे नियमओ तिन्नि ॥ ५३ ॥
पण्हावागरणंगं दसमं एगो य होइ सुयखंधो ।
तहियं दस अज्झयणा एगसरा जंति पइदिवसं ॥ ५४ ॥
चोद्दसहिं वासरेहिं पण्हावागरणमंगमिह जाइ ।
आउत्तवाणएणं तं वहियव्वं पयत्तेणं ॥ ५५ ॥
एक्कारसमं अंगं विवागसुयमित्थ दो सुयक्खंधा ।
दोसुं पि य एगसरा अज्झयणा दस दस हवंति ॥ ५६ ॥
कालियचंदपण्णत्ती आउत्ताणेण सूरपण्णत्ती ।
सेसा संघट्टेणं ति-तिआयामेहिं चउरो वि ॥ ५७ ॥
निरयावलियभिहाणो सुयखंधो तत्थ पंचवग्गाओ ।
इक्किक्कंमि य वग्गे उद्देसा दसदसंतिमे दु जुया ॥ ५८ ॥

1 A °समुद्देसा । 2 'जंबू°, चंद°, सूर°, दीव°'–इति B टिप्पणी ।

चउवीसाइ दिणेहिं इक्कारसमं विवागसुयमंगं ।
वच्चइ सत्तदिणेहिं निरयावलियासुयक्खंधो ॥ ५९ ॥
ओ°रा°जी°पण्णवणा सू°जं°चं°नि°क°क°पुप्फ°वण्हिदसा ।
आयाराइउवंगा नेयव्वा आणुपुव्वीए ॥ ६० ॥
देविंदत्थयमाई पइण्णगा होंति इगिगनिव्विएण ।
इसिभासियअज्झयणा आयंबिलकालतिगसज्झा ॥ ६१ ॥
केसिं चि मए अंतब्भवंति एयाइं उत्तरज्झयणे ।
पणयालीस दिणेहिं केसि वि जोगो अणागाढो ॥ ६२ ॥
आउत्तवाणएणं गणिजोगविहीइ निसीहं तु ।
अच्छिन्नं कालंबिलपणयालीसाइ बोढव्वं ॥ ६३ ॥
एगसरं[1] नवं[2] सोलस[3] सोलस[4] बारस[5] चउ[6] छ[7] वीस[8] तहिं ।
तेसीइं उद्देसा छज्झयणा दोन्नि चूलाओ ॥ ६४ ॥
कालग्गहसज्झायं संघट्टाईविहिं निरवसेसं ।
सामायारिं च तहा विसेससुत्ताओ जाणिज्जा ॥ ६५ ॥
नियसंताणवसेणं सामायारीओ इत्थ भिन्नाओ ।
पिच्छंता इह संकं माहु गमिच्छा सया कालं ॥ ६६ ॥
सामायारीकुसलो वाणायरिओ विणीयजोगीण ।
भवभीयाण य कुज्जा सकज्जसिद्धिं न इहराओ ॥ ६७ ॥
जं इत्थ अहं चुक्को मंदमइत्तेण किंपि होज्जाहिं ।
तं आगमविहिकुसला सोहिंतु अणुग्गहं काउं ॥ ६८ ॥

*

॥ जोगविहाणपगरणं समत्तं ॥*॥ समत्तो जोगविही ॥ २४ ॥



§ ६५. जोगा य कप्पतिप्पं[1] विणा न वहिज्जंति –'कयकप्पतिप्पंकिरिय'त्ति वयणाओ । अओ संपयं **कप्पतिप्पविही** भण्णइ – तत्थ वइसाह-कत्तियबहुलपडिवयाणंतरं पसत्थदिणे चउव्वाइयरिक्खे गुरु-सोमवारे सुनिमित्तोवउत्तेहिं सदसवत्थवेढियगिहत्थभायणेणं कप्पवाणियमाणित्ता, जोईणीओ[2] पिट्ठओ वामओ वा काउं मुह-हत्थ-पाए ओंल्ले काऊण अहारायणियाए छम्मासियकप्पो उत्तारिज्जइ । पविसमाणस्सासं दसियाइ कयआउत्तजलेणं पढमं चउरो तिप्पाओ मुहे घेप्पंति, तओ पाएसु । इत्थ हत्थविण्णासो संपदाया नेयव्वो । छम्मासियकप्पे परदिण्णाओ चेव तिप्पाओ घेप्पंति । इयरकप्पे दसियापुत्तंचलकोप्परेहिं परदिण्णाओ वा । तहा छम्मासियकप्पुत्तारणे उद्धट्ठियस्स उद्धट्ठिओ तिप्पाओ दिज्जा, उवविट्ठस्स उवविट्ठो । सामन्नकप्पे नत्थि नियमो । तओ वसही भंडुवगरणं च नाणोवगरणवज्जं सव्वं पि तिप्पिज्जइ[3] । नवरं मंडलिट्ठाणं गोमयलेवे कए तिप्पिज्जइ । कप्पमज्झे वावरियं पत्त-भंड-मलग-उद्धरणी-पमज्जणिया-तलिया-लोहरच्छाइ जलेण कप्पिउं तिप्पिज्जइ । एवं कप्पे उत्तारिए वसहिं सोहित्तु हड्ड-केसाइ परिट्ठविय, इरियं पडिक्कमिय, पढमं

1 A °तेप्पं । 2 A जोयिणीओ । 3 A तेपिज्जइ ।

गुरुणा सज्झाए उक्खिविए मुहपोत्तिं पडिलेहिय, दुवालसावत्तवंदणं दाउं, खमासमणेण भणंति—'सज्झायं उक्खिवामो, बीयखमासमणेण सज्झायउक्खिवणत्थं काउस्सग्गं करेमो'। तओ अन्नत्थूससिएणमिच्चाइ पढिय, नवकारं चउवीसत्थयं चिंतिय, मुहेण तं भणिय, काउस्सग्गतियं कुणंति। पढमं असज्झाइय-अणाउत्तओहडावणियं, बीयं खुद्दोवद्दवओहडावणियं, तइयं सक्काइवेयावच्चगरआराहणत्थं। तिसु वि चउ उज्जोयचिंतणं, उज्जोयभणणं च। तओ खमासमणदुगेण सज्झायं संदिसावेमि, सज्झायं करेमि त्ति भणिय, जाणुट्ठिएहिं पंचमंगलपुव्वं 'धम्मो मंगलाइ' अज्झयणतियसज्झाओ कीरइ त्ति।

§ ६६. सज्झायउक्खिवणविही—जया य चित्तासोयसुद्धपक्खे सज्झाओ निक्खिविज्जइ, तया दुवालसावत्तवंदणं दाउं सज्झायनिक्खिवणत्थं अट्ठुस्सासं काउस्सग्गं काउं पारित्ता, मंगलपाढो कायव्वो त्ति। राओ[1] सन्नाए कयाए वमणे सित्थ-रुहिराइनिस्सरणे य पभाए कप्पो उत्तारिज्जइ। बाहिरभूमीए आगया पिंडियाओ पाए य तिप्पंति। जत्थ पाया मंडोवगरणं वा तिप्पिज्जइ सा भूमी अणाउत्ता होइ। सा य आउत्तजलउल्लियगदंडपुंछणेण सिद्धीए तिप्पिज्जइ। तं च दंडपुंछणं अणाउत्तट्ठाणे नेऊण तिप्पिज्जइ। अणाउत्तट्ठाणं नाम नीसरंताणं वामबाहाए दुवारपासे भूमिखंडलं इट्टिगाइपरिहिजुत्तं अणाउत्तडं ति रूढं। उच्चारे वोसिरिए वामकरेण तिहिं नावापूरेहिं आयमिय, आउत्तेण दाहिणहत्थेण दवं मत्थए छोढूण कोप्परेण वा दवं घित्तूणं अहिट्ठाणलिंगेसु जंघासु कलाइयासु चउरो चउरो तिप्पाओ घेप्पंति। पुरीसपवित्तीए जायाए जइ मुहे अणाउत्तो हत्थो लग्गइ तया कप्पुत्तारणेण सुज्झइ। तहा जइ आयामंतस्स तिप्पणयं दोरओ वा वामहत्थे पाए वा लग्गइ तया अणाउत्ती हवइ। दवं उज्झित्ता दोरयं मज्झे खिवित्ता तं भायणं तिप्पिज्जइ। बाहिं कंटयाइंमि भग्गे जेण हत्थेण तं उद्धरेइ सो हत्थो तिप्पियव्वो। जइ दंडओ हड्डे लग्गइ तया तिप्पियव्वो। जेण अंगेण उवंगेण वा अणाउत्तं मंडोवगरणं साहुं वा छिवइ, जंमि य रुहिरं नीहरइ तं अणाउत्तं होइ। कज्जयं मंडाइसु पाणियं तिप्पणयाइ कंठट्ठियं दोरयं च राओ जइ वीसरइ सव्वमणाउत्तं होइ। जाणंतेण विहाराइकारणे तुंबयकंठदिन्नं दोरयमणाउत्तं न होइ। गुड-घय-तिल्ल-खीराई भोयणवइरित्तकज्जे आणीयसव्वस्सं तिप्पित्तु वावरिज्जइ। नालिएराइसु घसणत्थं तिलं निक्खित्तं परिवसियं अणाउत्तं होइ, जइ लवणं मज्झे न निक्खिप्पइ। सुत्तूण उट्ठिएहिं दसाइणा कप्पवाणियं घेत्तुं पढमं एगं हत्थं मत्थए, एगं च मुहे काउं चउरो तिप्पाओ घेप्पन्ति। जइ पुण कारणजाए सुहसुद्धिमाइ मुहे चिट्ठइ, तया पढमं मत्थयं तिप्पित्ता, तओ मुहं पुट्ठो तिप्पियव्वं। तओ मत्थए आउत्तदवं छोढुं कण्ण-खंध-पगंड-कोप्पर-पउट्ठ-हियएसु चत्तारि चत्तारि तिप्पाओ। तओ पिट्ठ-पुट्ठीओ समगं तिप्पित्ता चोलपट्टय-ऊरु-जाणु-पिंडिया-पाएसु चउरो चउरो तिप्पाओ। तओ भायणाइं वइसणं च तिप्पिउं निउत्तो साहू ओमरायणिओ वा मंडलिं गिण्हिय, तक्क-तीमणाइखरडियं च भूमिं जलेण सोहिय, दंडउंछणं पमज्जणिं वा जेण मंडली गहिया तं मंडलीए तिप्पिय, तेणेव आउत्तजलउल्लियग्गेण मंडलीठाणं बाहिं नीसरंतेणं तिप्पियदेसं अच्छिवंतेणं अविच्छिन्नं तिप्पियव्वं। तं च दरतिप्पियं जइ केणवि अणाउत्तेहिं पाएहिं अक्कंतं पुणो अणाउत्तं होइ, तओ दंडाउंछणं उद्धरणियाए उवरिं तिप्पित्ता मंडलिं परिट्ठाविय उद्धरणियं अणाउत्तट्ठाणे तिप्पिय खीलए धारित्तु अब्भुक्खणं निक्खिविज्जइ। जो य सेहो गिलाणो सामायारी अकुसलो वा सो दंडाउंछणेण तिप्पिज्जइ। अववाएण राओ विहारत्थं नगराईहिंतो नीसरंताणं जइ पाएसु तलियाओ तो अणाउत्ता न होंति पाया, अन्नहा होंति। दिया वा राओ वा अणाउत्ते हत्थपायाइं अंगे जइ पयलाइ तो कप्पुत्तारणेण सुज्झइ। भुंजंतस्स

---

1 'राओ' इति B टिप्पणी। 2 A पाणयं। 3 'कूर्परस्कन्धयोर्मध्ये प्रगंडः। 4 भुजामध्यं कूर्परः। 5 आमणिबन्धात् कूर्परस्याधः प्रकोष्ठः कलाचिका स्यात्।' इति टिप्पणी A आदर्शे।

सित्थं पियंतस्स वा दवं जइ चोलपट्टयमज्झे गयं तो वि कप्पुत्तारणेण सुज्झइ। कारणपरिवासियजलेण तिप्पाओ न सुज्झंति। अणुग्गए य जइ तिप्पाओ गेण्हंतो एगं दो तिन्नि वा गिण्हेइ अपडंते वा दवे गिण्हइ सव्वमणाउत्तं होइ। नहा लोयकेसा य वसहीए वीसरिया तइए दिणे अणाउत्ता होंति। खइरकक्कसमाणं पूइत्तावण्णं[1] वा रुहिरमणाउत्तं न होइ। लद्वीए मज्जार-सुणग-माणुसाइपुरीसे वा छिक्के[2] अणाउत्तो होइ। तेप्पणयाइसु दवं अणाउत्तं जायं अइरित्ते वा मा उज्झियव्वं होहिइ त्ति। तओ आकंठं जलेण भरित्ता तिप्पियं आउत्तं होइ त्ति।

॥ कप्पतिप्पसामायारी समत्ता ॥ २५ ॥

*

§ ६७. एवं कप्पतिप्पाइविहिपुरस्सरं साहू समाणियसयलजोगविही मूलगंथ-नंदि-अणुओगदार-उत्तरज्झयण-इसिभासिय-अंग-उवंग-पइन्नय-छेयगंथआगमे वाइज्जा। अतो **वायणाविही** भणइ —

तत्थ अणुओगमंडलिं पमज्जिय गुरुणो निसिज्जं रइत्ता, दाहिणपासे य निसिज्जाए अक्खे ठाइत्ता, गुरूणं पाएसु मुहपोत्तियापडिलेहणपुव्वं दुवालसावत्तवंदणं दाउं, पढमे खमासमणे अणुओगं आढवेमो त्ति, बीए अणुओगआढवणत्थं काउस्सग्गं करेमो त्ति भणिय, अणुओगआढवणत्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ ऊससिएणमिच्चाइ पढिय, अट्ठुस्सासं काउस्सग्गं करिय, पारित्ता पंचमंगलं भणित्ता, पढमे खमासमणे वायणं संदिसावेमि, बीए वायणं पडिगाहेमि, तइए वइसणं संदिसावेमि, चउत्थे वइसणं ठामि त्ति भणिऊण, नीयासणत्थो मुहपोत्तियाठइयवयणो उवउत्तो उचियसरेणं वाइज्जा। जे के वि अणुओगं आढविय उवउत्ता सुणन्ति तेसिं सव्वेसिं वायणा लग्गइ। अणुओगे आढत्ते निद्दा-विगहा-वत्ता-हास-पच्चक्खाणदाणाइ न कीरइ। जस्स सगासे तं सुयमहिज्जियं तमेगं मुत्तुं अन्नस्स गुरुणो वि न अब्भुट्ठिज्जइ। उद्देसगसमत्तीए छोभवंदणं भणंति। अज्झयणाइसु वंदणगमेव। अणुओगसमत्तीए पढमखमासणे अणुओगपडिक्कमहं, बीए अणुओगपडिक्कमणत्थ काउस्सग्गु करहं। अणुओगपडिक्कमणत्थं करेमि काउस्सग्गमिच्चाइ पढिय, अट्ठुस्सासं उस्सग्गं काउं पारित्ता, पंचमंगलं भणित्ता, गुरुणो वंदंति त्ति।

॥ वायणाविही समत्तो ॥ २६ ॥

*

§ ६८. एवं विहिगहियागमं सीसं अणुवत्तगत्ताइगुणन्नियं नाउं वायणायरियपए उवज्झायपए आयरियपए वा गुरुणो ठावेंति। सिस्सिणिं च पवत्तिणीपए महत्तरापए वा। तत्थ **वायणायरियपयठावणाविही** भणइ —

एगकंबलं निसिज्जं उत्तरच्छयसहियं रइत्ता पक्खालियंगं सीसं वामपासे ठाविय दुवालसावत्तवंदणं दवाविय, खमासमणपुव्वं गुरू भणावेइ — 'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं वायणायरियपयअणुजाणावणियं वासनिक्खेवं करेह'। गुरू भणइ — 'करेमो'। पुणो खमासमणेणं सीसो भणइ — 'तुब्भे अम्हं वायणायरियपयअणुजाणावणियं चेइयाइं वंदावेह'। तओ गुरू 'वंदावेमो'त्ति भणित्ता, तस्स सिरे वासे खिविय वड्ढंतियाहिं थुईहिं तेण सहिओ देवे वंदइ। जाव पंचपरमिट्ठित्थवभणणं पणिहाणगाहाओ य। तओ गुरू सीसो य वायणायरियपयअणुजाणावणियं सत्तावीसुस्सासं काउस्सग्गं दो वि करित्ता उज्जोयगरं भणंति। तओ सूरी उद्धट्ठिओ नंदिकड्ढावणियं काउस्सग्गं अट्ठुस्सासं कारवित्ता करित्ता य नवकारतिगं भणित्ता

1 'पूतित्वापन्नं' इति A टिप्पणी। 2 'स्पृष्टे' इति A टिप्पणी।

"नाणं पंचविहं पण्णत्तं, तं जहा — आभिणिबोहियनाणं, सुयनाणं, ओहिनाणं, मणपज्जवनाणं, केवलनाणं ति" पंचमंगलत्थं नंदिं कड्डिय इमं पुण पट्टवणं पडुच्च — 'एयस्स साहुस्स वायणायरियपयअणुण्णा नंदी पवत्तइ' त्ति भणिय सिरसि वासे खिवेइ । तओ निसिज्जाए उवविसिय गंधे अक्खए य अभिमंतिय संघस्स देइ । तओ जिणचलणेसु गन्धे खिवेइ । तओ सीसो वंदिउं भणइ — 'तुब्भे अम्हं वायणायरियपयं अणुजाणह' । गुरू भणइ — 'अणुजाणेमो' । सीसो भणइ — 'संदिसह किं भणामो ?' गुरू भणइ — 'वंदित्ता पवेयह' । पुणो वंदिय सीसो भणइ — 'इच्छाकारेण तुब्भेहिं अम्हं वायणायरियपयमणुन्नायं' ३ खमासमणाणं, हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तदुभएणं, सम्मं धारणीयं चिरं पालणीयं अन्नेसिं पि पवेयणीयं । सीसो वंदिय भणइ — 'इच्छामो अणुसट्ठिं'; पुणो वंदिय सीसो भणइ — 'तुम्हाणं पवेइयं, संदिसह साहूणं पवेएमि' । तओ नमोक्कारमुच्चरंतो सगुरुं समवसरणं पयक्खिणी करेइ तिन्नि वाराओ । गुरू संघो य 'नित्थारगपारगो होहि, गुरुगुणेहिं वड्ढाहि' त्ति भणिरो तस्स सिरे वासक्खए खिवेइ । तओ वंदिय सीसो भणइ — 'तुम्हाणं पवेइयं, साहूणं पवेइयं, संदिसह काउस्सग्गं करेमि' त्ति भणित्ता अणुण्णाय 'वायणायरियपयथिरीकरणत्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थूससिएणमिच्चाइ' भणिय काउसग्गे उज्जोयं चिंतिय, पारित्ता चउवीसत्थयं भणित्ता, गुरुं वंदित्ता भणइ — 'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं निसिज्जं समप्पेह' । तओ गुरू निसिज्जं अभिमंतिय, उवरि चंदणसत्थियं काऊण, तस्स देइ । सो य निसिज्जं मत्थएण वंदित्ता सनिसिज्जो गुरुं तिपयाहिणी करेइ । तओ पत्ताए लग्गवेलाए चंदणचच्चियदाहिणकन्ने तिन्नि वारे गुरू मंतं सुणावेइ — 'अ-उ-म्-न्-अ-म्-ओ-भ्-अ-ग्-अ-व्-अ-अ-उ-अ-र्-अ-ह्-अ-अ-उ-म्-अ-ह्-अ-इ-म्-अ-ह्-आ-व्-ई-र्-अ-व्-अ-द्ध्-अ-म्-आ-ण्-अ-स्-आ-म्-इ-स्स्-अ-स्-इ-ज्झ्-अ-उ-म्-ए-भ्-अ-ग्-अ-व्-अ-ई-म्-अ-ह्-अ-इ-म्-अ-ह्-आ-व्-इ-ज्-आ-अ-उ-म्-व्-ई-र्-ए-व-ई-र्-ए-म्-अ-ह्-आ-व्-ई-र्-ए-ज्-अ-य्-अ-व्-ई-र-ए-स्-ए-ण्-अ-व्-ई-र्-ए-व्-अ-द्ध्-अ-म्-आ-ण्-अ-व्-ई-र्-ए-ज्-अ-य्-ए-य-इ-ज्-अ-य्-ए-ज्-अ-य्-अं-त्-ए-अ-प्-अ-र्-आ-ज्-इ-ए-अ-ण्-इ-ह्-अ-स्-अ-उ-म्-ह्-र्-ई-म्-स्-व्-आ-ह्-आ । उवयारो चउत्थेण साहिज्जइ । पव्वज्जोवट्ठावणा-गणिजोग-पइट्ठा-उचिमहत्तपडिवत्तिमाइएसु कज्जेसु सत्तवारा जवियाए गंधक्खेवे नित्थारगपारगो होइ, पूयासक्कारारिहो य । तओ वद्धमाणविज्जामंडलपडो तस्स दिज्जइ । तओ नामट्ठवणं करिय, गुरुणा अणुण्णाए ओमरायणिया साहू साहुणीओ य सावया साविआओ य तस्स पाएसु दुवालसावत्तवंदणं दिंति । सो य सयं जिट्ठज्जे वंदइ । तओ तस्स कंबलरयखंडरहियस्स पुट्ठिपट्टस्स अणुण्णं दाऊणं साहु-साहुणीणं अणुवत्तणे गंभीरयाए विणीययाए इंदियजए य अणुसट्ठी दायव्वा । तओ वंदणं दाविऊण पच्चक्खाणं निरुद्धं कारिज्जइ त्ति ।

॥ वायणायरियपयट्ठावणाविही समत्तो ॥ २७ ॥

*

§ ६९. संपयं उवज्झायपयट्ठावणाविही । सो वि एवं चेव — उवज्झायपयाभिलावेण भाणियव्वो । नवरं उवज्झायपयं आसन्नलद्धपइमत्ताइगुणरहियस्स वि समग्गसुत्तत्थगहणधारणवक्खाणणगुणवंतस्स सुत्तवायणे अपरिस्संतस्स पसंतस्स आयरियट्ठाणजोग्गस्सेव दिज्जइ । निसिज्जा य दुकंबला; आयरियवज्जं जेट्ठकणिट्ठा सव्वे वंदणं दिंति । मंतो य तस्स सो चेव; नवरं आइए नंदिपयाणि अहिज्जन्ति ।

अ-उ-म्-न्-अ-म्-ओ-अ-र्-अ-ह्-अ-म्-त-आ-ण्-अ-म् । अ-उ-म्-न्-अ-म्-ओ-स्-इ-द्-आ-ण्-अ-म् । अ-उ-म्-न्-अ-म्-ओ-आ-य्-अ-र्-इ-आ-ण्-अ-म् । अ-उ-म्-न्-अ-म्-ओ-उ-व्-अ-ज्झ्-आ-य्-आ-ण्-

1 C आदर्शे अत्र — 'उवयारो चउत्थेण तम्मि चेव दिणे महस्सजावेन–सौभाग्यमुद्रा १, परमेष्ठिमुद्रा २, प्रवचनमुद्रा ३, गुरुमुद्रा ४, एतन्मुद्राचतुष्टयं कृत्वा मंत्रः स्मर्तव्यः—इत्यादिकः' — एतावान् पाठो विद्यते । 2 A नाम्नि पदमिदम् ।

अ-म् । अ-उ-म्-न्-अ-म्-ओ-स्-अ-व्-अ-स्-आ-ह्-ऊ-ण्-अ-म् । अ-उ-म्-न्-अ-म्-ओ-अ-उ-ह्-इ-ज्-इ-ण्-अ-अ-ण्-अ-म् । अ-उ-म्-न्-अ-म्-ओ-प्-अ-र्-अ-म्-ओ-ह्-इ-ज्-इ-ण्-अ-अ-ण्-अ-म् । अ-उ-म्-न्-अ-म्-ओ-स्-अ-व्-ओ-ह्-इ-ज्-इ-ण्-अ-अ-ण्-अ-म् । अ-उ-म्-न्-अ-म्-ओ-म्-अ-ण्-अ-म्-त्-ओ-ह्-इ-ज्-इ-ण्-अ-अ-ण्-अ-म् । उवयारो सो चेव । संघपूयाइमहूसवाहिगारो एत्थ सावयाणं ति ।

॥ उवज्झायपयट्ठावणाविही समत्तो ॥ २८ ॥

*

§ ७०. **इयाणिं आयरियपयट्ठावणाविही** भण्णइ । आयार-सुय-सरीर-वयण-वायणा-मइपओग-मइसंगह-परिण्णारूवअट्ठविहगणिसंपओववन्नस्स देस-कुल-जाइ-रूवी-इच्चाइगुणगणालंकियस्स बारसंवरिसे अहिज्जिय सुत्तस्स बारसंवरिसे गहियत्थसारस्स बारसवरिसे लद्धिपरिक्खानिमित्तं कयदेसदंसणस्स सीसस्स लोयं काउं पाभाइयकालं गिण्हिय, पडिक्कमणाणंतरं वसहीए सुद्धाए कालग्गाहीहिं काले पवेइए अंगपक्खालणं काउं, दाहिणकरे कणयकंकणमुद्दाओ पहिराविउ, चोक्खनेवत्थं पंगुराविज्जइ । पसत्थतिहि-करण-मुहुत्त-नक्खत्त-जोग-लग्गजुत्ते दिवसे अक्ख-गुरुजोगाओ दुन्नि निसिज्जाओ पडिलेहिज्जन्ति। सीसो गुरू य दुन्नि वि सज्झायं पट्ठविंति। पट्ठविए सज्झाए जिणाययणे गन्तूण समवसरणसमीवे दुन्नि वि निसिज्जाओ भूमिं पमज्जितु संघट्टियाओ धरिज्जन्ति। तओ गुरू सूरिमन्तेण चंदणघणसारचच्चियअक्खाभिमंतणे कए निसिज्जाओ उट्ठित्ता, सूरिपयजोग्गं सीसं वामपासे ठवित्ता, खमासमणपुव्वं भणावेइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं दव्व-गुण-पज्जवेहिं अणुओगअणुजाणावणत्थं वासे खिवेह' । तओ गुरू सीसस्स वासे खिवेइ, मुद्दाओ सरीररक्खं च करेइ । तओ सीसो खमासमणं दाउं भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं दव्व-गुण-पज्जवेहिं चउविहअणुओगअणुजाणावणत्थं चेइआइं वंदावेह' । तओ गुरू सीसं वामपासे ठवित्ता वड्ढंतियाहिं थुईहिं संघसहिओ देवे वंदइ । संतिनाह-संतिदेवयाइ आराहणत्थं काउस्सग्गं करेइ । तेसिं थुईओ देइ । सासणदेवयाकाउस्सग्गे य उज्जोयगरं चउक्कं चिन्तइ[3] । तीसे चेव थुइं देइ । तओ उज्जोयगरं भणिय, नवकारतिगं कड्ढिय, सक्कत्थयं भणित्ता, पंचपरमेट्ठित्थवं पणिहाणदंडगं च भणति । तओ सीसो पुत्तिं पडिलेहित्ता दुवालसावत्तवंदणं दाउं भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं दव्व-गुण-पज्जवेहिं अणुओगअणुजाणावणत्थं सत्तसइय नंदिकड्ढावणत्थं काउस्सग्गं करावेह । तओ दुवे वि काउस्सग्गं करेंति सत्तावीसुस्सासं, पारित्ता चउवीसत्थयं भणंति । तओ सीसो खमासमणं दाउं भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं सत्तसइयं नंदिं सुणावेह । तओ सूरी नमोक्कारतिगपुव्वं उद्धट्ठिओ नंदिपुत्थियाए वासे खिवित्ता, सयमेव नंदिं अणुकड्ढेइ । अन्नो वा सीसो उद्धट्ठिओ मुहपोत्तियाठइयमुहकमलो उवउत्तो नंदिं सुणावेइ । सीसो य मुहपोत्तियाए ठइयमुहकमलो जोडियकरसंपुडो एगग्गमणो उद्धट्ठिओ नंदिं सुणेइ । नंदिसमत्तीए सूरी सूरिमंतेण मुद्दापुव्वं गंधक्खए अभिमंतेइ । तओ मूलपडिमासमीवं गुरू गंतूण पडिमाए वासक्खेवं काऊण, सूरिमंतं उद्धट्ठिओ जवइ । ततो समवसरणसमीवमागम्म नंदिपडिमाचउक्कस्स वासे खिवेइ । तओ अभिमंतिय वासक्खए चउविहसिरिसमणसंघस्स देइ । तओ सीसो खमासमणं दाउं भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं दव्व-गुण-पज्जवेहिं अणुओगं अणुजाणेह' । गुरू भणइ—'अहं एयस्स दव्व-गुण-पज्जवेहिं खमासमणाणं हत्थेणं अणुओगं अणुजाणामि' । सीसो खमासमणं दाउं भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भेहिं अम्हं दव्व-गुण-पज्जवेहिं अणुओगो अणुण्णाओ?'—एवं सीसेण पण्हे कए गुरू भणइ—'खमासमणाणं हत्थेणं सुत्थेणं अत्थेणं तदुभयेणं अणुओगो अणुण्णाओ ३ । सम्मं धारणीओ, चिरं पालणीओ, अन्नेसिं च पवेयणिओ'—इति भणंतो वासे खिवेइ । तओ सीसो खमासमणं दाउं भणइ—'तुम्हाणं पवेइयं, संदिसह

1 A बारिस । 2 B गेण्हिय । 3 चिंतवि ।

साहूणं पवेएमि ?' । गुरू भणइ–'पवेयह' । तओ नमोकारमुच्चरंतो चउद्दिसिं सगुरुं समवसरणं पणमंतो पाउंछणं गहिय, रयहरणेण भूमिं पमज्जितो पयक्खिणं देइ । संघो य तस्स सिरे अक्खए खिवइ । एवं तिन्नि वाराओ देइ । तओ खमासमणं दाउं भणइ–'तुम्हाणं पवेइयं, संदिसह काउस्सग्गं करेमि ?' । गुरू भणइ–'करेह' । खमासमणं दाउं–दव्व-गुण-पज्जवेहिं अणुओगअणुण्णानिमित्तं करेमि काउस्सग्गं–उज्जोयं चिंतिय तं चेव भणइ । तओ गुरू सूरिमंतेण निसिज्जं अभिमंतेइ । तओ सीसो खमासमणं दाउं भणइ–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं निसिज्जं समप्पेह' । तओ गुरू वासे मत्थए खिविय तिकंबलं निसिज्जं समप्पेइ । ततो निसिज्जासहिओ समवसरणं गुरुं च तिन्नि वाराओ पयक्खिणी करेइ । तओ गुरुस्स दाहिणभुयासन्ने स निसिज्जाए निसीयइ । तओ पत्ताए लग्गवेलाए चंदणचच्चियदाहिणकन्नस्स गुरुपरंपरागए मंतपए कहेइ, तिन्नि वाराओ । एसो य सूरिमंतो भगवया वद्धमाणसामिणा सिरिगोयमसामिणो एगवीससयअक्खरप्पमाणो दिन्नो, तेण य बत्तीससिलोगप्पमाणो कओ । कालेण परिहायंतो परिहायंतो जाव दुप्पसहस्स अद्धुट्ठसिलोगप्पमाणो भविस्सइ । नय पुत्थए लिहिज्जइ; आणाभंगप्पसंगाओ । जित्तियमित्तो य संपयं वट्टइ तित्तियस्स सयलस्स वि लग्गवेलाए दाणे इट्ठलग्गंसो न फव्वइ । अतो लग्गस्स आरेणावि पीढचउक्कं दायव्वं । इट्ठलग्गंसे पुण चउपीढसामिणो मंतरायस्स पंच सत्त वा जहा संपदायं पयाइं दायव्वाइं ति गुरु आएसो । उवयारो एयस्स कोडिअंसतवेण साहिज्जइ । तव्विही इमो–

उ०नि०आ०नि०आ०नि०आ०नि०उ०इग पणिग पणेग पणिग इगमेगं ।
चिंतण-पढणं विकहाचाओ ऽहोरत्तणुट्ठाणं ॥ १ ॥
उ०नि०आ०नि०आ०नि०उ०इगेग ति चउ इग दुग इग पुव्ववावारो ।
सविसेसो जिणथव चत्तमंतङसयं च उस्सग्गे ॥ २ ॥
उ०नि०आ०नि०आ०नि०उ०इगट्ठ पंच सत्तेग दु इग तइयपए ।
उ०नि०आ०दु इग पणेगिग तुरिए पुव्वो विही दुसुवि ॥ ३ ॥

मोणेण सुरहिदव्वचिय गोयमतप्परेण निस्संकं ।
झाणं इत्थियदंसणमंतपए सोलसायामा ॥ ४ ॥

साहणाविही य अम्हच्चिय सूरिमंतकप्पे दट्ठव्वो । जओ चेव एस महप्पभावो एत्तोच्चिय एयस्साराहगो सूयगभत्तं मयगभत्तं रयस्सलाछुत्तभत्तं मज्जमंसासिभत्तं च परिहरइ । अन्नेसिं साहूणं उच्छिट्ठजलकणेणावि लग्गेण एयस्स न भोयणं कप्पइ त्ति । तओ सीसो खमासमणं दाउं भणइ–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं अक्खे समप्पेह' । तओ गुरू तिन्नि अक्खमुट्ठीओ वड्ढंतियाओ गंधकप्पूरसहियाओ देइ । सीसो वि उवउत्तो करयलसंपुडेण गिण्हइ । जोगपट्टयं खडियं च गुरू समप्पेइ त्ति पालित्तयसूरी । तओ सीसो खमासमणं दाउं भणइ–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं नामट्ठवणं करेह' । तओ गुरू वासे खिवन्तो जहोचियं सूरिसद्दपज्जंतं नामं तस्स करेइ ।

तओ गुरू निसिज्जाए उट्ठेइ, सीसो तत्थ निसीयइ । तओ नियनिसिज्जानिसन्नस्स सीसस्स मुहपोत्तिं पडिलेहिऊण तुल्लगुणक्खावणत्थं जीयं ति काउं गुरू दुवालसावत्तवंदणं दाउं भणइ–'वक्खाणं करेह' । तओ सीसो जहासत्तीए परिसाणुरूवं वा नंदिमाइयं वक्खाणं करेइ । कए वक्खाणे साहवो वंदणं दिंति । ताहे सो निसिज्जाओ उट्ठेइ, गुरू निसिज्जाए उवविसइ । सीसो य जाणू ठिओ सुणेइ ।

---

1 C इग । 2 पदमिदं नास्ति A ।

गुरू वि तस्स उववूहणं काउं सूरिपयठवियगीयस्स साहुवग्गस्स साहुणीवग्गस्स य अणुसट्ठिं देइ। अणुओगविसज्जावणत्थं काउस्सग्गं दुवे वि करेंति। कालस्स पडिक्कमंति। तओ अविहवसावियाओ आरत्तियाइअवतारणं कुव्वंति। तओ संघसहिओ छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महूसवेणं वसहीए जाइ। अणुण्णायाणुओगो सूरी निरुद्धं उववासं वा करेइ। जहासत्तीए संघदाणं करेइ। इत्थ संघपूया-जिणभवणट्ठाहियाइकरणं च सावयाहियारो। भोयणे पुरओ चउक्कियाइधारणं, आसणे य कंबलवत्थखंडपडिच्छन्नो पुट्ठिपट्टो य तस्स अणुण्णाओ।

§ ७१. उववूहणा पुण एवं–

निज्जामओ भवण्णवतारणसद्धम्मजाणवत्तंमि।
मोक्खपहसत्थवाहो अन्नाणंधाण चक्खू य॥ १॥
अत्ताणाणंताणं नाहोऽनाहाण भव्वसत्ताणं।
तेण तुमं सुपुरिस! गरुयं[1]गच्छभारे निउत्तोऽसि॥ २॥

अह अणुसट्ठी–

छत्तीसगुणधुराधरणधीरधवलेहिं पुरिससीहेहिं।
गोयमपामुक्खेहिं जं अक्खयसोक्खमोक्खकए॥ ३॥
सव्वोत्तमफलजणयं सव्वोत्तमपयमिमं समुव्वूढं।
तुमए वि तयं दढमसढवुद्धिणा धीर! धरणीयं॥ ४॥
न इओ वि परं परमं पयमत्थि जए वि कालदोसाओ।
वोलीणेसु जिणेसुं जमिणं पवयणपयासकरं॥ ५॥
अओ – नाणाविणेयवग्गाणुसारिसिरिजिणवरागमाणुगयं।
अगिलाणीएऽणुवजीवणाए विहिणा पइदिणं पि॥ ६॥
कायव्वं वक्खाणं जेण परत्थोज्जएहिं धीरेहिं।
आरोवियं तुममिमं नित्थरसि पयं गणहराणं॥ ७॥
सपरोवयारगरुयं पसत्थतित्थयरनामनिम्मवणं।
जिणभणियागमवक्खाणकरणमिव अणणुगुणजणगं॥ ८॥
अगणियपरिस्समो तो परेसिमुवयारकरणदुल्ललिओ।
सुंदर! दरिसिज्ज तुमं सम्मं रम्मं अरिहधम्मं॥ ९॥
तहा – निच्चं पि अप्पमाओ कायव्वो सव्वहा वि धीर! तुमे।
उज्जमपरे पहुंमि सीसा वि समुज्जमंति जओ॥ १०॥
वहुंतओ विहारो कायव्वो सव्वहा तहा तुमए।
हे सुंदर! दरिसण-नाण-चरणगुणपयरिसनिमित्तं॥ ११॥
संखित्ता वि हु मूले जह वड्ढइ वित्थरेण वच्चंती।
उदहिं तेण वरनई तह सीलगुणेहिं वड्ढाहि॥ १२॥

1 A गुरुय°।

सीयावेइ विहारं गिद्धो सुहसीलयाइ जो मूढो ।
सो नवरि लिंगधारी संजमसारेण निस्सारो ॥ १३ ॥
वज्जेसु वज्जणिज्जं निय-परपक्खे तहा विरोहं च ।
वायं असमाहिकरं विसग्गिभूए कसाए य ॥ १४ ॥
नाणंमि दंसणंमि य चरणंमि य तीसु समयसारेसु ।
चोएइ जो ठवेउं गणमप्पाणं गणहरो सो ॥ १५ ॥
एसा गणहरमेरा आयारत्थाण वण्णिया सुत्ते ।
आयारविरहिया जे ते तमवस्सं विराहिंति ॥ १६ ॥
अपरिस्सावी सम्मं समदंसी होज्ज सव्वकज्जेसु ।
संरक्खसु चक्खुं पिव सबालवुड्ढाउलं गच्छं ॥ १७ ॥
कणगतुला सममज्झे धरिया भरमविसमं जहा धरइ ।
तुल्लगुणपुत्तजुगलगमाया वि समं जहा हवइ ॥ १८ ॥
नियनयणं जुयलियं घा अविसेसियमेव जह तुमं वहसि ।
तह होज्ज तुल्लदिट्ठी विचित्तचित्ते वि सीसगणे ॥ १९ ॥
अन्नं च मोक्खफलकंखिभवियसउणाण सेवणिज्जो तं ।
होहिसि लद्धच्छाओ तरु घ मुणिपत्तजोगेण ॥ २० ॥
ता एए वरमुणिणो मणयं पि हु नावमाणणीया ते ।
उक्खित्तभरुव्वहणे परमसहाया तुह इमे जं ॥ २१ ॥
जहा विंझगिरी आसन्न-दूरवणवत्तिहत्थिजूहाणं ।
आधारभावमविसेसमेव उव्वहइ सव्वाणं ॥ २२ ॥
एवं तुमं पि सुंदर ! दूरं सयणेयराइसंकप्पं ।
मुत्तुमिमाण मुणीणं सव्वाण वि हुज्ज आहारो ॥ २३ ॥
सयणाणमसयणाणं भूणप्पायाण सयणरहियाण ।
रोगिनिरक्खरकुक्खीण बालजरजज्जराईणं ॥ २४ ॥
पेमहुपिया व पियामहो ऽहवाऽणाहमंडवो वावि ।
परमोवट्ठंभकरो सव्वेसि मुणीण होज्ज तुमं ॥ २५ ॥
तह इह दुसमागिम्हे साहूणं[1] धम्ममइपिवासाणं ।
परमपयपुरपहाणुगसुविहियचरियापवाइ ठिओ ॥ २६ ॥
संपाडिज्जऽज्जाण वि किंचजलं देसणापणालीए ।
वज्जियसंसग्गीण वि तुममंतेवासिणीउ त्ति ॥ २७ ॥
तह दुविहो आयरिओ इहलोए तह य होइ परलोए ।
इहलोए असारिणिओ[2] परलोए फुडं भणंतो य ॥ २८ ॥
ता भो देवाणुप्पिया परलोए हुज्ज सम्ममायरिओ ।
मा होज्ज[3] स-परनासी होउं इहलोयआयरिओ ॥ २९ ॥

---

1 BC साहूण वि । 2 B असारगिओ; C सारनिओ । 3 A होइ ।

तह मण-वइ-काएहिं करिंतु विप्पियसयाइं तुह समणा।
तेसु तुमं तु पियं चिय करिज्ज मा विप्पियलवं ति ॥ ३० ॥
निग्गहिऊण अणक्खे अकुंणतो तह य एगपक्खित्तं।
साहम्मिएसु समचित्तयाइ सव्वेसु वट्टिज्जा ॥ ३१ ॥
सव्वजणवंधुभावारिहं पि इक्कस्स चेव पडिवद्धं।
जो अप्पाणं कुणई तओ विमूढो हु को अन्नो ॥ ३२ ॥
एवं च कीरमाणे होही तुह भुवणभूसणा कित्ती।
एत्तो चेव य चंदं पडुच्च केणावि जं भणियं ॥ ३३ ॥
'गयणंगणपरिसक्कणखंडणदुक्खाइं सहसु अणवरयं।
न सुहेण हरिणलंछण! कीरइ जयपायडो अप्पा' ॥ ३४ ॥
अविणीए सासिंतो कारिमकोवे वि मा हु मुंचिज्जा।
भद्द! परिणामसुद्धिं रहस्समेसा हि सव्वत्थ ॥ ३५ ॥
उप्पाइयपीडाण वि परिणामवसेण गइविसेसो जं।
जह गोवं[1]-खरय-सिद्धत्थयाण वीरं समासज्ज ॥ ३६ ॥
अइतिक्खो खेयकरो होहिसि परिभवपयं अइमिऊ य।
परिवारंमि सुंदर! मज्झत्थो तेण होज्ज तुमं ॥ ३७ ॥
स-परावायनिमित्तं संभवइ जहा असीअ परिवारो।
एवं पहू वि ता तयणुवत्तणाए जएज्ज तुमं ॥ ३८ ॥
अणुवत्तणाइ सेहा पायं पावंति जोग्गयं परमं।
रयणं पि गुणोक्करिसं पावइ परिकम्मणगुणेण ॥ ३९ ॥
इत्थ उ पमायखलिया पुव्वऽभासेण कस्स व न होंति।
जो[2] तेऽवणेइ सम्मं गुरुत्तणं तस्स सहलं ति ॥ ४० ॥
को नाम सारही णं स होज्ज जो भद्दवाइणो[3] दमए।
दुट्ठे वि हु जो आसे दमेइ तं सारहिं बिंति ॥ ४१ ॥
को नाम भणिइकुसलो वि इत्थ अच्चब्भुयप्पभावम्मि।
गणहरपए पइपयं सव्वुवएसे खमो वुत्तुं ॥ ४२ ॥
परमित्तियं भणामो जायइ जेणुण्णई पवयणस्स।
तं तं विचिंतिऊणं तुमए सयमेव कायव्वं ॥ ४३ ॥
सीसाणुसासणे वि हु पारद्धे अह इमं तुमं पि खणं।
वण्णिज्जंतं जइपहु! पहिट्ठचित्तो निसामेहि ॥ ४४ ॥
वज्जेह अप्पमत्ता अज्जासंसग्गि[4]मग्गिविससरिसं।
अज्जाणुचरो[5] साहू पावइ वयणिज्जमचिरेण ॥ ४५ ॥

---

1 BC गोचरच्चरय°। 2 BC जा ते। 3 'भद्रवाजिनः' इति A टिप्पणी। 4 B °संसग्गमग्गि°। 5 A अज्जाणुवरिं; B अज्जाणुवसें।

थेरस्स तवस्सिस्स वि सुबहुसुयस्स वि पमाणभूयस्स ।
अज्जासंसग्गीए निवडइ वयणिज्जदढवज्जं ॥ ४६ ॥
किं पुण तरुणो अबहुस्सुओ य अविगिट्ठतवपसत्तो य ।
सद्दाइगुणपसत्तो न लहइ जणजंपणं लोए ॥ ४७ ॥
एसो य मए तुम्हं मग्गमजाणाण मग्गदेसयरो ।
चक्खू व अचक्खूणं सुवाहिविहुराण विज्जो व ॥ ४८ ॥
असहायाण सहाओ भवगत्तगयाण हत्थदाया य ।
दिन्नो गुरू गुणगुरू अहं च परिमुक्कलो इण्हिं ॥ ४९ ॥
एयम्मि सारणावारणाइदाणे वि नेव कुवियव्वं ।
को हि सकण्णो कोवं करिज्ज हियकारिणि जणम्मि ॥ ५० ॥
एसो तुम्हाण पहू पभूयगुणरयणसायरो धीरो ।
नेया एस महप्पा तुम्ह भवाडविनिवडियाणं ॥ ५१ ॥
ओमो समरायणिओ अप्पयरसुओ हव त्ति धीरमिमं ।
परिभविहिह मा तुब्भे गणि त्ति एण्हिं दढं पुज्जो ॥ ५२ ॥
मोक्खत्थिणो हु तुब्भे नय तदुवाओ गुरुं विणा अन्नो ।
ता गुणनिही इमो चिय सेवेयव्वो हु तुम्हाणं ॥ ५३ ॥
ता कुलवहुनाएणं कज्जे निब्भच्छिएहिं वि कहिं पि[1] ।
एयस्स पायमूलं आमरणंतं न मोत्तव्वं ॥ ५४ ॥
किं बहुणा भणियव्वे जिमियव्वे सव्वचिट्ठियव्वे य ।
होज्जह अईव निहुया एसो उवएससारो त्ति ॥ ५५ ॥

॥ आयरियपयट्ठावणाविही समत्तो ॥ २९ ॥

*

§ ७२. संपयं पवत्तिणीपयट्ठावणा । सा य पवत्तिणीपयाभिलावेण वायणायरियपयट्ठवणातुल्ला, मंतो सो चेव; नवरं संघकरणी लग्गवेलाए दिज्जइ । सेसं सव्वं निसिज्जाइ तहेव ।

§ ७३. अह महत्तरापयट्ठावणाविही भण्णइ । जहासत्तीए संघपूयापुरस्सरं पसत्थतिहि-करण-मुहुत्त-नक्खत्त-जोगलग्गजुत्ते दिवसे महत्तराजोग्गा निसिज्जा कीरइ । तओ सिस्सिणीए कयलोयाए सरीरपक्खालणं काउं जिणाययणनिवेसियसमोसरणसमीवे गुरू अहीयसुयं सिस्सिणिं वामपासे ट्ठवित्ता—'तुब्भे अम्हं पुव्व-अज्जाचंदणाइनिवेसियमहयर-पवत्तिणीपयस्स अणुजाणावणियं नंदिकड्ढावणियं वासनिक्खेवं करेह त्ति—' भणाविंतो सिस्सिणीए सिरसि वासे खिवइ । वड्ढंतियाहिं थुईहिं चेइआइं वंदइ, जाव अरिहाणादिथुत्त-भणणं । तओ 'महत्तरापयअणुजाणावणियं काउस्सग्गं करेह' त्ति भणंती सत्तावीसोस्सासं काउस्सग्गं गुरुणा सह करेइ । पारित्ता चउवीसत्थयं भणित्ता उद्धट्ठिओ सूरी नमोक्कारतिगं भणित्ता, 'नाणं पंचविहं पन्नत्तं तं जहा—आभिणिबोहियनाणं, सुयनाणं, ओहिनाणं, मणपज्जवनाणं, केवलनाणं' ति मंगलत्थं भणिय, इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च—इमीसे साहुणीए महत्तरापयस्स अणुण्णानंदी पयट्टइ—त्ति सिरसि वासे खिवेइ । तओ उववि-

1 A च्छं पि ।

सिय गंधाभिमंतणं संघवासदाणं जिणचलणेसु गंधक्खेवो। तओ पढमखमासमणे—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं महत्तरापयं अणुजाणह—' त्ति भणिए, गुरू भणइ—'अणुजाणामि'। बीए—'संदिसह किं भणामि?' गुरू आह—'वंदित्ता पवेयह'। तइए—'तुब्भेहिं अम्हं महत्तरापयमणुण्णायं?' गुरू आह—'अणुण्णायं'। ३ खमासमणाणं हत्थेणं०, 'इच्छामि अणुसट्ठिं' ति; गुरू भणइ—नित्थारगपारगा होहि, गुरुगुणेहिं वड्ढाहि। चउत्थे—'तुम्हाणं पवेइयं संदिसह साहूणं पवेएमि'। पंचमं खमासमणं देइ। तओ नमोक्कारमुच्चरन्ती सगुरुं समवसरणं पयक्खिणी करेइ वारतिगं। छट्ठे—'तुम्हाणं पवेइयं, साहूणं पवेइयं, संदिसह करेमि' त्ति भणित्ता, सत्तमे अणुण्णायमहत्तरापयथिरीकरणत्थं करेमि काउस्सग्गमिति काउस्सग्गो कीरइ। उज्जोयचिंतणपुव्वयं काउस्सग्गं पारित्ता, चउवीसत्थयं भणित्ता, वंदित्ता उवविसइ। तओ पत्ताए लग्गवेलाए खंधकरणीखंधे निसिज्जइ। दुकंबला निसिज्जा य हत्थे दिज्जइ। तदुत्तरं चंदणचच्चियदाहिणकण्णाए उवज्झायमंतो दिज्जइ वारतिगं, नामट्ठवणं च कीरइ। तदुत्तरं अज्जचंदणा-मिगावईण परमगुणे साहिंतो महत्तराए वइणीणं च गुरू अणुसट्ठिं देइ। जहा—

उत्तममिमं पयं जिणवरेहिं लोगोत्तमेहिं पण्णत्तं।
उत्तमफलसंजणयं उत्तमजणसेवियं लोए॥ १॥
धण्णाण निवेसिज्जइ धण्णा गच्छन्ति पारमेयस्स।
गंतुं इमस्स पारं पारं वच्चंति दुक्खाणं॥ २॥
जइ वि तुमं कुसल चिय सव्वत्थ वि तहवि अम्ह अहिगारो।
सिक्खादाणे तेणं देवाणुपिए! पियं भणिमो॥ ३॥
संपत्ता इय पयविं समत्थगुणसाहणंमि गुरुययरिं।
ता तीए उत्तरोत्तरवुड्ढिकए कीरउ पयत्तो॥ ४॥
सुत्तत्थोभयरूवे नाणे नाणोत्तकिच्चवग्गे य।
सत्तिं अइक्कमित्ता वि उज्जमो किर तुमे किच्चो॥ ५॥
सुचिरं पि तवो तवियं चिन्नं चरणं सुयं च बहुपढियं।
संवेगरसेण विणा विहलं जं ता तदुवएसो॥ ६॥
तहा—सन्नाणाइगुणेसुं पवत्तणेणं इमाण समणीणं।
सच्चं पवित्तिणि चिय जह होसि तहा जइज्ज तुमं॥ ७॥
नियगुणेहिं महग्घं सियवीयाससिकलं जह कलाओ।
कमसो समल्लियंती पयई हिमहारधवलाओ॥ ८॥
तह तुह वि तहाविहनियगुणेहिं अग्घारिहाए लोगम्मि।
एयाउ समल्लीणा पयइसु धवलोज्जलगुणाओ॥ ९॥
तम्हा निव्वाणपसाहगाण जोगाण साहणविहीए।
सम्मं सहायिणीए होयव्वं सइ इमाण तए॥ १०॥
तह वज्जसिंखला इव मंजूसा इव सुनिविडवाडी व।
पायारु व्व हविज्जसु तुममज्जाणं पयत्तेणं॥ ११॥

1 A मयहरापय°।

अन्नं च विद्दुमलया मुत्तासुत्तीओ रयणरासीओ ।
अइमणहराउ धारइ न केअलाओ जलहिवेला ॥ १२ ॥
किं तु जह सिप्पिणीओ भेरीओ तहा वराडियाओ वि ।
जलजोणि त्ति समत्ता असुंदराओ वि धारेइ ॥ १३ ॥
एवं राईसरसिट्टिपमुहपुत्तीओ पउंरसयणाओ ।
बहुपढियपंडियाओ सवग्ग-सयणीओ जाओ य ॥ १४ ॥
मा ताओ चेव तुमं धारिज्जसु किं तु तदियराओ वि ।
संजमभरवहणगुणेण जेण सव्वाओ तुल्लाओ ॥ १५ ॥
अवि नाम जलहिवेला ताओ धरिउं कयाइ उज्झइ वि ।
निच्चं पि तुमं तु धरिज्ज चेव एयाओ धन्नाओ ॥ १६ ॥
अन्नं च दुत्थियाणं दीणाणमणक्खराण विगलाणं ।
ऊणहिययाण निबंधवाण तह लद्धिरहियाणं ॥ १७ ॥
पयइनिरादेयाणं विन्नाणविवज्जियाण असुहाणं ।
असहायाण जरापरिगयाण निबुद्धियाणं च ॥ १८ ॥
भग्गविलुग्गंगीण वि विसमावत्थगयखंडखरडाणं ।
इयरूवाण वि संजमगुणिक्करसियाण समणीणं ॥ १९ ॥
गुरुणीव अंगपडिचारिग व धावीव पियवयंसि व ।
हुज्ज भगिणीव जणणीव अहव पियमाइमायां व ॥ २० ॥
तह दढफलियमहादुमसाह व तुमं पि उचियगुणसहला ।
समणिजणसउणिसाहारणा दढं हुज्ज किं बहुणा ॥ २१ ॥
एवमणुसासिऊणं पवत्तिणिं; अज्जियाओ अणुसासे ।
जह एसो तुम्ह गुरू बन्धू व पिया व माया व ॥ २२ ॥
एए वि महामुणिणो सहोयरा जेट्ठभायरो व सया ।
तुम्हं देवाणुपियाण परमवच्छल्लतल्लिच्छा ॥ २३ ॥
ता गुरुणो मुणिणो वि य मणसा वयसा तहेव काएणं ।
नय पडिकूलेयव्वा अवि य सुबहुमन्नियव्वाओ ॥ २४ ॥
एवं पवत्तिणी वि हु अक्खलियतव्वयणकरणओ चेव ।
सम्ममणुयत्तणिज्जा न कोवणिज्जा मणागं पि ॥ २५ ॥
कुविया वि कहवि तुम्हं सदोसपडिवत्तिपुव्वमणुवेलं ।
खामेयव्वा एसा मिगावई इव नियगुरुणी ॥ २६ ॥
एसा सिवपुरगमणे सुपसत्था सत्थवाहिणी जं भे ।
एसा पमायपरचक्कपिल्लणे पडुयपडिसेणा ॥ २७ ॥

---

1 A पवर° । 2 A C पिइमायमाया व ।

तह निहुयं चंकमणं निहुयं हसणं पयंपियं निहुयं।
सव्वं पि चिट्ठियं निहुयमहव तुब्भेहिं कायव्वं ॥ २८ ॥
बाहिं उवस्सयाओ पयं पि नेगागिणीहिं दायव्वं।
वुड्ढज्जियाजुयाहि य जिण-जइगेहेसु गंतव्वं ॥ २९ ॥

तओ अणुण्णायमहत्तरापया वंदणं दाऊण पच्चक्खाणं निरुद्धाइ करेइ। सव्वलोगो वंदइ, थीजणो वंदणयं च देइ तीए। जिणहरे गुरूणं समोसरणे य पूया कायव्वा। पवत्तिणीपए महत्तरापए य अणुण्णाए वत्थपत्ताइगहणं सयं पि तीसे काउं कप्पइ।

॥ महत्तरापयट्ठावणाविही ॥ ३० ॥

*

§ ७४. एवं मूलगुरू सम्मत्तारोवणदिक्खाइकज्जाइं वक्खमाणाइं च पइट्ठाईणि काऊण कयाइ आउपज्जन्तं जाणिय, तस्सेव कयअणुजोगाणुण्णस्स अन्नस्स वा अहियगुणस्स गणाणुण्णं करेइ। जदाह—

सुत्तत्थे निम्माओ पियदढधम्मोऽणुवत्तणाकुसलो।
जाईकुलसंपन्नो गंभीरो लद्धिमंतो य ॥ १ ॥
संगहुवग्गहनिरओ कयकरणो पवयणाणुरागी य।
एवं विहो उ भणिओ गणसामी[1] जिणवरिंदेहिं ॥ २ ॥
तहा— गीयत्था कयकरणा कुलजा परिणामिया य गंभीरा।
चिरदिक्खिया य वुड्ढा अज्जा य [2]पवत्तिणी भणिया ॥ ३ ॥
एयगुणविप्पमुक्के जो देइ गणं [2]पवत्तिणिपयं वा।
जो वि[3] पडिच्छइ नवरं सो पावइ आणमाईणि ॥ ४ ॥
जओ— वूढो गणहरसद्दो गोयममाईहिं धीरपुरिसेहिं।
जो तं ठवइ अपत्ते जाणंतो सो महापावो ॥ ५ ॥
एव पवत्तिणिसद्दो वूढो जो अज्जचंदणाईहिं।
जो तं ठवइ अपत्ते जाणंतो सो महापावो ॥ ६ ॥
लोगम्मि उड्डाहो जत्थ गुरू एरिसा तहिं सीसा।
लट्ठयरा अन्नेसिं अणायरो होइ अगुणेसु ॥ ७ ॥
तम्हा तित्थयराणं आराहंतो जहोइयगुणेसु।
दिज्ज गणं गीयत्थो नाऊण पविर्त्तिणिपयं च ॥ ८ ॥

*

§ ७५. गणाणुण्णाविही य इमो—सुहतिहि-करणाइएसु गुरू खमासमणपुव्वं—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं दिगाइअणुजाणावणत्थं वासनिक्खेवं करेह'— त्ति सीसं भाणिय, काऊण य वासक्खेवं, पुणो खमासमणपुव्वं—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं दिगाइअणुजाणावणियं नंदिकड्ढावणियं देवे वंदावेह'— त्ति भाणिय वामपासे तं करिय, वड्ढंतियाहिं थुईहिं देवे वंदइ। तओ सीसो वंदित्ता भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं दिगाइअणुजाणावणियं नंदिकड्ढावणियं काउस्सग्गं कारेह'। तओ दोवि दिगाइअणुजाणणत्थं काउस्सग्गं करिंति। तत्थ चउवीसत्थयं चिंतित्ता, नमोक्कारेण पारित्ता, चउवीसत्थयं भणित्ता, नमोक्कारतिगपुव्वं गुरू

1 A गणिसामी। 2 A पविर्त्तिणी। 3 A जोव।

तदणुण्णाओ अन्नो वा तहाविहो अणुण्णत्थं नंदिं कड्ढइ । सीसो उवउत्तो भावियप्पा तयत्थपरिभावणापरो सुणेइ । तयंते गुरू उवविसिय, गंधे अभिमंतिय, जिणपाए पूइय साहुमाईणं देइ । तओ वंदित्ता सीसो भणइ–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं दिगाइ अणुजाणह' । गुरू आह–'खमासमणाणं हत्थेणं इमस्स साहुस्स दिगाइ अणुन्नायं ३' । पुणो वंदित्ता भणइ–'संदिसह किं भणामो ?' गुरू आह–'वंदित्ता पवेयह' । तओ वंदित्ता भणइ–'इच्छाकारेण तुब्भेहि अम्हं दिगाइ अणुन्नायं । इच्छामो अणुसट्ठिं' । गुरू आह–'गुरु-गुणेहिं वड्ढाहि' । पुणो वंदित्ता भणइ–'तुम्हाणं पवेइयं, संदिसह साहूणं पवेएमि' । गुरू आह–'पवेएहि' । तओ खमासमणपुव्वं नमोकारमुच्चरंतो गुरुं पयक्खिणीकरेइ । गुरू सीसे वासे खिवंतो–'गुरुगुणेहिं वड्ढाहि'त्ति भणइ । एवं तिन्नि वेला । तओ–'तुम्हाणं पवेइयं, साहूणं पवेइयं, संदिसह काउस्सग्गं करेमि'–त्ति भणिय दिगाइअणुण्णत्थं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थूससिएणमिच्चाइ काउस्सग्गं करिय सूरिसमीवे उववसइ । सीसाइया तस्स वंदणं दिंति । तओ मूलगुरू गणहरगच्छाणुसट्ठिं देइ । जहा–

धन्नोऽसि तुमं नायं जिणवयणं जेण सयलदुक्खहरं ।
तो सम्ममिमं भवया पउंजियव्वं सयाकालं ॥ १ ॥
इहरा उ रिणं परमं असम्मजोगो अजोगओ अवरो ।
तो तह इह जइयव्वं जह इत्तो केवलं होइ ॥ २ ॥
परमो य एस हेऊ केवलनाणस्स अन्नपाणीणं ।
मोहावणयणओ तह संवेगाइ सयभावेण ॥ ३ ॥
उत्तममिमं०......गाहा ॥ ४ ॥ घण्णाण०......गाहा ॥ ५ ॥
संपाविऊण परमे नाणाई दुहियताणसमत्थे ।
भवभयभीयाण दढं ताणं जो कुणइ सो धन्नो ॥ ६ ॥
अन्नाणवाहिगहिया जइवि न सम्मं इहाउरा होंति ।
तहवि पुण भावविज्जा तेसिं अवणिंति तं वाहिं ॥ ७ ॥
ता तंसि भावविज्जो भवदुक्खनिवीडिया तुहं एए ।
हंदि सरणं पवन्ना मोएयव्वा पयत्तेणं ॥ ८ ॥
तं पुण एरिसओ चिय तहवि हु भणिओसि समयनीईए ।
नियपावत्थासरिसं भवया निच्चं पि कायव्वं ॥ ९ ॥
तुब्भेहिं पि न एसो संसाराडविमहाकुडिल्लम्मि ।
सिद्धिपुरसत्थवाहो जत्तेण खणं पि मोत्तव्वो ॥ १० ॥
नय पडिकूलेयव्वं वयणं एयस्स णाणरासिस्स ।
एव गिहवासचाओ जं सफलं होइ तुम्हाणं ॥ ११ ॥
इहरा परमगुरूणं आणाभंगो निसेविओ होइ ।
विहला य होंति तम्मी नियमा इहलोग-परलोगा ॥ १२ ॥
ता कुलवहुनाएणं कज्जे निब्भच्छिएहिं वि कहिंपि ।
एयस्स पायमूलं आमरणन्तं न मोत्तव्वं ॥ १३ ॥
नाणस्स होइ भागी थिरयरओ दंसणे चरित्ते य ।
धन्ना आवकहाए गुरुकुलवासं न मुंचंति ॥ १४ ॥ . . . .

पुव्विं वत्थ-पत्त-सीसाइया लद्धी गुरुआयत्ता आसि, संपयं तुज्झ वि सव्वं अणुण्णायमिति गुरू भणइ। तओ अहिणवसूरी उट्ठित्तु सपरिवारो मूलायरियं तिपयाहिणी काऊण वंदेइ। पवेयणे य जहा सामायारी-आगयं तवं कारिज्जइ। तओ सो वि अन्ने सीसे निप्फाएइ त्ति। जस्स गणाणुण्णा तस्संतिओ चेव दिसिबंधो कीरइ। सो चेव गच्छनायगो भणइ। तस्सेव भट्टारगस्स गच्छे आणा पवत्तइ त्ति।

॥ गणाणुण्णाविही समत्तो ॥ ३१ ॥

*

§ ७६. एवं मूलगुरू कयकिच्चो हरिसभरनिब्भरो पज्जंताराहणं करेइ, अन्नस्स वा कारेइ। अओ तव्विही भण्णइ – पढमं च विहियपूयाविसेसस्स जिणबिंबस्स दरिसणं गिलाणो कारविज्जइ। चउव्विहसंघं मीलिय गिलाणेण समं संघसहिओ गुरू अहिगयजिणथुईए देवे वंदेइ। तओ सिरिसंतिनाह-संतिदेवया-खेत्तदेवया-भवणदेवया-समत्तवेयावच्चगराणं काउस्सग्गा थुईओ य। तओ सक्कत्थय-संतित्थयभणणाणंतरं आराहणादेवयाए काउस्सग्गो, उज्जोयचउक्कचिंतणं, पारिय उज्जोयभणणं तीसे वा थुइदाणं। सा य इमा –

यस्याः सान्निध्यतो भव्या वाञ्छितार्थप्रसाधकाः।
श्रीमदाराधनादेवी विघ्नव्रातापहाऽस्तु वः ॥ १ ॥

तओ सूरि निसिज्जाए उवविसिय गंधे अभिमंतिय 'उत्तमट्ठआराहणत्थं वासनिक्खेवं करेह' त्ति भणिय, आराहयसिरसि वासचंदणक्खए खिवइ। तओ बालकालाओ आरब्भ आलोयणदावणं।

जे मे जाणंति जिणा अवराहे जेसु जेसु ठाणेसु।
तेऽहं आलोएमी उवट्ठिओ सव्वभावेण ॥ १ ॥
छउमत्थो मूढमणो कित्तियमित्तं च संभरइ जीवो।
जं च न सुमरामि अहं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥ २ ॥
जं जं मणेण बद्धं असुहं वायाइ भासियं जं जं।
जं जं काएण कयं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥
हा दुट्ठु कयं हा दुट्ठु कारियं अणुमयं पि हा दुट्ठु।
अंतोअंतो डज्झइ हिययं पच्छाणुतावेणं ॥ ४ ॥
जं पि सरीरं इट्ठं कुडुंब-उवगरण-रूव-विन्नाणं।
जीवोवघायजणयं संजायं तं पि निंदामि ॥ ५ ॥
गहिऊण य मोक्काइं जंमण-मरणेसु जाइं देहाइं।
पावेसु पवत्ताइं वोसिरियाइं मए ताइं ॥ ६ ॥

इइ गाहाओ भाणिज्जइ। तओ संघखामणा –

साहू य साहुणीओ सावय-सावीओ चउव्विहो संघो।
जे मण-वइ-काएहिं आसाईओ तं पि खामेमि ॥ ७ ॥
आयरिय उवज्झाए सीसे साहम्मिए कुलगणे य।
जे मे कया कसाया सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ ८ ॥
खामेमि सव्वजीवे सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु वेरं मज्झं न केणइ ॥ ९ ॥

तओ—अरिहं देवो गुरुणो सुसाहुणो जिणमयं मह पमाणं ।
जिणपन्नत्तं तत्तं इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥

इइ सम्मत्तपुरस्सरं नमोकारतिगपुव्वं 'करेमि भंते सामाइयं' ति वेलातिगमुच्चाराविज्जइ । 'पढमे भंते महव्वए' इच्चाइवयाणि य एगेगं तिन्नि तिन्नि वेलाओ भणाविज्जइ । जाव इच्चेइयाइं गाहा । 'चत्तारि मंगलं....जाव....केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि'—इति चउसरणगमनं दुक्कडगरिहा सुक्कडाणुमोयणा य कारिज्जइ । नमो समणस्स भगवओ महइ महावीरवद्धमाणसामिस्स उत्तमट्ठे ठायमाणो पच्चक्खाइ सव्वं पाणाइवायं १, सव्वं मुसावायं २, सव्वं अदिन्नादाणं ३, सव्वं मेहुणं ४, सव्वं परिग्गहं ५, सव्वं कोहं ६, माणं ७, मायं ८, लोभं ९, पिज्जं १०, दोसं ११, कलहं १२, अब्भक्खाणं १३, अरइरई १४, पेसुन्नं १५, परपरिवायं १६, मायामोसं १७, मिच्छादंसणसल्लं १८—इच्चेइयाइं अट्ठारसपावट्ठाणाइं जावजीवाए तिविहं तिविहेणं वोसिरइ । तहा तद्दिवसं सउणसयणाइसंमएणं वंदणं दाऊण नमुक्कारपुव्वं गिलाणो अणसणं समुच्चरइ, भवचरिमं पच्चक्खाइ, तिविहं पि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं ४ वोसिरामि । अणागारे पुण आइमआगारदुगस्स उच्चारणं, तं जहा—भवचरिमं निरागारं पच्चक्खामि, सव्वं असणं सव्वं खाइमं सव्वं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं अईयं निंदामि पडुप्पन्नं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि, अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं [सम्यग्दृष्टि] देवसक्खियं अप्पसक्खियं वोसिरामि त्ति ।

जइ मे होज्ज पमाओ इमस्स देहस्सिमाइ वेलाए ।
आहारउवहिदेहं तिविहं तिविहेण वोसिरियं ॥

तओ संघो संतिनिमित्तं नित्थारगपारगा होहि त्ति भणंतो अक्खए तस्संमुहं खिवइ । 'अट्ठावयंमि उसभो' इच्चाइतित्थथुई पवरा । 'चवणं च जम्मभूमी' इच्चाइ 'पंचाणुत्तरसरणा' इच्चाइ वा थुत्तं भाणियव्वं । देसणा तदुववूहणा य विहेया । तहा तस्स समीवे निरंतरं 'जम्मजरामरणजले' इच्चाइ उत्तरज्झयणाणि वा मरणसमाहि-आउरपच्चक्खाण-महापच्चक्खाण-संथारय-चंदाविज्झय-भत्तपरिण्णा-चउसरणाइपइण्णगाणि वा इसिभासियाणि सुहज्झवसाणत्थं परावत्तिज्जंति ।

इत्थ संगहगाहाओ—

संघजिणपूयवंदणउस्सग्गवयसोहितयणुखमगंधा ।
नवकार-सम्मसमइयवयसरणाणसणतित्थथुई ॥ १ ॥
इय पडिपुन्नसुविहिणा अंते जो कुणइ अणसणं धीरो ।
सो कल्लाणकलावं लद्धुं सिद्धिं पि पाउणइ ॥ २ ॥

सावगस्सवि एवमेव । विसेसो उण सम्मत्तगाहाठाणे—अहण्णं भंते तुम्हाणं समीवे मिच्छत्ताओ पडिक्कमामि—इच्चाइ सम्मत्तदंडओ पंचाणुव्वयाणि य भाणिज्जंति । सत्तखित्तेसु संघ-चेइय-जिणबिंब-पोत्थय-लक्खणेसु दव्वविणिओगं च कारिज्जइ । तओ सामग्गीसब्भावे संथारयदिक्खं पडिवज्जइ त्ति ।

॥ अणसणविही समत्तो ॥ ३२ ॥

*

§ ७७. एवं विहिविहियपज्जंताराहणस्स लोगंतरियस्स इड्ढीए देहनीहरणं कीरइ । अओ अचित्तसंजयपारिट्ठावणियाविही भण्णइ । तत्थ गामे वा नगरे वा अवर-दक्खिणदिसाए दूरमज्झासन्ने थंडिलतिगं पेहिज्जइ । सेयसुगंधिचोक्खवत्थतिगं च धारिज्जइ । तत्थेगं पत्थरिज्जइ, एगं पंगुराविज्जइ, एगं उवरिं आच्छायणे

किज्जइ । दिया वा राओ वा परोक्खीभूयस्स मुहं मुहपोत्तियाए वज्झइ पाणिपायंगुट्ठंगुलिमज्झेसु ईसि फालिज्जइ । पायंगुट्ठा परोप्परं वज्झंति हत्थंगुट्ठा य । मयगदेहं ण्हवित्ता अवंगचोलपट्टं संथारकिडीए कीरइ, दोरेहिं वज्झइ । मुहपोत्ति-चिलिमिलियाओ चिंधट्ठं पासे ठविज्जंति । जया राईए परलोगो हवइ तया अच्छीनिमीलणं किज्जइ, अंगोवंगा समा धरिज्जंति, मुहं झड त्ति ढक्किज्जइ होट्ठमीलणेणं । नवकारो सुणाविज्जइ। हत्थपायंगुट्ठंतरेसु छेदो किज्जइ । पंचंगमवि निब्भयपासाओ कारिविज्जइ । उवउत्तेहिं पहरओ दायव्वो । तत्थ जे सेहा वाला अपरिणया य ते ओसारेयव्वा । जे पुण गीयत्था अभिरू जियनिद्दा उवायकुसला आसुकारिणो महावल-परक्कमा महासत्ता दुद्धरिसा कयकरणा अपमाइणो य ते जागरंति । काइयमत्तयमपरिट्ठवियं पासे ठविंति । जइ उट्ठेइ अट्टहासं वा मुंचइ तो मत्ताओ काइयं वामहत्थेण गहाय 'मा उट्ठे, वुज्झ वुज्झ गुज्झगा, मा मुज्झ' इइ भणंतेहिं सिंचेयव्वं । तहा कलेवरं निज्जमाणं जइ वसहीए उट्ठेइ वसही मोत्तव्वा । निवेसणे पलहीए निवेसणं, साहीए घरपंतीए साही, गाममज्झे गामद्धं, गामदारे गामो, गामस्स उज्जाणस्स य अंतरा मंडलं विसयखंडं, उज्जाणे कंडं, महल्लयरं विसयखंडं, उज्जाणनिसीहियंतरे देसो, निसीहियाए थंडिले रज्जं मोत्तव्वं । तत्थ एगपासे मुहुत्तं संचिक्खंति । तो जइ निसीहियाए उट्ठेइ तत्थेव पडइ य, तो वसही मोत्तव्वा । निसीहियाए उज्जाणस्स य अन्तरा निवेसणं, उज्जाणे साही, उज्जाणस्स गामस्स य अन्तरे गामद्धं, गामद्दारे गामो, गाममज्झे मंडलं, साहीए कंडं, निवेसणे देसो, वसहीए पविसिय जइ पडइ रज्जं मोत्तव्वं । पुणो निज्जूढो जइ वीयवेलं एइ, तो दो रज्जाणि, तइयाए तिन्नि, तेण परं वहुसो वि इंतो तिन्नि चेव । तहा पणयालीसमुहुत्तिएसु नक्खत्तेसु मयस्स पदिकिंदी दो दब्भमया, दसियामया वा पोत्तला कायव्वा । एए ते विइज्जया इति । जइ न कीरंति तो अन्ने दो कड्ढेइ । संथारगे करिसगावारो कीरइ । तत्थ उत्तरातिगं पुणव्वसु-रोहिणी-विसाह त्ति छ नक्खत्ता पणयालीसमुहुत्ता । पुत्तलगाणं च समीवे रओहरणं मुहपोत्ती य ठविज्जइ । तहा तीसमुहुत्तिएसु इक्को कायव्वो । एस ते विइज्ज त्ति । तदकरणे एगं कड्ढइ । ताणि य—

अस्सिणि-कित्तिय-मिगसिर-पुस्सा मह-फग्गु-हत्थ-चित्ता य ।
अणुराह-मूलसाढा सवण-धणिट्ठा य भद्दवया ॥
तह रेवइ त्ति एए पन्नरस हवंति तीसइमुहुत्ता[1] ।
तहा पन्नरसमुहुत्तिएसु अभिइंमि य न कायव्वो ॥
सयभिसया भरणीओ अद्दा-अस्सेस-साइ-जिट्ठा य ।
एए छनक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसंजोगा ॥

खंधियगचउक्कस्स छगणभूइ-कुमारीसुत्ततंतूण य उत्तरासंगेण तिवयणेण रक्खाकरणं । तं च अपयाहिणावत्तेणं वामभुयाहिट्ठेणं दक्खिणखंधस्सोवरिं च कायव्वं । दंडधरो वाणायरिओ सरावसंपुडे केसराइ गेण्हइ, छगणचुण्णं वा । दोण्हं साहूणं कप्पतिप्पत्थमसंसट्ठं पाणगं गहाय अमुगपएसे आगंतव्वं ति संकेयदाणं । जो उण वसहीए ठाइ तस्स मयगसंतियउच्चारपासवणखेलमत्तविगिंचण-वसहिपमज्जण-तहाविहपएसोल्लिंपण-निरोवदाणं, पच्छा सव्वं सो करेइ । पडिस्सयाओ नीणंतेहिं पुव्वं पाया पच्छा सीसं नीणेयव्वं । थंडिले वि जत्तो गामो तत्तो सीसं कायव्वं । तहा उस्सग्गओ दिगंतरपरिहारेण अवर-दक्खिणदिसाए ठियं परिट्ठवणथंडिलं पमज्जिय तत्थ केसरेहिं अव्वोच्छिन्नधाराए विवरिओ क्को (?फ)कायव्वो वाणायरिएण । एयस्स अईय अमुगआयरिओ अमुगउवज्झाओ । संजईए उण अमुगा अईया पवत्तिणी त्ति दिसिवंधं करिय, तिविहं तिविहेणं वोसिरियमेयं ति भणइ । परिट्ठवियस्स वि नियत्तंतेहिं पयाहिणा न कायव्वा ।

1 A इति ।

सट्ठाणाओ चेव नियत्तियव्वं । जेणेव पहेण गया तेणेव य न नियत्तियव्वं । तहा चिरंतणकाले अवरोप्परम- संबद्धा हत्थचउरंगुलप्पमाणा समच्छेया दब्भकुसा गीयत्थो विकिरइ त्ति आसि । गहियसंकेयट्ठाणे कप्पमु- च्चारित्ता कप्पवाणियभायणं दोरयं च तत्थेव परिट्ठाविय, पच्छा नवकारतिगं भणिऊण दंडयं ठविय इरियं पडिकंता सक्कत्थवं भणंति, उवसग्गहरं ति थुत्तं । तओ महापारिट्ठावणिया परिट्ठावणियं काउस्सग्गं करेंति । उज्जोयचउक्कं नवकारं वा चिंतित्ता पारित्ता उज्जोयगरं नवकारं वा भणंति । तिविहं तिविहेणं वोसिरिओ ३ इति भणंति । तओ खुद्दोवद्दवओहड्डावणियं काउस्सग्गं करिंति । उज्जोयचउक्कं चिंतिय पारिय चउवीसत्थयं भणंति । पच्छा बीयं कप्पं गामस्स समीवे आगंतुमुच्चारिंति, कप्पवाणियं मत्तगं च परिट्ठवेंति । तओ पराहुत्तं पंगुरित्ता अहारायणियक्कमं परिहरित्ता सम्मुहचेईहरे गंतुं उम्मत्थगसंकेलियरयहरण-मुहपोत्तीहिं गमणागमण- मालोइय इरियं पडिक्कमिय उप्पराहुत्तं चेइयवंदणं काउं संतिनिमित्तं अजियसंतित्थयं भणंति । तओ उम्म- त्थगवेसपरिहारेण पंगुरिय, जहाविहि चेइयाइं वंदिय, वसहीए आगम्म, संधिया तईयं कप्पं उच्चारिंति । तओ आयरियसगासे अविहिपारिट्ठावणियाए ओहड्डावणियं काउस्सग्गं करेंति, उज्जोयचउक्कं नवकारं वा चिंतिय पारित्ता उज्जोयं नवकारं वा भणंति । जं तालयमज्झे निक्खित्तं भंडोवगरणं तं अणाउत्तं न भवइ, सेसं सव्वं तिप्पिज्जइ । आयरिय-भत्तपच्चक्खाय-खवगाइए बहुजणसंमए मए असज्झाओ खमणं च कीरइ, न सव्वत्थ । एस सिवविही । असिवे खमणं असज्झाओ अविहिविगिंचणकाउस्सग्गो य न कीरइ । तओ गिहत्थेहिं आयरणावसाओ अग्गिसक्कारे कए जं तस्स भोयणं रोयंतगं तं तस्सेव पत्तियाए छोढुं तहिं दिणे तत्थेव धारि- ज्जइ । काग-चडय-कवोडाइयं खणं तत्थेव चिंतिज्जइ । सेयजीवे देवगई, कसिणजीवे कुगई, अन्नेसु मज्झिमगई तुमं अम्हकेरपरिग्गहाओ उत्तिण्णो, वड्ढाणं परिग्गहे संवुत्तो — इति भाणिऊण अणुजाणाविज्जइ त्ति ।

॥ महापारिट्ठावणियाविही समत्तो ॥ ३३ ॥

*

§ ७८. अणसणं च पायच्छित्तदाणपुव्वं दिज्जइ त्ति संपयं पच्छित्तदाणविही भण्णइ । तं च दसविहं — आलोयणारिहं १, पडिक्कमणारिहं २, तदुभयारिहं ३, विवेगारिहं ४, उस्सग्गारिहं ५, तवारिहं ६, छेदारिहं ७, मूलारिहं ८, अणवट्ठप्पारिहं ९, पारंचियारिहं १०।

तत्थ आहाराइग्गहणे तहा उच्चार-सज्झायभूमि-चेइय-जइवंदणत्थं पीढ-फलगपच्चप्पणत्थं कुलगण- संघाइकज्जत्थं वा हत्थसया बाहिं निग्गमे आलोयणा गुरुपुरओ वियडणं तेणेव सुद्धो ॥ १ ॥

पडिक्कमणं मिच्छाउक्कडदाणं । तं च गुत्तिसमिइपमाए, गुरुआसायणाए, विणयभंगे, इच्छाकाराइ सामाचारीअकरणे, लहुसमुसावाय-अदिन्नादाण-मुच्छासु, अविहीए खास-खुय-जिंभियवाएसु, कंदप्प-हास-वि- कहा-कसाय-विसयाणुसंगेसु, सहसा अणाभोगेण वा दंसणनाणाइकप्पियसेवाए[1] चउवीसविहाए अविराहिय- जीवस्स, तहा आमोएण वि अप्पेसु नेह-भय-सोग-वाओसाईसु य कीरइ । तत्थ लहुसमुसावाया पयला उल्ले मरुए इच्चाइ पनरसपया[2], लहुसअदिन्नं अणणुन्नविय तण-डगल-छार-लेवाइगहणं, लहुसमुच्छा सिज्जायर- कप्पट्टगाईसु वसहि-संथारयठाणाइसु वा ममत्तं ॥ २ ॥

---

1 "दंसणनाणचरित्तं, तवपवयणसमिइगुत्तिहेउं वा । साहम्मियाण वच्छलत्तणेण कुलमाणसावि ॥ १ ॥ संघस्सआयरियस्स य, असहुस्स गिलाणबालवुड्ढस्स । उदयग्गिचोरसावयभयकंताराववई वसणे ॥ २ ॥"

2 "पयलाउल्ले मरुए, पच्चक्खाणे य गमणपरियाए । समुद्देससंखडीओ, खुड्डगपरिहारी मुहीओ ॥ १ ॥ अवग्गमणे दिसासुं, एगकुले चेव एगदव्वे य । एए सव्वे वि पया, लहुसमुसा भासणे हुंति ॥२॥" इति B आदर्शे टिप्पणी ।

सहसाणाभोगेण वा संभमभयाईहिं वा सव्ववयाइयारेसु उत्तरगुणाइयारेसु वा दुच्चिंतियाइसु वा कएसु मीसं पच्छित्तं ॥ ३ ॥

पिंडोवसहिसेज्जाई गीएण उवउत्तेण गहियं पच्छा असुद्धं ति नायं, अहवा कालद्धाईयं अणुग्गयत्थमियगहियं कारणगहिओवरियं वा भत्ताइ विगिंचिंतो सुद्धो ॥ ४ ॥

काउस्सग्गो नावा-नइसंतार-सावज्जसुमिणाईसु ॥ ५ ॥ तवपच्छित्तं तु वहुवत्तव्वयं ति पच्छा भण्णिही ॥ ६ ॥ तवगव्विय-तवअसमत्थ-तवदुद्दमाइसु पंचरायाइ पज्जायच्छेदणं छेदो ॥ ७ ॥

आउट्टियाए पंचिंदियवहो दप्पेण मेहुणे अदिण्णमुसापरिग्गहाणं उक्कोसा भिक्खसेवणे ओसन्नया विहारे इच्चाइसु मूलं; भिक्खुस्स नवमदसमावत्तीए वि मूलं चेव दिज्जइ ॥ ८ ॥

सपक्खे परपक्खे वा निरवेक्खपहारे अत्थायाण-हत्थालंवदाणाईसु य अणवट्ठप्पो कीरइ। तत्थ अत्थायाणं दव्वोवज्जणकारणं अट्ठंगनिमित्तं, तस्स पउंजणं। हत्थालंवदाणं पुण पुररोहाइअसिवे तप्पसमणत्थमभिचारमंतादिप्पओगो। एयं पुण पच्छित्तं उवज्झायस्सेव दिज्जइ ॥ ९ ॥

तित्थयराईणं वहुसो आसायगो रायवहगो रायग्गमहिसिपडिसेवओ सपक्ख-परपक्खकसायविसयप्पदुट्ठो अन्नोन्नंकारी थीणद्धीनिद्दावंतो य पारंचियमावज्जइ। एयं च पच्छित्तं आयरियस्सेव दिज्जइ। तवअणवट्ठप्पो तवपारंचिओ य पढमसंघयणो चउदसपुव्वधरम्मि वोच्छिन्ना। सेसा पुण लिंग-खेत्त-काल-अणवट्ठप्पपारंचिया जाव तित्थं वट्टिहिं ति ॥ १० ॥

§ ७९. संपयं तवारिहं पायच्छित्तं भण्णइ। तत्थ तवा लहुपणगाओ आरब्भ गुरुछम्मासं जाव व्रावीसं भवंति। संपयं पुण सत्त वट्टंति। ते य इमे—पणगं १ मासलहुं २, मासगुरुं ३, चउलहुं ४, चउगुरुं ५, छलहुं ६, छग्गुरुं ७। एएसिं च आवत्तीए संपइकाले जीएण निव्विगइय-पुरिमड्ढ-एकासण-आयंबिल-चउत्थ-छट्ठट्ठमाइं जहासंखं दिज्जंति। लिवी पुण इमा—।५। ।०।०।ꣳ।ꣳ।ꣳꣳ।ꣳꣳ। पणगाइं पंचमिलिया कल्लाणं। तत्थ चउत्थदुगं लब्भइ। ते चेव पंचगुणा पंचकल्लाणं तत्थ दसोववासा लब्भन्ति। इयाणिं नाणाइपंचायारविसयं कमेण पच्छित्तं भण्णइ—नाणायाराइयारेसु अकालपाढाइसु अट्ठसु उद्देसए पणगं, अज्झयणे मासलहुं, सुयक्खंधे मासगुरुं, अंगे चउलहुं। एवं ताव अणागाढे दसवेयालिय-आयारंगाईए, आगाढे पुण उत्तरज्झयण-भगवइमाईए उद्देसगाइसु जहसंखं लहुमास-मासगुरू, चउलहु-चउगुरुगा, अकओवहाण-अपत्तअवत्ताईणं उद्देसादिकरणे वायणादाणे य चउगुरू। तत्थ अपत्तो तिंतिणियाई, सुयज्झयणपज्जायं असंपत्तो य। तत्थ आइमो इमो—

तिंतिणिए चलचित्ते गाणंगणिए य दुव्वलचरित्ते।
आयरियपारिभासी वामावट्टे य पिसुणे य ॥

सुयज्झयणपज्जाओ य—तिवरिसपरियायस्स आयारंगं, चउवासपरियायस्स सुयगडं, पंचवासपरियायस्स दसा-कप्प-ववहारा, अट्ठवासपरियायस्स ठाण-समवाया, दसवासपरियायस्स भगवई—इच्चाइ; तं असंपत्तो—आरओ वत्ती। कालअणुओगाणमपडिक्कमणे पणगं; सुतत्थभोयणमंडलीणमप्पमज्जणे पणगं। अणुओगे अक्खाणं गुरु-अक्खनिसेज्जाणं च अट्ठावणे, वंदण-काउस्सग्गाकरणे य चउगुरू। आगाढाणागाढजोगाणं सव्वभंगे छलहु-चउगुरुगा जहसंखं। देसभंगे चउगुरु-चउलहुगा। तत्थ विगइभोगे सव्वभंगो। एगभाणे विगइं आयंविलपाउग्गं च गिण्हइ। जोगसमत्तीए गुरुं विणा वि सयमेव विगइगहणकाउस्सग्गं करेइ। उस्संघट्टं वा भुंजइ त्ति। देसभंगो नाणनाणीणं पच्चणीययाए निंदाए पओसे पाढाइअंतरायकरणे य मासगुरू। पुत्थय-पट्टिया-ट्टिप्पणगाईणं पडणे कक्खाकरणे दुगंधहत्थगहणे थुक्कभरणे थुक्काइअक्खरमज्जणे पाय-

लगणे चउलहू। मयंतरे जहण्णाए नाणासायणाए मासलहुं, मज्झिमाए मासगुरुं, उक्कोसाए चउलहुं चउगुरुं वा। विसेसओ उण सुत्तासायणाए चउलहु, अत्थासायणाए चउगुरु, विणयवंजणभंगेसु पणगं। गयं नाणाइयारपच्छित्तं।

§ ८०. संकादिसु अट्ठसु दंसणाइयारेसु देसओ चउगुरु, पुरिसाविक्खाए पुण भिक्खुवसहोवज्झायायरियाणं मासलहु-मासगुरु-चउलहु-चउगुरुगा, सव्वओ मूलं। गयं दंसणाइयारपच्छित्तं।

§ ८१. इओ परं आवत्तिं मुत्तूण सुहबोहत्थं दाणमेव लिहिज्जइ – पुढविआउतेउवाऊपत्तेयवणस्सईणं संघट्टणे नि०, अगाढपरितावणे पु०, गाढपरितावणे ए०, उद्दवणे आं०, विगलिंदियाणंतकाइयाणं संघट्टणादिसु जहासंखं पु०ए०आं०उ०। पंचिंदियाणं पुण ए०आं०उ०। कल्लाणगाणि–इत्थ संघट्टणं तदहजायथिरोलगाईणं,[1] दप्पओ पंचिंदियउद्दवणे पंचकल्लाणं। दप्पो धावणवग्गणाई। आउट्टियाए मूलं। बीयसंघट्टे ससिणिद्धे य नि०। उदयउल्लसंघट्टे ए०। सच्चित्ते मुहपोत्तियाए गहिए पु०। अद्दामलगमित्तसचित्तपुढवीए, अंजलिमित्तोदगे सच्चित्ते मीसे य उद्दविए आं०। मयंतरे नि०। नाभिप्पमाणउदगप्पवेसे वत्थिमाइणा कोसं जाव नदीगमणे य आं०। दुक्कोसं जाव नावा-उडुवाइणा नदीगमणे आं०। कोसं जाव हरियाणं भूदगअगणिवाऊणं विगलिंदियाणं पंचिंदियाणं मद्दणे कमेण उ०, आं०, उ०, पंचकल्लाणाणि। कोसं ओसाए मीसोदगे य गमणे पु०, कोसदुगे ए०, जोयणे आं०। सजीवदगपाणे छट्ठं, जलग्गामोयणे गाढनइउत्तारणे य आं०। पईवफुसणयसंखाए आं०। कंबलिपावरणं विणा पईवफुसणे उ०, सकंबले आं०, उ०, विज्जुफुसणे नि०, अकंबले पु०। छप्पईहरनासणे पंचकल्लाणं। संनाकिमिपाडणे उ०। उदउल्लवत्थसंघट्टे पु०। जलणे संघट्टिए ओसक्किए य आं०। किसलयमलणे उ०। संखाईयाणं बेइंदियाणं उद्दवणे दोन्नि पंचकल्लाणाइं, उप० २०। संखाईयाणं तेइंदियाणं उद्दवणे तिन्नि पंचकल्लाणाइं, उ० ३०। संखाईयाणं चउरिंदियाणं उद्दवणे चत्तारि पंचकल्लाणाइं, ४०। जहन्न-मज्झिम-उक्कोसेसु मुसावाय-अदिन्नादाण-परिग्गहेसु जहासंखं ए०, आं०, उ०। मेहुणस्स चिंताए आं०। मेहुणपरिणामे उ०। रागे छट्ठं। नपुंसगस्स पुरिसस्स वा वयणसेवाए मूलं। अन्नोन्नं करणे पारंचियं। गब्भाहाण-गब्भसाडणेसु मूलं। सकाममेहुणसेवणे मूलं। करकम्मे अट्ठमं। बहुठाणे तम्मि पंचकल्लाणं। लेवाडदवोवलित्तपत्ताइपरिवासे उ०। सुंठिमाइसुक्कसंनिहिभोगे उ०। घयगुलाइअल्लसंनिहिभोगे छट्ठं। दिवागहिय-दिवाभुत्ताइ-सेसनिसिभत्ते अट्ठमं। सुक्क-अल्लसंनिहिधारणे जहासंखं पु०, ए०। गयं मूलगुणपायच्छित्तं।

§ ८२. आहाकम्मिए कम्मुद्देसियचरिमभेयतिगे मिस्सजायअंतिमभेयदुगे बायरपाहुडियाए सपच्चवायपरगामाभिहडे लोभपिंडे अणंतकाय-अणंतरनिक्खित्त-पिहिय-साहरिय-उम्मीसापरिणयछड्डिएसु गलंतकुट्ठ-पाउयारूढदायगेसु गुरुअचित्तपिहिए संजोयणा-इंगालेसु वट्टमाणाणागयनिमित्ते य उ०। कम्मोद्देसियआइमभेए मीसजायपढमभेदे धाईपिंडे दूईपिंडे अईयनिमित्ते आजीवणापिंडे वणीमगपिंडे बादरचिगिच्छाए कोहमाणपिंडेसु संबंधिसंथवकरणे विज्जामन्तचुण्णजोगपिंडेसु पयासकरणे दुविहे दव्वकीए आयभावकीए लोइय-पामिच्चपरियट्टिए निपच्चवायपरग्गामाभिहडे पिहिओब्भिन्ने कवाडोब्भिन्ने उक्किट्ठमालोहडे अच्छिज्जाणिसिट्ठेसु पुरोकम्म-पच्छाकम्मेसु गरहियमक्खिए संसत्तमक्खिए पत्तेयअणंतरनिक्खित्तपिहियसाहरियउम्मीसापरिणयछड्डिएसु बालवुड्ढाइदायगदुट्ठे पमाणोल्लंघणे सधूमे अकारणमोयणे य आं०। अब्भवपूरगअंतिमभेयदुगे कडभेयचउक्के भत्तपाणपूईए मायापिंडे अणंतकायपरंपरनिक्खित्तपिहियाइसु मीस-अणंत-अणंतरनिक्खित्ताइसु य ए०। ओहोद्देसिए उद्दिट्ठभेयचउक्के उवगरणपूईए चिरट्ठविए पायडकरणे लोगोत्तर-

---

1 B C °थिरोल्लिगाईणं।

परियट्टियपामिच्चे परभावकीए सग्गामामिहडे दद्दरोब्भिन्ने जहन्नमालोहडे पढमऽभवपूरगे सुहुमचिगिच्छाए गुणसंथवकरणे मीसकद्दमेण लवणसेडियाइणा य मक्खिए पिट्ठाइमक्खिए कत्तगलोढगविरोलगपिंजगदायगेसु पत्तेयपरंपरट्ठवियाइसु मीसाणंतरट्ठवियाइसु य पु० । इत्तरट्ठविए सुहुमपाहुडियाए ससिणिद्धे ससरक्खमक्खिए मीसपरंपरठवियाइसु पत्तेयाणंतवीयट्ठवियाइसु य नि० । मूलकम्मे मूलं ।

§ ८३. विसेसओ पुण पिंडदोसपायच्छित्तं पिंडालोयणाविहाणाओ नेयं । तं चेमं —

कयपवयणप्पणामो सत्तालीसाइं पिंडदोसाणं ।
वोच्छं पायच्छित्तं कमेण जीयाणुसारेणं ॥ १ ॥
पणगं तह मासलहुं मासगुरुं चउलहुं च चउगुरुयं ।
सण्णाओ नि°पु°ए°आ°उ° जोगओ जाण कल्लाणं ॥ २ ॥
सोलस उग्गमदोसा सोलस उप्पायणाइ दोसाओ ।
दस एसणाइ दोसा संजोयणमाइ पंचेव ॥ ३ ॥
आहाकम्मे चउगुरु[1] दुविहं उद्देसियं वियाणाहि ।
ओहविभागेहिं तहिं मासलहू ओहनिद्देसो ॥ ४ ॥
बारसविहं विभागे चहु उद्दिट्ठं कडं च कम्मं च ।
उद्देस-समुद्देसा देससमा देसभेएणं ॥ ५ ॥
चउभेए उद्दिट्ठे लहुमासो अह चउव्विहंमि कडे ।
गुरुमासो चउलहुयं कम्मुद्देसे य नायव्वं ॥ ६ ॥
कम्मसमुद्देसाइसु तिसु चउगुरुयं भणंति समयण्णू[2] ।
दुविहं तु पूइकम्मं उवगरणे भत्तपाणे वा ॥ ७ ॥
उवगरणपूइमासलहु मासगुरु भत्तपाणपूइम्मि[3] ।
जावंतिय-जइ-पासंडि-मीसजायं भवे तिविहं ॥ ८ ॥
जावंतिमीस चउलहु चउगुरु पासंडि-सपरमीसंमि[4] ।
चिर-इत्तरभेएणं निद्दिट्ठा ठावणा दुविहा ॥ ९ ॥
चिरठविए लहुमासो इत्तरठवियंमि देसियं पणगं[5] ।
पाहुडिया विहु दुविहा बायर-सुहुमप्पयारेहिं ॥ १० ॥
बायरपाहुडियाए चउगुरु सुहुमाइ पावए पणगं[6] ।
पागड-पयासकरणं ति बिंति पाओयरं दुविहं ॥ ११ ॥
मासलहु पयडकरणे पगासकरणे य चउलहुं लहइ[7] ।
अप्प-पर-दव्व-भावेहिं चउव्विहं कीयमाहंसु ॥ १२ ॥
अप्पपरदव्वकीए सभावकीए य होइ चउलहुयं ।
परभावक्कीए पुण मासलहुं पावए समणो[8] ॥ १३ ॥
अह लोउत्तर-लोइयभेएणं दुविहमाहु पामिच्चं ।
लोउत्तरि मासलहू चउलहुयं लोइए हवइ[9] ॥ १४ ॥
परियट्टियं पि दुविहं लोउत्तर-लोइयप्पयारेहिं ।
लोउत्तरि मासलहू चउलहुयं लोइए होइ[10] ॥ १५ ॥

अभिहडमुत्तुं दुविहं सगाम-परगामभेयओ तत्थ ।
चरमं सपच्चवायं अपच्चवायं च इय दुविहं ॥ १६ ॥
सप्पच्चवायपरगामआहडे चउगुरुं लहइ साहू ।
निपच्चवायपरगामआहडे चउलहुं जाण ॥ १७ ॥
मासलहू सग्गामाहडंमि[11] तिविहं च होइ उब्भिन्नं ।
जउ-छगणाइविलित्तु भिन्नं तह दद्दरुब्भिन्नं[1] ॥ १८ ॥
तह य कवाडुब्भिन्नं लहुमासो तत्थ दद्दरुब्भिन्ने ।
चउलहुयं सेसदुगे[12] तिविहं मालोहडं तु भवे ॥ १९ ॥
उक्किट्ठ-मज्झिम-जहण्णभेयओ तत्थ चउलहुक्किट्ठे ।
लहुमासो य जहन्ने गुरुमासो मज्झिमे जाण[13] ॥ २० ॥
सामि-प्पहु-तेणकए तिविहे विहु चउलहुं तु अच्छिज्जे[14] ।
साहारण-चोल्लग-जड्डभेयओ तिविहमणिसिट्ठं ॥ २१ ॥
तिविहे वि तत्थ चउलहु[15] तत्तो अज्झोयरं वियणाहि ।
जावंतिय-जइ-पासंडिमीसभेएण तिविकप्पं ॥ २२ ॥
मासलहु पढमभेए मासगुरुं जाण चरमभेयदुगे[16] ।
इय उग्गमदोसाणं पायच्छित्तं मए वुत्तं ॥ २३ ॥–दारं ।
धाईउ पंचखीराइभेयओ चउलहुं तु तप्पिंडे[1] ।
चउलहु दूईपिंडे सगाम-परगामभिन्नंमि[2] ॥ २४ ॥
तिविहं निमित्तपिंडं तिकालभेएण तत्थ तीयंमि ।
चउलहु अह चउगुरुयं अणागए वट्टमाणे य[3] ॥ २५ ॥
जाइ-कुल-सिप्प-गण-कम्मभेयओ पंचहा विणिद्दिट्ठो ।
आजीवणाइपिंडो पच्छित्तं तत्थ चउलहुया[4] ॥ २६ ॥
चउलहु वणीमगपिंडे[5] तिगिच्छपिंडं दुहा भणन्ति जिणा ।
बायर-सुहुमं च तहा चउलहु बायरचिगिच्छाए ॥ २७ ॥
सुहुमाए मासलहू[6] चउलहुया कोह[7]-माणपिंडेसु[8] ।
मायाए मासगुरू[9] चउगुरु तह लोभपिंडंमि[10] ॥ २८ ॥
पुव्विं-पच्छासंथवमाहु दुहा पढममित्थ गुणगुणणे ।
मासलहु तत्थ वीयं संबंधे तत्थ चउलहुयं[11] ॥ २९ ॥
विज्जा[12] मंते[13] चुण्णे[14] जोगे[15] चउसु वि लहेइ चउलहुयं ।
मूलं च मूलकम्मे उप्पायणदोसपच्छित्तं ॥ ३० ॥–दारं ।
संकियदोससमाणं आवज्जइ संकियंमि पच्छित्तं[1] ।
दुविहं मक्खियमुत्तं सचित्ताचित्तभेएणं ॥ ३१ ॥
मूदगवणमक्खियमिह तिविहं सचित्तमक्खियं विंति ।
पुढवीमक्खियमित्थं चउविहं विंति गीयत्था ॥ ३२ ॥

1 'दर्दरो भग्नचर्मादिबन्धनरूपः ।' इति टिप्पणी । ✓

ससरक्खमक्खियं तह सेडिय-ओसाइमक्खियं चेव ।
निम्मीस-मीसकद्दममक्खियमिइ पुढविमक्खियं चउद्दा ॥ ३३ ॥
तत्थ कमेणं पणगं लहुमासो चउलहू य मासलहू ।
दगमक्खियं पि चउहा पच्छाकम्मं पुरोकम्मं ॥ ३४ ॥
ससिणिद्धं उदउल्लं चउलहु चउलहु य पणग लहुमासा ।
वणमक्खियं तु दुविहं पत्तेयाणंतभेएणं ॥ ३५ ॥
उक्कुट्ठ-पिट्ठ-कुक्कुसँ*भेया पत्तेयमक्खियं तिविहं ।
तिविहे वि हु लहुमासो गुरुमासोऽणंतमक्खियए ॥ ३६ ॥
गरहियइयरेहिं अचित्तमक्खियं दुविहमाहु साहुवरा ।
गरहियअचित्तमक्खियदोसेणं लहइ चउलहुयं ॥ ३७ ॥
अगरिहसंसत्तअचित्तमक्खियंमि वि लहेइ चउलहुयं[२] ।
निक्खित्तं पुढवाइसु अणंतर-परंपरं ति दुहा ॥ ३८ ॥
ठविए सचित्तभू-दग-सिहि-पवण-परित्तवणस्सइ-तसेसु ।
चउलहुय-मासलहुया अणंतर-परंपरेसु कमा ॥ ३९ ॥
अइरपरंपरठविए मीसेसु य तेसु[1] मासलहु-पणगा ।
अइरपरंपरठविए पणगं पत्तेयणंतवीएसु ॥ ४० ॥
सचित्तणंतकाए अणंतर-परंपरेण निक्खित्ते ।
चउगुरु मासगुरु कमा मीसे गुरुमास पणगाइं ॥ ४१ ॥
तह गुरुअचित्तपिहियं सचित्तपिहियं च मीसपिहियं च ।
पिहियं तिहा अभिहियं चउगुरुयमचित्तगुरुपिहिए ॥ ४२ ॥
पिहिए सचित्तभू-दग-सिहि-पवण-परित्तवणसइ-तसेहिं ।
चउलहुय-मासलहुया अणंतर-परंपरेहिं कमा ॥ ४३ ॥
अइरपरंपरपिहिए मीसेहिं य तेहिं मासलहु पणगा ।
अइरपरंपरपिहिए पणगं पत्तेयणंतवीएहिं ॥ ४४ ॥
सचित्तअणंतेणं अणंतरपरंपरेण पिहियंमि ।
चउगुरु-मासगुरु कमा मीसेणं मासगुरु पणगा[४] ॥ ४५ ॥
साहरिए[2] सजियभू-दग-सिहि-पवण-परित्तवणसइ-तसेसु ।
चउलहुय-मासलहुया अणंतर-परंपरपरेण कमा ॥ ४६ ॥
अइरतिरोसाहरिए मीसेसु उ तेसु मासलहु पणगा ।
अइरतिरोसाहरिए पणगं पत्तेयणंतवीएसु ॥ ४७ ॥
सचित्तअणंतेसुं अणंतर-परंपरेण साहरिए ।
चउगुरु मासगुरु कमा मीसेसुं मासगुरु पणगा ॥ ४८ ॥

---

* 'उत्कृष्टं कालिंगाम्रवालुंक्यादीनां श्लक्ष्णीकृतानि खंडानि अम्लिकापत्रसमुदायो वा, उदूखलखण्डितस्तैर्म्रक्षितं पिष्टं आमतंडुलक्षोदादि ।'–इति A B टिप्पणी ।

1 पृथिव्यादिषु । 2 'संहृतदोष अतिक्षिप्तसमानयोग्यत्वान्न भेदाख्यानम्'–इति B टिप्पणी ।

चउगुरु अचित्तगुरु साहरिए अह दायग त्ति थेराई ।
थेर-पहु-पंड-वेविर-जरियंधवत्त-मत्त-उम्मत्ते ॥ ४९ ॥
छिन्नकरचरणगुव्विणिनियलंदुयबद्धबालवच्छाए ।
खंडइ पीसइ भुंजइ जिमइ विरोलइ दलइ सजियं ॥ ५० ॥
ठवइ बलिं ओयत्तइ पिढराइ तिहा सपचवाया जा ।
साहारणचोरियगं देइ परक्कं परट्ठं वा ॥ ५१ ॥
दिंतेसु एसु चउलहु चउगुरु पगलंतपाउयारूढे ।
कत्तइ लोढइ पिंजइ विक्खिणइ पमद्दए य मासलहू ॥ ५२ ॥
छक्कायवग्गहत्था समणट्ठा णिक्खिवित्तु ते चेव ।
घट्टंती गाहंती आरंभंतीइ सट्ठाणं ॥ ५३ ॥
भू-जल-सिहि-पवण-परित्तघट्टणागाढगाढपरियावे ।
उद्दवणे वि य कमसो पणगं लहु-गुरुयमास-चउलहुया ॥ ५४ ॥
लहुमासाई चउगुरु अंतं विगलेसु तह अणंतवणे ।
पंचिंदिएसु गुरुमासाइ जाव कल्लाणगं एगं ॥ ५५ ॥
एगाइ दसंतेसुं एगाइ दसंतयं सपच्छित्तं ।
तेण परं दसगं चिय बहुएसु वि सगल-विगलेसु ॥ ५६ ॥
पुढवाइ जिउम्मीसे चउलहु पणगं च बीयउम्मीसे ।
मिस्सपुढवाइ मीसे मासलहुं पावए साहू ॥ ५७ ॥
चउगुरु सचित्तअणंतमीसिए मिस्सणंतओम्मीसे ।
मासगुरु दुविहं पुण अपरिणयं दव्व-भावेहिं ॥ ५८ ॥
ओहेण दव्वभावापरिणयभेएसु दुसु वि चउ लहुयं ।
दव्वापरिणमिए पुण जं नाणत्तं तयं सुणह ॥ ५९ ॥
अपरिणयंमि छकाए चउलहु पणगं च बीयअपरिणए ।
मीसछक्कायापरिणयदोसे लहुमासमाहंसु ॥ ६० ॥
सचित्तणंतकाए अपरिणए चउगुरू मुणेयव्वं ।
मीसाणंत अपरिणए गुरुमासो भासिओ गुरुणा ॥ ६१ ॥
चउलहुयं लहइ मुणी लित्ते दहिमाइ लित्तकरमत्ते ।
छड्डियमिह पुढवाइसु अणंतर-परंपरं ति दुहा ॥ ६२ ॥
छड्डियसचित्तभू-दग-सिहि-पवण-परित्तवणसइ-तसेसु ।
चउलहुय-मासलहुया अणंतर-परंपरेसु कमा ॥ ६३ ॥
अइरं-तिरोछड्डियए मीसेसु य तेसु मासलहु पणगा ।
अइर-तिरोछड्डियए पणगं पत्तेयणंतबीएसु ॥ ६४ ॥

1 A सिक्खिविए । 2 'सस्थानमेवाह । 3 मासशब्दः प्रत्येकं अभिसम्बध्यते । 4 अनेनोल्लेखेनान्येष्वपि [illegible] न्यायः । 5 'अत्रापि संहृतदोषपक्ष नेदाख्यानम् ।' इति B टिप्पणी । 6 A चउगुरु° । 7 गुरुमासं । 8 छन्नकार्यार्थं परं । 9 क्रमशः । 10 अचिर इति साक्षात्, चिर इति परंपरं ।

सचित्तणंतकाए अणंतर-परंपरेण छड्डियए ।
चउगुरु-मासगुरु कमा मीसे गुरुमासपणगाइं[10] ॥ ६५ ॥ –दारं ।
इय एसणदोसाणं पायच्छित्तं निरूवियं[1] इत्तो ।
संजोयणाइ चउगुरू[1] अइप्पमाणंमि चउलहुयं[2] ॥ ६६ ॥
इंगाले चउगुरुया[3] चउलहु धूमे[4] अकारणाहारे[5] ।
घासेसणदोसाणं इय पायच्छित्तमक्खायं ॥ ६७ ॥
जं जीयदाणमुत्तं एयं पायं पमायसहियस्स ।
इत्तोच्चिय ठाणंतरमेगं वड्डिज्ज दप्पवओ ॥ ६८ ॥
आउट्टियाइ ठाणंतरं च सट्ठाणमेव वा दिज्जा ।
कप्पेण पडिक्कमणं तदुभयमिह वा विणिद्दिट्ठं ॥ ६९ ॥
आलोयणकालंमि वि संकेस-विसोहिभावओ नाउं ।
हीणं वा अहियं वा तम्मत्तं वावि दिज्जाहि ॥ ७० ॥
पच्छित्तऊण अहियप्पयाणहेउं च इत्थ दव्वाई ।
अलमित्थ वित्थरेणं सुत्ताओ चेव जाणिज्जा ॥ ७१ ॥
इय पच्छित्तविहाणं जीयाओ पिंडदोससंबद्धं ।
जिणपहसूरीहिं इमं उद्धरियं आयसरणत्थं ॥ ७२ ॥
जं किंचि इत्थणुचियं अन्नाणाओ मए समक्खायं ।
तं मह काऊण दयं गुरुणो सोहिंतु गीयत्था ॥ ७३ ॥

॥ इति पिंडालोयणाविहाणं नाम[2] पयरणं समत्तं ॥

*

§ ८४. सेज्जायरपिंडे आं० । मयंतरे पु० । पमाएण कालद्धाणातीए कए नि०, पमायओ तब्भोगे नि०, अन्नहा उ० । उवओगस्स अकरणे अविहिणा वा करणे पु०, अहवा नि०, अहवा सज्झाय १२५ । उवओगमकाऊण सभत्तपाणविहरणे आं० । गोयरचरियअपडिक्कमणे पु० । काइयभूमीअप्पमज्जणे य नि० । सुत्तपोरिसिं अत्थपोरिसिं वा न करेइ पु०, तदुभयं न करेइ उ० । हरियकायं पमद्दइ पु० । झुसिरतणं सेवए पु० । निक्कारणदुप्पडिलेहियदूसपंचगं, अझुसिरतणपंचगं चम्मपंचगं पुत्थयपंचगं अपडिलेहियदूसपंचगं च सेवए कमेण नि० नि० नि० आं० ए० । गमणियापरिभोगे अचक्खुविसए वा दिणसंघाए पु० । मुचोच्चारअसणाइपरिट्ठप्पं अविहिणा परिट्ठवइ, गिहिपच्चक्खं अगुत्तं भासइ भुंजइ य, पडिमानियडे खेलमल्लगं धारेइ, गिलाणं न पडिजागरइ, अकाले सागारियहत्थेणं वा अंगं मद्दावेइ मक्खाएइ वा, उस्संघट्टसंथारए चडइ, नम्मगाइ झुसिरं परिभुंजइ, दारदेसे पवेस-निग्गमभूमिं न पमज्जइ, सज्झायमकाऊण भुंजइ, अवेलाए उच्चारभूमिं गच्छइ, सागारियस्स पिच्छंतस्स काइयसन्नाइ वोसिरइ – सव्वत्थ पु० । अपारिए भत्तं भुंजइ दवं वा पिवइ पु०, अथवा सज्झाय १२५ । ठवणकुलेसु अणापुच्छाए पविसइ ए० । इत्थि-रायकहासु उ०, देस-भत्तकहासु आं० । कोह-माण-मायाकरणे आं०, लोभकरणे उ० । अणणुन्नाए संथारए आरोहइ आं० । मयंतरे पु० । संनिहिपरिभोगे आं० । कालवेलाए उदगपाणे पायधोवणे य आं० । अविहिदेववंदणे सव्वहाअवंदणे वा उ० । मयंतरे देवगिहे देवावंदणे पु० । पुप्फलवंगाइभक्खणे उ० । निसिवसणे सण्णाए च उ० ।

---

1 'इतः संयोजनादिदोषाणां प्रायश्चित्तमित्यर्थः ।' इति B टिप्पणी । 2 A नास्ति 'नाम पयरणं' ।

दिवासयणे उ०। वियडपाणे उ०। पक्खाइरित्तं चाउम्मासाइरित्तं वा कोवं परिवासेइ उ०। दिणअप्प-डिलेहिय-अप्पमज्जियथंडिले वोसिरइ उ०। थंडिलअकरणे सज्झाय ५०। गुरुणो अणालोइए भत्तपाणे सज्झायअकरणे गुरुपायसंघट्टणे उ०। पक्खिए विसेसतवं अकरिंताणं खुड्डय-थविर-भिक्खु-उवज्झाय-सूरीणं जहसंखं नि० पु० ए० आं० उ०। चाउम्मासिए पु० ए० आं० उ० छट्ठाणि। संवच्छरिए ए० आं० उ० छट्ट-अट्ठमाणि। निद्दापमाएण एगम्मि काउस्सग्गे वंदणए वा, गुरुणो पच्छाकए पुव्वं पारिए भग्गे वा, आलस्सेण सव्वहा अकए वा नि०, दोसु पु०, तिसु ए०, सव्वेसु आं०। सव्वावस्सयअकरणे उ०। कत्तियचउमासयपारणए अन्नत्थ अविहरंताणं आं०। खुरेण लोयं कारेइ पु०, कत्तरीए ए०। दीहद्धाण-पडिवन्ने गिलाणकप्पावसाणे वरिसारंभं विणा सव्वोवहिधोवणे, पमाएण पउणपहरे मत्तगअपडिलेहणे, तहा चउम्मासिय-संवच्छरिएसु सुद्धस्स वि पंचकल्लाणं। कओववासस्स पढम-पच्छिमपोरिसीसु पत्तगअपडिलेहणे पडिलेहणाकाले य फिडिए अट्ठमयकरणे य एगकल्लाणं। सद्द-रूव-रस-फरिसेसु दोसे आं०, रागे उ०। गंधे राग-दोसेसु पु०। मयंतरे सद्द-रूव-रस-गंधेसु रागे आं०, दोसे उ०। फासे राग-दोसेसु पु०। अचित्तचंदणाइगंधग्घाणे पु०। अवग्गहाओ अद्धुट्ठहत्थप्पमाणाओ मुहणंतए फिडिए नि०। रयहरणे उ०। नवरमवग्गहो इत्थ हत्थप्पमाणो। मुहणंतए नासिए उ०। रयहरणे छट्ठं। मुहपोत्तियं विणा भासणे नि०। उवही जहण्णाइभेया तिविहो–मुहपोत्ती केसरिया गुच्छओ पायठवणं ति जहन्नो। पडला रयत्ताणं पत्ताबंधो चोलपट्टो मत्तओ रयहरणं ति मज्झिमो। पत्तं तिन्नि कप्पा य त्ति उक्कोसो। एस ओहिओ उवही। ओवग्गहिओ पुण जहन्नो पीढनिसिज्जादंडउंछणाई। मज्झिमो वासत्ताणपणगं, दंडपणगं, मत्तगतिगं, चम्मतिगं, संथारुत्तरपट्टो इच्चाई। उक्कोसो अक्खा पुत्थगपणगं इच्चाई। ओहिओवग्गहिए जहन्नोवहिम्मि विचुयलद्धे अप्पडिलेहिए वा नि०। मज्झिमे पु०। उक्किट्ठे ए०। सव्वोवहिम्मि पुण आं०। जहन्ने उवहिम्मि नासिए, वरिसारंभं विणा धोविए उ०। गमिऊणं गुरुणो अणिवेदिए य ए०। मज्झिमे आं०। उक्किट्ठे उ०। आयरियाईहिं अदिन्नं जहन्नमुवहिं धारयंतस्स भुंजंतस्स वा गुरुमणापुच्छिय अन्नेसिं दिंतस्स य ए०। मज्झिमे आं०। उक्किट्ठे उ०। सव्वोवहिम्मि नासियाइगमेसु छट्ठं। ओसन्नपव्वावियस्स ओसन्नया विहारिस्स इत्थी-तिरिच्छीमेहुणसेविणो य मूलं। सावज्जसुविणे काउस्सग्गे उज्जोयगरचउक्कचिंतणं। माणुस-तिरिक्ख-जोणीए पडिमाए य पुग्गलनिसग्गाइमेहुणसुविणे पुण उज्जोयचउक्कं नमोक्कारो य चिंतिज्जइ। मयंतरेण सागरवरगंभीरा जाव। सुमिणे राइभोयणे उ०। निक्कारणं धावणे डेवणे, समसीसियागमणे, जमलियजाणे, चउरंग-सारि-जूयाइकीलाए, इंदजाल-गोल्लयाखिल्लणे, समस्सा-पहेलियाईसु उक्कुट्ठीए गीए सिंठियसद्दे मोर-अरहट्टाइ जीवाजीवरुए, सुइमाइलोहनासे उ०। उवविट्ठए पडिक्कमणे आं०। दगमट्टियागमणे आं०। वाघारे आं०। तसपायाइभंगे आं०। अपडिलेहियठवणायरियपुरओ अणुट्ठाणकरणे पु०। इत्थीए अवयवफासे आं०। वत्थप्फासे नि०। अंगसंघट्टे नि०। वत्थसंघट्टे अवहुवयणे य सज्झाय १००। आवस्सिया-निसीहिया अकरणे दंडगअप्पडिलेहणे समिइगुत्तिविराहणे गुणवंतनिंदणे नि०। वासावासगहियं पीढफल-गाइ न समप्पेइ पु०। वरिसंतसमाणियभत्ताइपरिभोगे आं०। खेलपरिट्ठावणे पु०। सिणिद्धपरिट्ठावणे उ०। रयहरणस्स अपडिलेहणे पु०। मुहपोत्तीयाए नि०। दोरए पत्तबंधे तेप्पणए मुहणंतए य खरडिए उ०। गंतीजोयणगमणे गमणियाजोयणपरिभोगे जोयणमचक्खुविसए उ०। आभोगेणं जोयणमित्ते गंतीगमणे छट्ठं हट्ठाणं। गमणागमणं न आलोएइ, इरियावहियं न पडिक्कमइ, वियालवेलाए पाणगं न पच्च-क्खाइ, उच्चारपासवणकालभूमीओ एगदत्तं न पडिलेहइ नि०। सीसदुवारियं करेइ पु०। गरुलपक्खं पाउ-णइ उ०। एगओ दुहओ वा कप्पअंचलं संधारोत्तिया गरुलपक्खं। बोडिय-खुड्डयाणं च उत्तरासंगे उ०। चोलपट्टयकच्छादाणे उ०। चउप्फलं मुकलं वा कप्पं संघे करेइ पु०। दो वि बाहाओ छायंतो संजइपा-

उरणेणं पाउणइ आं० । गिहिलिंग-अन्नतित्थियलिंगकप्पकरणे मूलं । ओगुट्टिं चउफलकप्पं वा हत्थोक्खित्तदंडएण वा सिरे कप्पं करेइ पु० । उत्तरासंगं न करेइ, अचित्तं लसुणं भक्खेइ, तण्णयाइ उम्मोएइ पु० । गंठिसहियं नासेइ उ० । कप्पं न पिवइ उ० । सति सामत्थे अट्ठमि-चउद्दसि-नाणपंचमीसु चउत्थं न करेइ उ० । वत्थधोवणियाए पइकप्पं नि० । पमाएण पच्चक्खाणअग्गहणे पु० । वाणमंतराइपडिमाकोऊहलपलोयणे पु० । इत्थियालोयणे ए० । दंडरहियगमणे उ० । निसागमणे सोवाणहे कोसदुगप्पमाणे आं० । अणुवाणहे नि० ।

सिया एगइओ लद्धुं विविहं पाणभोयणं । भद्दगं भद्दगं भुच्चा विवण्णं विरसमाहरे ॥

इच्चेवं मंडलीवंचणे उ० । गयं उत्तरगुणाइयारपच्छित्तं ॥ * ॥ **समत्तं च चारित्ताइयारपच्छित्तं ॥**

§ ८५. उववासभंगे आं० २, नि० ३, ए० ४, पु० ५ । सज्झायसहस्सदुगं, नवगारसहस्समेगं । आयंबिलभंगे आं० २, नि० ३, पु० ४ । निव्विगइयभंगे पु० २ । एकासणाइभंगे तदहियपच्चक्खाणं देयं । गंठिसहियाइभंगे दव्वाइअभिग्गहभंगे वा संखाए पु० । तवं कुणंताणं निंदाअंतरायाइकरणे पु० ।

§ ८६. इयाणिं जोगवाहीणं अन्नाणपमायदोसा जहुत्ताणुट्ठाणे अकए पायच्छित्तं भण्णइ – उस्संघट्टं भुंजइ उ० । लेवाडयदव्वोवलित्तस्स पत्ताइणो परिवासे उ० । आहाकम्मियपरिभोगे उ० । सन्निहिपरिभोगे उ० । अकालसन्नाए उ० । थंडिले न पडिलेहेइ उ० । अपडिलेहियथंडिले उड्डं[1] करेइ उ० । असंखडं करेइ उ० । कोह-माण-माया-लोभेसु उ० । पंचसु वएसु उ० । अब्भक्खाण-पेसुन्न-परपरिवाएसु उ० । पुत्थयं भूमीए पाडेइ, कक्खाए करेइ, दुग्गंधहत्थेहिं लेइ, थुक्काहिं भरेइ, एवमाइसु उ० । रयहरणे चोलपट्टए य उग्गहाओ फिडिए उ० । उब्भो न पडिक्कमइ, वेरत्तियं न करेइ उ० । कवाडं किडियं वा अपमज्जियं उग्घाडेइ पु० । कालस्स न पडिक्कमइ, गोयरचरियं न पडिक्कमइ, आवस्सियं निसीहियं वा न करेइ नि० । छप्पयाओ संघट्टेइ अणागाढं पु०, गाढासु ए० । ओहियं न पडिलेहेइ उ० । उद्देस-समुद्देस-अणुन्ना-भोयण-पडिक्कमणभूमीओ न पमज्जेइ उ० । **गयं तवाइयारपच्छित्तं ।**

§ ८७. तवोणुट्ठाणाइसु विरियगूहणे एगासणदुगं । **गयं विरियाइयारपच्छित्तं ।**

§ ८८. इत्थ य छेयाइ[2] असद्दहओ मिउणो परियायगव्वियस्स गच्छाहिवइणो आयरियस्स कुलगणसंघाहिवईणं च छेय - मूल - अणवट्ठप्प - पारंचियमवि आवन्नाणं जीयव्ववहारेण तवं चिय दिज्जइ ।

§ ८९. भणियं साहुपायच्छित्तं । संपयं आयरणाए किंचि विसेसो भण्णइ – साहु-साहुणीणं राईभत्तविरइभंगे असणे पंचवि भेया नि० पु० ए० आं० उ० पंचगुणा । खाइमे ते चउग्गुणा । साइमे तिगुणा । पाणे दुगुणा । सुक्कसन्निहीए उ० २, अल्लसन्निहीए उ० ४ । सचित्तभोयणे कुरुडुयाईए उ० ३ । अप्पउलियभक्खणे उ० ४ । दुप्पउलभक्खणे उ० २ । कारणओ आहाकम्मगहणे ते पंच वि पंचगुणा । निक्कारणे तहिं पंचवि वीसगुणा । आहाकडकीयगडाइदोसासेवणेसु उ० ३ । अकालचारित्तणे कारणओ उ० ४ । निक्कारणओ ते वि दुगुणा । अकालसन्नाकरणे उ० २ । थंडिलउवहीणमपडिलेहणे उ० ३ । वसहिअपमज्जणे कज्जगाईणं अणुद्धरणे अविहिपरिट्ठवणे उ० ३ । जिण-पुत्थय-गुरुपमुहाणं आसायणाए उ० ४ । अवरोप्परं वायाकलहे ते पंच । दंडादंडीए दस । उद्दवणे मूलं । पहारे जणनाए ते पंचवीसगुणा । सागारियदिट्ठीए आहारनीहारं करिंते उ० ४ । निंदियकुलेसु आहाराइगिण्हितस्स उ० ४ । सूयगभत्तं पढमगब्भसुगभत्तं गिण्हंतस्स उ० २ । गणभेयं करिंतस्स उ० ४ । निक्कारणं गिहिकज्जं

1 वमनं । 2 'आचार्यादयो हि छेदादिके दत्ते अपरिणामकादीनां माऽवज्ञास्पदमभूवन्निति तप एव दीयते'–इति B टिप्पणी ।

चिंतंतस्स उ० २। गुरूणं आणाए विणा पयट्टंतस्स समईए संमत्तनासो। अणाभोगे उ० ३। वत्थधुवणे उ० ३। गायभंगे चलणभंगे सरीरधुवणे उ० ४। पारिट्ठावणियं सपत्ताई कारिंतस्स उ० ४। मग्गंमि नइलंघणे सामन्नेण उ० २। पच्चक्खाणअकरणे उवओगाकरणे अपमज्जिय वसहीए सज्झायकरणे विकहाकरणे दिवासुयणे परपरिवायकरणे गीयाइकरणे कोऊहलदंसणे समईए कुसत्थसवणं करिंते चक्खाणंते पढंते गुणंते उ० ३। एगागिणो गुरूणमाणाए विणा वियरंतस्स उ० ४। पत्तमंडाइभंगे उ० १। उवहिं हारवंतस्स उ० १। गुरूण आणाए कारणओ आहाकम्माइ अगिण्हंतस्स उ० ४। इंदियलोलुयाए संजोयणं करिंतस्स उ० ४। छप्पइयासंघट्टणे वासासु उवहिअधुवणे उ० ४। अकाले धुवंतस्स उ० ४। हासं खिड्डं कुणंतस्स उ० २। सुत्तं विणा जिणपूयाइकज्जेसु पवाहेण पयट्टंतस्स उ० ४। साहम्मियकज्जेसु जहासत्तीए अपयट्टमाणस्स उ० ४। **एवं संखेवेणं सव्वविरई भणिया।**

§ ९०. इयाणिं वसहिदोसपायच्छित्तं। कालाइकंताए पणगं। उवट्ठाणा अभिकंता अणभिकंता वज्जासु चउलहु। महावज्जाइसु चउगुरु। अतिविसुद्धिकोडिवसहीसु पट्टीवंसाइचउद्दससु चउगुरु। विसोहिकोडीसु दूसियाइसु चउलहुया। भणियं च–

आइएँ पणगं चउसु चउलहू वसहीसु खमणमन्नासु।
अविसुद्धासुं चउगुरु विसोहिकोडीसु चउलहुगा॥ १॥

§ ९१. अह थंडिलदोसपच्छित्तं–

आवाए संलोए झुसिरतसेसुं हवंति चउलहुया।
चउगुरु आसन्नबिले पुरिमं सेसेसु सव्वेसु॥ २॥

§ ९२. संपयं वंदणयदोसपच्छित्तं–

पडणीय दुट्ठ तज्जिय खमणं आयाम रुट्ठथद्धेसु।
गारव तेणिय हीलिय जुएसु पुरिमं च सेसेसु॥ ३॥

§ ९३. संपइ पव्वज्जाणरिहपव्वावणपच्छित्तं–

तेणे कीवे रायावयारिदुट्ठे य जुंगिए दोसे।
सेहे गुव्विणि मूलं सेसेसु हवंति चउगुरुगा॥ ४॥

सेहे इति सेहनिप्फेडिया। पव्वज्जाणरिहा य इमे–

बाले वुड्ढे नपुंसे य कीवे जड्डे य वाहिए।
तेणे रायावगारी य उम्मत्ते य अदंसणे॥ १॥
दासे दुट्ठे य मूढे य अणत्ते जुंगिए इय।
ओयद्धए य भयए सेहनिप्फेडिया इय॥ २॥
इय अट्ठारसभेया पुरिसस्स तहित्थियाइ ते चेव।
गुव्विणिसबालवच्छा दुन्नि इमे हुंति अन्ने वि॥ ३॥

संपयं साहूणं निव्विगइ-आयंबिल-उववास-सज्झाया चेव आलोयणा तवे पडंति, पुरिमड्ढो वा। ण उण एगासणं। पुरिमड्ढो वि चउव्विहाहारपरिहारेणेवि त्ति।

*

§ ९४. इओ देसविरइपायच्छित्तसंगहो भण्णइ–देसओ संकाइसु अट्ठसु आं०। सव्वओ उ०। देवस्स वासकुंपिया-धूवायण-थुकियऊसासअंचललग्गणे, पडिमापाडणे, सइ नियमे देवगुरुअवंदणे पु०।

अविहिणा पडिमाउज्जालणे ए० । देवदव्वस्स असणाइआहार-दम्म-वत्थाइणो, गुरुदव्वस्स वत्थाइणो साहारणधणस्स य भोगे जावइयं दव्वं भुत्तं तावइयं तस्स अन्नस्स वा देवस्स गुरुणो य देयं । तवो य-देव-गुरुदव्वे जहन्ने भुत्ते आं० । मज्झिमे उ० । उक्किट्ठे एगकल्लाणं । एयं दुगमवि देयं । गुरुआसणमाइणो पायाइणा घट्टणे नि० । अंधयारमाइम्मि गुरुणो हत्थपायाइलग्गणे जहन्न-मज्झिम-उक्किट्ठे पु०, ए०, आं० । अट्ठवियस्स ठवणायरियस्स पायप्फंसे नि० । ठवियस्स पु० । पाडणे उभयं । ठवणायरियनासणे पव्वइयाणं आसणमुहपोत्तियाइ उवभोगे नि० । पाणासणभोगेसु ए०, आं० । वासकुंपियाए पडिमाअप्फालणे १, धोवत्तियं विणा देवच्चणे २, पमाएण भूमिपाडणे ३ । पुत्थय-पट्टिया-टिप्पणमाइणो वयणोत्थनिट्टीवणालवप्फंसे १, चरणघट्टणनिट्टीवणपट्टियाअक्खरमज्जणेसु २, भूमिपाडणे ३ । अणुट्ठवियठवणायरियस्स चालणे १, भूमिपाडणे २, पणासणे ३ । एवं जहन्न-मज्झिम-उक्किट्ठआसायणासु पु०, ए०, आं० । अप्पडिलेहियठवणायरियपुरओ अणुट्ठाणकरणे पु०, सज्झायसयं वा । अवयारणगाइबायरमिच्छत्तकरणे पंचकल्लाणं उ० १० । जवमालियानासणे ए० । केसिं चि ठवणायरिए गमिए जवमालियानिग्गमणे य एगकल्लाणं, सज्झायपंचसहस्सं वा । कन्नाहलग्गहणे संडाइविवाहे आं० । पिंडलियाइकरणे पु० ।

पडिमादाहे भंगे पलीवणाइसु पमायओ वावि ।
तह पुत्थ-पट्टियाईणहिणवकारावणे सुद्धी ॥

पुत्थयमाईण कक्खाकरणे दुग्गंधहत्थग्गहणे पायलग्गणे आं० । देवहरे निक्कारणं सयणे आं० २ । देवजगईए हत्थपायपक्खालणे उ० । ण्हाणे उ० २ । विकहाकरणे आं०, पु० । झगडयं जुज्झं वा करेइ उ०२, पु० २ । घरलेक्खयं पुत्तपुत्तियासंबंधं च करेइ उ० ३, पु० ३ । हत्थरुंडि हासं चच्छरिं देवट्ठाणे परोप्परं पुरिसाणं करिंताणं उ० ३, पु० ३ । इत्थीहिं सह उ० ६, पु० ६ ।

पुढविमाइसु चउरिंदियावसाणेसु साहु व पच्छित्तं । पंचिंदिएसु पमाएण पाणाइवाए कल्लाणं । संकप्पेणं पंचकल्लाणं । दोण्हं विगलाणं वहे उ० २ । तिण्हं उ० ३ । जाव दसण्हं उ० १० । एक्कारसाइसु बहुसु वि उ० १० । मयंतरे बहुएसु विगलेसु पंचकल्लाणं । पभूयतरबेइंदियउद्दवणे उ० २०, पभूयतरतेइंदियउद्दवणे उ० ३० । पभूयतरचउरिंदियउद्दवणे उ० ४० । जीववाणिय-कोलियपुड-कीडियानगर-उद्देहियाइउद्दवणे पंचकल्लाणं । अगलियजलस्स एगवारं ण्हाणपाणतावणाइसु एगकल्लाणं । अगलियजलेण वत्थसमूहधुयणे पंचकल्लाणं । जित्तियवारं अगलियजलं वावरेइ तित्तिया कल्लाणगा । पत्तावेक्खाए उ० १ । जलोयामोयणे आं० । जीववाणियसंखारगउज्झणे एगकल्लाणं उ० २ । थोवे थोवतरमवि । अणंतकाइयकीडियानगरझुसिरवाडियाइसु ण्हाणजल-उण्हअवसावणाइवहणे संखारगसोसे अगलियजलवावारे गलेज्जंतस्स वा कित्तियस्स वि उज्झणे असोहियइंधणस्स अग्गिम्मि निक्खेवे केसविरलीकरणे सिरकंडूयणे कीलाए सरलेट्टुमाइक्खेवे पुरिमड्ढाईणि ।

मुसावाय-अदिन्नादाण-परिग्गहेसु जहन्नाइसु ए०, आं०, उ० । दप्पेण तिसु वि पंचकल्लाणं । अहवा मुसावाए जहण्णे पु०, मज्झिमे आं०, उक्किट्ठे पंचकल्लाणं । दप्पेणं जहन्न-मज्झिमेसु वि तं चेव । दव्वाइचउविहे अदिन्नादाणे जहन्ने पु०, मज्झिमे सघरे अन्नाए ए०, नाए आं० । अहवा उ० । उक्किट्ठे अन्नाए पंचकल्लाणं, नाए रायपज्जंतकलहसंपन्ने तं चेव, सज्झायलक्खं च ।

सदारे चउत्थवयभंगे अट्ठमं एगकल्लाणं च । अन्नाए परदारे हीणजणरूवे पंचकल्लाणं, नाए सज्झायलक्खं । उत्तमपरदारे अन्नाए सज्झायलक्खं, असीइसहस्साहियं । नाए मूलं । उत्तमपरकलत्ते वि । नपुंसगस्स अच्चंतपच्छायाविस्स कल्लाणं, पंचकल्लाणं वा । मयंतरे पमाएण अणुमरंतस्स सदारे वयभंगे उ० १,

जाणंतस्स पंचकल्लाणं । जइ इत्थी बलक्कारं करेइ तया तीसे पंचकल्लाणं । इत्तरकालपरिग्गहियाए वि वयभंगे कल्लाणं, अहवा उ० १ । वेसाए वयभंगे पमाएण असंभरंतस्स उ० २, अहवा उ० १ । कुलवहूए वयभंगे मूलं । मिउणो पंचकल्लाणं । अहवा दप्पेणं परदारे पंचकल्लाणं । अइपसिद्धिपत्तस्स उत्तमकुलकलत्ते वयभंगेण मूलमवि आवन्नस्स पंच कल्लाणं । सकलत्ते वयभंगे पंचविसोवया पावं । वेसाए दस । कुलडाए पन्नरस । कुलंगणाए वीसं । दप्पेण परिग्गहपमाणभंगे पंचकल्लाणं । उक्किट्ठे सज्झायलक्खमसीइसहस्साहियं । दिसिपरिमाणवयभंगे उ० । भोगोवभोगमाणभंगे छट्ठं । अणाभोगेणं मज्ज-मंस-महु-भक्खणभोगे उ०, आउट्टीए पंचकल्लाणं, अट्ठमं वा । अणंतकायभोगोवद्दवणेसु उ० । अकारणं राईभोत्ते उ० । सचित्त-वज्जिणो सचित्तअंबगाइपत्तेयभोगे आं० । पनरसकम्मादाणनियमभंगे आं०, अहवा उ०, अहवा छट्ठं, एगकल्लाणमिति भावो । दव्वसचित्तअसण-पाण-खाइम-साइम-विलेवण-पुप्फाइपरिमाणभंगे पु० । अहियवि-गइभोगे नि० । ण्हाणनियमभंगे आं०, अहवा उ० । पंचुंबराइफलभक्खणवयभंगे, पच्चक्खाणवय-भंगे अट्ठमं । पच्चक्खाणनियमभंगे अट्ठमं । पच्चक्खाणनियमे सइ निक्कारणं तदकरणे उ० । अकारण-सुयणे उ० । नमोक्कारसहिय-पोरिसि-सड्ढपोरिसि-पुरमड्ढ-दोकासण-एक्कासण-विगइ-निव्विगइय-आयंबिल-उव-वासाणं भंगे तदहियपच्चक्खाणं देयं । उववासभंगे उ० २ । वमिवसेण पच्चक्खाणभंगे पु०, अहवा ए० । मयंतरे नवकारसहिय-पोरिसि-गंठिसहियाईणं भंगे संखाए नवकार १०८, अहवा ए० । मयंतरे गंठिसहियभंगे सज्झाय २०० । गंठिसहियनासे उ० । चरिमपच्चक्खाणअग्गहणे रत्तीए य संवरणे अकरणे पु० । अणत्थदंडे चउविहे उ० । मयंतरे आं० । पेसुन्न-अब्भक्खाणदाण-परपरिवाय-असब्भराडिकरणेसु आं०, अहवा उ० । नियमे सइ सामाइय-पोसह-अतिहिसंविभागअकरणे उ० । देसावगासिए भंगे आं० । वायणंतरेण सामाइय-पोसहेसु वि आं० । चाउम्मासिय-संवच्छरिएसु निरइयारस्सावि पंचकल्लाणं । कारणे पासत्थाईणं किइकम्मअकरणे आं० । अभिग्गहभंगे आं० । इरियावहियमपडिक्कमिय सज्झायाइ करेइ पु० । इत्थीए नालयमउलणे एगकल्लाणं ति पुज्जाणं आएसो, न पुण कहिं पि दिट्ठं । बालं वुड्ढं असमत्थं नाऊण तइओ भागो पाडिज्जइ । आलोयणाए गहियाए अणंतरं जावंति वरिसा अंतरे जंति तावंति कल्लाणाणि दिज्जंति त्ति गुरुवएसो । महल्लयरे वि अवराहे छम्मासोववासपज्जंतमेव सव्वं दायव्वं । जओ वीर-जिणतित्थे इत्तियमेव च उक्कोसओ तवं वट्टइ । एगाइ नव जाव अवराहट्ठाणसंखाए पायच्छित्तं दायव्वं । दसाइसु संखाईएसु वि दसगुणमेव देयं ति ।

§ ९५. इयाणिं पोसहियस्स पायच्छित्तं भण्णइ – तत्थ पोसहिओ आवस्सियं निसीहियं वा न करेइ, उच्चार-पासवणाइभूमीओ न पडिलेहइ, अप्पमज्जिऊण कट्ठासणगाइ गिण्हइ मुंचइ वा, कवाडं अविहिणा उग्घा-डेइ पिहेइ वा, कायमपमज्जिय कंडुयइ, कुड्डमप्पमज्जिय अवट्ठंभं करेइ, इरियावहियं न पडिक्कमइ, गमणा-गमणं न आलोयइ, वसहिं न पमज्जइ, उवहिं न पडिलेहइ, सज्झायं न करेइ, नि० । पाडिय मुहपत्तियं लहइ नि० । न लहइ उ० । पुरिसस्स इत्थियाए य इत्थी-पुरिसवत्थसंघट्टे नि० । गायसंघट्टे पु० । कंबलिपावरणे, आउकाय-विज्जुजोइफुसणे नि० । कंबलिविणा पु०, अहवा आं० । कंबलिपावरणं विणा पईवफुसणे उ० । अपाराविऊण भोयणे पाणे पुंजयअणुद्धरणे पु० । असज्झ त्ति अभणणे पु० । वमणे निसि सण्णाए अुत्तूणं वंदणयसंवरणअकरणे अणिमित्तदिवासुवणे विगहासावज्जभासासु संथारयअसंदिसावणे संथारयगाहाओ अणुच्चारिऊण सयणे उवविट्ठपडिक्कमणे वाघारे दगमट्टियागमणे य आं० । पुरिसस्स थीफासे आं० । इत्थीए पुरिसफासे उ० । संतरफासे पु० । अंचलफासे मज्जारीमाइतिरियफासे य नि० । तरूण पण्णतोडणे आं० । अप्पडिलेहियथंडिले पासवणाइवोसिरणे आं० । वंदणकाउस्सग्गाणं गुरुणो पच्छा करणाइसु पुव्वाइसंघट्टणाइसु य साहुणो व पच्छित्तं देयं । एवं सामाइयत्थस्स वि जहासंभवं चिंतणीयं ।

§ ९६. संपयं पत्ताविक्खाए सामायारीविसेसेण सावयपायच्छित्तं भण्णइ—देवजगईए मज्झे भोयणे उ० १; पाणे आं० १। जईणं भोयणे कए उ० ५, पाणे २। तेसिं नियडे निद्दाकरणे आं० २, उ० ३। देसओ पच्छा अद्धं, अप्पं ओघिज्जइ। देसओ ए० २, उ०। सव्वओ नि० ३। उस्सुत्तअणुमोयणे देसओ उ०, आं०; सव्वओ उ० ५, आं० ३, नि० ३, ए० ५। देवदव्वउवभोगे कए थोवे उ० ५, आं० ५, नि० ५, ए० ५, पु० ५। पउरे जणन्नाए एयं चउग्गुणं, अन्नाए दुगुणं। सव्वओ नाए पंचावि वीसगुणा। अन्नाए दसगुणा। उवेक्खणे पण्णाहीणे अन्नाए पंचावि सव्वओ तिगुणा, नाए चउग्गुणा। एवं साहम्मियधणोवभोगे नाए चउग्गुणा, अन्नाए दुगुणा। साहम्मिएण सह कलहे अन्नाए थोवे उ०, आं०, नि०, पु०, ए०। पउरे नाए तिगुणा। साहम्मियअवमाणे थोवे अन्नाए उ०, आं०, नि०, पु०, ए०। पउरे नाए विउणा। गिलाणअपालणे देसओ पंचावि दुगुणा। साहम्मियगिलाणअपालणे देसओ पंचगुणा, सव्वओ छग्गुणा। सामन्नओ विसेसओ गिलाणअपालणे सव्वओ पंचवीसगुणा। देसओ सम्मत्ताइयारेसु अट्ठसु पंचावि एगगुणाई जाव अट्ठगुणा, सव्वओ दुगुणाई जाव नवगुणा। —**सम्मत्तपच्छित्तं गयं।**

§ ९७. पाणाइवाए सुहुमे वायरे वा देसओ कए कप्पे ते पंच, पमाए विउणा, दप्पे तिगुणा, आउट्टियाए चउग्गुणा। पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-वणस्सईणं संघट्टणे पु०, परियावणे ए०, उद्दवणे उ०। तसकायसंघट्टणे आं०, परिआवणे आं० २, उद्दवणे पंच०। कप्पंमि उद्दवणे पंच-दुगुणाणि, पमाएण तिगुणाणि, आउट्टियाए पंचगुणाणि। एवं देसओ। सव्वओ पुढविकायाईणं अट्ठण्हं संघट्टणे कमेण पु० २, नि० ३, ए० ४, आं० २, उ० २, उ० ३, उ० ४, उ० ५। नवमे पंचविहं एयं पंचगुणं। परियावणे एएसु एयं दुगुणं। उद्दवणे पंचगुणं। कप्पे संघट्टणपरियावणुद्दवणेसु सव्वओ आं० १, आं० २, आं० ३। पमाए उ० १, उ० २, उ० ३। दप्पे उ० २, उ० ३, उ० ४। आउट्टियाए संघट्टणाइसु उ० २, उ० ३, उ० ४। —**भणिओ पाणाइवाओ।**

सुहुमे मुसावाए देसओ जयणा। कयपोसहसामाइओ जइ भासइ सुहुमं मुसावायं तो उ० २। वायरं भासइ उ० ४। अकयसामाइओ वायरमुसावायं भासइ उ० ३। सव्वओ सुहुमे मुसावाए पंचविहं पि दुगुणं। वायरे पंचविहं पि पंचगुणं। —**मुसावाओ गओ।**

अदत्तगहणे सुहुमे देसओ जयणा। कयपोसहसामाइओ अदत्तं गेण्हइ सुहुमं तो पंच विउणा। वायरं गेण्हइ पंच वि अट्ठगुणा। सव्वओ सुहुमे पंचगुणा वायरे दसगुणा। —**गयं अदत्तादाणं।**

मेहुणपच्छित्तं पुव्वं व। विसेसो पुण इमो—देवहरे वेसाए सह पसंगे जाए उ० १०, आं० १०, नि० १०, ए० १०, सज्झायसहस्सतीसं ३०। सावियाहिं सद्धिं तं चेव तिगुणं देयं अन्नाए, नाए पंचगुणं। सावग-अज्जियाणं पसंगे जाए नाए य वीसगुणं, अन्नाए तेरसगुणं। संजय-सावियाणं अन्नाए पन्नरसगुणं, नाए तीसगुणं। संजय-अज्जियाणं अन्नाए सट्ठिगुणं, नाए सयगुणं। देवहरं विणा पुव्वोत्तेहिं वेसाईहिं सह पसंगे जाए नाए उ० ३०, आं० ३०, नि० १००, पु० ५००, ए० १०००, सज्झायलक्ख ३०; अन्नाए एयद्धं। —**गयं मेहुणं।**

देसओ धणधन्नाइनवविहे परिग्गहपमाणाइक्कमे एगगुणाई पंच वि भेया जाव नवगुणा। सव्वओ उण कयपच्चक्खाणस्स परिग्गहे नवविहे वि विहिए चउग्गुणाई जाव वारसगुणा। —**गओ परिग्गहो।**

देसओ दिसिभोगाइसु सत्तसु जाए अइयारे जहक्कमं पंच वि भेया इक्कगुणाई जाव सत्तगुणा। देसविरइयस्स असणाईनिसिभत्ते कप्पे उ० ३, पंचगुणा* जाव अट्ठगुणा। दुहाहारपच्चक्खाणभंगे उ०

* 'कल्पे पंचगुणाः, प्रमादे षड्गुणाः, दर्पे सप्तगुणाः, आकुट्यामष्टगुणाः।'—इति A टिप्पणी।

१ । तिविहाहारपच्चक्खाणभंगे उ० २ । चउविहाहारपच्चक्खाणभंगे उ० ४ । दुकासणभंगे उ० २ । इक्कासणभंगे उ० ३ । अहिगविगइगहणे आं० । अहिगदव्वसच्चित्तग्गहणे उ० १ । रसलोलओ उक्किट्ठदव्वभोगे आं० । अहवा नि० । संकेयपच्चक्खाणभंगे उ० १ । निव्वियभंगे उ० २ । आयंबिलभंगे उ० ३, पुरिमड्ढ २ ।—संखेवेणं देसविरई भणिया ।

*

कयसुयगुरुपयपूओ पियधम्माइगुणसंजुओ सण्णी ।
इरियं पडिकमिय करे दुवालसावत्तकीकम्मं ॥ १ ॥
सुगुरुस्स पायमूले लहुवंदण-संदिसाविय विसोही ।
मंगलपाढं काउं ओणयकाओ भणइ गाहं ॥ २ ॥
जे मे जाणंति जिणा अवराहे नाणदंसणचरित्ते ।
तेहं आलोएउं उवट्ठिओ सवभावेण ॥ ३ ॥
तो दाओ खमासमणं जाणुठिओ पुत्तिठइयमुहकमलो ।
सणियं आलोइज्जा चउवीसं सयमईयारे ॥ ४ ॥
पण संलेहण पनरस कम्म नाणाइ अट्ठ पत्तेयं ।
बारस तव विरिय तियं पण सम्मवयाइं पत्तेयं ॥ ५ ॥
मुत्तुं दद्धतिहीओ अमावसं अट्ठमिं च नवमिं च ।
छट्ठिं च चउत्थिं वा बारसिं च आलोयणं दिज्जा ॥ ६ ॥
चित्ताणुराह रेवइ मियसिर कर उत्तरातियं पुस्सो ।
रोहिणि साइ अभीई पुणवसु अस्सिणि धणिट्ठा य ॥ ७ ॥
सवणो सयतारं तह इमेसु रिक्खेसु सुंदरे खित्ते ।
सणि-भोमवज्जिएसुं वारेसु य दिज्ज तं विहिणा ॥ ८ ॥
इत्थं पुण चउभंगो अरिहो अरिहंमि दलयइ कमेण ।
आसेवणाइणा खलु मंदं दव्वाइ सुद्धीए ॥ ९ ॥
कस्सालोयण १ आलोयओ य २ आलोइयव्वयं चेव ३ ।
आलोयणविहि ४ मुवारिं तद्दोसगुणे य ५ वोच्छामि ॥ १० ॥
अक्खंडियचारित्तो वयगहणाओ य जो भवे निच्चं ।
तस्स सगासे दंसण-वयगहणं सोहिगहणं च ॥ ११ ॥
*आयारवमाहार ववहारोऽवीलए पकुव्वे य ।
अपरिस्सावी निज्जव अवायदंसी गुरू भणिओ ॥ १२ ॥
आगम सुयं आणा धारणा य जीयं च होइ ववहारो ।
केवलिमणोहि-चउदस-दस-नवपुव्वाइं पढमोत्थ ॥ १३ ॥
कहेहि सव्वं जो वुत्तो जाणमाणो विगूहइ ।
न तस्स दिंति पच्छित्तं विंति अन्नत्थ सोहय ॥ १४ ॥

* "आचारवान् पंचविधाचारवान् । आधारवान् आलोचितापराधानामवधारकः । व्यवहारो वक्ष्यमाणपंचविधव्यवहारवान् । अपव्रीडको लज्जयाऽतीचारान् गोपयंतं विचित्रैर्वचनैर्विलज्जीकृत्य सम्यगालोचनाकारयिता । प्रकुर्वक आलोचितापराधेषु सम्यक् प्रायश्चित्तदानतो विशुद्धिं कारयितुं समर्थः । अपरिश्रावी आलोचकोक्तदोषाणामन्यस्मै अकथकः । निर्यापकोऽसमर्थस्य तदुचितदानान्निर्वाहकः । अपायदर्शी अनालोचयतः पारलौकिकापायदर्शकः ।" इति A B आदर्शगता टिप्पणी ।

न संभरइ जो दोसे सब्भावा न य मायया ।
पच्चक्खी साहए ते उ माइणो उ न साहई ॥ १५ ॥
आयारपगप्पाई सेसं सव्वं सुयं विणिद्दिट्ठं ।
देसंतरट्ठियाणं गूढपयालोयणा आणा ॥ १६ ॥
गीयत्थेणं दिन्नं सुद्धिं अवहारिऊण[1] तह चेव ।
दिंतस्स धारणा सा उद्धियपयधरणरूवा वा ॥ १७ ॥
दव्वाइ चिंतिऊणं संघयणाईण हाणिमासज्ज ।
पायच्छित्तं जीयं रूढं वा जं जहिं गच्छे ॥ १८ ॥
अग्गीओ नवि जाणइ सोहिं चरणस्स देइ ऊणहियं ।
तो अप्पाणं आलोयगं च पाडेइ संसारे ॥ १९ ॥
तम्हा उक्कोसेणं खित्तम्मि उ सत्तजोयणसयाइं ।
काले बारसवरिसा गीयत्थगवेसणं कुज्जा ॥ २० ॥
आलोयणापरिणओ सम्मं संपट्ठिओ गुरुसगासे ।
जइ अंतरा वि कालं करिज्ज आराहओ तह वि ॥ २१ ॥ –दारं १ ।
जाइ-कुल-विणय-उवसम-इंदियजय-नाण-दंसणसमग्गो ।
अण्णणुतावी[2] अमाई चरणजुया लोयगा भणिया ॥ २२ ॥ –दारं २ ।
मूलुत्तरगुणविसयं निसेवियं जमिह रागदोसेहिं ।
दप्पेण पमाएण व विहिणालोएज्ज तं सव्वं ॥ २३ ॥
पढमं काले विणए बहुमाणुवहाण तह अणिण्हवणे ।
वंजण-अत्थ-तदुभये अट्ठविहो नाणमायारो ॥ २४ ॥
नाणपडणीय निण्हव अच्चासायण तहन्तरायं च ।
कुणमाणस्सइयारो पट्टियपुत्थाइपडणीयं ॥ २५ ॥
निस्संकिय निक्कंखिय निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य ।
उववूह थिरीकरणे वच्छल्लपभावणे अट्ठ ॥ २६ ॥
चेइयसाहू सावय विण उववूह उचियकरणिज्जं ।
जं न कयं तं निंदे मिच्छत्तं जं कयं तं च ॥ २७ ॥
बेइंदिया य जलुया सिमिया किमिया य हुंति पुंअरया ।
तेइंदिय मंकोडा जूवा मंकुणग उद्देही ॥ २८ ॥
चउरिंदिय मच्छिय विच्छिया य मसया तहेव तिड्डाय ।
पंचिंदिय मंडुक्का पक्खी मूसा य सप्पा य ॥ २९ ॥
अलिये अब्भक्खाणं दिट्ठीवंचणमदत्तदाणंमि ।
मेहुणसुमिणासेवण कीडा अंगस्स संफासे ॥ ३० ॥
भत्तारअन्नपुरिसे केली गुज्झंगफासणा चेव ॥
इत्थी पुरिसाणं पुण वीवाहण-पीइकरणाई ॥ ३१ ॥

1 'अवराहिऊणं' इति B पाठः । 2 किमिदं मयाऽऽलोचितमिति ।

तह य परिग्गहमाणे खित्ताईणं तु भंगमालोए।
दिसिमाणे आणयणं अन्नस्स य पेसणं जं वा ॥ ३२ ॥
सचित्तगं तु दवं पक्कासण-ण्हाण-पिवण-तंबोलं।
राईभोयणवंभं पाणस्स य संवरं वियडे ॥ ३३ ॥
वियडे अणत्थविसयं तिल्लाईणं पमाणकरणं तु।
पाओवएसं च तहा कंदप्पाई अवज्झाणं ॥ ३४ ॥
सामाइयफुसणाई दुप्पणिहाणाइ छिन्नणाईयं।
दंडगचालणमविहाणकरणं सवं च आलोए ॥ ३५ ॥
देसावगासियंमी पुढविक्कायाइ संवरं न करे।
जयणाइ चीरधुवणे वितहायरणे य अइयारो ॥ ३६ ॥
पोसहकरणे थंडिल्ल वितहकरणं च अविहिसुयणं च।
बंभे य भत्तविसए देसे सवे य पत्थणया ॥ ३७ ॥
अतिहिविभागो य कओ असुद्धभत्तेण साहुवग्गम्मि।
सद्दहणं चिय न कयं सद्दहण-परूवणावि तहा ॥ ३८ ॥
साहू साहुणिवग्गो गिलाणओसहनिरूवणं न कयं।
तित्थयराणं भवणे अपमज्जणमाइ जं च कयं ॥ ३९ ॥
तवसंजमजुत्ताणं किचं उववूहणाइ जं न कयं।
दोसुब्भावण मच्छर तं पिय सवं समालोए ॥ ४० ॥
तह अन्नधम्मियाणं तेसिं देवाण धम्मबुद्धीए।
आरंभे य अजयणा धम्मस्स य दूसणा जाओ ॥ ४१ ॥
पायच्छित्तस्स ठाणाइं संखाइयाइं गोयमा।
अणालोयंतो हु इक्किक्कं ससल्लं मरणं मरे ॥ ४२ ॥
आलोयणं अदाउं सइ अन्नमि य तहप्पणो दाउं।
जे वि य करिंति सोहिं ते वि ससल्ला मुणेयवा ॥ ४३ ॥
चाउम्मासिय वरिसे दायवालोयणा व चउकन्ना। –दारं ३।
संवेगभाविएणं सवं विहिणा कहेयवं ॥ ४४ ॥
जह बालो जंपंतो कज्जमकज्जं च उज्जुयं भणइ।
तं तह आलोइज्जा मायामयविप्पमुक्को उ ॥ ४५ ॥
छत्तीसगुणसमन्नागएण तेणवि अवस्स कायवा।
परसक्खिया विसोही सुट्ठु विवहारकुसलेण ॥ ४६ ॥
जह सुकुसलो वि विज्जो अन्नस्स कहेइ अत्तणो वाहिं।
एवं जाणंतस्स वि सल्लुद्धरणं परसगासे ॥ ४७ ॥
आयरियाइ सगच्छे संभोइय-इयरगीय-पासत्थे।
पच्छाकडसारूवी-देवयपडिमा-अरिहसिद्धे ॥ ४८ ॥ –दारं ४।
अप्पं पि भावसल्लं अणुद्धियं राय-वणियतणएहिं।
जायं कडुयविवागं किं पुण बहुयाइं पावाइं ॥ ४९ ॥

लज्जाइ गारवेण व बहुस्सुयमएण वावि दुच्चरियं ।
जे न कहंति गुरूणं न हु ते आराहगा हुंति ॥ ५० ॥
न वि तं सत्थं च विसं च दुप्पउत्तो व कुणइ वेयालो ।
जं कुणइ भावसल्लं अणुद्धियं सव्वदुहमूलं ॥ ५१ ॥
†आकंपइत्ता अणुमाणइत्ता जं दिट्ठं वायरं च सुहुमं वा ।
छण्णं सद्दाउलयं बहुजणअव्वत्ततस्सेवी ॥ ५२ ॥
एयद्दोसविमुक्कं पइसमयं वड्ढमाणसंवेगो ।
आलोइज्ज अकज्जं न पुणो काहं ति निच्छइओ ॥ ५३ ॥
जो भणइ नत्थि इण्हिं पच्छित्तं तस्स दायगो वावि ।
सो कुव्वइ संसारं जम्हा सुत्ते विणिद्दिट्ठं ॥ ५४ ॥
सव्वं पि य पच्छित्तं नवमे पुव्वंमि तइयवत्थुंमि ।
तत्तो चि य निज्जूढो कप्प-पकप्पो य ववहारो ॥ ५५ ॥
ते चिय धरंति अज्जवि तेसु धरंतेसु कह तुमं भणसि ।
वुच्छिन्नं पच्छित्तं तद्दायारो य जा तित्थं ॥ ५६ ॥ –दारं ५ ।
कयपावो वि मणुस्सो आलोइय निंदिय गुरुसगासे ।
होइ अइरेगलहुओ ओहरियभरो व्व भारवहो ॥ ५७ ॥
आलोइए गुणा खलु वियाणओ मग्गदंसणा चेव ।
सुहपरिणामो य तहा पुणो अकरणम्मि ववहारो ॥ ५८ ॥
निट्ठवियपावपंका सम्मं आलोइउं गुरुसगासे ।
पत्ता अणंतजीवा सासयसुक्खं अणाबाहं ॥ ५९ ॥ –दारं ६ ।
आलोयणमिइ दाउं पडिच्छिउं गुरुविइन्नपच्छित्तं ।
दाऊण खमासमणं भूनिहियसिरो इमं भणइ ॥ ६० ॥
छउमत्थो मूढमणो कित्तियमित्तं पि संभरइ जीवो ।
इण्हिं जं न सरामी मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ ६१ ॥
तत्तो गुरुभणियतवं पच्छित्तविसोहणत्थमणुचरइ ।
उववासंबिलनिव्विय-एगासणपुरिमकाउस्सग्गेहिं ॥ ६२ ॥
इगभत्तपुरिमनिविंयंबिलेहिं चउ वार ति दुहिं उववासो ।
सज्झायदुसहस्सेहि य काउस्सग्गे च उज्जोया ॥ ६३ ॥
आलोयणगहणविही पुव्वायरियप्पणीयगाहाहिं ।
इय एस गिहत्थाणं जिणपहसूरीहिं अक्खाओ ॥ ६४ ॥

† "आवर्जितः सन्नाचार्यः स्तोकं प्रायश्चित्तं मे दास्यति–इत्याचार्यं वैयावृत्त्यादिनाऽकंप्य आवर्ज्य । अनुमान्य अनुमानं कृत्वा लघुतरापराधनिवेदनादिना मृदुदंडप्रदायकत्वादिस्वरूपमाचार्यस्याकलय्य, एवं यदाचार्यादिनाऽदृष्टमपराधजातं तदालोचयति, नापरम् । बादरमेव वालोचयति न सूक्ष्मम् । तत्रावज्ञापरत्वात् सूक्ष्ममेवालोचयति न बादरम् । यः किल सूक्ष्ममेवालोचयति स कथं बादरं नालोचयेदित्याचार्यस्य प्रत्यायनार्थम् । छन्नं प्रच्छन्नमालोचयति लज्जालुतादिना, यथा स्वयमेव शृणोति न गुरुः । तथैवाव्यक्तवचनेनालोचयतीत्यर्थः । शब्दाकुलं यथा भवत्येवमगीतार्थादीनपि श्रावयति । बहुजनं एकस्यापराधपदस्य बहुभ्यो निवेदनम् । अव्यक्तमिति अव्यक्तस्यागीतार्थस्य गुरोर्यद्दोषालोचनम् । तस्सेवि त्ति यमपराधं शिष्यस्य आलोचयिष्यति तमेवासेवते यो गुरुस्तस्मै यदालोचनम् ।

§ ९८. जत्थ य गुरुणो दूरदेसे तत्थ ठवणायरियं ठवित्तु इरियं पडिक्कमिय दुवालसावत्तवंदणं दाउं सोहिं संदिसाविय गाहं भणिय, तद्दिणाओ आरब्भ आलोयणातवं कुणइ । पच्छा गुरूणं समागमे आलोयणं गिण्हइ । सावएणं आलोयणातवे पारद्धे फासुयाहारो सच्चित्तवज्जणं बंभं अविभूसा कम्मादाणच्चाओ विकहोवहास-कलह-मोगाइरेग-परपरीवाय-दिवासुयणवज्जणं, तिकालं जहन्नओ वि चीवंदणं जिणसाहुपूयणं, रुद्दट्टज्झाणपरिहारो तिविहाहारपच्चक्खाणं पुरिमड्ढे चउविहाहारपरिच्चाओ निव्वीए उस्सग्गेणं उक्कोसदव्वापरीभोगो, निसाए चउव्विहाहारपच्चक्खाणं कायव्वं । तहा पुप्फवईए कयं चित्तासोयसियसत्तमट्ठमीनवमीकयं च आलोयणातवे पडइ ।

इक्कासणाइ पंचसु तिहीसु जस्सत्थि सो तवं गुरुयं ।
कुणइ इह निव्वियाई पविसइ आलोयणाइतवे ॥ १ ॥
जइ तं तिहिभणियतवं अन्नत्थदिणे करिज्ज विहिसज्ज्ञो ।
अह न कुणइ जो सो गुरुतवो वि जं तिहितवे पडइ ॥ २ ॥
पइदिवसं सज्झाए अभिग्गहो जस्स सयसहस्साई ।
सो कम्मक्खयहेऊ अहिगो आलोयणाइतवे ॥ ३ ॥

सज्झाओ य इरियं पडिक्कमिय कालवेलाचउक्कं चित्तासोयसियसत्तमट्ठमीनवमीओ य वज्जिय, सुद्धे सुहणंतयं वत्थंचलं वा दाउं कायव्वो । न उण पुत्थिओवरि । नवकाराणं च मोणगुणियाणं सहस्सेणं दोण्णि सहस्सा सज्झाओ पविसइ त्ति सामायारी ॥

॥ आलोयणविही समत्तो ॥ ३४ ॥

॥ प्रतिष्ठाविधिः ॥

§ ९९. मूलगुरुंमि पुरंदरपुराभरणीभूए सो अहिणवसूरी पइट्ठापमुहकज्जाइं सयं चिय करेइ । अओ संपयं **पइट्ठाविही** भण्णइ । सो य सक्कयभासाबद्धमंतबहुलो त्ति सक्कयभासाए चेव लिहिज्जइ ।

प्रतिष्ठास्थाने जघन्यतोऽपि हस्तशतप्रमाणक्षेत्रे शोधिते विचित्रवस्त्रोल्लोचे पूर्वोत्तरदिगभिमुखस्य नव्यबिम्बस्य स्थापना । तदनन्तरं श्रीखंडरसद्रवेण ललाटे 'ओँ ह्रीं' हृदये 'ओँ श्रीं' इति बीजानि न्यसनीयानि । गन्धोदकपुष्पादिभिर्भूमिसत्कारः, अमारिघोषणम्, राजप्रच्छनम्, वैज्ञानिकसन्माननम्, संघाह्वानम्, महोत्सवेन पवित्रस्थानाज्जलानयनम्, वेदिकारचना, दिक्पालस्थापनम्, स्नपनकाराश्च समुद्राः सकंकणाः अक्षताङ्गा दक्षा अक्षतेन्द्रियाः कृतकवचरक्षा अखण्डितोज्ज्वलवेषा उपोषिता धर्मबहुमानिनः कुलजाश्चत्वारः करणीयाः । तत्रैव मंगलाचारपूर्वकम्, अविधवाभिश्चतुःप्रभृतिभिर्जीवत्पितृमातृश्वश्रूश्वशुरादिभिः प्रधानोज्ज्वलनेपथ्याभरणाभिर्विशुद्धशीलाभिः सकंकणहस्ताभिर्नारीभिः पञ्चरत्नकषायमृत्तिका-मांगल्यमूलिका-अष्टवर्गसर्वौषध्यादीनां वर्तनं कारणीयं क्रमेण । ततो भूतबलिपूर्वकं[1] विधिना पूर्वप्रतिष्ठितप्रतिमास्नानं क्रियते । ततः सूरिः प्रत्यग्रवस्त्रपरिधानः छात्रकारयुक्तः शुचिरुपोषितो भूत्वा पूर्वप्रतिष्ठितप्रतिमाग्रतश्चतुर्विधश्रीश्रमणसंघसहितो अधिकृतजिनस्तुत्या देववन्दनं करोति । ततः श्रीशान्तिनाथ-श्रुतदेवी-शासनदेवी-अम्बिका-अच्छुप्ता-समस्तवैयावृत्त्यकराणां कायोत्सर्गकरणम् । ततः सूरिः कङ्कणमुद्रिकाहस्तः सदशवस्त्रपरिधान आत्मनः सकलीकरणं शुचिविद्यां चारोपयति । तच्चेदम्—'ओँ नमो अरहंताणं हृदये, ओँ नमो सिद्धाणं शिरसि, ओँ नमो आयरियाणं शिखायाम्, ओँ नमो उवज्झायाणं कवचम्, ओँ नमो सव्वसाहूणं अस्त्रम् ।

१ 'ओँ नमो अरहंताणं इत्यादिमंत्राभिमंत्रित'—इति टिप्पणी ।

इति सकलीकरणं। ततः–'ओँ नमो अरिहंताणं, ओँ नमो सिद्धाणं, ओँ नमो आयरियाणं, ओँ नमो उवज्झायाणं, ओँ नमो सव्वसाहूणं, ओँ नमो आगासगामीणं, ओँ हः क्षः नमः'–इति **शुचिविद्या**। अनया त्रि-पञ्च-सप्तवारान् आत्मानं परिजपेत्। ततः स्नपनकारान् अभिमन्त्र्य अभिमन्त्रितदिशाबलिप्रक्षेपणं धूमसहितं सोदकं क्रियते। 'ओँ ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रवं बिम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा–इत्यनेन बल्यभिमन्त्रणम्। ततः कुसुमांजलिक्षेपः। नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

अभिनवसुगन्धिविकसितपुष्पौघभृता सुधूपगन्धाढ्या।
बिम्बोपरि निपतन्ती सुखानि पुष्पाञ्जलिः कुरुताम्॥ १॥

तदनन्तरं आचार्येण मध्याङ्गुलीद्वयोर्ध्वीकरणेन बिम्बस्य तर्जनीमुद्रा रौद्रदृष्ट्या देया। तदनन्तरं वामकरे जलं गृहीत्वा आचार्येण प्रतिमा आच्छोटनीया। ततश्चन्दनतिलकं पुष्पैः पूजनं च प्रतिमायाः। ततो मुद्गरमुद्रादर्शनम्, अक्षतभृतस्थालदानम्, वज्रगरुडादिमुद्राभिर्बिम्बस्य चक्षूरक्षामन्त्रेण 'ओँ ह्रीं क्ष्वीं०' इत्यादिना कवचं करणीयम्, दिग्बन्धश्च अनेनैव। ततः श्रावकाः सप्तधान्यं सण-लाज-कुलत्थ-यव-कंगु-उडद-सर्षपरूपं प्रतिमोपरि क्षिपन्ति। ततो जिनमुद्रया कलशाभिमन्त्रणम्। जलाद्यभिमन्त्रणमन्त्राश्चैते–ओँ नमो यः सर्वे शरीरावस्थिते महाभूते आ २ आप ४ ज ४ जलं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। **जलाभिमन्त्रणमन्त्रः**। ओँ नमो यः शरीरावस्थिते पृथु पृथु गन्धान् गृह्ण गृह्ण स्वाहा। **गन्धाधिवासनमन्त्रः**। सर्वौषधिचन्दनसमालभनमन्त्रश्च–ओँ नमो यः सर्वतो मे मेदिनि पुष्पवति पुष्पं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। **पुष्पाभिमन्त्रणमन्त्रः**। ओँ नमो यः सर्वतो बलिं दह दह महाभूते तेजाधिपति धुधु धूपं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। **धूपाभिमन्त्रणमन्त्रः**। ततः पञ्चरत्नकषायग्रन्थिर्बिम्बस्य दक्षिणकराङ्गुल्यां बध्यते।

ततः सूत्रधारेणैककलशेन प्रतिमायां स्नापितायां पञ्चमङ्गलपूर्वकं मुद्रामन्त्राधिवासितैर्जलादिद्रव्यैर्गीततूर्यपूर्वकं सकुशलस्नात्रकारैः स्नात्रकरणमारभ्यते। तद्यथा, सहिरण्यकलशचतुष्टयस्नानम् १–

सुपवित्रतीर्थनीरेण संयुतं गन्धपुष्पसन्मिश्रम्।
पततु जलं बिम्बोपरि सहिरण्यं मन्त्रपरिपूतम्॥ २॥

सर्वस्नात्रेष्वन्तरा शिरसि पुष्पारोपणं चन्दनटिक्कं धूपोत्पाटनं च कर्त्तव्यम्।

ततः प्रवालमौक्तिकसुवर्णरजतताम्रगर्भं पञ्चरत्नजलस्नानम् २–

नानारत्नौघयुतं सुगन्धिपुष्पाधिवासितं नीरम्।
पततात् विचित्रवर्णं मन्त्राढ्यं स्थापनाबिम्बे॥ ३॥

ततः प्लक्षअश्वत्थउदुम्बरशिरीषवटांतरच्छल्लीकषायस्नानम् ३–

प्लक्षाश्वत्थोदुम्बरशिरीषछल्ल्यादिकल्कसन्मृष्टे।
बिम्बे कषायनीरं पततादधिवासितं जैने॥ ४॥

ततो गजवृषभविषाणोद्धृतपर्वतवल्मीकमहाराजद्वारनदीसङ्गमोभयतटपद्मतडागोद्भवमृत्तिकास्नानम् ४–

पर्वतसरोनदीसंगमादिमृद्भिश्च मन्त्रपूताभिः।
उद्वर्त्य जैनबिम्बं स्नपयाम्यधिवासनासमये॥ ५॥

ततश्छगणमूत्रघृतदधिदुग्धदर्भरूपगवांगदर्भोदकेन पञ्चगव्यस्नानम् ५–

जिनबिम्बोपरि निपततु घृतदधिदुग्धादिद्रव्यपरिपूतम्।
दर्भोदकसन्मिश्रं पञ्चगवं हरतु दुरितानि॥ ६॥

सहदेवी-बला-शतमूली-शतावरी-कुमारी-गुहा-सिंही-व्याघ्रीसदौषधिस्नानम् ६–

सहदेव्यादिसदौषधिवर्गेणोद्वर्त्तितस्य बिम्बस्य।
तन्मिश्रं बिम्बोपरि पतज्जलं हरतु दुरितानि ॥ ७ ॥

मयूरशिखा-विरहक-अंकोल-लक्ष्मणा-शंखपुष्पी-शरपुंखा-विष्णुकान्ता-चक्रांका-सर्प्पाक्षी-महानीलीमूलिकास्नानम् ७—

सुपवित्रमूलिकावर्गमर्दिते तदुदकस्य शुभधारा।
बिम्बेऽधिवाससमये यच्छतु सौख्यानि निपतन्ती ॥ ८ ॥

कुष्टं प्रियंगु वचा रोध्रं उशीरं देवदारु दूर्वा मधुयष्टिका ऋद्धिवृद्धिप्रथमाष्टवर्गस्नानम् ८—

नानाकुष्टाद्यौषधिसन्मृष्टे तद्युतं पतन्नीरम्।
बिम्बे कृतसन्मन्त्रं कर्मौघं हन्तु भव्यानाम् ॥ ९ ॥

मेद-महामेद-कंकोल-क्षीरकंकोल-जीवक-ऋषभक-नखी-महानखी-द्वितीयाष्टकवर्गस्नानम् ९—

मेदाद्यौषधिभेदोऽपरोऽष्टवर्गः सुमन्त्रपरिपूतः।
निपतन् बिम्बस्योपरि सिद्धिं विदधातु भव्यजने ॥ १० ॥

ततः सूरिरुत्थाय गरुडमुद्रया मुक्ताशुक्तिमुद्रया वा परमेष्ठिमुद्रया वा प्रतिष्ठाप्य देवताह्वाननं तदग्रतो भूत्वा ऊर्ध्वः सन् करोति। ओँ नमोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखपरमेष्ठिने त्रैलोक्यगताय अष्टदिग्विभागकुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ आगच्छ स्वाहा—इत्यनेन अपरदिक्पालाश्चाहूयन्ते। ओँ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय इह जिनेन्द्रस्थापने आगच्छ आगच्छ स्वाहा। १। ओँ अग्नये सायुधायेत्यादि आगच्छ आगच्छ स्वाहा। २। ओँ यमाय सायुधायेत्यादि। ३। ओँ नैर्ऋतये सायुधायेत्यादि। ४। ओँ वरुणाय सायुधायेत्यादि। ५। ओँ वायवे सायुधायेत्यादि। ६। ओँ कुबेराय सायुधायेत्यादि। ७। ओँ ईशानाय सायुधाय सवाहनायेत्यादि। ८। ओँ नागाय सायुधायेत्यादि। ९। ओँ ब्रह्मणे सायुधायेत्यादि। १०। ततः पुष्पांजलिक्षेपः।

ततो हरिद्रा-वचा-शोफ-वालक-मोथ-ग्रन्थिपर्णक-प्रियंगु-सुरवास-कर्चूरक-कुष्ट-एला-तज-तमालपत्र-नागकेसर-लवंग-कंकोल-जातीफल-जातिपत्रिका-नख-चन्दन-सिल्हक-प्रभृतिसर्वौषधिस्नानम् १०—

सकलौषधिसंयुक्त्या सुगंधया घर्षितं सुगतिहेतोः।
स्नपयामि जैनबिम्बं मन्त्रिततन्नीरनिवहेन ॥ ११ ॥

अत्र दीपदर्शनमित्येके। ततः 'सिद्धा जिनादि'मन्त्रः सूरिणा दृष्टिदोषघाताय दक्षिणहस्तामर्षेण तत्काले बिम्बे न्यसनीयः। स चायम्—'इहागच्छन्तु जिनाः सिद्धा भगवन्तः स्वसमयेनेहानुग्रहाय भव्यानां भः स्वाहा'। 'हुं क्षां ह्रीं क्ष्वीं इवीं ओँ भः स्वाहा'—इत्ययं वा। ततो लोहेनास्पृष्टश्वेतसिद्धार्थरक्षापोट्टलिका करे बन्धनीया तदभिमन्त्रेण। मन्त्रोऽयम्—'ओँ क्षां क्षीं इवीं स्वाहा' इत्ययम्। ततश्चन्दनटिक्कम्। ततो जिनपुरतोऽञ्जलिं बद्धा विज्ञप्तिकावचनं कार्यम्। तच्चेदम्—'स्वागता जिनाः सिद्धाः प्रसाददाः सन्तु प्रसादं धिया कुर्वन्तु अनुग्रहपरा भवन्तु भव्यानां स्वागतमनुस्वागतम्'।

ततोऽञ्जलिमुद्रया स्वर्णभाजनस्थार्घं मन्त्रपूर्वकं निवेदयेत्। स च—ओँ भः अर्घं प्रतीच्छन्तु पूजां गृह्णन्तु जिनेन्द्राः स्वाहा। सिद्धार्थदध्यक्षतघृतदर्भरूपश्चार्घ उच्यते। ततः—

---

१ दात्रेण अद्यन।

इन्द्रमग्निं यमं चैव नैऋतं वरुणं तथा।
वायुं कुवेरमीशानं नागान् ब्रह्माणमेव च॥ १२॥

'ओँ इन्द्राय आगच्छ आगच्छ अर्घं प्रतीच्छ प्रतीच्छ पूजां गृह्ण गृह्ण स्वाहा' – एवमेव शेषाणामपि नवानां आह्वानपूर्वकं अर्घनिवेदनं च। ततः कुसुमस्नानम् ११ –

अधिवासितं सुमन्त्रैः सुमनः किंजल्कराजितं तोयम्।
तीर्थजलादिसु पृक्तं कलशोन्मुक्तं पततु बिम्बे॥ १३॥

ततः सिह्लक-कुष्ट-सुरमांसि-चंदन-अगरु-कर्पूरादियुक्तगन्धस्नानिकास्नानम् १२ –

गन्धाङ्गस्नानिकया सन्मृष्टं तदुदकस्य धाराभिः।
स्नपयामि जैनबिम्बं कर्म्मौघोच्छित्तये शिवदम्॥ १४॥

गन्धा एव शुक्लवर्णा वासा उच्यन्ते, त एव मनाक् कृष्णा गन्धा इति। ततो वासस्नानम् १३–

हृद्यैराल्हादकरैः स्पृहणीयैर्मन्त्रसंस्कृतैर्जैनम्।
स्नपयामि सुगतिहेतोर्बिम्बं अधिवासितं वासैः॥ १५॥

ततश्च चन्दनस्नानम् १४ –

शीतलसरससुगन्धिर्मनोमतश्चन्दनद्रुमसमुत्थः।
चन्दनकल्कः सजलो मन्त्रयुतः पततु जिनबिम्बे॥ १६॥

ततः कुंकुमस्नानम् १५ –

काश्मीरजसुविलिप्तं बिम्बं तन्नीरधारयाऽभिनवम्।
सन्मन्त्रयुक्तया शुचि जैनं स्नपयामि सिद्ध्यर्थम्॥ १७॥

तत आदर्शकदर्शनं शंखदर्शनं च बिम्बस्य। ततस्तीर्थोदकस्नानम् १६ –

जलधिनदीह्रदकुण्डेषु यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि।
तैर्मन्त्रसंस्कृतैरिह बिम्बं स्नपयामि सिद्ध्यर्थम्॥ १८॥

ततः कर्पूरस्नानम् १७ –

शशिकरतुषारधवला उज्वलगन्धा सुतीर्थजलमिश्रा।
कर्पूरोदकधारा सुमन्त्रपूता पततु बिम्बे॥ १९॥

ततः पुष्पाञ्जलिक्षेपः १८ –

नानासुगन्धपुष्पौघरञ्जिता चञ्चरीककृतनादा।
धूपामोदविमिश्रा पततात् पुष्पाञ्जलिर्बिम्बे॥ २०॥

ततः शुद्धजलकलश १०८ स्नानम् १९ –

चक्रे देवेन्द्रराजैः सुरगिरिशिखरे योऽभिषेकः पयोभि-
र्नृत्यन्तीभिः सुरीभिर्ललितपदगमं तूर्यनादैः सुदीप्तैः।
कर्तुं तस्यानुकारं शिवसुखजनकं मन्त्रपूतैः सुकुम्भै-
र्जैनं बिम्बं प्रतिष्ठाविधिवचनपरः स्नापयाम्यत्र काले॥ १९॥

तत आचार्यमंत्रेणाधिवासनामंत्रेण वाऽभिमंत्रितचन्दनेन सूरिर्वामकरधृतदक्षिणकरेण प्रतिमां सर्वाङ्ग-मालेपयति, कुसुमारोपणं धूपोत्पाटनं वासनिक्षेपः सुरभिमुद्रादर्शनम्। पद्ममुद्रा ऊर्ध्वा दर्श्यते, अञ्जलिमुद्रा-

दर्शनं च । ततः प्रियंगुकर्पूरगोरोचनाहस्तलेपो हस्ते दीयते । अधिवासनामंत्रेण करे पार्श्वत ऋद्धिवृद्धिसमेत-विद्धमदनफलाख्यकंकणबन्धनम् । स चायम्—'ॐ नमो खीरासवलद्धीणं, ॐ नमो महुयासवलद्धीणं, ॐ नमो संभिन्नसोईणं, ॐ नमो पयाणुसारीणं, ॐ नमो कुट्ठबुद्धीणं, जमियं विज्जं पउंजामि सा मे विज्जा पसिज्झउ, ॐ अवतर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु ॐ वग्गु वग्गु निवग्गु सुमणे सोमणसे महुमहुरे कविल ॐ कक्षः स्वाहा'—अधिवासनामंत्रः । यद्वा—'ॐ नमः शान्तये हूं क्षूं हूं सः'—कंकणमंत्रः । अधिवासना-मंत्रेणैव—'ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा'—इति स्थिरीकरणमंत्रेण वा मुक्ताशुक्त्या बिम्बे पञ्चांगस्पर्शः । मस्तक १ स्कन्ध २ जानु २ वारसप्त सप्त चक्रमुद्रया वा । धूपश्च निरंतरं दातव्यः । परमेष्ठिमुद्रां सूरिः करोति । पुनरपि जिनाह्वानम् । ततो निषद्यायामुपविश्यासनमुद्रया मध्यात्प्रभृति नन्द्यावर्त्तमामकर्पूरेण पूजयेत् । वक्ष्यमाणक्रमेण सदशाव्यंगवस्त्रेण समाच्छादयेत् । तदुपरि नालिकेरप्रदानम् । तदुपरि संकल्प-मात्रेण प्रतिष्ठाप्य बिम्बस्थापनं चलप्रतिष्ठाख्यापनाय । ततः प्रधानफलैर्नन्द्यावर्त्तस्य पूजनं चतुर्विंशत्या पत्रैः पूगैश्च पूजनीयः । ततो विचित्रबलिविधानम् । यथा—जंबीर-बीजपूरक-पनसाम्र-दाडिमेक्षुवृक्ष—इत्यादिफल-ढौकनम् । ततश्चतुःकोणकेषु वेदिकायाः पूर्वं न्यस्तायाश्चतुस्तन्तुवेष्टनम्, चतुर्दिशं श्वेतवारकोपरि गोधूम-व्रीहि-यवानां यववारकाः स्थाप्याः । ततो द्राक्षा-खर्जूर-वर्पोलक-उत्ततो-अक्षोटक-वायम्ब-इत्यादिढौकनम् । ततो बाट्ठ-खीरि-करंबुड-कीसरि-कूर-सींधवडि-पूयली-सरावु ७ दीयन्ते । काकरिया मुगसत्का ५, यवसत्क ५ गोहू ५ चिणा ५ तिलसत्क ५ सुंहाली खाजा लाडू मांडी मुरकी इत्यादि प्रचूरबलिढौकनम् । पुनः सूत्र-सहितसहिरण्यचंदनचर्चितकलशाश्चत्वारः प्रतिमानिकटे स्थाप्यन्ते । घृतगुडसमेतमंगलप्रदीप ४ स्वस्तिक-पट्टस्य चतसृष्वपि दिक्षु सकपर्दक-सहिरण्य-सजल-सधान्य-चतुर्वारकस्थापनम् । तेषु च सुकुमालिकाकंकणानि करणीयानि, यववाराश्च स्थाप्याः । पूर्णकौसुम्भरक्तवस्त्रसूत्रेण चतुर्गुणं वेष्टनं वारकाणाम् । ततः शक्रस्तवेन चैत्यवन्दनं कृत्वा अधिवासनालग्नसमये कण्ठे कुसुम्भसूत्रेण पुष्पमालासमेतऋद्धिवृद्धियुतमदनफलारोपणपूर्वकं चन्दनयुक्तेन पुष्पवासधूपप्रत्यग्राधिवासितेन वस्त्रेण सदशेन वदनाच्छादनं माइसाडी चारोप्यते । तदुपरि चन्दनच्छटा सूरिणा सूरिमंत्रेणाधिवासनं च वारत्रयं कार्यम् । ततो गन्धपुष्पयुक्तसप्तधान्यस्नपनमञ्जलिभिः । तच्चेदम्—शालि-यव-गोधूम-मुद्ग-वल्ल-चणक-चवला इति । ततः पुष्पारोपणं धूपोत्पाटनम् । ततस्तीभिर-विधवाभिश्चतसृभिरधिकाभिर्वा प्रोक्षणकम्, यथाशक्ति हिरण्यदानं च । ताभिरेव पुनः प्रचुरलड्डुकादिबलि-करणम् । ततः पुटिका ३६० दीयन्ते । साम्प्रतं क्रयाणकानि ३६० संमील्य एकैव पुटिका शरावे कृत्वा प्रतिमाग्रे दीयते, इति दृश्यते । ततः श्राद्धा आरत्रिकावतारणं मंगलप्रदीपं च कुर्वन्ति । चैत्यवन्दनं कायो-त्सर्गोऽधिवासनादेव्याश्चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनम् । तस्या एव स्तुतिः—

विश्वाशेषेषु वस्तुषु मन्त्रैर्योऽजस्रमधिवसति वसतौ ।
सेमामवतरतु श्रीजिनतनुमधिवासनादेवी ॥ १ ॥
यद्वा—पातालमन्तरिक्षं भवनं वा या समाश्रिता नित्यम् ।
साऽत्रावतरतु जैनीं प्रतिमामधिवासनादेवी ॥ २ ॥

ततः श्रुतदेवी १ शान्ति २ अम्बा ३ क्षेत्र ४ शासनदेवी ५ समस्तवैयावृत्त्य ६ कायोत्सर्गः ।

या पाति शासनं जैनं सद्यः प्रत्यूहनाशिनी ।
साऽभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं भूयाच्छासनदेवता ॥ १ ॥

पुनरपि पारणोपविश्य कार्या सूरिणा—'स्वागता जिनाः सिद्धा—' इत्यादिनेति । अधिवासनाविधिरयम् ।

1 'त्रिशद्गुल्मापः सप्तधा: ।' 2 'चूरिमानी पीडी' इति टिप्पणी ।

§ १००. अधिवासना रात्रौ दिवा प्रतिष्ठा प्रायशः कार्या। इतरथापि किञ्चित्कालं स्थित्वा विभिन्ने प्रतिष्ठालग्ने प्रतिष्ठा विधेया। तत्र प्रथमं शान्तिदेवतामंत्रेणाभिमंत्र्य शान्तिवलिः। शान्तिदेवतामंत्रश्चायम्–'ॐ नमो भगवते अर्हते शान्तिनाथस्वामिने सकलातिशेषमहासम्पत्समन्विताय त्रैलोक्यपूजिताय नमो नमः शान्तिदेवाय सर्वामरसमूहस्वामिसंपूजिताय भुवनजनपालनोद्यताय सर्वदुरितविनाशनाय सर्वाशिवप्रशमनाय सर्वदुष्टग्रहभूतपिशाचमारिशाकिनीप्रमथनाय नमो भगवति जये विजये अजिते अपराजिते जयन्ति जयावहे सर्वसंघस्य भद्रकल्याणमंगलप्रदे साधूनां श्रीशान्तितुष्टिपुष्टिदे च स्वस्तिदे च भव्यानां सिद्धिवृद्धिनिर्वृत्तिनिर्वाणजननि सत्त्वानामभयप्रदानरते भक्तानां शुभावहे सम्यग्दृष्टीनां धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदानोद्यते जिनशासनरतानां श्रीसम्पत्कीर्त्तियशोवर्द्धनि रोगजलज्वलनविषविषधरदुष्टज्वरव्यन्तरराक्षसरिपुमारिचौरइतिश्वापदोपसर्गादिभयेभ्यो रक्ष रक्ष शिवं कुरु कुरु शान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु ॐ नमो नमः हूं हः यः क्षः ह्रीं फुट् स्वाहा'। ततश्चैत्यवन्दनम्। प्रतिष्ठादेवतायाः कायोत्सर्गः, चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनम्। ततः स्तुतिदानम्–

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति।
श्रीजिनबिम्बं सा विशतु देवता सुप्रतिष्ठमिदम्॥ १॥

शासनदेवी–क्षेत्रदेवी--समस्तवैयावृत्त्य० धूपमुत्क्षिप्याच्छादनमपनयेत् लग्नसमये। ततो घृतभाजनमग्रे कृत्वा सौवीरकं घृतमधुशर्करागजमदकर्पूरकस्तूरिकाभृतरूपवर्त्तिकायां[1] सुवर्णशलाकया 'अर्हं अर्हं' इति वा वीजेन नेत्रोन्मीलनं वर्णन्यासपूर्वकम्; यथा–ह्रां ललाटे, श्रीं नयनयोः, ह्रीं हृदये, रैं सर्वसन्धिषु, क्लौं प्राकारः। कुम्भकेन न्यासः। शिरस्यभिमंत्रितवासदानम्, दक्षिणकर्णे श्रीखण्डादिचर्चिते आचार्यमंत्रन्यासः। प्रतिष्ठामंत्रेण त्रि ३ पञ्च ५ सप्तवारान् सर्वाङ्गं प्रतिमां स्पृशेत् चक्रमुद्रया। सामान्ययतिं प्रति मंत्रो यथा–'वीरे वीरे जयवीरे सेणवीरे महावीरे जये विजये जयन्ते अपराजिए ॐ ह्रीं स्वाहा' अयं प्रतिष्ठामंत्रः। ततो दधिभाण्डदर्शनम्, आदर्शकदर्शनम्, शंखदर्शनम्, दृष्टेश्चक्षूरक्षणाय सौभाग्याय स्थैर्याय च समुद्रा मंत्रा न्यसनीयाः। 'ॐ अवतर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु वग्गु वग्गु' इत्यादिकाः। ततः सौभाग्यमुद्रादर्शनं १, सुरभिमुद्रा २, प्रवचनमुद्रा ३, कृतांजलिः ४, गुरुडा पर्यन्ते। पुनरप्यवमिननं[2] स्त्रीभिः। इह च स्थिरप्रतिमाऽधो घृतवर्त्तिका श्रीखंडं तंदुलयुतपञ्चधातुकं कुम्भकारचक्रमृत्तिकासहितं पूर्वमेव बिम्बनिवेशसमये न्यसेत्। ततः–'ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा'–इति स्थिरीकरणमंत्रो ऽवमिननोर्ध्वं न्यसनीयः। चलप्रतिष्ठायां तु नैषः। नवरं चलप्रतिमाऽधः सशिरस्कदर्भो वालिका[3] च प्रथमत एव वामांगे [4]न्यसनीया। तत्र च–'ॐ जये श्रीं ह्रीं सुभद्रे नमः'–इति मंत्रश्च प्रतिष्ठानन्तरं न्यस्यः। ततः पद्ममुद्रया रत्नासनस्थापनं कार्यमिदं वदता, यथा–इदं रत्नमयमासनमलंकुर्वन्तु, इहोपविष्टा भव्यानवलोकयन्तु, हृष्टदृष्ट्या जिनाः स्वाहा। ॐ ह्यें[5] गंधान्यः प्रतीच्छतु स्वाहा। ॐ ह्यें पुष्पाणि गृह्णन्तु स्वाहा। ॐ ह्यें धूपं भजंतु स्वाहा। ॐ ह्यें भूतवलिं जुषन्तु स्वाहा। ॐ ह्यें सकलसत्त्वालोककर अवलोकय भगवन् अवलोकय स्वाहा–इति पठित्वा पुष्पांजलित्रयं क्षिपेत्। ततो वस्त्रालंकारादिभिः समस्तपूजा, माइसाडी-कंकणिकारोपश्च, पुष्पारोपणं वल्यादिश्च। मोरिंडा-सुहालीप्रभृतिका दीयते। ततो लवणावतारणम्, आरत्रिकावतारणम्, मंगलप्रदीपः कार्यः। अत्रापि भूतवलिप्रक्षेप इत्येके। भूतवल्यभिमंत्रणमंत्रस्त्वयम्–'ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवज्झायाणं, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ नमो चारणाइलद्धीणं, जे इमे नरकिंनरकिंपुरिससमहोरगगुरुलसिद्धगंधव्वजक्खरक्खसपिसायभूयपेयडाइणिपभियओ

---

1 वाटली। 2 प्रोक्षणं। 3 वेंढ़। 4 न्यस्यैव बिम्बं निवेशयम्। 5 'क्वचिदिदं कूटं सानुस्वारं द्विमात्रं (ह्यं) दृश्यते।' इति B टिप्पणी।

जिणघरनिवासिणो नियनिलयट्टिया पवियारिणो सन्निहिया असन्निहिया य ते सबे विलेवणधूवपुप्फफलसणाहं बलिं पडिच्छंता तुट्ठिकरा भवन्तु पुट्ठिकरा भवन्तु सिवकरा संतिकरा भवन्तु, सत्थयणं कुव्वन्तु, सबजिणाणं सन्निहाणपभावओ पसन्नभावत्तणेण सवत्थ रक्खं कुबंतु, सवत्थ दुरियाणि नासिंतु, सबासिवमुवसमन्तु, संतितुट्ठिपुट्ठिसिवसत्थयणकारिणो भवन्तु स्वाहा' । ततः संघसहितः सूरिश्चैत्यवन्दनं करोति । कायोत्सर्गाः श्रुतदेव्यादीनां पर्यन्ते प्रतिष्ठादेव्याश्च । 'यदधिष्ठिताः' प्रतिष्ठास्तुतिश्च दातव्या । शक्रस्तवपाठः, शान्तिस्तवभणनम् । ततोऽखंडाक्षताञ्जलिभृतलोकसमेतेन मंगलगाथापाठः कार्यः । नमोऽर्हत्सिद्धेत्यादिपूर्वकम्, यथा—

जह सिद्धाण पइट्ठा तिलोयचूडामणिम्मि सिद्धिपए ।
आचंदसूरियं तह होउ इमा सुप्पइट्ठ त्ति ॥ १ ॥
जह सग्गस्स पइट्ठा समत्थलोयस्स मज्झियारम्मि । आचंद० ॥ २ ॥
जह मेरुस्स पइट्ठा दीवसमुद्दाण मज्झियारम्मि । आचंद० ॥ ३ ॥
जह जम्बुस्स पइट्ठा जंबुदीवस्स मज्झियारम्मि । आचंद० ॥ ४ ॥
जह लवणस्स पइट्ठा समत्थउदहीण मज्झियारम्मि । आचंद० ॥ ५ ॥

इति पठित्वा अक्षतान् निक्षिपेत् पुष्पाञ्जलींश्च क्षिपेत् । ततः प्रवचनमुद्रया सूरिणा धर्मदेशना कार्या । ततः संघाय दानं मुखोद्घाटनं दिनत्रयं पूजा अष्टाह्निका पूजा वा । तत्रापि प्रशस्तदिने तृतीये पञ्चमे सप्तमे वा स्नात्रं कृत्वा जिनबलिं विधाय भूतबलिं प्रक्षिप्य चैत्यवन्दनं विधाय कंकणमोचनार्थं कायोत्सर्गः, नमस्कारस्य चिन्तनं भणनं च । प्रतिष्ठादेवताविसर्जनकायोत्सर्गः । चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनं तस्यैव पठनं श्रुतदेवता १, शान्ति० २,—

उन्मृष्टरिष्टदुष्टग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ।
संपादितहितसम्पन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥

क्षेत्रदेवतासमस्तवैयावृत्त्यकरकायोत्सर्गाः । ततः सौभाग्यमंत्रन्यासपूर्वकं मदनफलोत्तारणम् । स च— 'ॐ अवतर अवतर सोमे'—इत्यादि । ततो नन्द्यावर्त्तपूजनं विसर्जनं च । 'ॐ विसर विसर स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा'—नन्द्यावर्त्तविसर्जनमंत्रः । 'ॐ विसर विसर प्रतिष्ठादेवते स्वाहा'—इति प्रतिष्ठादेवताविसर्जनमंत्रः । ततो घृतदुग्धदध्यादिभिः स्नानं विधाय अष्टोत्तरशतेन वारकाणां स्नानम् । प्रतिष्ठावृत्तौ द्वादशमासिकस्नपनानि कृत्वा पूर्णे वत्सरेऽष्टाह्निकां विशेषपूजां च विधाय आयुर्ग्रन्थिं निबन्धयेत् । उत्तरोत्तरपूजा च यथा स्यात्तथा विधेयम् ।

लिप्पाइमए वि विही बिंबे एसेव किंतु सविसेसं ।
कायबं ण्हवणाई दप्पणसंकंतपडिबिंबे ॥ १ ॥

'ॐ क्षिं नमः' अंबिकादीनामधिवासनामंत्रः । 'ॐ ह्रीं क्ष्रूं नमो वीराय स्वाहा'—तेषामेव प्रतिष्ठामंत्रः । यद्वा 'ॐ ह्रीं क्ष्मीं स्वाहा' प्रतिष्ठामंत्रः । अंजल्याकारहस्तोपरि हस्त आसनमुद्रा, चम्पुटिका प्रवचनमुद्रा ।

थुइदाणमंतनासो आहवणं तह जिणाण दिसिबंधो ।
नेत्तुम्मीलणदेसण गुरु अहिगारा इहं कप्पो ॥ १ ॥
राया बलेण वड्ढइ जसेण धवलेइ सयलदिसिभाए ।
पुण्णं वड्ढइ विउलं सुपइट्ठा जस्स देसम्मि ॥ २ ॥
उवहणइ रोगमारी दुब्भिक्खं हणइ कुणइ सुहभावे ।
भावेण कीरमाणा सुपइट्ठा सयललोयस्स ॥ ३ ॥

जिणबिंयपइट्ठं जे करिंति तह कारविंति भत्तीए।
अणुमन्नइ पइदियहं सव्वे सुहभायणं हुंति ॥ ४ ॥
दव्वं तमेव मन्नइ जिणबिंबपइट्ठणाइकज्जेसु।
जं लग्गइ तं सहलं दुग्गइजणणं हवइ सेसं ॥ ५ ॥
एवं नाऊण सया जिणवरबिंबस्स कुणह सुपइट्ठं।
पावेह जेण जरमरणवज्जियं सासयं ठाणं ॥ ६ ॥ – इत्येते प्रतिष्ठागुणाः।

कमलवने पाताले क्षीरोदे संस्थिता यदि स्वर्गे।
भगवति कुरु सांनिध्यं बिम्बे श्रीश्रमणसंघे च ॥ १ ॥

प्रतिष्ठानन्तरमिमां गाथां पठता वासा अक्षताश्च देवशिरसि दीयन्ते। 'ॐ विद्युत्पुलिङ्गे महाविद्ये सर्वकल्मषं दह दह स्वाहा' – कल्मषदहनमंत्रः। 'ॐ हूं क्ष्रूं फुट् किरीटि किरीटि घातय घातय परीविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द, परमंत्रान् भिन्द भिन्द क्षः फुट् स्वाहा' – सिद्धार्थानभिमंत्र्य सर्वदिक्षु प्रक्षिपेत्। विघ्नशान्तिः प्रतिष्ठाकाले। ॐ ह्रां ललाटे, ॐ ह्रीं वामकर्णे, ॐ हुं दक्षिणकर्णे, ॐ हुं शिरःपश्चिमभागे, ॐ हुं मस्तकोपरि, ॐ क्ष्मीं नेत्रयोः, ॐ क्ष्मीं मुखे, ॐ क्ष्मीं कण्ठे, ॐ क्ष्मीं हृदये, ॐ क्ष्मः बाह्वोः, ॐ क्रों उदरे, ॐ ह्रीं कटौ, ॐ हूं जंघयोः, ॐ क्ष्मूं पादयोः, ॐ क्षः हस्तयोरिति कुंकुमश्रीखंडकर्पूरादिना चक्षुःप्रतिस्फोटनिवारणाय प्रतिमायां लिखेत्।

अथोक्तप्रतिष्ठाविधिसंग्रहगाथाः संक्षेपार्थं लिख्यन्ते –

पुव्वं पडिमण्हवणं चिइ उस्सग्ग थुइ अप्पण्हवणयारेसु।
रक्खा कुसुमाणंजलि तज्जणिपूयं च तिलयं वा ॥ १ ॥
मोग्गरमक्खयथालं वज्जं गुरुडो वली [ॐ ह्रीं क्ष्वीं] समंतेणं।
कवयं दिसिबंधो चिय पक्खिवणं सत्तधन्नस्स ॥ २ ॥
कलसहिमंतणसव्वोसहिचंदणचच्चिबिंबमंतेणं।
पंचरयणस्स गंठी परमेट्ठीपंचगं ण्हवणं ॥ ३ ॥
पढमं हिरण्णसह[1]-पंचरयणे[2]-सकसायमट्टियाण्हवणं[3]।
दब्भोदयँमीसं[4] पंचगव्वँण्हवणं[5] च पंचमयं ॥ ४ ॥
सहदेवाईसव्वोसहीण [6]वग्गो य मूलियावग्गो[7]।
पढमट्ठवग्ग[8] वीयट्ठवग्ग[9] ण्हवणं तहा नवमं ॥ ५ ॥
जिणदिसपालाहवणं कुसुमंजलिसव्वओसहीण्हवणं[10]।
दाहिणकरमरिसेणं जिणमंतो सरिसवोट्टलिया ॥ ६ ॥
तिलयंजलिमुद्दाए विन्नत्ती हेमभायणत्थग्घो।
पुण दिसपालाहवणं परमेट्ठी-गरुडमुद्दाए ॥ ७ ॥
कुसुमजंलं[11] गंधण्हाणिय[12] वासेहिं[13] चंदणेण[14] घुसिणेण[15]।
पनरसण्हाणेसु कएसु दप्पणदंसणं पुरओ ॥ ८ ॥
तित्थोदएण ण्हाणं[16] कप्पूरेण[17] च पुप्फअंजलिया।
अट्ठारसमं ण्हाणं सुद्धघडट्ठुत्तरसँएणं[18] ॥ ९ ॥

सव्वविलेवणसूरी पुप्फाइं धूववासमयणफलं ।
सुरही पउमा पउमा अंजलिमुद्दाओ हत्थलेवो य ॥ १० ॥
अहिवासणमंतेणं कंकण तेणेव चक्कमुद्दाए ।
पंचंगफास पुण जिणआह्वणं नंदपूया य ॥ ११ ॥
सत्त सरावा चंदणचच्चियकलसा सतंतुणो चउरो ।
घयगुलदीवा चउरो चउकलसा नंदवत्तस्स ॥ १२ ॥
सक्कत्थयअहिवासणसमए छाएहि माइसाडीए ।
सूरिमंताहिवासण-ण्हवणंजलि सत्तधन्नस्स ॥ १३ ॥
पुंखणयकणयदाणं बलिलड्डुयमाइ पुडिय आरतियं ।
चिइअहिवासण देवयथुइधारण सागयाईहिं ॥ १४ ॥

॥ अधिवासनाधिकारः समाप्तः ॥

*

अथ प्रतिष्ठाधिकारः-

संतिबलि चिइपइट्ठा उस्सग्गो थी य झायणं निते ।
वन्नसिरि वास कन्ने मंतो सव्वंगफास चक्केणं ॥ १५ ॥
दहिभंड मंत मुद्दा पुंखण पुप्फंजलीउ मंतेणं ।
भूयबलि लवणरत्तिय चिइ अक्खय धम्मकह महिमा ॥ १६ ॥
तइय पण सत्तमदिणे जिणबलि भूयबलि बंदिउं देवे ।
कंकणमोयणहेउं पइट्ठ उस्सग्ग मंत नसे ॥ १७ ॥
काउं पूयविसग्गो नंदावत्तस्स कंकणच्छोडे ।
पंचपरमेट्ठिपुव्वं मंगलगाहाओ पढमाणो ॥ १८ ॥

*

§ १०१. अथ नन्द्यावर्त्तस्थापना लिख्यते—कर्पूरसन्मिश्रेण प्रधानश्रीखण्डेन लोहेनास्पृष्टैकखण्डश्रीपर्ण्यादिपट्टके सप्तलेपाः क्रमेण दीयन्ते उपर्यधश्च । कर्पूर-कस्तूरिका-गोरोचना-कुंकुम-केसररसेन जातिलेखिन्या प्रथमं नन्द्यावर्तो लिख्यते प्रदक्षिणया नवकोणः । ततस्तन्मध्ये प्रतिष्ठाप्यजिनप्रतिमा, तत्पार्श्वे एकत्र शक्रः, अन्यत्रेशानः, अधः श्रुतदेवता । ततो नन्द्यावर्त्तस्योपरिवलके गृहाष्टकरचिते 'नमोऽर्हद्‌भ्यः, नमः सिद्धेभ्यः, नम आचार्येभ्यः, नम उपाध्यायेभ्यः, नमः सर्वसाधुभ्यः, नमो ज्ञानाय, नमो दर्शनाय, नमश्चारित्राय' । ततः पूर्वादिषु चतुर्द्वारेषु तुंबरप्रतीहारः; तथा सोमः, यमः, वरुणः, कुबेरः; तथा धनुः-दण्ड-पाश-गदाचिह्नानि । इति प्रथमवलकः । तस्योपरि द्वितीयवलके पूर्वादिप्रतोल्यन्तरेषु आग्नेयादिषु गृहषट्क-षट्कविरचितेषु क्रमेण प्रतिगृहं मरुदेव्यादिजिनमातरो लिख्यन्ते—मरुदेवि १, विजया २, सेना ३, सिद्धत्था ४, मंगला ५, सुसीमा ६, पुहवी ७, लक्खणा ८, रामा ९, नंदा १०, विण्हू ११, जया १२, सामा १३, सुजसा १४, सुव्वया १५, अइरा १६, सिरी १७, देवी १८, पभावई १९, पउमा २०, वप्पा २१, सिवा २२, वम्मा २३, तिसला २४ ।—इति द्वितीयः । तृतीयवलके पूर्वाद्यन्तरालेषु गृहचतुष्टय-चतुष्टयविरचितेषु षोडशविद्यादेव्यो लिख्यन्ते—रोहिणी १, पन्नत्ती २, वज्जसिंखला ३, वज्जंकुसी ४, अपडिचक्का ५, पुरिसदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गोरी ९, गांधारी १०, सव्वत्थमहाजाला ११, माणवी १२, वइरोट्टा १३,

अच्छुत्तां १४, माणसी १५, महामाणसी १६। – इति तृतीयवलकः। तत उपरि चतुर्थवलके पूर्वाद्यन्तरालेषु गृहषट्क-षट्कविरचितेषु सारस्वतादयो लिख्यन्ते – सारस्वत १, आदित्य, २, वह्नि ३, अरुण ४, गर्दतोय ५, तुषित, ६, अव्यावाध ७, अरिष्ट ८, अग्न्याभ ९, सूर्याभ १०, चन्द्राभ ११, सत्याभ १२, श्रेयस्कर १३, क्षेमंकर १४, वृषभ १५, कामचार १६, निर्माण १७, दिशान्तरक्षित १८, आत्मरक्षित १९, सर्वरक्षित २०, मरुत् २१, वसु २२, अश्व २३, विश्व २४ – इति चतुर्थवलकः। तदुपरि पंचमवलके पूर्वाद्यन्तरालेषु गृहद्वय-द्वयविरचितेऽमी लिख्यन्ते – ॐ सौधर्मादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा १, तद्देवीभ्यः स्वाहा २, ॐ चमरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ३, तद्देवीभ्यः स्वाहा ४, ॐ चन्द्रादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ५, तद्देवीभ्यः स्वाहा ६, ॐ किन्नरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ७, तद्देवीभ्यः स्वाहा ८ – इति पंचमवलकः। तदुपरि षष्ठवलके पूर्वाद्यन्तरालेषु गृहद्वय-द्वयविरचिते दिक्पाला लिख्यन्ते – ॐ इन्द्राय स्वाहा १, ॐ अग्नये स्वाहा २, ॐ यमाय स्वाहा ३, ॐ नैर्ऋतये स्वाहा ४, ॐ वरुणाय स्वाहा ५, ॐ वायवे स्वाहा ६, ॐ कुवेराय स्वाहा ७, ॐ ईशानाय स्वाहा ८। अधः – ॐ नागेभ्यः स्वाहा ९। उपरि – ॐ ब्रह्मणे स्वाहा १०।

इति नन्द्यावर्त्तलेखनविधिः।

§ १०२. प्रतिष्ठादिनात् पूर्वमेवेत्थं लिखित्वा प्रधानवस्त्रेण वेष्टयित्वा एकान्ते नन्द्यावर्त्तपट्टो धारणीयः। ततो देवाधिवासनानन्तरं पूर्वं वा कर्पूरवासप्रधानश्वेतकुसुमैराचार्येण नामोच्चारणमन्त्रपूर्वकं नन्द्यावर्त्तः पूजनीयः क्रमेण। तद्यथा, प्रथमवलके – ॐ नमोऽर्हद्भ्यः स्वाहा, ॐ नमः सिद्धेभ्यः स्वाहा, ॐ नम आचार्येभ्यः स्वाहा, ॐ नम उपाध्यायेभ्यः स्वाहा, ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः स्वाहा, ॐ नमो ज्ञानाय स्वाहा, ॐ नमो दर्शनाय स्वाहा, ॐ नमश्चारित्राय स्वाहा॥ ततो द्वितीयवलके – ॐ मरुदेव्यै स्वाहा १, ॐ विजयादेव्यै स्वाहा २, ॐ सेनादेव्यै स्वाहा ३, ॐ सिद्धार्थादेव्यै स्वाहा ४, ॐ मंगलादेव्यै स्वाहा ५, ॐ सुसीमादेव्यै स्वाहा ६, ॐ पृथ्वीदेव्यै स्वाहा ७, ॐ लक्ष्मणादेव्यै स्वाहा ८, ॐ रामादेव्यै स्वाहा ९, ॐ नन्दादेव्यै स्वाहा १०, ॐ विष्णुदेव्यै स्वाहा ११, ॐ जयादेव्यै स्वाहा १२, ॐ श्यामादेव्यै स्वाहा १३, ॐ सुयशादेव्यै स्वाहा १४, ॐ सुव्रतादेव्यै स्वाहा १५, ॐ अचिरादेव्यै स्वाहा १६, ॐ श्रीदेव्यै स्वाहा १७, ॐ देवीदेव्यै स्वाहा १८, ॐ प्रभावतीदेव्यै स्वाहा १९, ॐ पद्मादेव्यै स्वाहा २०, ॐ वप्रादेव्यै स्वाहा २१, ॐ शिवादेव्यै स्वाहा २२, ॐ वामादेव्यै स्वाहा २३, ॐ त्रिशलादेव्यै स्वाहा २४॥ तृतीयवलके – ॐ रोहिणीदेव्यै स्वाहा १, ॐ प्रज्ञप्तीदेव्यै स्वाहा २, ॐ वज्रशृंखलादेव्यै स्वाहा ३, ॐ वज्रांकुशीदेव्यै स्वाहा ४, ॐ अप्रतिचक्रादेव्यै स्वाहा ५, ॐ पुरुषदत्तादेव्यै स्वाहा ६, ॐ कालीदेव्यै स्वाहा ७, ॐ महाकालीदेव्यै स्वाहा ८, ॐ गौरीदेव्यै स्वाहा ९, ॐ गांधारीदेव्यै स्वाहा १०, ॐ महाज्वालादेव्यै स्वाहा ११, ॐ मानवीदेव्यै स्वाहा १२, ॐ वैरोट्यादेव्यै स्वाहा १३, ॐ अच्छुप्तादेव्यै स्वाहा १४, ॐ मानसीदेव्यै स्वाहा १५, ॐ महामानसीदेव्यै स्वाहा १६। मतांतरे तु – ॐ रोहिणीए स्वात्स्यं स्वाहा १। ॐ पन्नत्तीए रां क्षां २। ॐ वज्जसिंखलाए लां ई ३। ॐ वज्जंकुसाए क्ष्मां वां ४। ॐ अप्पडिचक्काए हूं ५। ॐ पुरिसदत्ताए क्ष्मां ६। ॐ कालीए सां हैं ७। ॐ महाकालीए ॐ क्षीं ८। ॐ गोरीए यूं हूं ९। ॐ गंधारीए रां क्ष्मां १०। ॐ सव्वत्थमहाजालाए लूं भां ११। ॐ माणवीए यूं क्ष्मां १२। ॐ अच्छुत्ताए यूं मां १३। ॐ वइरुट्टाए सूं मां १४। ॐ माणसीए सूं मां १५। ॐ महामाणसीए हूं सूं १६। सर्वे स्वाहान्ता वाच्याः॥ चतुर्थवलके – ॐ सारस्वतेभ्यः स्वाहा १। ॐ आदित्येभ्यः स्वाहा २। ॐ वह्निभ्यः स्वाहा ३। ॐ वरुणेभ्यः स्वाहा ४। ॐ गर्दतोयेभ्यः स्वाहा ५। ॐ तुषितेभ्यः स्वाहा ६। ॐ अव्यावाधेभ्यः स्वाहा ७। ॐ रिष्टेभ्यः स्वाहा ८। ॐ अग्न्याभेभ्यः स्वाहा ९। ॐ सूर्याभेभ्यः स्वाहा १०। ॐ चन्द्राभेभ्यः स्वाहा ११। ॐ सत्याभेभ्यः स्वाहा १२। ॐ श्रेयस्करेभ्यः स्वाहा १३। ॐ क्षेमंकरेभ्यः स्वाहा १४।

ॐ वृषभेभ्यः स्वाहा १५ । ॐ कामचारेभ्यः स्वाहा १६ । ॐ निर्माणेभ्यः स्वाहा १७ । ॐ दिशान्तरक्षितेभ्यः स्वाहा १८ । ॐ आत्मरक्षितेभ्यः स्वाहा १९ । ॐ सर्वरक्षितेभ्यः स्वाहा २० । ॐ मरुद्भ्यः स्वाहा २१ । ॐ वसुभ्यः स्वाहा २२ । ॐ अश्वेभ्यः स्वाहा २३ । ॐ विश्वेभ्यः स्वाहा २४ ॥ पञ्चमवलके—ॐ सौधर्मादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा १ । तद्देवीभ्यः स्वाहा २ । ॐ चमरादीन्द्रादीभ्यः स्वाहा ३ । तद्देवीभ्यः स्वाहा ४ । ॐ चन्द्रादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ५ । तद्देवीभ्यः स्वाहा ६ । ॐ किन्नरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ७ । तद्देवीभ्यः स्वाहा ८ ॥ षष्ठवलके—ॐ इन्द्राय स्वाहा १ । ॐ अग्नये स्वाहा २ । ॐ यमाय स्वाहा ३ । ॐ नैर्ऋतये स्वाहा ४ । ॐ वरुणाय स्वाहा ५ । ॐ वायवे स्वाहा ६ । ॐ कुबेराय स्वाहा ७ । ॐ ईशानाय स्वाहा ८ इति ॥ एके त्वाहुः—ॐ नागाय स्वाहा १ । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा २ । इति नागब्रह्माणौ पुनरप्यमीशानदलयोः पूजयेत् । पुनः प्रथमवलके ग्रहपूजा—ॐ आदित्याय स्वाहा १ । ॐ सोमाय स्वाहा २ । ॐ भूमिपुत्राय स्वाहा ३ । ॐ बुधाय स्वाहा ४ । ॐ बृहस्पतये स्वाहा ५ । ॐ शुक्राय स्वाहा ६ । ॐ शनैश्चराय स्वाहा ७ । ॐ राहवे स्वाहा ८ । ॐ केतवे स्वाहा ९ । इति नन्द्यावर्त्तलिखितोच्चारणेन पूजा कार्या । ततः सदशान्यंगवस्त्रेणेत्यादिक्रमः प्रागुक्त एव । नन्द्यावर्त्तं च बहुषु प्रतिष्ठाचार्येषु मुख्य एव प्रतिष्ठाचार्यः पूजयति ।

§ १०३. अथ जलानयनविधिः—महामहोत्सवेन जलाशयतीरमुपगम्य पूर्वप्रतिष्ठितप्रतिमास्नात्रं विधाय दिक्पालेभ्यो बलिं प्रदाय दिक्षु प्रक्षेपबलिः प्रक्षिप्यते । ततश्चैत्यवन्दनं श्रुत-शान्ति-देवतासमस्तवैयावृत्त्यकरकायोत्सर्गाः स्तुतयश्च । ततो वरुणदेवताकायोत्सर्गः स्तुतिश्च ।

मकरासनमासीनः शिवाशयेभ्यो ददाति पाशशयः ।
आशामाशापालः किरतु च दुरितानि वरुणो नः ॥ १ ॥

ततो जलाशये पूजार्थं पुष्पफलादिक्षेपः । ततो वस्त्रपूतेन जलेन कुम्भाः पूर्यन्ते । पुनर्महोत्सवेन देवगृहे आगमनम् । जलानयनविधिः ।

अपरे त्वित्थमाहुः—धूपवेलापूर्वं पार्श्वे बलिं विकीर्य सदशवस्त्रकंकणमुद्रिकां परिधाय देवस्याग्रे धृत्वा रिक्तकलशांश्चतुरोऽधिवासयेत् । तान् शिरस्यधिरोप्याविधवाः कलशधरस्त्रियः साधःप्रतिमं छत्रं सातोद्यनादं गृहीतवति स्नात्रकारे जलाशयं गच्छन्ति । तत्र च पार्श्वे बलिं क्षिप्त्वा फलेन धूपादिना च जलाशयं पूजयित्वा तज्जलमानीय तेनापूर्य कलशान् छत्राधोधृतप्रतिमामतो न्यसेत् । ततः प्रतिमां परिधाप्य देवान् वन्देत, श्रुतदेव्यादिकायोत्सर्गान् कुर्यात्, स्फीत्या चैत्यमागच्छेदिति ।

*

§ १०४. अथातः कलशारोपणविधिः—तत्र भूमिशुद्धिः गन्धोदकपुष्पादिसत्कारः, आदित एव कलशाधःपद्मरत्नकं सुवर्ण-रूप्य-मुक्ता-प्रवाल-लोहकुम्भकारमृत्तिकारहितं न्यसनीयम् । पवित्रस्थानाज्जलानयनं प्रतिमास्नात्रं शान्तिबलिः सोदकसर्वौषधिवर्त्तनं स्त्रीभिः ४ स्नात्रकाराभिमन्त्रणं सकलीकरणं शुचिविद्यारोपणं चैत्यवन्दनं शान्तिनाथादिकायोत्सर्गाः । श्रुत १ शान्ति २ शासन ३ क्षेत्र ४ समस्तवै० ५ । कलशे कुसुमांजलिक्षेपः । तदनन्तरमाचार्येण मध्यांगुलीद्वयोर्ध्वीकरणेन तर्जनीमुद्रा रौद्रदृष्ट्या देया । तदनु वामकरे जलं गृहीत्वा कलश आच्छोटनीयः । तिलकं पूजनं च । मुद्गरमुद्रादर्शनम् । ओं ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रवं रक्ष रक्ष स्वाहा । चक्षूरक्षा कलशस्य सप्तधान्यकप्रक्षेपः हिरण्यकलशचतुष्टयस्नानं सर्वौषधिस्नानं मूलिकास्नानं गं० धा० चं० कुं० कर्पूरकुसुमजलकलशस्नानं पंचरत्नसिद्धार्थकसमेतग्रन्थिबन्धः । वामधृतदक्षिणकरेण चन्दनेन सर्वाङ्गमालिप्य पुष्पसमेतमदनफलऋद्धिवृद्धियुतारोपणम् । कलशपंचाङ्गस्पर्शः, धूपदानं, कंकणबंधः, स्त्रीभिः प्रोंखणं, मुर-

भ्यादिमुद्रादर्शनं, सूरिमन्त्रेण वारत्रयमधिवासनम्। ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा — वस्त्रेणाच्छादनं, जंवीरादिफलोहलिवलेर्निक्षेपः। तदुपरि सप्तधान्यकस्य च आरत्रिकावतारणं चैत्यवन्दनम्। अधिवासनादेव्याः कायोत्सर्गः। चतुर्विंशतिस्तवचिन्ता। तस्याः स्तुतिः —

पातालमन्तरिक्षं भुवनं वा या समाश्रिता नित्यम्।
साऽत्रावतरतु जैने कलशे अधिवासनादेवी ॥ — इति पाठः।

शां० १ अं० २ समस्तवै०। तदनु शान्तिवलिं क्षिस्वा शक्रस्तवेन चैत्यवन्दनं शान्तिभणनं प्रतिष्ठादेवताकायोत्सर्गः। चतुर्विंश०। यदधिष्ठिता० प्रतिष्ठास्तुतिदानं। अक्षतांजलिभृतलोकसमेतेन मंगलगाथापाठः कार्यः। नमोऽर्हत्सिद्धा०।

जह सिद्धाण पइट्ठा० ॥ जह सग्गस्स पइट्ठा० ॥ जह मेरुस्स पइट्ठा० ॥ जह लवणस्स पइट्ठा समत्थ उदहीण मज्झयारम्मि० ॥ जह जंवुस्स पइट्ठा, जंवुदीवस्स मज्झयारम्मि ॥ आचंद० ॥

पुष्पांजलिक्षेपः। धर्मदेशना। — **कलशप्रतिष्ठाविधिः।**

*

§ १०९. **अथ ध्वजारोपणविधिरुच्यते** — भूमिशुद्धिः, गन्धोदकपुष्पादिसत्कारः। अमारिघोषणम्। संघाह्वाननम्। दिक्पालस्थापनम्। वेदिकाविरचनम्। नन्द्यावर्त्तलेखनम्। ततः सूरि कंकणमुद्रिकाहस्तः सदशवस्त्रपरिधानः सकलीकरणं शुचिविद्यां चारोपयति। स्नपनकारानभिमन्त्रयेत्। अभिमन्त्रितदिशावलिप्रक्षेपणं धूपसहितं सोदकं क्रियते। ॐ ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रवं रक्ष रक्ष स्वाहा — इति वल्यभिमन्त्रणम्। दिक्पालाह्वाननम् — ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय ध्वजारोपणे आगच्छ आगच्छ स्वाहा। एवं — ॐ अग्नये—ॐ यमाय—ॐ नैर्ऋतये—ॐ वरुणाय—ॐ वायवे—ॐ कुवेराय—ॐ ईशानाय—ॐ नागाय—ॐ ब्रह्मणे आगच्छ आगच्छ स्वाहा। शांतिवलिपूर्वकं विधिना मूलप्रतिमास्नानम्। तदनु चैत्यवन्दनं संघसहितेन गुरुणा कार्यम्। वंशे कुसुमांजलिक्षेपः, तिलकं पूजनं च। हिरण्यकलशादिस्नानानि पूर्ववत्। कनक[1] पंचरत्न[2] कषाय[3] मृत्तिका[4] मूलिका[5] अष्टवर्ग[6] सर्वौषधि[7] गन्ध[8] वास[9] चन्दन[10] कुंकुम[11] तीर्थोदक[12] कर्प्पूर[13] तत इक्षुरस[14] घृत-दुग्ध-दधि-स्नानम्[15]। वंशस्य चर्चनम्। पुष्पारोपणम्। लग्नसमये सदशवस्त्रेणाच्छादनम्। मुद्रान्यासः। चतुःस्त्रीप्रोंखणकम्। ध्वजाधिवासनं वासधूपादिप्रदानतः। 'ॐ श्रीं कण्ठः' — ध्वजावंशस्याभिमन्त्रणम्। इत्यधिवासना। जवारक-फलोहलि-बलिढौकनम्। आरत्रिकावतारणम्। अधिकृतजिनस्तुत्या चैत्यवन्दनम्। शान्तिनाथकायोत्सर्गः। श्रुतदे० १ शान्तिदे० २ शासनदे० ३ अंविकादे० ४ क्षेत्रदे० ५ अधिवासना ६ कायोत्सर्गाः। चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनं तस्या एव स्तुतिः — **'पातालमन्तरिक्षं भवनं वा०'**। १। समस्तवैयावृत्त्यकरकायोत्सर्गः। स्तुतिदानम्। उपविश्य शक्रस्तवपाठः। शान्तिस्तवादिभणनम्। वलिसप्तधान्यफलोहलिवासपुष्पधूपाधिवासनम्। ध्वजस्य चैत्यपार्श्वेण प्रदक्षिणाकरणम्। शिखरे पुष्पांजलिः। कलशस्नानम्। ध्वजागृहे मर्कटिकारूपे पंचरत्ननिक्षेपः। इष्टांशे ध्वजानिक्षेपः। 'ॐ श्रीं ठः' — अनेन सूरिमन्त्रेण वासक्षेपः। इति प्रतिष्ठा। फलोहलि-सप्तधान्यबलि-मोरिंडकमोदकादिवस्तूनां प्रभूतानां प्रक्षेपणम्। महाध्वजस्य ऋजुगत्या प्रतिमाया दक्षिणकरे बन्धनम्। प्रवचनमुद्रया सूरिणा धर्म्मदेशना कार्या। संघदानम्। अष्टाह्निकापूजा विषमदिने ३,५,७, जिनबलिं प्रक्षिप्य चैत्यवन्दनं विधाय शान्तिनाथादिकायोत्सर्गान् कृत्वा महाध्वजस्य छोटनम्। संघादिपूजाकरणं यथाशक्त्या। — **इति ध्वजारोपणविधिः समाप्तः।**

*

जिणमुद्द-कलसे-परमेट्ठि-अंग-अंजलि-तहासणा-चक्का ।
सुरभी-पवयण-गरुडा-सोहग्ग-कयंजली चेव ॥ १ ॥
जिणमुद्दाए चउकलसठावणं तह करेइ थिरकरणं ।
अहिवासमंतनसणं आसणमुद्दाइ अन्ने उ ॥ २ ॥
कलसाए कलसन्हवणं परमेट्ठीए उ आहवणमंतं ।
अंगाइ समालभणं अंजलिणा पुप्फरुहणाई ॥ ३ ॥
आसणयाए पट्टस्स पूयणं अंगफुसण चक्काए ।
सुरभीइ अमयमुत्ती पवयणमुद्दाइ पडिवूहो ॥ ४ ॥
गरुडाइ दुट्ठरक्खा सोहग्गाए य मंतसोहग्गं ।
तह अंजलीइ देसण मुद्दाहिं कुणइ कज्जाइं ॥ ५ ॥

*

§ १०६. अथ प्रतिष्ठोपकरणसंग्रहः—स्नपनकार ४। मूलशतवर्त्तनकारिका ४ अधिका वा । तासां गुड-युतसुहाली ४। दानं पर्वेणिदानं च। दिशाबलिः। अक्षतपात्रम्। सण १ लाज २ कुलत्थ ३ यव ४ कंगु ५ माष ६ सर्षप ७ इति सप्तधान्यम्। गंध १, धूप पुष्प वास सुवर्ण रूप्य रावट प्रवाल मौक्तिक पंच रत्न ८, हिरण्य चूर्णादिस्नानं १८, कौसुंभ कंकण २०, श्वेतसर्षप रक्षोटली ८, सिद्धार्थ दधि अक्षत घृत दर्भरूपोऽर्घः। आदर्श शंख ऋद्धिवृद्धिसमेत मदनफल ८, कंकण ३, वेदि ४ मंडपकोणचतुष्टये एकैका। जवारा १०, माटीवारा १०, माटीकलश १३२, रूपावाढुली १, सुवर्णशलाका १, नन्द्यावर्त्तपट्ट १, आच्छादनपाट ६, वेदीयोग्य ४, नन्द्यावर्त्तयोग्य १, प्रतिमायोग्य १, माइसाडी २, अधिवासना प्रतिष्ठा-समययोग्य फाकरिया द्वितीयनाम मोरिंडा २५, कथं मुद्ग ५ यव ५ गोधूम ५ चिणा ५ तिल ५, मोदक-सरावु १, वाटसरावु १, खीरिसरावु १, करंबासराव १, कीसरिसराव १, कूरसरावु १, चूरिमापूयडीसरावु १, एवं ७; नालिकेर फोफल उत्तती खर्जूर द्राक्षा वरसोलां फलोहलि दाडिम जंबीरी नारंग बीजपूरक आम्र इक्षु रक्तसूत्र तर्कु कांकणी ५, अवमिननाय पउंखणहारी ४। तासां कांचुलीदेया। मंडासरावु १, सात धनउं सण बीज कुलत्थ मसूर वल्ल चणा व्रीहि चवला। मंगलदीप ४। गुडधनसमेतक्रियाणा ३६०। पुडी १। प्रियंगु-कर्पूर-गोरोचनाहस्तलेपः। घृतभाजनम्। सौवीराञ्जनघृतमधुशर्करारूपनेत्राञ्जनम्—इत्यादि।

अव्यङ्गामञ्जलिं दत्त्वा कारयेदधिवासनम्।
द्वितीयां भक्तितो दत्त्वा प्रतिष्ठां च विधापयेत्॥ १ ॥
गुरुपरिधापनापूर्वमन्यसाधुजनाय सः।
दद्यात् प्रवरवस्त्राणि पूजयेच्छ्रावकांस्ततः॥ २ ॥

*

§१०७. अथ कूर्मप्रतिष्ठाविधिः—कूर्मस्थापनाप्रदेशे पूर्वप्रतिष्ठितप्रतिमास्नात्रं पूजनं च। आरात्रिकं मंगल-प्रदीपं च कृत्वा चैत्यवंदनं शान्तिस्तवभणनं च कार्यम्। ततो यत्र कूर्मस्थितिर्भविष्यति तत्र कूर्मगृहमाने चतुरस्रे क्षेत्रे चतुर्षु कोणेषु चत्वारि इष्टकासंपुटानि अथवा पाषाणसंपुटानि कार्याणि। गर्भे पञ्चमं कार्यम्, यत्र बिम्बं स्थाप्यते। नंदा भद्रा जया विजया पूर्णा इति पंचानामपि नामानि भवन्ति। ततोऽधस्तनगर्ताः सुगर्ताः कृत्वा पंचरत्नानि सप्तधान्यसहितचारकमध्ये निक्षेप्तव्यानि। मध्यपुटे सुवर्णमयः १ कूर्मोऽधो-

मुखः स्थापनीयः प्रधानत्रिरेखकपर्दकसहितः । प्रधानपरिधापनिका चोपरि कर्त्तव्या । वल्यादिसमस्तं विधेयम् । संपुटकेषु मुद्रितकलशैः स्नानं कार्यम्—भृंगारैरित्यर्थः । लग्नसमये च वासक्षेपं कृत्वा संपुटानि निवेश्यन्ते । अथवा लग्नसमये छडिका उत्सार्यते दर्भसत्का या अधः क्षिप्ताऽऽसीत् । मंत्रश्चायम्—'ॐ ह्रां श्रीं कूर्म्म तिष्ठ तिष्ठ रथशालां देवगृहं वा धारय धारय स्वाहा' । ततो मुद्रान्यासः सर्वत्र कार्यः । पश्चाच्चैत्यवंदनं कृत्वा मंगलस्तुतिं भणित्वाऽक्षतांजलिनिक्षेपः कार्यः संघसमेतैः । मंगलस्तुतयश्च प्रतिष्ठाकल्पे 'जह सिद्धाण पइट्ठा' इत्यादिकाः पठित्वा, कूर्म्मोपरि अक्षता निक्षेप्याः । पुष्पाञ्जलिं श्रावकाः क्षिपन्ति । इति कूर्म्मप्रतिष्ठाविधिः समाप्तः ।

*

अथ शास्त्रोदितस्थाने पीठं शास्त्रोक्तलक्षणम् ।
संस्थाप्य निश्चलं तत्र समीपं प्रतिमां नयेत् ॥ १ ॥
सौवर्णं राजतं ताम्रं शैलं वा चतुरस्रकम् ।
रम्यं पत्रं विनिर्माप्य सदलं मसृणं तथा ॥ २ ॥
एवं विलिख्य संस्नाप्य पत्रं क्षीरेण चाम्बुना ।
सुगन्धिद्रव्यमिश्रेण चन्दनेनानुलेपयेत् ॥ ३ ॥
सत्पुष्पाक्षतनैवेद्यधूपदीपफलैर्जपेत् ।
सुगन्धप्रसवैस्तत्र जाप्यमष्टोत्तरं शतम् ॥ ४ ॥
संस्थाप्य मातृकावर्णं मालामन्त्रेण तत्त्वतः ।
ॐ अर्हं अ आ इ ई इत्यादि शषसहान् यावत्—ऑं ह्रीं क्ष्वीं क्रों स्वाहा ।
पत्रमध्ये च यत्पद्मं पीठे गन्धेन तल्लिखेत् ।
कर्पूरकुङ्कुमं गन्धं पारदं रत्नपञ्चकम् ॥ ५ ॥
क्षिप्त्वा च पत्रमारोप्य प्रतिमां स्थापयेत्ततः ।
पृथ्वीतत्त्वं च धातव्यमित्याम्नाय इति ध्रुवम् ॥ ६ ॥

स्थिरप्रतिमाऽधो यंत्रम्—ऑं ह्रीं आं श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा । जातीपुष्प १०००० जापः उपोषितेन कार्यः । इदं यंत्रं ताम्रपात्रे उत्कीर्य देवगृहे मूलनायकबिम्बस्याधो निधापयेत् । बिम्बस्य सकलीकरणं, शान्तिं पुष्टिं च करोति । यस्याधस्तनविभागे मूलनायकस्य क्षिप्यते तस्य नाम मध्ये दीयते । मूलनायकस्य यक्ष-यक्षिण्यौ चालिख्येते । अत्र तु श्री पार्श्वनाथ-तद्यक्षयक्षिणीनां नामन्यासो निदर्शनमात्रमिति ॥

*

भूतानां बलिदानमग्रिमजिनस्नानं तदग्रे स्वयं
चैत्यानामथ वन्दनं स्तुतिगणः स्तोत्रं करे मुद्रिका ।
स्वस्य स्नात्रकृतां च शुद्धसकली सम्यक् शुचिप्रक्रिया
धूपाम्भःसहितोऽभिमन्त्रितबलिः पश्चाच्च पुष्पाञ्जलिः ॥ १ ॥
मुद्रा मध्याङ्गुलीभ्यामतिकुपितदृशा वामहस्ताम्भसोच्चै-
र्बिम्बस्याच्छोटनं सत्सतिलककुसुमं मुद्गरश्चाक्षपात्रम् ।
मुद्राभिर्वज्रताक्ष्यादिभिरथ कवचं जैनबिम्बस्य सम्यग्
दिग्बन्धः सप्तधान्यं जिनवपुरुपरि क्षिप्यते तत्क्षणं च ॥ २ ॥

कुम्भानामभिमन्त्रणं जिनपतेः सन्मुद्रया मन्त्र्यते
नीरं गन्धमहौषधी मलयजं पुष्पाणि धूपस्ततः ।
अङ्गुल्यामथ पञ्चरत्नरचना स्नानं ततः काञ्चनं
पुष्पारोपणधूपदानमसकृत् स्नात्रेषु तेष्वन्तरा ॥ ३ ॥
रत्नस्नानकषायमज्जनविधिर्मृत्पञ्चगव्ये ततः
सिद्धौषध्यथ मूलिका तदनु च स्पष्टाष्टवर्गद्वयम् ।
मुक्ताशुक्तिसुमुद्रया गुरुरथोत्थाय प्रतिष्ठोचितं
मन्त्रैर्दैवतमाह्वायेद् दशदिशामीशांश्च पुष्पाञ्जलिः ॥ ४ ॥
सर्वौषध्यथ सूरिहस्तकलनाद् दृग्दोषरक्षोन्मृजा
रक्षापुट्टलिका ततश्च तिलकं विज्ञप्तिकाथाञ्जलिः ।
अर्घोऽर्हत्यथ दिग्धवेषु कुसुमस्नानं ततः स्नापनिका
वासश्चन्दनकुङ्कुमे मुकुरदृक् तीर्थाम्बु कर्पूरवत् ॥ ५ ॥
निक्षेप्यः कुसुमाञ्जलिर्जलघटस्नानं शतं साष्टकं
मन्त्रावासितचन्दनेन वपुषो जैनस्य चालेपनम् ।
वामस्पृष्टकरेण वाससुमनो धूपः सुरभ्यम्बुजा-
ञ्जल्यस्मात्करलेपकङ्कणमथो पञ्चाङ्गसंस्पर्शनम् ॥ ६ ॥
धूपश्च परमेष्ठी च जिनाह्वानं पुनस्ततः ।
उपविश्य निषद्यायां नन्द्यावर्त्तस्य पूजनम् ॥ ७ ॥

॥ श्रीचन्द्रसूरिकृतप्रतिष्ठासंग्रहकाव्यानि ॥

*

घोसाविज्ज अमारिं रण्णो संघस्स तह य वाहरणं ।
विण्णाणियसंमाणं कुज्जा खित्तस्स सुद्धिं च ॥ १ ॥
तह य दिसिपालठवणं तक्किरियंगाण संनिहाणं च ।
दुविहसुई पोसहिओ वेईए ठविज्ज जिणबिंबं ॥ २ ॥
नवरं सुमुहुत्तंमी पुवुत्तरदिसिमुहं सउणपुवं ।
वज्जंतेसु चउविहमंगलतूरेसु पउरेसु ॥ ३ ॥
तो सवसंघसहिओ ठवणायरियं ठवित्तु पडिमपुरो ।
देवे वंदइ सूरी परिहियनिरुवाहिसुइवत्थो ॥ ४ ॥
संतिसुयदेवयाणं करेइ उस्सग्गं थुइपयाणं च ।
सहिरण्णदाहिणकरो सयलीकरणं तओ कुज्जा ॥ ५ ॥
तो सुद्धोभयपक्खा दक्खा खेयन्नुया विहियरक्खा ।
ण्वहणगराओ खिवंती दिसासु सघासु सिद्धबलिं ॥ ६ ॥
तयणंतरं च मुद्दिय कलसचउक्केण ते ण्हवंति जिणं ।
पंचरयणोदगेणं कसायसलिलेण तत्तो य ॥ ७ ॥

मट्टियजलेण तो अट्ठवग्गसव्वोसहीजलेणं च।
गंधजलेणं तह पवरवाससलिलेण य ण्हवंति ॥ ८ ॥
चंदणजलेण कुंकुम-जलकुंभेहिं च तित्थसलिलेणं।
सुद्धकलसेहिं पच्छा गुरुणा अभिमंतिएहिं तहा ॥ ९ ॥
ण्हाणाणं सव्वाण वि जलधारापुप्फधूवगंधाई।
दायव्वमंतराले जावंतिमकलसपत्थावो ॥ १० ॥
एवं ण्हविए बिंबे नाणकलानासमाचरिज्ज गुरू।
तो सरससुयंधेणं लिंपिज्जा चंदणदवेणं ॥ ११ ॥
कुसुमाइसुगंधाइं आरोवित्ता ठविज्ज बिंबपुरो।
नंदावत्तयवट्टं पूइज्जइ चारुदव्वेहिं ॥ १२ ॥
चंदणच्छड्डुब्भडेणं वत्थेणं छायए तओ पट्टं।
अह पडिसरमारोवे जिणबिंबे रिद्धिविद्धिजुयं ॥ १३ ॥
तो सरससुयंधाइं फलाइं पुरओ ठविज्ज बिंबस्स।
जंबीरबीजपूराइयाइं तो दिज्ज गंधाइं ॥ १४ ॥
मुद्दामंतन्नासं बिंबे हत्थंमि कंकणनिवेसं।
मंतेण धारणविहिं करिज्ज बिम्बस्स तो पुरओ ॥ १५ ॥
बहुविहपक्कन्नाणं ठवणा वरवेहिगंधपुडियाणं।
वरवंजणाण य तहा जाइफलाणं च सविसेसं ॥ १६ ॥
सागिक्खूवरसोलयखंडाईणं वरोसहीणं च।
संपुन्नबलीइ तहा ठवणं पुरओ जिणिंदस्स ॥ १७ ॥
घयगुडदीवो सुकुमारियाजुओ चउ जवारय दिसीसु।
बिंबपुरओ ठविज्जा भूयाण बलिं तओ दिज्जा ॥ १८ ॥
आरत्तियमंगलदीवयं च उत्तारिऊण जिणनाहं।
वंदिज्जऽहिवासणदेवयाइ उस्सग्गथुइदाणं ॥ १९ ॥
अह जिणपंचंगेसु ठावेइ गुरू थिरीकरणमंतं।
वाराउ तिन्नि पंच य सत्त य अच्चंतमपमत्तो ॥ २० ॥
मयणहलं आरोवइ अहिवासणमंतनासमवि कुणइ।
झायइ य तयं बिंबं सजियं व जहा फुडं होइ ॥ २१ ॥
एवमहिवासियं तं बिंबं ठाइज्ज सदसवत्थेणं।
चंदणछड्डुब्भडेणं तदुवरि पुप्फाइं खिविज्जा ॥ २२ ॥
ण्हाविज्ज सत्तधन्नेण तयणु जीवंतउभयपक्खाहिं।
नारीहिं चउहिं समलंकियाहिं विज्जंतनाहाहिं ॥ २३ ॥
पडिपुण्णवत्तसुत्तेणं वेढणं चउगुणं च काऊण।
ओमिणणं कारिज्जा तुट्ठेहिं हिरण्णदाणजुयं ॥ २४ ॥

तो वंदिज्जा देवे पइट्ठदेवीइ काउस्सग्गं ।
दिज्ज थुई तीए चिय ठविज्ज पुरओ उ घयपत्तं ॥ २५ ॥
सोवण्णवट्टियाए कुज्जा महुसक्कराहिँ भरियाए ।
कणगसलागाए बिंबनयणउम्मीलणं लग्गे ॥ २६ ॥
सम्मं पइट्ठमंतेण अंगसंधीसु अक्खरन्नासं ।
कुणमाणो एगमणो सूरी वासे खिविज्ज तहा ॥ २७ ॥
पुप्फक्खयंजलीहिँ तो गुरुणा घोसणा ससंघेणं ।
थिज्जत्थं कायव्वा मंगलसद्देहिँ बिंबस्स ॥ २८ ॥
जह सिद्ध-मेरु-कुलपव्वयाण पंचत्थिकाय-कालाणं ।
इह सासया पइट्ठा सुपइट्ठा होउ तह एसा ॥ २९ ॥
जह दीव-सिंधु-ससहर-दिणयर-सुरवास-वासखित्ताणं ।
इह सासया पइट्ठा सुपइट्ठा होउ तह एसा ॥ ३० ॥
इत्थं सुहभावकए अक्खयखेवे कयम्मि बिंबस्स ।
सविसेसं पुण पूया किच्चा चिइवंदणा य तहा ॥ ३१ ॥
मुहउग्घाडणसमणंतरं च पूयाइ समणसंघस्स ।
फासुयघय-गुड-गोरस-णंतगमाईहिँ कायव्वा ॥ ३२ ॥
सोहणदिणे य सोहग्गमंतविन्नासपुव्वयमवस्सं ।
मयणहलकंकणं करयलाओ बिंबस्स अवणिज्जा ॥ ३३ ॥
जिणबिंबस्स य विसए नियनियठाणेसु सव्वमुद्दाओ ।
गुरुणा उवउत्तेणं पउंजियव्वाओ ताओ इमा ॥ ३४ ॥
जिणमुद्दकलस० .... ॥ गाहा ॥ ३५ ॥
जिणमुद्दाए० .... ॥ गाहा ॥ ३६ ॥
कलसाए० .... ॥ गाहा ॥ ३७ ॥
आसणयाए० .... ॥ गाहा ॥ ३८ ॥
गरुडाए० .... ॥ गाहा ॥ ३९ ॥

॥ इति प्रतिष्ठाविधिः ॥

घोसिज्जए अमारी दीणाणाहाण दिज्जए दाणं ।
पउणीकिज्जइ वंसो घयजुग्गो सरलसुसिणिद्धो ॥ ४० ॥
वट्टंतचारुपव्वो अपुघडो कीडएहिँ अक्खद्धो ।
अदड्ढो वण्णड्ढो अणुड्ढसुक्को पमाणजुओ ॥ ४१ ॥
काऊण मूलपडिमाण्हाणं चाउद्दिसं च भूसुद्धिं ।
दिसिदेवयआह्वणं वंसस्स विलेवणं तह य ॥ ४२ ॥
अहिवासियकुसुमारोवणं च अहिवासणं च वंसस्स ।
मयणफलरिद्धिविद्धी सिद्धत्थारोवणं चेव ॥ ४३ ॥

धूवक्खेवं मुद्दानासं चउसुंदरीहिं ओमिणणं।
अहिवासणं च सम्मं महद्धयस्सिंदुधवलस्स ॥ ४४ ॥
चाउद्दिसिं जवारय फलोहलीढोयणं च वंसपुरो।
आरत्तियावयारणमह विहिणा देववंदणयं ॥ ४५ ॥
बलिसत्तधन्नफलवासकुसुमसकसायवत्थुनिवहेणं।
अहिवासणं च तत्तो सिहरे तिपयाहिणीकरणं[1] ॥ ४६ ॥
कुसुमंजलिपाडणपुरस्सरं च ण्हवणं च मूलकलसस्स।
खेत्तदसद्धामलरयणधयहरा इट्ठसमयंमि ॥ ४७ ॥
सुपइट्ठपइट्ठाणंतखित्तवासस्स तयणु वंसस्स।
ठवणं खिवणं च तओ फलोहलीभूरिभक्खाणं ॥ ४८ ॥
तत्तो उज्जुगईए धयस्स परिमोयणं सजयसद्दं।
पडिमाइ दाहिणकरे महद्धयस्सावि बंधणयं ॥ ४९ ॥
विसमदिणे उस्सयणं[2] जहसत्तीए य संघदाणं च।
इय सुत्तत्थविहीए कुणह धयारोवणं धन्ना ॥ ५० ॥

॥ इति ध्वजारोपणविधिः कथारत्नकोशात् ॥

*

॥ इति प्रसङ्गानुप्रसङ्गसहितः प्रतिष्ठाविधिः समाप्तः ॥ ३५ ॥

---

§ १०८. अथ स्थापनाचार्यप्रतिष्ठा—

चोक्खंसुयकरचलणो आरोवियसयलिकरणसुइविज्जो।
गरुडाइदलियविग्घो मलयजघुसिणेहिं लिंपित्ता ॥ १ ॥
अक्खं फलिहमणिं वा सुहकट्ठमयं च ठावणायरियं।
काऊणं पंचपरमिट्ठिटिक्कए चंदणरसेण ॥ २ ॥
मंतेण गणहराणं अहवा वि हु वद्धमाणविज्जाए।
काऊण सत्तखुत्तो वासक्खेवं पइट्ठिज्जा ॥ ३ ॥

॥ ठवणायरियपइट्ठाविही समत्तो ॥ ३६ ॥

*

§ १०९. अथ मुद्राविधिः—तत्र दक्षिणांगुष्ठेन तर्जनीमध्यमे समाक्रम्य पुनर्मध्यमामोक्षणेन नाराचमुद्रा १. किंचिदाकुंचितांगुलीकस्य वामहस्तस्योपरि शिथिलमुष्टिदक्षिणकरस्थापनेन कुम्भमुद्रा २.—शुचिमुद्राद्वयम्। बद्धमुष्ट्योः करयोः संलग्नसंमुखांगुष्ठयोर्हृदयमुद्रा १. तावेव मुष्टी समीकृतौ ऊर्ध्वांगुष्ठौ शिरसि विन्यसेदिति शिरोमुद्रा २. पूर्ववन्मुष्टी बद्ध्वा तर्जन्यौ प्रसारयेदिति शिखामुद्रा ३. पुनर्मुष्टिबन्धं विधाय कनीयस्यंगुष्ठौ प्रसारयेदिति कवचमुद्रा ४. कनिष्ठिकामंगुष्ठेन संपीड्य शेषांगुलीः प्रसारयेदिति क्षुरमुद्रा १—नेत्रत्रयस्य न्यासोऽयम्। दक्षिणकरेण मुष्टिं बद्ध्वा तर्जनीमध्यमे प्रसारयेदिति अस्त्रमुद्रा। हृदयादीनां विन्यसनमुद्रा।

---

1 A पयक्खिणीकरणं। 2 B उस्सुयणं।

प्रसारिताधोमुखाभ्यां हस्ताभ्यां पादांगुलीतलमस्तकस्पर्शान्महामुद्रा १. अन्योऽन्यग्रथितांगुलीषु कनिष्ठिकानामिकयोर्मध्यमातर्ज्जन्योश्च संयोजनेन गोस्तनाकारा धेनुमुद्रा २. दक्षिणहस्तस्य तर्ज्जनीं वामहस्तस्य मध्यमया संदधीत, मध्यमां च तर्ज्जन्याऽनामिकां कनिष्ठिकया कनिष्ठिकां चानामिकया, एतच्चाधोमुखं कुर्यात्। एषा धेनुमुद्रेत्यन्ये विशिषन्ति। हस्ताभ्यामञ्जलिं कृत्वा प्राकामामूलपर्वांगुष्ठसंयोजनेनावाहनी ३. इयमेवाधोमुखा स्थापनी ४. संलग्नमुष्ट्युच्छ्रितांगुष्ठौ करौ संनिधानी ५. तावेव गर्भगांगुष्ठौ निष्ठुरा ६. उभयकनिष्ठिकामूलसंयुक्तांगुष्ठाग्रद्वयमुत्तानितं संहितं पाणियुग्ममावाहनमुद्रा ७. तदेव तर्ज्जनीमूलसंयुक्तांगुष्ठद्वयावाङ्मुखं स्थापनमुद्रा ८. मुष्टिप्रसृतया तर्जन्या देवतामभितः परिभ्रमणं निरोधमुद्रा ९. शिरोदेशमारभ्यापदं पार्श्वाभ्यां तर्जन्योर्भ्रमणमवगुंठनमुद्रेत्येके। एता आवाहनादिमुद्राः ९।

बद्धमुष्टेर्दक्षिणहस्तस्य मध्यमातर्जन्योर्विस्फारितप्रसारणेन गोवृषमुद्रा १। बद्धमुष्टेर्दक्षिणहस्तस्य प्रसारिततर्जन्या वामहस्ततलताडनेन त्रासनीमुद्रा १। नेत्रास्त्रयोः पूजामुद्रे। अंगुष्ठे तर्जनीं संयोज्य शेषांगुलिप्रसारणेन पाशमुद्रा १. बद्धमुष्टेर्वामहस्तस्य तर्जनीं प्रसार्य किंचिदाकुंचयेदित्यंकुशमुद्रा २. संहतोर्ध्वांगुलिवामहस्तमूले चांगुष्ठं तिर्यग् विधाय तर्जनीचालनेन ध्वजमुद्रा ३. दक्षिणहस्तमुत्तानं विधायाधःकरशाखाः प्रसारयेदिति वरदमुद्रा ४। एता जयादिदेवतानां पूजामुद्राः।

वामहस्तेन मुष्टिं बद्ध्वा कनिष्ठिकां प्रसार्य शेषांगुलीरंगुष्ठेन पीडयेदिति शंखमुद्रा १. परस्पराभिमुखहस्ताभ्यां वेणीबन्धं विधाय मध्यमे प्रसार्य संयोज्य च शेषांगुलीभिर्मुष्टिं बन्धयेत्—इति शक्तिमुद्रा २. हस्तद्वयेनांगुष्ठतर्जनीभ्यां वलके विधाय परस्परान्तःप्रवेशनेन शृंखलामुद्रा ३. वामहस्तस्योपरि दक्षिणकरं कृत्वा कनिष्ठिकांगुष्ठाभ्यां मणिबन्धं संवेष्ट्य शेषांगुलीनां विस्फारितप्रसारणेन वज्रमुद्रा ४. वामहस्ततले दक्षिणहस्तमूलं संनिवेश्य करशाखाविरलीकृत्य प्रसारयेदिति चक्रमुद्रा ५. पद्माकारौ करौ कृत्वा मध्येऽङ्गुष्ठौ कर्णिकाकारौ विन्यसेदिति पद्ममुद्रा ६. वामहस्तमुष्टेरुपरि दक्षिणमुष्टिं कृत्वा गोत्रेण सह किंचिदुन्नामयेदिति गदामुद्रा ७. अधोमुखवामहस्तांगुलीर्घण्टाकाराः प्रसार्य दक्षिणकरेण मुष्टिं बद्ध्वा तर्जनीमूर्ध्वां कृत्वा वामहस्ततले नियोज्य घण्टावचालनेन घण्टामुद्रा ८. उन्नतपृष्ठहस्ताभ्यां संपुटं कृत्वा कनिष्ठिके निष्कास्य योजयेदिति कमण्डलुमुद्रा ९. पताकावत् हस्तं प्रसार्य अंगुष्ठसंयोजनेन परशुमुद्रा १०. यद्वा पताकाकारं दक्षिणकरं संहतांगुलिं कृत्वा तर्जन्यंगुष्ठाक्रमणेन परशुमुद्रा द्वितीया ११. ऊर्ध्वदंडौ करौ कृत्वा पद्मवत् करशाखाः प्रसारयेदिति वृक्षमुद्रा १२. दक्षिणहस्तं संहतांगुलिमुन्नमय्य सर्प्पफणावत् किंचिदाकुंचयेदिति सर्पमुद्रा १३. दक्षिणकरेण मुष्टिं बद्ध्वा तर्जनीमध्यमे प्रसारयेदिति खड्गमुद्रा १४. हस्ताभ्यां संपुटं विधायांगुलीः पद्मवद्विकास्य मध्यमे परस्परं संयोज्य तन्मूललग्नांगुष्ठौ कारयेदिति ज्वलनमुद्रा १५. बद्धमुष्टेर्दक्षिणकरस्य मध्यमांगुष्ठतर्जन्यौ मूलात् क्रमेण प्रसारयेदिति श्रीमणिमुद्रा १६। एताः षोडशविद्यादेवीनां मुद्राः।

दक्षिणहस्तेन मुष्टिं बद्ध्वा तर्जनीं प्रसारयेदिति दण्डमुद्रा १. परस्परोन्मुखौ मणिबन्धाभिमुखकरशाखौ करौ कृत्वा ततो दक्षिणांगुष्ठकनिष्ठाभ्यां वाममध्यमानामिके तर्जनीं च तथा वामांगुष्ठकनिष्ठाभ्यामितरस्य मध्यमानामिके तर्जनीं समाक्रामयेदिति पाशमुद्रा २. परस्पराभिमुखमूर्ध्वांगुलीकौ करौ कृत्वा तर्जनीमध्यमानामिका विरलीकृत्य परस्परं संयोज्य कनिष्ठांगुष्ठौ पातयेदिति शूलमुद्रा ३. यद्वा पताकाकारं करं कृत्वा कनिष्ठिकामंगुष्ठेनाक्रम्य शेषांगुलीः प्रसारयेदिति शूलमुद्रा द्वितीया। एताः पूर्वोक्ताभिः सह दिक्पालानां मुद्राः।

आद्यस्योपरि हस्तं प्रसार्य कनिष्ठिकादि-तर्जन्यन्तानामङ्गुलीनां क्रमसंकोचनेनाङ्गुष्ठमूलानयनात् संहारमुद्रा। विसर्जनमुद्रेयम्। उत्तानहस्तद्वयेन वेणीबन्धं विधायांगुष्ठाभ्यां कनिष्ठिके तर्जनीभ्यां च मध्यमे

संगृह्यानामिके समीकुर्यात्—इति परमेष्ठिमुद्रा १. यद्वा वामकरांगुलीरूर्ध्वीकृत्य मध्यमां मध्ये कुर्यादिति द्वितीया २. पराङ्मुखहस्ताभ्यां वेणीबन्धं विधायाभिमुखीकृत्य तर्जन्यौ संश्लेष्य शेषांगुलिमध्येऽङ्गुष्ठद्वयं विन्यसेदिति पार्श्वमुद्रा । एता **देवदर्शनमुद्राः ।**

इदानीं प्रतिष्ठाद्युपयोगिमुद्राः—उत्तानौ किंचिदाकुंचितकरशाखौ पाणी विधारयेदिति अंजलिमुद्रा १. अभयाकारौ समश्रेणिस्थितांगुलीकौ करौ विधायाङ्गुष्ठयोः परस्परग्रथनेन कपाटमुद्रा २. चतुरंगुलमग्रतः पादयोरन्तरं किंचिन्न्यूनं च पृष्ठतः कृत्वा समपादः कायोत्सर्गेण जिनमुद्रा ३. परस्पराभिमुखौ ग्रथितांगुलीकौ करौ कृत्वा तर्जनीभ्यामनामिके गृहीत्वा मध्यमे प्रसार्य तन्मध्येऽङ्गुष्ठद्वयं निक्षिपेदिति सौभाग्यमुद्रा ४. अत्रैवांगुष्ठद्वयस्याधः कनिष्ठिकां तदाक्रान्ततृतीयपर्विकां न्यसेदिति सबीजसौभाग्यमुद्रा ५. वामहस्तांगुलितर्जन्या कनिष्ठिकामाक्रम्य तर्जन्यग्रं मध्यमया कनिष्ठिकाग्रं पुनरनामिकया आकुंच्य मध्येऽङ्गुष्ठं निक्षिपेदिति योनिमुद्रा ६. ग्रथितानामंगुलीनां तर्जनीभ्यामनामिके संगृह्य मध्यपर्वस्थांगुष्ठयोर्मध्यमयोः सन्धानकरणं योनिमुद्रेत्यन्ये । आत्मनोऽभिमुखदक्षिणहस्तकनिष्ठिकया वामकनिष्ठिकां संगृह्याधःपरावर्त्तितहस्ताभ्यां गरुडमुद्रा ७. संलग्नौ दक्षिणांगुष्ठाक्रान्तवामांगुष्ठौ पाणी नमस्कृतिमुद्रा ८. किंचिद्गर्भितौ हस्तौ समौ विधाय ललाटदेशयोजनेन मुक्ताशुक्तिमुद्रा ९. जानुहस्तोत्तमांगादिसंप्रणिपातेन प्रणिपातमुद्रा १०. संमुखहस्ताभ्यां वेणीबन्धं विधाय मध्यमांगुष्ठकनिष्ठिकानां परस्परयोजनेन त्रिशिखामुद्रा[1] ११. पराङ्मुखहस्ताभ्यामंगुली विदर्भ्य मुष्टिं बद्ध्वा तर्जन्यौ समीकृत्य प्रसारयेदिति भृंगारमुद्रा[2] १२. वामहस्तमणिबन्धोपरि पराङ्मुखं दक्षिणकरं कृत्वा करशाखा विदर्भ्य किंचिद्वामचलनेनाधोमुखांगुष्ठाभ्यां मुष्टिं बद्ध्वा समुत्क्षिपेदिति योगिनीमुद्रा १३. ऊर्ध्वशाखं वामपाणिं कृत्वाऽङ्गुष्ठेन कनिष्ठिकामाक्रमयेदिति क्षेत्रपालमुद्रा १४. दक्षिणकरेण मुष्टिं बद्ध्वा कनिष्ठिकांगुष्ठौ प्रसार्य डमरुकवच्चालयेदिति डमरुकमुद्रा १५. दक्षिणहस्तेनोर्ध्वांगुलिना पताकाकरणादभयमुद्रा १६. तेनैवाधोमुखेन वरदमुद्रा १७. वामहस्तस्य मध्यमांगुष्ठयोजनेन अक्षसूत्रमुद्रा १८. पद्ममुद्रैव प्रसारितांगुष्ठसंलग्नमध्यमांगुल्यग्रा बिंबमुद्रा १९। एताः **सामान्यमुद्राः ।**

दक्षिणांगुष्ठेन तर्जनीं संयोज्य शेषाङ्गुलीप्रसारणेन प्रवचनमुद्रा २०. हस्ताभ्यां संपुटं कृत्वा अंगुलीः पत्रवल्लिकास्य मध्यमे परस्परं संयोज्य तन्मूललग्नावंगुष्ठौ कारयेदिति मंगलमुद्रा २१. अंजल्याकारहस्तस्योपरिहस्त आसनमुद्रा २२. वामकरधृतदक्षिणकरसमालभने अंगमुद्रा २३. अन्योऽन्यान्तरिताङ्गुलिकोशाकारहस्ताभ्यां कुक्ष्युपरि कूर्प्परस्थाभ्यां योगमुद्रा २४. उभयोः करयोरनामिकामध्यमे परस्परानभिमुखे ऊर्ध्वीकृत्य मीलयेच्छेषांगुलीः पातयेदिति पर्वतमुद्रा २५. करस्य परावर्त्तनं विस्मयमुद्रा २६. अंगुष्ठरुद्धेतरांगुल्यग्रायास्तर्जन्या ऊर्ध्वीकारो नादमुद्रा २७. अनामिकयांगुष्ठाग्रस्पर्शनं बिन्दुमुद्रा २८।

॥ इति मुद्राविधिः ॥ ३७ ॥

§ ११०. वाराही १ वामनी २ गरुडी ३ इन्द्राणी ४ आग्नेयी ५ याम्या ६ नैर्ऋती ७ वारुणी ८ वायव्या ९ सौम्या १० ईशानी ११ ब्राह्मी १२ वैष्णवी १३ माहेश्वरी १४ विनायकी १५ शिवा १६ शिवदूती १७ चामुंडा १८ जया १९ विजया २० अजिता २१ अपराजिता २२ हरसिद्धि २३ कालिका २४ चंडा २५ सुचंडा २६ कनकनंदा २७ सुनंदा २८ उमा २९ घंटा ३० सुघंटा ३१ मांसप्रिया ३२ आशापुरा ३३ लोहिता ३४ अंबा ३५ अस्थिभक्षी ३६ नारायणी ३७ नारसिंही ३८ कौमारी ३९ वामरता ४० अंगा ४१ वंगा ४२ दीर्घदंष्ट्रा ४३ महादंष्ट्रा ४४ प्रभा ४५ सुप्रभा ४६ लंबा ४७

---

1 A त्रिशिखिमुद्रा। 2 B भृंगमुद्रा।

लंबोष्ठी ४८ भद्रा ४९ सुभद्रा ५० काली ५१ रौद्री ५२ रौद्रमुखी ५३ कराली ५४ विकराली ५५ साक्षी ५६ विकटाक्षी ५७ तारा ५८ सुतारा ५९ रजनीकरा ६० रंजनी ६१ श्वेता ६२ भद्रकाली ६३ क्षमाकरी ६४।

चतुःषष्टि समाख्याता योगिन्यः कामरूपिकाः।
पूजिताः प्रतिपूज्यन्ते भवेयुर्वरदाः सदा॥

अमुं श्लोकं पठित्वा योगिनीभिरधिष्ठिते क्षेत्रे पट्टकादिषु नामानि टिक्कानि वा विन्यस्य नामोच्चारणपूर्वं गन्धाद्यैः पूजयित्वा नन्दिप्रतिष्ठादिकार्याण्याचार्यः कुर्यात्।

॥ चउसट्ठिजोगिणीउवसमप्पयारो ॥ ३८ ॥

*

§१११. सो य अहिणवसूरी तित्थजत्ताए सुविहियविहारेण कयाइ गच्छइ; अववायओ संघेणावि समं वच्चइ। सो य संघो संघवइप्पहाणो त्ति तस्स किच्चं भण्णइ। तत्थ जाइकम्माइअदूसिओ उचियण्णू रायसम्मओ नाओवज्जियदविणो जणमाणणिज्जो पुज्जपूयापरो जम्म-जीविय-वित्ताणं फलं गिण्हिउकामो सोहणतिहीए गुरुपायमूले गंतूण अप्पणो जत्तामणोरहं विन्नवेज्जा। गुरुणा वि तस्स उववूहणं काउं तित्थजत्ताए गुणा दंसेयव्वा। ते य इमे—

अन्नोन्नसाहु-सावयसामायारीइ दंसणं होइ।
सम्मत्तं सुविसुद्धं हवइ हु तीए य दिट्ठाए॥ १॥
तित्थयराण भयवओ पवयण-पावयणि-अइसइड्ढीणं।
अभिगमण-नमण-दरिसण-कित्तण-संपूयणं थुणणं॥ २॥
सम्मत्तं सुविसुद्धं तु तित्थजत्ताइ होइ भव्वाणं।
ता विहिणा कायव्वा भवेहिं भवविरत्तेहिं॥ ३॥

तित्थं च तित्थयरजम्मभूमिमाइ। जओ भणियं आयारनिज्जुत्तीए—

जम्माभिसेय-निक्खमण-चरण-नाणुप्पया य निव्वाणे।
तियलोय-भवण-वंतर-नंदीसर-भोमनगरेसु॥ ४॥
अट्ठावय-उज्जिंते गयग्गपयए य धम्मचक्के य।
पासरहावत्तनगं चमरुप्पायं च वंदामि॥ ५॥

एवं गुरुणा वड्ढिउच्छाहो पत्थाणदिणनिन्नयं काऊण बहुमाणपुव्वं साहम्मियाणं जत्ताए आहवणत्थं लेहे पट्ठविज्जा। तओ वाहण-गुलइणी-कोस-पाइक्क-जुगजुत्ताइ-सगडंग-सिप्पिवग्ग-जलोवगरण-छत्त-दीवियाधारि-सुवार-धन्न-भेसज्ज-विज्जाइसंगहं चेइयसंघपूयत्थं चंदण-अगरु-कप्पूर-कुंकुम-कत्थूरी-वत्थाइसंगहं च काउं, सुमुहुत्ते जिणिंदस्स ण्हवणं पूयं च काऊण, तप्पुरओ निसन्नस्स तस्स सुपुरिसस्स गुरुणा संघाहिवचदिक्खा दायव्वा। तओ दिसिपालाण मंतपुव्विं बलिं दाउं मंतमुद्दापुव्वं पुप्फवासाइपूइए रहे महूसवेण देवं सयमेव आरोविज्जा। तओ गुरुं पुरो काउं संघसहिओ चेइआइं वंदिय कवड्डिजक्ख-अंबाइसम्मदिट्ठिदेवयाणं काउस्सग्गे कुज्जा। खुद्दोवद्दवनिवारणमंतऊ[illegible] गुरुणा तस्स अब्भिंतरं कवयं आउहाणि य कायव्वाणि। तओ जयजयसद्दधवलमंगलज्झुणि[illegible]रनिग्घोसेहिं अंबरं बहिरेंतो दाणसम्माणपूरियपणयजणमणोरहो पुरपरिसरे पत्थाणमंगलं [illegible] णाणाठाणागए साहम्मिए सक्कारिय

तेसिं पूयं पडिच्छिय सहजत्तिए धणेहिं धणत्थिणो वाहणेहिं वाहणत्थिणो सहाएहिं असहाए पीणंतो, वंदिगायणाई असण-वसण-दविणेहिं तोसंतो, मग्गे चेइयाइं पूयंतो भग्गाणि य उद्धरंतो, तक्कम्मकारिसु वच्छल्लं कुणंतो, तक्कज्जाइं चिंतंतो, दुत्थियधम्मिए सक्कारेंतो, दाणेण दीणे पमोयंतो, भीयाणमभयं देंतो, बंधणट्ठिए मोयंतो, पंकमग्गं भग्गं च सगडाइयं सिप्पीहिं उद्धारेंतो, छुहिय-तिसिय-वाहिय-खिन्ने अन्न-जल-भेसज्ज-वाहणेहिं सुत्थी कुणंतो, धम्मियजणाणं खुद्दोवद्दवे निवारेंतो, जिणपवयणं पभावेंतो, बंभचेरतवजुत्तो तित्थाइं पाविऊण सत्तीए उववासं काउं ण्हाओ कयवलिकम्मो परिहियसुद्धनेवत्थो पुप्फवासकुंकुमाइमीसेणं तित्थोदगेणं कलसे भरित्ता, संघं गंधवियवग्गं च कुंकुमचंदणाइहिं चच्चित्ता, अच्चब्भुयइंदविमाणाइविभूईए मूलनायगस्स ण्हवणं काउं, जगई जिणबिंबाइं वेयावच्चगरे य ण्हवित्ता, तओ पंचामयण्हवणं काउं चंदण-कत्थूरीकप्पूराईहिं विलेवणं सुवण्णाभरणमल्लवत्थाईहिं अच्चणं कप्पूरागरुपभिईहिं धूवणं पिक्खणयं महद्धयारोवणं चलिरचमरभिंगारजलधाराकुंकुमवुट्ठिविसिट्ठं कप्पूरारत्तियं च काउं, देवे वंदिज्जा। तओ देवसेवए सक्कारिय अट्ठाहियं अवारियसत्तं वहाविज्जा। तओ मुहोग्घाडणे मालाउग्घडणे अक्खयनिहिक्खेवे भूमिमंडाइनिक्कए य देवस्स कोसं संवड्ढिय दीणाई अणुकंपिय तिलोयनाहं पूइय सगग्गरगिरं आपुच्छिय पुणो दंसणं मग्गिय पणमिय सहजत्तिए सक्कारिय तित्थे अणुज्झायंतो पडिनियत्तिज्जा। कमेण सनगरं पत्तो महया ऊसवेणं रहसालाए देवालयं पवेसिय पडिमं गेहमाणिज्जा। तओ साहम्मिय-मित्त-नाइ-नागराई भोयणाईहिं सम्माणिय संघं पूइज्जा। तओ गुरुणा देसणा कायव्वा। जहा—

तं अत्थं तं च सामत्थं तं विन्नाणं सुउत्तमं।
साहम्मियाण कज्जम्मि जं विचंति सुसावया॥ १॥
अन्नन्नदेसाण समागयाणं अन्नन्नजाईइ समुब्भवाणं।
साहम्मियाणं गुणसुट्ठियाणं तित्थंकराणं वयणे ठियाणं॥ २॥
वत्थन्नपाणासणखाइमेहिं पुप्फेहिं पत्तेहिं य पुप्फलेहिं।
सुसावयाणं करणिज्जमेयं कयं तु जम्हा भरहाहिवेणं॥ ३॥
राया देसो नगरं तं भवणं गिहवई य सो धन्नो।
विहरन्ति जत्थ साहू अणुग्गहं मन्नमाणाणं॥ ४॥
इणमेव महादाणं एयं चिय संपयाण मूलं ति।
एसेव भावजन्नो जं पूया समणसंघस्स॥ ५॥

तओ सो संघवई सिद्धंताइपुत्थलेहणत्थं नाणकोसं साहारणसंबलयं च संवड्ढारिज्ज त्ति॥

॥ तित्थजत्ताविही समत्तो॥ ३९॥

§ ११२. **संपयं तिहिविही**—पक्खिय-चाउम्मासिय-अट्ठमि-पंचमी-कल्लाणयाइतिहीसु तवपूयाईए उदइयतिही अप्पयरभुत्तावि घेत्तव्वा न वहुतरभुत्ता वि इयरा। जया य पक्खियाइपव्वतिही पडइ तया पुव्वतिही चेव तब्भुत्तिवहुला पच्चक्खाणपूयाइसु घिप्पइ न उत्तरा। तब्भोगे गंधस्स वि अभावाओ। पव्वतिहिवुड्ढीए पुण पढमा चेव पमाणं संपुण्ण त्ति काउं। नवरं चाउम्मासिए चउद्दसीह्रासे पुण्णिमा जुज्जइ। तेरसीगहणे आगमआयरणाणं अन्नयरं पि नाराहियं होज्जा। संवच्छरियं पुण आसाढचाउम्मासियाओ नियमा पण्णासइमे दिणे कायव्वं, न इक्कपंचासइमे। जया वि लोइयटिप्पणयाणुसारेण दो सावणा दो भद्दवया भवंति,

तया वि पण्णासइमे दिणे, न उण कालचूलाविक्खाए असीइमे । 'सवीसइराए मासे वइक्कंते पज्जोसवेंति'त्ति वयणाओ । जं च 'अभिवड्ढियंमि वीस'त्ति वुत्तं तं 'जुगमज्झे दो पोसा जुगअंते दोन्नि आसाढ'त्ति सिद्धंतटिप्पणयाणुरोहेण चेव घडइ । ते य संपयं न वट्टंति त्ति जहुत्तमेव पज्जुसणादिणं ति सामायारी ।

॥ इति तिहिविही ॥ ४० ॥

§ ११३. संपयं अंगविज्जासिद्धिविही जहासंपदायं भण्णइ । भगवइए अंगविज्जाए सट्ठिअज्झायमईए महापुरिसदिण्णाए भूमिकम्मविज्जा किण्हचउद्दसीए चउत्थं काऊण गहियवा । तीए उवयारो उंबररुक्खच्छाया‍ए उववि‍सिय मासाइकालं जाव अट्ठमभत्तेण खीरन्नपारणेण डडिदिन्नाइ आहारेण वा कायवो ॥ १ ॥ तओ अन्ना विज्जा छट्ठेण गहिया अहयवत्थेण कुससत्थरोवविट्ठेण छट्ठभत्तं काउं अट्ठसयजावेण साहियवा ॥ २ ॥ अवरा य छट्ठेण गहिया अट्ठमभत्तेण अट्ठसयं जावेण साहियवा ॥ ३ ॥ एवं साहिओ दंडपरीहारविज्जं पउंजिउं चउविहाहारनिसेहं काउं एगंते पवित्तदेसे इत्थीणं अदंसणट्ठाणे तिक्कालं आमकप्पूरेणं पुत्थयं पूइय अगरुधूवमुग्गाहिय मण-वयण-कायसुद्धबंभचेरपरायणो पवित्तदेहवत्थो इत्थीणं मुहमणवलोइंतो तासिं सद्दं च असुणिंतो तइयअज्झायउवक्खायगुणगणालंकिओ गुरुसमीवे सयं वा अविच्छिन्नं मुहपोत्तियाठइयमुहकमलो वाइज्जा । एवं सिद्धा संती भगवई अंगविज्जा एगूणसोलसआएसे अवितहे करिज्ज त्ति । अविहिवायणे उम्मायाई दोसा परमपुरिसाणं च आसायणाकया होइ त्ति ।

विहिणा पुण आराहिय एयं सिज्झंत अवितहाएसो ।
छउमत्थो वि हु जायइ भुवणेसु जिणप्पभायरिओ[1] ॥

अंगविज्जाराहणाविही सिद्धंतियसिरिविणयचंदसूरिउवएसाओ लिहिओ ।

॥ अंगविज्जासिद्धिविही ॥ ४१ ॥

*

सम्म[1]-गिहिवय[2]-समइयारोवण[3]-तग्गहण[4]-पारणविही य[5] ।
उवहाण[6]-मालरोवणविहि[7]-उवहाणप्पइट्ठा य[8] ॥ १ ॥
पोसह[9]-पडिकमण[10]-तवाइ[11]-नंदिरयणाविही[12] सथुइथुत्तो ।
पवज्जा[13] लोयविही[14] उवओगा[15]-इल्लअडणविही[16] ॥ २ ॥
मंडलितव[17]-उवठावण[18]-जोगविही[19]-कप्पतिप्प[20]-वायणया[21] ।
कमसो वाणायरिओ[22]-वज्झाया[23]-परियपयठवणा[24] ॥ ३ ॥
महयर[25]-पवत्तिणिपयट्ठवण[26]-गणाणुन्न[27]-अणसणविही य[28] ।
महपारिट्ठावणिया[29] पच्छित्तं[30] साहु-सड्ढाणं ॥ ४ ॥
जिणबिंबपइट्ठाविहि[31]-कलस[32]-धयारोवणं[33] च सपसंगं ।
कुम्मपइट्ठा[34] जंतं[35] ठवणायरियप्पइट्ठाओ[36] ॥ ५ ॥
मुद्दाविही[37] य चउसट्ठिजोगिणीउवसमप्पयारो य[38] ।
जत्ताविहि[39]-तिहिविहि[40]-अंगविज्जसिद्धि[41] त्ति इह दारा ॥ ६ ॥

*

1 'जिनप्रभाख्यः' इति टिप्पणी ।

अथ ग्रन्थप्रशस्तिः ।

बहुविहसामायारीओ दट्ठु मा मोहमिंतु सीस त्ति ।
एसा सामायारी लिहिया नियगच्छपडिबद्धा ॥ ७ ॥

आगमआयरणाहिं जं किंचि विरुद्धमित्थ मे लिहियं ।
तं सोहिंतु सुयधरा अमच्छरा मह किवं काउं ॥ ८ ॥

जिणदत्तसूरिसंताणतिलयजिणसिंहसूरिसीसेण ।
गुत्ति[3]-रस[6]-किरिय[13]ठाणप्पमिए विक्कमनिवइवरिसे ॥ ९ ॥

विजयदसमीइ एसा सिरिजिणपहसूरिणा समायारी ।
सपरोवयारहेउं समाणिया कोसलानयरे ॥ १० ॥

सिरिजिणवल्लह-जिणदत्तसूरि-जिणचंद-जिणवइमुणिंदा ।
सुगुरुजिणेसर-जिणसिंहसूरिणो मह पसीयंतु ॥ ११ ॥

वाइयसयलसुएणं वाणायरिएण अम्ह सीसेण ।
उदयाकरेण गणिणा पढमायरिसे कया एसा ॥ १२ ॥

जीए पसायाओ नरा [1]सुकई सरसत्थवल्लहा[1] हुंति ।
सा सरसई य पउमावई य मे दिंतु सुयरिद्धिं[2] ॥ १३ ॥

ससि-सूरपईवा जाव भुवणभवणोदरं पभासेंति ।
एसा सामायारी सफलिज्जउ ताव सूरीहिं ॥ १४ ॥

पच्चक्खरगणणाए पाएण कयं पमाणमेईए ।
चउहत्तरी समहिया पणतीससया सिलोयाणं ॥ १५ ॥

विहिमग्गपवा नामं सामायारी इमा चिरं जयइ ।
पल्हायंती हिययं सिद्धिपुरीपंथियजणाणं ॥ १६ ॥

॥ अङ्कतोऽपि ग्रन्थाग्रं ३५७४ ॥

*

॥ इति विधिमार्गप्रपा सामाचारी संपूर्णा ॥

---

1 सुकवयः सरसार्थवल्लभाः, पक्षे सुकृतिनः ईश्वरसार्थे वल्लभाः ।　　2 श्रुतं सुताश्च शिष्याः ।

परिशिष्टम् ।

श्रीजिनप्रभसूरिकृतो

दे व पू जा वि धिः ।

संपयं जहासंपदायं **देवपूयाविही** भण्णइ—तत्थ सावओ बंभमुहुत्ते पंचनमोक्कारं सुमरंतो सिज्जं मुत्तूण अप्पणो कुलधम्मवयाइं संभरिय, सरीरचिंताइ काऊण, फासुएणं अफासुएणं वा गलियजलेणं देसओ सव्वओ वा ण्हाणं काऊण, फडिल्लवत्थं चइय परिहियधोयवत्थजुगलो निसीहियातिगपुव्वं घरदेवालए पविसेज्जा । तत्थ मुह-कर-चरणपक्खालणं देसण्हाणं, सिरमाइसव्वंगपक्खालणं सव्वण्हाणं । तओ भगवओ आलोयमित्तो चेव भालयले अंजलिमउलियग्गहत्थो 'नमो जिणाणं' ति पणामं काउं जय जय सद्दं भणिय मुहकोसं काऊण, गिहपडिमाओ निम्मल्लमवणित्तु उवउत्तो लोमहत्थयाइणा निमज्जिय, जलेण पक्खालिय सरससुरहिचंदणेण देवस्स दाहिणजाणु—दाहिणखंध—निलाड—वामखंध—वामजाणुलक्खणेसु पंचसु, हियएण सह छसु वा अंगेसु पूयं काऊण पच्चग्गकुसुमेहिं च पूइय, तओ वामहत्थेण घंटं वाइयंतो दाहिणकरगहियधूवकडुच्छुओ कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-मलयजमीससुगंधधूवं देवस्स पुरोभागादारब्भ 'असुरिंदसुरिंदाणं' इच्चाइधूमावलीगाहाओ पढंतो सिट्ठीए दसदिसं उग्गाहिय पुरो धारेइ । तओ चंदणवासक्खयाहि वासियं कुसुमंजलिं करयलसंपुडेण गिण्हित्ता '**नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः**' इति भणिय, '**ओसरणे जिणपुरओ**' इच्चाइवित्तेण देवस्स उवरि खिवेइ । तओ '**लोणत्त**'इच्चाइवित्तं पढंतो सिट्ठीए ओयारिय दाहिणपासधरियपडिग्गहियाठियजलणे खिवेइ । एवं अन्ने वि दो वारे वित्तदुगेणं । तओ धाराघडियाओ जलं घेतूण '**उन्नयपयपब्भट्ठस्स**' इच्चाइवित्ततिगेणं तेणेव कमेण भगवओ ओयारिय तहेव जलणे खिवेइ । तओ थालयस्स उवरि पंच-सत्ताइविसमवट्टिवोहियदीवसीहावमालियमारत्तियं दोहिं हत्थेहिं गहिय '**गीयत्थगणाइण्णं**' इच्चाइवित्ततिगं भणिय वारे तिण्णि आरत्तियमुत्तारेइ । एगो य दाहिणपासट्ठिओ आरत्तियंमि उत्तरंते तिण्णिवारे जलधाराओ पडिग्गहियाठियजलणे देइ । अन्नाभावे आरत्तियउत्तारणाणंतरं सयमेव वा धाराओ देइ । उत्तरंते आरत्तिए उभओ पासेसु सावयलियचेलंचलेहिं चामरेहिं वा भगवओ चामरुक्खेवं कुणंति । एयं च लवणाइउत्तारणं पालित्तयसूरिमाइपुव्वपुरिसेहिं संहारेण अणुण्णायं वि संपयं सिट्ठीए कारिज्जइ । विसमो खु गड्डुरियापवाहो । तओ पडिग्गहियाठियंगारजलाइ बाहिं उज्झिय थालियं पक्खालिय, तत्थ चंदणेण सत्थियं नंदावत्तं वा काउं तस्सुवरि पुप्फक्खयवासो खिविय ओसग्गओ अविहवनारीवोहियं तदभावे सयं वा पवोहियं रत्तवट्टि-मंगलदीवयं ठाविय चंदणपुप्फवासाईहिं पूइय मंगलछप्पयाइ पढणाणंतरं '**नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो॰**' इच्चाइ भणिय, '**जेणेगो जिणनाहो**' इच्चाइवित्ततिगं पढित्ता मंगलदीवं उज्झविय, सव्वेसु तदुवरिं कुसुमाइं खिवितेसु पंचसद्दे वज्जंते अभिमिंतो भगवओ पुरो धारेइ । तओ सक्कत्थयं भणित्ता वासक्खेवं काउं मंगलदीवयमणुलविय एगदेसे मुंचइ, न उण आरत्तियं व झिवेइ त्ति—**घरपडिमापूया[विही]समत्तो** ॥ १ ॥

*

पुणो नियवित्तिच्छेयं रक्खंतो ण्हाओ सविसेसं वत्थाभरणाइ सिंगारं काऊण पत्थियाइभायणट्ठाविय-सुरहिधूवअखंडक्खयकुसुमचंदणफलाइपूयादव्वो महिड्ढीए जिणिंदभवणे गच्छइ । तस्स सीहदुवारदेसे कर-चरण-मुहसोयं काउं सच्चित्तदव्वाईणि पुप्फ-तंबोल-हय-गयमाईणि अच्चित्तदव्वाणि य मउड-छुरिया-खग्ग-छत्तो-वाणह-चामर-जंपाणाईणि मुत्तूण एगसाडियं उत्तरासंगं काउं अग्गदुवारमज्झदेसेसु कमेण उदारसद्दं तिन्नि निसीहीओ उच्चरंतो जगगुरुणो आलोए च्चेव भालयलमिलियकरकमलमउलजुयलो **'नमो जिणाणं'**ति भणिय जयसद्दमुहलो जिणभवणं पविसइ । एगसाडियं नाम असीवियमखंडियं च, एवं च एगं हिट्ठिल-वत्थं एगं च उवरिमवत्थं ति वत्थजुयलेण धोवत्तिया कीरइ । न उण पुव्वदेसिच्चयाणं पिव अट्ठ(द्धः?)ड्डुं-वयं ति रूढं एगमेव वत्थं उवरिं हिट्ठा य जिणभवणे हुज्ज त्ति । न य कंचुयं विणा मंकुणयपाउयंगी वा साविया जिण-गुरुभवणेसु वच्चइ त्ति, अलं पसंगेण । तओ देवस्स दाहिणवाहाओ आरब्भ तिण्णि पया-हिणाओ देइ । पयाहिणं च दिंतो जया देवस्स अग्गे उवणमइ तया पणामं करेइ । एवं तिण्हि पणामे करेइ । तओ नाण-दंसण-चारित्तपूयाहेउं अक्खयमुट्ठितिगं सेढीए देवस्स पुरओ अक्खयपट्टाइसु फलसहियं मुंचइ । तओ कयमुहकोसो पुव्वुत्तनिम्मल्लावणयणनिमज्जणाइविहिणा एगग्गमणो मंगलदीवयपज्जंतं पूयं करेइ । नवरं जहासंभवं सव्वजिणबिंबाणं सम्मदिट्ठिदेवयाणं च करेइ । तओ उक्कोसेणं देवाओ सट्ठिह-त्थमित्ते जहण्णेणं नवहत्थमित्ते मज्झिमओ अंतराले उचियअवग्गहे ठाऊण तिक्खुत्तो वत्थाइ पमज्जिय भूमिभागे छउमत्थ-समोसरणत्थ-मुक्खत्थ-रूवावत्थातिगं भाविंतो जिणबिंबे निवेसियनयणमाणसो पए पए सुत्तत्थसुद्धिपरायणो जहाजोगं मुद्दातियं पउंजंतो उक्कोस-मज्झिम-जहण्णाहिं चीवंदणाहिं जहासंपत्ति देवे वंदइ । तासिं च विभागो इमो—

नवकारेण जहण्णा दंडथुइजुयलमज्झिमा नेया ।
उक्कोसा चीवंदण सक्कत्थयपंचनिम्माया ॥ १ ॥

तत्थ नवकारो सीसनमणमेत्तं पंचंगपणिवाओ वा । अहिगयजिणस्स गुणथुइरूव-सिलोगाइरूवो वा नमोक्कारो तेण जहण्णा चीवंदणा होइ । तहा दंडगो सक्कत्थयरूवो, थुई य थुत्तसरूवा एएण जुगलेण मज्झिमा चीवंदणा । अहवा—दंडगो 'अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं' इच्चाइ । तओ काउस्सग्गं अट्ठोस्सासं काउं पारिय एगा थुई दिज्जइ । पणिहाणगाहाओ य मुत्तासुत्तीए पढिज्जंति । इत्थमवि मज्झिमा हवइ । अहवा—इरियावहियं पडिक्कमिय वत्थंतेण भूमिं पमज्जिय तत्थ वामजाणुं अंचिय दाहिणजाणुं धरणितले साहट्टु जोगमुद्दाए सिलोगाइरूवं नमोक्कारं पढिय, नमोत्थुणं इच्चाइ पणिवायदंडगं भणिय, पच्छा पमज्जिय उट्ठिय जिणमुद्दं विरइय 'अरहंतचेइआणं'ति ठवणारिहंतत्थयदंडगं पढिय, अट्ठोस्सासं काउस्सग्गं करिय, अरिहंतनमोक्कारेण पारिय, अहिगयजिणथुइं दाउं 'लोगस्सुज्जोयगरे' इच्चाइ नमोरिहंतत्थयदंडगं पढित्ता 'सव्वलोए अरहंतचेइआणं'ति दंडगं भणिय तहेव उस्सग्गे कए, पारिय सव्वजिणथुई दिज्जइ । तओ 'पुक्खरवरदीवड्ढे' इच्चाइ सुयत्थवं पढित्ता 'सुयस्सभगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तीयाए' इच्चाइ भणिय, तहेव उस्सग्गे कए पारिए य सिद्धंतथुई दिज्जइ । 'तओ सिद्धाणं बुद्धाणं' इच्चाइ सिद्धत्थवं पढिऊणं 'वेयावच्चगराणं' इच्चाइ भणित्तु तहेव उस्सग्गे कए पारिए य सरस्सई-कोहंडिमाइवेयावच्चगराणं थुई दिज्जइ । इत्थ पढम-चउत्थथुइओ 'नमोऽर्हत्सिद्धा०' इच्चाइ भणिऊणं दिज्जंति, इत्थीओ य एयं न भणंति । तओ जाणूहिं ठाउं जोडियहत्थो सक्कत्थयं दंडगं भणित्तु, पंचंगपणिवाए कए 'जावंति चेइआइं' इच्चाइ गाहं पढित्ता, खमासमणं दाउं 'जावंत के वि साहू' इच्चाइ गाहं भणिय, 'नमोऽर्हत्सिद्धा०' इच्चाइ पढिय, जोग-मुद्दाए महाकविविरइयं गंभीरत्थं अट्ठसहस्सलक्खणोववन्नसरीरपरीसहोवसग्गसहणाइकिरियाइगुणवण्णणा-

कलियं पावयं निवेयणगब्भं पणिहाणसारं विचित्तसद्दत्थं पवरथोत्तं भणित्ता, मुत्तासुत्तिमुद्दाए 'जयवीयराय' इच्चाइ पणिहाणगाहादुगं पढइ । तओ आयरियाइ वंदिज्ज त्ति । इत्थ पक्खे दंडगा पंच, थुईओ चत्तारि एएण जुयलेण मज्झिम त्ति नेयं ।

चत्तारि अंगुलाइं पुरओ ऊणाइं जत्थ पच्छिमओ ।
पायाणमंतरालं एसा पुण होइ जिणमुद्दा ॥ १ ॥
अन्नोन्नंतरि अंगुलि कोसागारेहिं दोहि हत्थेहि ।
पिट्टोवरि कुप्परसंठिएहिं तह जोगमुद्द त्ति ॥ २ ॥
मुत्तासुत्तिमुद्दा समा जहिं दो वि गब्भिया हत्था ।
ते पुण निलाडदेसे लग्गा अन्ने अलग्ग त्ति ॥ ३ ॥

एसा वि मज्झिमा चीवंदणा । उक्कोसा पुण सक्कत्थयपणगेणं । सा चेवं — पढमं सिलोगाइरूवे नमोक्कारे भणित्ता, सक्कत्थयं भणिय उट्ठिय इरियावहियं पडिक्कमिय, पुव्वं व नमोक्कारे सक्कत्थयं च भणिय उट्ठिय, 'अरहंतचेइआणं' इच्चाइदंडगेहिं पुणरवि चउरो थुई दाउं पुणो सक्कत्थयं पढिय 'जावंति चेइआइं' इच्चाइ गाहादुगं भणित्ता 'नमोऽर्हत्सिद्धा०' इच्चाइभणणपुव्वं, थोत्तं भणिय पुणो सक्कत्थयं पढिय पणिहाणगाहादुगं तहेव भणइ त्ति चीवंदणाविही ।

एवमन्नयराए चीवंदणाए देवे वंदिय तओ आयरियाईण खमासमणे, देवस्स पुरओ गीयवाइयनट्टाइभावपूयं काऊण दट्ठूण वा चेइयवंदणत्थमागएसु विहिए वंदिय, सइ पत्थावे तेसिं समीवे धम्मोवएसं सुणिय, जिणभवणकज्जाणं देवदव्वस्स य तत्तिं काऊण, धोवत्तियं मुत्तूण, सुकयत्थमप्पाणं मन्नंतो पूयासु कयमणुमोइंतो जहोचियं दीणदाणं दिंतो नियघरमागच्छिज्जा । तओ वाणिज्जाइववहारं काउं, भोयणकाले तहेव घरपडिमाओ पूइय, तासिं पुरो निवेज्जं ढोइय, तओ वसहिं गंतु फासुयएसणिज्जेण भत्तपाणओसहभेसज्जवत्थपत्ताइणा अणुग्गहो कायव्वो त्ति खमासमणं दाउं आगम्म सुविहियाणं संविभागं काउं, अब्भिंतरबाहिरं परिवारं गवाइयं च संभालिय, तेसिं अन्नपाणाइचिंतं काउं सयं भुंजिज्जा । तओ घरवाणिज्जाइवावारं काउं, दिणट्ठमभागे वियाले पुणरवि भुंजिय, पुणरवि घरे वा जिणहरे वा पूयं पुव्वभणियनीईए करेइ । नवरं तत्थ चंदणपूयं न करेज्ज त्ति ।

जो उण निव्वाणकलियाए पूयाविही दीसइ सो तारिसं नाणविन्नाणकुलसंपहाणपुरिसमविक्ख दट्ठव्वो, न उण सव्वसामन्नो त्ति न इत्थ भण्णइ ।

पूया य दुविहा निच्चा नेमित्तिया य । तत्थ निच्चा पइदिणकरणिज्जा सा य भणिया । नेमित्तिया पुण अट्ठमि-चउद्दसि-कल्लाणतिहि-अट्ठाहिया-संवच्छरियाइपव्वभाविणी । सा य ण्हवणपहाणा, अओ संपयं ण्हवणविही दंसिज्जइ । सा य सक्कयभासावद्धगीइकव्व-अज्जयावद्धवित्तबहुल त्ति सक्कयभासाए चेव लिहिज्जइ —

तत्र प्रथमं पूर्वोक्तस्नात्रादिक्रमेण देवगृहं प्रविश्य धौतपोतिकां परिधाय, देवस्य धूपवेलां धूमावलीपुष्पांजलिलवणजलारात्रिकावतारणमङ्गलदीपोद्भावनारूपां कृत्वा शक्रस्तवं भणित्वा, साधूनभिवन्द्य, स्नपनपीठं प्रक्षाल्य, चन्दनेन तत्र स्वस्तिकं विधाय, पुष्पवासादिमिश्रं संपूज्य, प्रतिमाया अग्रतः स्थित्वा, सन्निरोपकृतमुखकोशो 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' इति भणनपूर्वं 'श्रीमत्पुण्यं पवित्र'-मित्यादिवृत्तपंचकं पठित्वा, स्नपनपीठस्योपरि कुसुमांजलिं स्नपनकारः क्षिपेत् । स्नपनकाराश्च द्व्यादयो द्वात्रिंश-

दन्ता अधिकाः स्युः । ततश्चलप्रतिमां स्नपनपीठे स्थापयेत् सृष्ट्या च प्रतिमाया जलधारां भ्रामयेच्चन्दनेन च पूजयेत् । ततः शक्रस्तवभणन-साधुवन्दने कुर्यात् । स्थिरप्रतिमानां तु स्थानस्थितानामेव कुसुमांजल्यादिसर्वं कर्त्तव्यम् । ततः कुसुमांजलिं गृहीत्वा **'प्रोद्भूतभक्तिभरे'**त्यादिवृत्तपंचकं भणित्वा प्रतिमायास्तं क्षिपेत् । ततो निर्माल्यमपनीय प्रतिमां प्रक्षाल्य पूजयेत् । ततः **'सद्वेद्यां भद्रपीठे'** इत्यादिवृत्तद्वयेन कुसुमांजलिं क्षिपेत् । ततः सर्वौषधिं गृहीत्वा **'मुक्तालंकारे'**त्यार्यया पुष्पालंकारावतारणे कृते सर्वौषधिस्नानं कारयेत् । **ततः** प्रक्षाल्य संपूज्य च प्रतिमाया **'भव्यानां भवसागरे'** इतिवृत्तेन धूपमुत्क्षिपेत् । ततः एकं पुष्पं समादाय **'किं लोकनाथे'**ति वृत्तं भणित्वा उष्णीषदेशे पुष्पमारोपयेत् । ततः कलशद्वयं कलशचतुष्टयादि वा प्रक्षाल्य धूपपुष्पचन्दनवासाद्यैरधिवास्य कुङ्कुमकर्पूरश्रीखण्डादिसंपृक्तसुरभिजलेन भृत्वा पिहितमुखं पट्टके चन्दनकृतस्वस्तिके संस्थापयेत् । ततः कुसुमांजलिपंचकं क्रमेण **'बहलपरिमले'**त्यादि मात्रावृत्तपंचकं पठित्वा क्षिपेत् । नवरमाद्यान्त्यवृत्तयोर्नमोऽर्हत्सिद्धेत्यादि भणेत् । वृत्तान्ते तु शङ्खभेरीझल्लर्यादिठणत्कारं मन्द्रं दधुः शाङ्खिकाद्याः कलशान् भृत्वा कुसुमांजलिपंचकं क्षिपेत्, क्षिप्त्वा वा कलशान् भरेदुभयथाऽप्यदोषः । तत इन्द्रहस्तान् प्रक्षाल्य हस्तयोर्भाले च चन्दनतिलकान् कृत्वा, स्नपनक्रियद्रव्यनिक्षिप्ते सकलसंघानुमत्या कलशानुत्थाप्य; नमोऽर्हत्सिद्धेत्यधीत्य **'जम्ममज्जणि जिणहवीरस्से'**त्यादि कलशवृत्तेषु जन्माभिषेककलशवृत्तान्तरेषु वाऽन्यैः पठितेषु तदभावे स्वयं वा भणितेषु, कुम्भपिधानान्यपनीय, पंचशब्दे वाद्यमाने श्राविकासु जिनजन्माभिषेकगीतानि गायन्तीषूभयतोऽप्यखण्डधारं स्नपनं कुर्वन्ति, द्रष्टारश्च जिनमज्जनप्रतिबद्धहृद्यपद्यानि पठन्ति, मुहुर्मुहुर्मूर्द्धानं नमयन्ति । यच्च स्नात्रे जलं मूर्द्धाद्यङ्गेषु केचिल्लगयन्ति तद् गतानुगतिकं मन्यन्ते गीतार्थाः । श्रीपादलिप्ताचार्याद्यैस्तन्निषेधात् । तथा च तद्वचः—'निर्माल्यभेदाः कथ्यन्ते—देवस्वं देवद्रव्यं नैवेद्यं निर्माल्यं चेति । देवसंबन्धिग्रामादि देवस्वम्, अलंकारादि देवद्रव्यम्, देवार्थमुपकल्पितं नैवेद्यम् । तदेवोत्सृष्टं निवेदितं बहिः निक्षिप्तं निर्माल्यं पंचविधमपि निर्माल्यं न जिघ्रेन्न च लंघयेन्न च दद्यान्न च विक्रीणीत । दत्त्वा क्रव्यादो भवति, भुक्त्वा मातंगः, लंघने सिद्धिहानिः, आघ्राणे वृक्षः, स्पर्शने स्त्रीत्वम्, विक्रये शबरः । पूजायां दीपालोकनधूपामात्रादिगन्धे न दोषः । नदीप्रवाहनिर्माल्ये चे'ति कृतं प्रसंगेन । ततः शुद्धोदकेन प्रक्षालं कृत्वा धूपितवस्त्रखण्डेन प्रतिमां रूक्षयित्वा चन्दनेन समभ्यर्च्य समालभ्य वा पुष्पपूजां विधाय **'मीनकुरंगमदे'**ति वृत्तेन धूपमुद्ग्राहयेत् । तत आहारस्थालं दद्यात् । ततः परिधापनिकां प्रतिलिख्य करयोरुपरि निवेश्यैकस्मिन् धूपमुद्ग्राहयति सति पुष्पचन्दनवासैरधिवास्य 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्ये'त्यादि भणित्वा, **'शक्रो यथा जिनपते'**रिति वृत्तद्वयमधीत्य सोत्सवं देवस्योपरिष्टादुभयतो लम्बमानां निवेशयेत् । ततः कुसुमांजलिवर्जं लवणजलारात्रिकावतारणं मङ्गलदीपान् प्राग्वत् कुर्यात् । नवरं लवणाद्यवतारणेषु तथैव प्रतिवृत्तं वादित्रमन्त्रध्वनिं कुर्यात् । ततो यथासंभवं गुरुदेशनां श्रुत्वा स्वगृहमेत्य स्नपनकारादिसाधर्म्मिकान् भोजयेदित्योघतः **स्नपनविधिः** ।

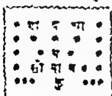
यस्य पुनर्विशेषपर्वापेक्षया छत्रभ्रमणं प्रति भावना भवति, स प्राग्वत् स्नपनमारभ्य यावत् **'प्रोद्भूतभक्ती'**त्यादिवृत्तैः कुसुमांजलिं प्रक्षिप्य निर्माल्यमपनीय पूजां च कृत्वा, स्नपनपीठस्थाया एकस्याः प्रतिमायाः पुरतः **'सरससुयंध'** इति वृत्तेन कुसुमांजलिं क्षिपेत् । ततस्तस्याः प्रतिमाया **'हिययाइं पडंत'**मिति गाथया स्नानं कुर्यात् । तदनन्तरं स्थाले चन्दनेन स्वस्तिकं कृत्वा, तत्र पीठात् तां प्रतिमां धारयेत् । ततश्च पुरतः स्थाल एवाक्षतपुंजिकात्रयं न्यसेत् । अनन्तरं जलधारादानपूर्वमातोद्यवादनापूर्वं च छत्रतले प्रतिमां नयेत् । ततो देवस्याग्रभागादारभ्य प्रथमामथ(?) कृते गूंहलिकेति रूढे गोमयगोमुखचतुष्टये प्रथमगूंहलिकायामक्षतपुंजिकात्रयं पूपिकाश्च दद्यात् । ततः पुष्पांजलिमुपादाय क्रमेणोत्साहत्रयं पठित्वा, एकैकं कुसुमांजलिं प्रक्षिपेत् । उत्साह-

त्रयं चैतत्—उदितार्हदाणत्रुणिवेत्यादि १, 'पाणयदसमे'त्यादि २, 'आयासीदिणेहिं' इत्यादि ३। ततः सप्रतिमं छत्रं दक्षिणदिग्गृहलिकां नीत्वा तत्रोत्साहद्वयं 'विचलक्खे'त्यादि, 'मेरुसिरम्मी'त्यादि त्र पठित्वाऽक्षतपुंजिकात्रयं पूपिकाश्च दद्यात्। एवं पश्चिमदिशि 'जम्मि जिणिंदवंदे'त्यादि 'गुरुबहुमाणे'त्यादि चोत्साहद्वयम्, तथैवोत्तरस्याम्—'उत्तरफाल्गुणीसु'—'रयणवण्णे'त्यादिचोत्साहद्वयं पठेत्। ततः पुनरग्रगृहलिकामागते छत्रे 'वरपावापुरीए' इत्यादि 'ता सक्कीसाणचमरे'त्यादिना चोत्साहद्वयेन पुष्पांजलिं प्रक्षिप्य, लवणपानीयारात्रिकावतारणं विधाय, जलधारादानातोद्यवादनापूर्वकं छत्रप्रतिमां स्नात्रपीठमानयेत्। पीठे संस्थाप्य ततः 'सद्वेद्यां०' इत्यादि प्रागुक्तक्रमेण स्नपनं कुर्यात्। इति छत्रभ्रमणविधिः।

अथ पञ्चामृतस्नात्रविधिः—तच्च छत्रभ्रमणकृते वा 'जम्ममज्जणे'ति वृत्तपंचकेन प्रथमं गन्धोदकस्नानपर्यन्तं विधिं कृत्वा, 'मीनकुरंगमदे'ति धूपं दत्त्वा, ततो 'नमोऽर्हत्सिद्धे'ति भणनपूर्वं 'महुरो सुर होइ'ति गाथयेक्षुरसस्नानं विदध्यात्। ततो 'मीनकुरंगमदे'ति धूपः। एवं वक्ष्यमाणसर्वस्नानान्तरालेष्वनेनैव धूपं दद्यात्। ततः 'पायात् स्निग्धमपी'त्यार्यया घृतस्नानं, ततः पिष्टादिभिः स्नेहमुत्तार्य 'उचितममिषेके'-त्यार्यया 'वहइ सिरिं तियसगणे'ति गाथया वा दुग्धस्नानम्। तत्र 'उवणेउ मंगलं वो' इत्यादि गाथाद्वयेन दधिस्नानम्। तत एकोनविंशत्या 'अभिषेकपयोधारे'त्यादिभिर्वृत्तैराद्यान्त्यवृत्तयोर्नमोऽर्हत्सिद्धाचार्येत्युच्चारयत्स्वेकोनविंशतिगन्धोदकेन धारा देवशिरसि दद्यात्। ततः पंचधारकं तत्र प्रथमं 'सर्वजित्०' इति वृत्तेन सर्वौषधिस्नानम्। ततः 'स्वामिन्नित्य'मिति वृत्तेन जातीफलादिसौगन्धिकस्नानम्। ततः 'स्वच्छतये'ति वृत्तेन शुद्धजलस्नानम्। ततः 'कथमय'मिति वृत्तेन कुङ्कुमस्नानम्। ततश्च 'भवती लघोरपी'ति वृत्तेन कुङ्कुमचन्दनस्नानम्—इति पंचधारकम्। ततः 'कुंकुमद्दयं वो'मिति वृत्तेन चन्दनविलेपनः। ततः 'उपनयतु भवांत'मिति वृत्तेन कस्तूरिकामयपट्टं कुर्यात्। ततो 'भाति भवतो ललाटे' इति वृत्तेन गोरोचनया सर्पपैश्च देवस्य तिलकं कुर्यात्। ततो 'मेरौ नन्दनपारिजाते'त्यादिवृत्तसप्तकेन क्रमात् सप्त कुसुमांजलीन् क्षिपेत्। ततः पूजाकारोऽधिवासिते कलशचतुष्टये स्नपनकारैर्गृहीते सत्येकं प्रतिमायाः पुरतः स्थित्वा 'कर्पूरस्फुटभित्ते'त्यादिवृत्तद्वयेन कुसुमांजलिद्वयं प्रक्षिपेत्। पश्चात् कलशचतुष्टयेन स्नपनकाराः स्नानं कुर्युः। तदनन्तरमाहारस्थालं भगवतः पुरो दध्यात्। ततः परिधापनिकां लवणजलारात्रिकावतारणं मङ्गलप्रदीपं च प्राग्वत् कुर्यात्—इति पञ्चामृतस्नानम् १।

ग्रतश्च विशेषपर्वसु विघ्नशान्त्यै निरुपाधिवासनामात्रेण वा कुर्यात्। इदं च प्रायो दिक्पालादिस्थापनं विना ॥ भवतीत्यष्टाह्निकाद्युपयोगी तद्विधिः प्रदर्श्यते—'सद्वेद्यां भद्रपीठे' इति वृत्तद्वयेन कुसुमांजलिप्रक्षेपपर्यन्तं विधिं विधाय, पट्टकं प्रक्षाल्य, देवपादपीठाग्रे निश्चलीकृत्य 'ज्ञानदर्शनचारित्रे'त्यादि वृत्तत्रयेण तत्र पट्टके पंचविंशतिं पुंजिकाः कुर्यात्। पुंजिकाशब्देन कुंकुममिश्रचन्दनटिक्का ज्ञेयाः। क्रमश्चायम्—ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३; वासव १ सोम २ यम ३ वरुण ४ कुबेर ५; शासनयक्ष १ शासनयक्षिणी २; आदित्य १ सोम २ मंगल ३ बुध ४ बृहस्पति ५ शुक्र ६ शनैश्चर ७ राहु ८ केतु ९; साधर्मिकदेवता १.........भद्रकदेवता ३ क्षेत्रदेवता ४ देशदेवता ५ आगंतुकदेवता ६—एवं २५।

स्थापना चेयम्—



एवं पंचविंशतिं पुंजिकाः कृत्वा बलिपुष्पधूपवासपूपिकादधिदुर्वाभिः सम्पूज्य, पुंजिकासु 'ये देवा' इति वृत्तेनाखण्डितं जलधारादानं कुर्यात्। तत्र एकः शालिपत्रपर्पटादिभिर्मधुरान्नादिमध्ये पक्वबलिभाजनं गृहीतवान्, अन्यो धारादानार्थं धारपटीम्, अपरश्च धूपदानम्, अन्यश्च पुष्पादीनि यथासंभवं वा। ततः प्रतिमाभिमुखां दिशं पूर्वां परिकल्प्य तदभिमुखं भूत्वा 'ऐरावणसमारूढ' इति वृत्तं पठित्वा प्रत्येकं बलिं प्रक्षिपेत्। 'एवं सदा पक्षिदशेन'-

त्यादिभिर्नवभिर्वृत्तैर्नवस्वपि दिक्षु तं क्षिपेत् । नवरमाद्यान्त्यवृत्तयोर्नमोऽर्हत्सिद्धेत्यादि भणेत् । ततो ब्रह्मशान्त्याद्यसंगृहीतदेवतातोषणार्थं शेषबलिभाजनमधोमुखी कुर्यात् । अत एव केचिद्देहलीदेशे ब्रह्मशान्त्यादीनपि स्थापयन्ति । ततश्च दिक्पालयोग्यं प्रक्षालितं पट्टकं देवस्य दक्षिणबाहौ स्थापयित्वा **'भो भो सुरे'**ति वृत्तद्वयेन दिक्पालपट्टकोपरि कुसुमांजलिं क्षिपेत् । तद् **'इन्द्रमग्नियमं चैवे'**ति वृत्तेन क्रमेण दिक्पालान् कुङ्कुमचन्दनटिक्केषु स्थापयेत् । **स्थापना चेयम्** ।

इ०	ब्र०	०अ
कु०	ई०	०य
	व०	
वा०	ना०	०नै

तेषु दशपूपिका धूपसुरभिता दधिदूर्वाक्षतपुष्पयुक्ताः **'प्राचीदिग्वधूवरे'**त्यादिवृत्तदशकं पठित्वा क्रमेण दद्यात् । एकैकां पूपिकामेकैकेन वृत्तेन एकैकस्मिंटिक्के दध्यात् । अत्राप्याद्यान्त्यवृत्तयोर्नमोऽर्हत्सिद्धाचार्य इति भणेत् । **'तदिति' – 'दिगधिपे'**ति वृत्तेन दिक्पालानामुपरि पुष्पांजलिं प्रक्षिपेत् । तदनन्तरं चैत्यवन्दनं साधुवन्दनं च कुर्यात् । अनन्तरं 'मुक्तालंकारविकारे'त्यादिविधिः प्रागुक्त एव । यावन्मङ्गलप्रदीपे कृते शक्रस्तवानन्तरं मङ्गलप्रदीपमनुज्ञाप्य ततो धूपमुत्क्षिपेत् । नमोऽर्हत्सिद्धेति गृणन् **'चोलोत्क्षेपै'**रिति वृत्तद्वयेन दिक्पालान् विसर्जयेत् । दिक्पालपट्टिकायामीशानदिक्पूपिकां मुक्त्वाऽन्यो नवदिक्पूपिका उत्तारयेत् । अंचलं वावतारयेत् । एवं **'शक्राद्या लोकपाल'** इति वृत्तेन गृहपट्टिकादैवतान् विसृज्यांचलावतारणं कुर्यात् । केचित् प्रथममेतान् विसृज्य पश्चाद्दिक्पालान् विसृजन्ति ।

अष्टाह्निकासु प्रथमदिनादारभ्य शान्तिपर्वदिनं यावन्मूलप्रतिमां दिक्पालपट्टिकां च न चालयेत्; ग्रहपट्टिकां तूत्पाट्यैकदेशे मुञ्चेत् । अष्टाह्निकाप्रारम्भश्च यद्यपि चैत्राश्विनयोः शुक्लाष्टमीत आरभ्य सर्वत्र रूढस्तथापि पूज्यश्रीजिनदत्तसूरीणामाम्नाये संघस्य चन्द्रबलाद्यपेक्षया तथा कर्त्तव्यो यथा सप्तम्यष्टमीनवम्यः क्षुद्रदेवतादिनतया रौद्रा अष्टाह्निकामध्ये आयान्तीति गुरवः । अष्टाह्निकाद्यदेवपूजा देवद्रव्योत्पत्तिसाधर्मिकभोजनगीतनृत्यवादित्रादिप्रभावनाभिर्यथोत्तरमारोहत्प्रकर्षाः कर्त्तव्याः ।

एवमष्टाह्निकासु सम्पूर्णासु नवमदिने संघस्य चन्द्रबलाद्यभावे विरुद्धदिनसद्भावेव(?) दिनांतरे वा शान्तिपर्व कुर्यात् । तस्य चायं विधिः — चन्द्रबलाद्युपेतशुभवेलायां जीवन्मातापितृश्वश्रूश्वशुरभर्तृका निःशल्या नायिका साधर्मिकस्त्रीजनं स्ववेश्मन्याहूय तस्मै ताम्बुलाद्युपचारं यथाशक्ति कृत्वा, शुभमापाकोत्तीर्णं तं ············ ············पूगफलहिरण्यगर्भं कण्ठाबद्धसुगन्धिकुसुममाल्यं चतुर्दिग्न्यस्तनागवल्लीदलं पिधानस्थगिताननं कलशं मूर्द्धानमारोप्य वितातायमाने चारूल्लोचे पंचशब्दे वाद्यमाने गायन्तीषु शुभवनितासु शाङ्खिकमार्दङ्गिकपाणविकादिभ्यो दानं ददानाः पेशलनेपथ्यप्रधानाः, देवगृहसिंहद्वारं प्राप्य तद्द्वारभित्तौ चन्दनपिष्टकादिपञ्चाङ्गुलितलानि दत्त्वा विधिना देवगृहं प्रविश्य गूंहलिकायां सुस्थिताद्युपरि कलशं स्थापयेत् । एतावता लग्नस्य साधना जाता । ततः सा साध्वी गृहमागत्य लपनेप्सितामयमाहारस्थालं प्रक्षेपबलिं पूपिकाश्च सज्जीकुर्यात् । ततः शान्तिघोषका इन्द्राः कलशस्योपर्याकाशे वंशादियष्टिं कौसुंभचीरिकावेष्टितां तिर्यक् कृत्य, तत्र पुष्पमालां लम्बमानां कुम्भमुखं यावद्धारयेयुः । ततः संघमाहूय प्रागुक्तरीत्या देवस्य धूपवेलां मङ्गलदीपान्तं कृत्वा ततः प्राग्वद् दिक्पालग्रहपट्टिके स्थापयित्वा प्रक्षेपबलिपूपिकादिविधिं च तथैव विधाय, ततः कलशपार्श्वतो बलिं विकीर्य शान्त्युदकग्रहणाय निक्रयम्, आदितः कलशग्राहिणीतस्तदनु संघाद् गृहीत्व कलशाग्रे लपनेप्सिताहारस्थालं दत्त्वा कलशस्य परिधापनिकां **'शक्रो यथा जिनपते'**रिति वृत्तद्वयेन कुर्युः । वंशयष्टेरुपरि परिधापनिकां कुम्भसमीपं यावल्लम्बयेयुः । ततः कुङ्कुमद्रवेण कलशोदकं मिश्रयेयुः । ततः कुसुमांजलिलवणोदकारात्रिकावतारणानि मङ्गलप्रदीपं च कलशस्यैवाग्रे कुर्युः । मङ्गलप्रदीपश्च तादृक्कर्त्तव्यो यादृक् चैत्यवन्दनं शान्तिघोषणां च यावद् दीप्यते, नान्तरालेऽपि निर्वाति । इत्थं हि संघस्य श्रेय इति । ततः ऐर्यापथिकीं प्रतिक्रम्य जानुभ्यां प्राग्वत् स्थित्वा नमस्कारान् शक्रस्तवं च भणित्वा, उत्थाय स्थापनार्हत्स्तव-

दण्डकभगनादिविधिपूर्वं चतस्रो वर्द्धमानाक्षरस्वराः स्तुतीर्दत्त्वा, ततः श्रीशान्तिनाथाराधनार्थं कायोत्सर्गमष्टोच्छ्वासं कृत्वा, पारयित्वा श्रीशान्तिनाथस्य स्तुतिमेको दद्यात्, शेषाः कायोत्सर्गस्थाः शृणुयुः। ततः क्रमेण श्रीशान्तिदेवता-श्रुतदेवता-भवनदेवता-क्षेत्रदेवता-ऽम्बिका-पद्मावती-चक्रेश्वरी-अच्छुप्ता-कुबेरा-ब्रह्मशान्ति-गोत्रदेवता-शक्रादिसमस्तवैयावृत्त्यकराणां कायोत्सर्गान्ते प्राग्वत् सामाचारीदर्शिताः स्तुतीस्तेषामेव दद्यादन्या वा प्राकृतभाषानिबद्धाः। ततः शासनदेवताकायोत्सर्गे उद्योतकरचतुष्टयं चिन्तयित्वा तस्याः स्तुतिं दत्त्वा श्रुत्वा वा, चतुर्विंशतिस्तवं भणित्वा, पंचमङ्गलं त्रिः पठित्वा, ततो जानुभ्यां स्थित्वा, शक्रस्तवं भणित्वा, 'जावंति चेइआइं' इत्यादिगाथाद्वयमधीत्य, परमेष्ठिस्तवं शान्तिस्तवं वा भणित्वा प्रणिपत्य, ततो मुक्ताशुक्त्या प्रणिधानगाथाद्वयं भणेयुः। इति चैत्यवन्दना समाप्ता।

ततो द्वौ धौतपोतिकौ श्रावकेन्द्रौ कलशोदकेन भृङ्गारद्वयं भृत्वोभयतस्तिष्ठेताम्। एकः स्थालके कृत्वा पुष्पचंदनवासान् गृह्णीयादपरश्च धूपायनं पाणिप्रणयीकुर्यात्। ततस्त एव श्रावकाः सप्तनमस्कारान् पठित्वा सप्तधाराः कलशे निक्षिप्य 'नमोऽर्हत्सिद्धा०' इत्युच्चार्य आदौ—'अजियं जियसव्वभयं' इति स्तवेनान्यैः स्वयं वा पठितेन शान्तिं घोषयेयुः। सर्वपद्यानां प्रान्ते एकैकां धारां कलशे भृङ्गारग्राहिणौ समकालं दद्याताम्। एकश्च पुष्पादीन् क्षिपेदपरश्च धूपं दद्यात्। स्तवसमाप्तौ पुनर्भृङ्गारौ भृत्वा 'उल्लासिक्कम'-स्तोत्रेण शान्तिं घोषयेयुः। तथैव पुनर्भयहरस्तवेन, ततः—'तं जयउ जये तित्थं' तदनु 'भयरहिय'मिति स्तवेन तदनन्तरं 'सिग्घमवहरउ विग्घ'मिति स्तवेन, शान्तिं घोषयेयुः। सर्वत्र पद्यसमाप्तौ कलशे धारादानपुष्पादिक्षेपाः प्राग्वत्। नवरं सर्वस्तवानामन्त्यवृत्तं त्रिर्भणेयुः। ततश्च सप्तकृत्व उपसर्गहरस्तोत्रं भणित्वा धारादानपुष्पादिक्षेपविधिना शान्तिं घोषयेयुः। शान्तौ च घोष्यमाणायां साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका उपयुक्तास्तुमुलं निवार्य शान्तिं शृणुयुः। इति शान्तिघोषणं कृत्वा मङ्गलदीपमनुज्ञाप्य प्राग्वद्दिक्पालग्रहादीन् विसृज्य, प्रक्षाल्य, ततः प्रथमं कलशग्राहिण्यै शान्त्युदकं पूगफलादि च समर्प्य, क्रमात् सकलसंघाय समर्पयेयुः। तच्च सर्वेषु उत्तमाङ्गाद्यङ्गेषु लगयेयुर्गृहादि च तेनाभिषिंचेयुः। इति शान्तिपर्वविधिः।

देवाहिदेवपूजाविही इमो भवियणुग्गहट्ठाए।
उपदर्शितो श्रीजिनप्रभसूरिभिराम्नायतः सुगुरोः॥

॥ ग्रन्थाग्रं० २६९ ॥

॥ इति देवपूजाविधिः समाप्तः ॥

श्रीजिनप्रभसूरिकृता प्राभातिकनामावली ।

*

सौभाग्यभाजनमभङ्गुरभाग्यभङ्गीसङ्गीतधामनिजधाम निराकृतार्कम् ।
अर्चामि काम्रितफलं हतिकल्पवृक्षं श्रीमन्तमस्तवृजिनं जिनसिंहसूरिम् ॥ १ ॥

केवलज्ञानी १ निर्वाणी २ [इत्यादि] २४ अतीतजिननामानि ।

ऋषभ १ अजित २ [इत्यादि] २४ वर्तमानजिननामानि ।

पद्मनाभ १ सूरदेव २ [इत्यादि] २४ भविष्यज्जिननामानि ।

सीमंधर स्वामी १ युगंधर स्वामी २ [इत्यादि] २० विहरमानजिननामानि ।

ॐ नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं [इत्यादि] पंचनमस्काराः ।

इंद्रभूति १ अग्निभूति २ [इत्यादि] ११ गणधरनामानि ।

रोहिणी १ प्रज्ञप्ति २ [इत्यादि] १६ विद्यादेवीनामानि ।

अप्रतिचक्रा १ अजितबला २ [इत्यादि] २४ जिनयक्षिणीनामानि ।

गोमुख १ महायक्ष २ [इत्यादि] २४ जिनयक्षनामानि ।

नाभि १ जितशत्रु २ [इत्यादि] २४ जिनपितृनामानि ।

मरुदेवा १ विजया २ [इत्यादि] २४ जिनमातृनामानि ।

भरत १ सगर २ [इत्यादि] १२ चक्रवर्तिनामानि ।

त्रिपृष्ठ १ द्विपृष्ठ २ [इत्यादि] ९ अर्द्धचक्रिनामानि ।

अचल १ विजय २ [इत्यादि] ९ बलदेवनामानि ।

अश्वग्रीव १ तारक २ [इत्यादि] ९ प्रतिवासुदेवनामानि ।

समुद्रविजय १ अक्षोभ २ [इत्यादि] १० दशार्हनामानि ।

युधिष्ठिर १ भीम २ [इत्यादि] ५ पांडवनामानि ।

ब्राह्मी । सुन्दरी । रोहिणी । दवदंती । सीता । अंजना । राजीवती [इत्यादि] सतीनामानि ।

बाहुबली । सुग्रीव । विभीषण । हनूमंत । दशार्णभद्र । प्रसन्नचन्द्र [इत्यादि] सत्पुरुषनामानि ।

सिद्धार्थ । जंबूस्वामि । प्रभव । शय्यंभव । यशोभद्र । संभूतविजय । भद्रबाहु । स्थूलभद्र । आर्यसुहस्ति । सिंहगिरि । धनगिरि । आर्यसमित । वैरस्वामि । आर्यरक्षित । दुर्बलिकापुष्यमित्र । घृतपुष्यमित्र । वस्त्रपुष्यमित्र । वज्रसेन । नागेन्द्र । चन्द्र । निर्वृति । उद्देहिक । कोट्याचार्य । जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण । सिद्धसेन दिवाकर । उमास्वाति वाचक । आर्यश्याम वाचक । गोविंद वाचक । रेवती । नागार्जुन । आर्यखपट । यशोभद्रसूरि । मल्लवादी । वृद्धवादी । वप्पहट्टि । कालकसूरि । शीलांकसूरि । हरिभद्रसूरि । सिद्धऋषि । पादलिप्तसूरि । देवसूरि । नेमिचंद्रसूरि । उद्योतनसूरि । वर्द्धमानसूरि । जिननेश्वरसूरि । जिनचंद्रसूरि । जिनभद्रसूरि (?) अभयदेवसूरि । जिनवल्लभसूरि । जिनदत्तसूरि । जिनचंद्रसूरि । जिनपतिसूरि । जिनेश्वरसूरि । श्रीजिनसिंहसूरि । **श्रीजिनप्रभसूरि** । श्रीजिनदेवसूरि ।

॥ इति प्राभातिकनामावली समाप्ता । विरचितेयं श्रीमज्जिनप्रभसूरिभट्टारकमिश्रैः ॥

श्रीजिनप्रभसूरिकृताः स्तुतित्रोटकाः ।

—[१]—

ते धन्नपुन्नसुकयत्थनरा, जे पणमहि सामिउं भत्तिभरा ।
फलवद्धिपुरट्ठियपासजिणं, अससेणह नंदण भयहरणं ॥ १ ॥
वामाइविराणीउयरसरे, उप्पन्नउ सामिउ हंसपरे ।
तुम्हि वंदहु भवियहु भाउधरे, जिम दुत्तरु भउ संसार तरे ॥ २ ॥
इहि दूसम समइ महच्छरियं, फलवद्धिपासु जं अवयरियं ।
भवियणहं मणिच्छिय देउ सुहं, सो इक्क जीह वंनियइ कहं ॥ ३ ॥
झणझणण झणक्कहिं घग्घरियं, वद्धुनकटि नाकद्वि तिविल झणियं ।
लकुटारस नच्चहि इक्कमणी, भवियण आणंदिहिं जिणभवणी ॥ ४ ॥

—[२]—

नियजंमु सफलु रावणहं सुयं, दिवराय जु तित्थहं जत्त कियं ।
निच्चलच(म ?)णि वेच्चिउ नियययधणं, विमलग्गिरि वंदिउ आदिजिणं ॥ १ ॥
दिवराय सरिसु नहु अंनु कली, जिणि दूसमसमइहिं माणु मली ।
सुपवित्त सुखित्तिहि वरिउ धणं, उज्जिलगिरि पणमिउ नेमिजिणं ॥ २ ॥
महिमंडलि हुय संघवइ घणा, दिवराय सरिस नहु अंनु जणा ।
जिणि ढिल्लियनयरहं मज्झि सयं, देवालउ कड्डिउ जत्त कियं ॥ ३ ॥
फालिहमणिससिहरकरविमले, जसकलसु चडाविउ जेण कुले ।
मग्गण जण तोसिय घणवरिसे, अवयरिउ कंनु दिवरायमिसे ॥ ४ ॥
सिरिखरिजिणप्पहभत्तिब्भरे, सुताणिहि मंनिउ विविह परे ।
पउमावइ सानिधि सयल जए, चिरु नंदउ देल्हिगु संघवए ॥ ५ ॥

॥ त्रोटकाः समाप्ताः ॥

श्रीजिनप्रभसूरिकृतं तीर्थयात्रास्तोत्रम् ।

सिरिसत्तुंजयतित्थे रिसहजिणं पणिवयामि भत्तीए ।
उज्जिंतसेलसिहरे जायवकुलमंडलं (णं) नेमिं ॥ १ ॥
सेरीसयपुरतिलयं पासजिणमणेयविंवपरियरियं ।
फलवद्धी-संखेसर-थंभणयपुरेसु तह वंदे ॥ २ ॥
पाडलनयरे नेमिं नमिमो तारणगिरिंमि अजियजिणं ।
भरुयच्छे मुणिसुव्वयजिणेसरं सवलियविहारे ॥ ३ ॥
जीवंतसामिपडिमं वायडनयरंमि सुव्वयजिणस्स ।
चंदप्पहसामिं तह हरपट्टणभूसणं थुणिमो ॥ ४ ॥
अहिपुर-जालउरेसुं पल्हणपुर-भीमपल्लि-सिरिमाले ।
अणहिलपुर-सिरिखिज्जे आसावल्ली य धवलक्के ॥ ५ ॥
धंधुक्कय-खंभाइत्त जिंन (जिन्न) दुग्गाइसुं च ठानेसु ।
सव्वेसु जिणवराणं पडिमाओ पणिवयामि सया ॥ ६ ॥
तेरहसय छावत्तर विक्कमसंवच्छरंमि जिट्ठस्स ।
बहुलाइ तेरसीए नमिओ सित्तुज्जतित्थपहू ॥ ७ ॥
जिट्ठस्स पुंनिमाए नमंसिओ रेवयंमि जिणे ।
सिरिदेवरा[य] संघाहिवस्स संघेण विहिपुव्वं ॥ ८ ॥
सिरिजिणपहुसूरीहिं रइयमिणं जे पढंति संथवणं ।
पावंति तित्थजत्ताकरणफलं ते विमलपुन्ना ॥ ९ ॥

॥ इति तीर्थयात्रास्तोत्रं समाप्तं ॥ छ ॥

श्रीजिनप्रभसूरिकृतं मथुरायात्रास्तोत्रम् ।

सुराचलश्रीजिति देवनिर्मिते स्तूपेऽभिरूपे वरदो(दे) कृतास्पदौ ।
सुवर्णनीलोपलकोमलच्छवी सुपार्श्व-पार्श्वौ मुदित[ः] स्तवीमि वाम् ॥ १ ॥
पृथ्वीसुतोऽपि त्रिजगज्जनानां क्षेमंकरस्त्वं भगवान् सुपार्श्व ! ।
अपि प्रतिष्ठाङ्गरुहस्तमीश कथं च लोके जनितप्रतिष्ठः ॥ २ ॥
पार्श्वप्रभो येऽत्र मनोभिरामत्वन्नाममन्त्रस्मरणैकतानाः ।
उच्चञ्चलच्चञ्चलतागुणाया भवन्ति ते मन्दिरमिन्दिरायाः ॥ ३ ॥
महीतलास्फालनघृष्टमालः सुपार्श्व ! सर्पत्पुलकैर्विशालः ।
कदा त्वदंह्रि प्रणिपातकर्मप्रमोदमेदस्विमना [नमा]मि ॥ ४ ॥
यात्रोत्सवेषु प्रभुपार्श्व ! तेऽत्रागतस्य संघस्य चतुर्विधस्य ।
उत्क्षिप्यमाणागुरुधूपधूमव्याजेन निर्यान्ति तमःसमूहाः ॥ ५ ॥
समुच्चरद्धूमशिखप्रदीपच्छलेन वां सेवितुमागता अमी ।
शिरश्चकाचन्मणयः फणाभृतो निजं कृतार्थाः प्रतियान्ति मन्दिरम् ॥ ६ ॥
रुजा भुजङ्गार्णवदावदन्तिनो मृगाधिपस्तेन नरेन्द्रसंयुगाः ।
पिशाचशाकिन्यरयश्च तन्वतो भियं न तस्य स्मरतीह यो युवाम् ॥ ७ ॥
पादारविन्दं सुरवृन्दवन्द्यं वन्दारवो ये युवयोरनिन्द्यम् ।
देवी कुबेरा विपदस्तदीया समूलकाषं कषति प्रसन्ना ॥ ८ ॥
यौष्माकवीक्षारसमग्रनेत्रप्रसारिहर्षाश्रुभिराम्भसीकाः ।
ज्वलन्तमन्तर्निचितायवह्निं निर्वापयन्ते जगतीह धन्याः ॥ ९ ॥
इति स्तुतिं श्रीमथुरापुरीस्थयोः पठन्ति ये वां शठतां विनाकृताः ।
सुपार्श्वतीर्थेश्वर पार्श्वनाथ वा जिनप्रभद्रं पदमाप्नुवन्ति ते ॥ १० ॥

॥ इति श्रीमथुरायात्रास्तोत्रं समाप्तम् ॥

श्रीजिनप्रभसूरिकृता मथुरास्तूपस्तुतयः ।

श्रीदेवनिर्मितस्तूपशृङ्गारतिलकश्रियौ । सुपार्श्व-पार्श्वतीर्थेशौ क्लेशं नाशयतां सताम् ॥ १ ॥
प्रमोदसंमदं पादपीठी लुठदधीश्वराः । कर्मालिनलिनीचन्द्राः……संभवंतु वः ॥ २ ॥
मिथ्यात्वविषविक्षेपदक्षं सुमनसां प्रियम् । जिनास्यजलदे……जीयात् प्रवचनामृतम् ॥ ३ ॥
विमौयघातने निमा मधूपमशिरस्थिता । कुबेरा नरमारूढा मूढभावं भिनत्तु नः ॥ ४ ॥

॥ श्रीदेवनिर्मित [स्तूप] स्तुतयः ॥

विधिप्रपाग्रन्थान्तर्गत-अवतरणात्मक-पद्यानामकारादिक्रमेण सूचिः ।

विधिप्रपाग्रन्थान्तर्गतानां विशेषनाम्नां अकारादिक्रमेण सूचिः ।